उन्मुख

बालवाटिका हेतु प्रशिक्षक संदर्शिका

गुण-दोष की दृष्टि से विचार करें...

“शिक्षा कम पाठ्यसामग्री वाली तथा अधिगम की ओर इस प्रकार उन्मुख होनी चाहिए कि कैसे गंभीर रूप से सोचें और समस्याओं को हल करें, कैसे रचनात्मक, बहुविषयक एवं नवाचारी बनें तथा बदलते क्षेत्रों में नई सामग्री को नया रूप देते हुए अनुकूलित एवं अधिग्रहीत कैसे करें।”

—राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

उन्मुख

बालवाटिका हेतु प्रशिक्षक संदर्शिका

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

13263 — उन्मुख
बालवाटिका हेतु प्रशिक्षक संदर्शिका

978-93-5292-449-3

प्रथम संस्करण
सितंबर 2023 *भाद्रपद 1945*

PD 5T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2023

सर्वाधिकार सुरक्षित

- इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना, किसी भी रूप में या किसी भी तरह से, इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रेषित किया जा सकता है।
- इस पुस्तक को इस शर्त के अधीन प्रदान किया जाता है कि इसे व्यापार, किराए, पुनः बिक्री में या अन्यथा प्रकाशक की सहमति के बिना नहीं उपयोग किया जाएगा, यदि यह उस बाइंडिंग या आवरण के रूप में है जिसमें इसे प्रकाशित किया गया है।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पेज पर मुद्रित मूल्य है। रबर की मुहर या स्टिकर द्वारा या अन्य किसी तरीके से कोई मूल्य संशोधित करना गलत है और इसे स्वीकार नहीं किया जाए।

प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. का कार्यालय

रा.शै.अ.प्र.प. परिसर
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110016 **फोन: 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
होस्डेकेरे हेली एक्सटेंशन
वनशंकरी 3 स्टेज
बेंगलुरु 560 085 **फोन: 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट बिल्डिंग
पी. ओ. नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **फोन: 079-27541446**

सीडब्ल्यूसी परिसर
धनकल बस स्टॉप के सामने पनिहटी
कोलकाता 700114 **फोन: 033-25530454**

सीडब्ल्यूसी कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 **फोन: 0361-2674869**

प्रकाशन दल

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	अनूप कुमार राजपूत
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	अरुण चितकारा
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	विपिन दीवान
मुख्य संपादक (प्रभारी)	:	बिज्ञान सुतार
संपादन सहायक	:	ऋषिपाल सिंह
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	दीपक जैसवाल

कवर और लेआउट
डीटीपी प्रकोष्ठ, प्रकाशन प्रभाग

80 जीएसएम पेपर पर मुद्रित

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित ।

प्राक्कथन

भारत में बच्चों का भली-भाँति पालन-पोषण करने की समृद्ध परंपरा है, जिसे संस्कार के रूप में जाना जाता है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होने वाले ये संस्कार बच्चों के जीवन के आरंभिक आठ वर्षों में पर्याप्त देखभाल का मार्ग प्रशस्त करते हैं ताकि बाद के वर्षों में उनके विकास, व्यवहार और क्षमताओं के प्रत्येक आयाम को अनुकूल रूप से आकार दिया जा सके।

इस स्तर के महत्व को ध्यान में रखते हुए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में बच्चों के पाँच बुनियादी वर्षों (3–8 वर्ष के आयु वर्ग) को उपयुक्त रूप से स्कूली शिक्षा के दायरे में लाने की अनुशंसा की गई है। एक व्यक्ति का अपने पूरे जीवनकाल में सीखना, सामाजिक और भावात्मक व्यवहार और उसका समग्र स्वास्थ्य इसी अवस्था पर निर्भर करता है। इसके अलावा बच्चों को संज्ञानात्मक क्षेत्र में साक्षरता, संख्या ज्ञान, रचनात्मक और सौंदर्य संबंधों की समझ बनाने के लिए उनके शारीरिक एवं गत्यात्मक कौशल के विकास हेतु परिश्रम के साथ समर्थन की भी आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस स्तर के लिए एक विशेष राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की अनुशंसा की जाती है, जो न केवल आधारभूत स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने, बल्कि स्कूली शिक्षा के अगले चरणों में इस गति को आगे ले जाने के लिए व्यापक रूप से संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का मार्गदर्शन करती है।

बुनियादी स्तर की शिक्षा हेतु *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* (*नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज* यानी *एन.सी.एफ.-एफ.एस.*) में आरंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को भारतीय संस्कृति और लोकाचार में निहित करने की अनुशंसा की गई। इसमें घर पर ही बच्चे के अपने ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के साथ अनुभवों को एकीकृत करने पर भी ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिसे स्कूल परिसर में ही विकसित किया जाएगा। यह पुस्तकों से सीखने की प्रचलित प्रणाली से परे एक अनुकूल खेल-पद्धति और दक्षता-आधारित अधिगम प्रणाली की ओर विस्थापन का प्रतीक है, जहाँ बच्चे जो करते हैं और सीखते हैं, उसमें उनकी भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

इस अनुशंसा के बाद, बुनियादी स्तर के लिए पाठ्यक्रम को *पंचकोषीय विकास* (मानव व्यक्तित्व के पाँच आयामों का विकास) की वैचारिक नींव पर तैयार किया गया है, जैसा कि *तैत्तिरीय उपनिषद* में स्पष्ट किया गया है, जो स्वयं *'कृष्ण यजुर्वेद'* की *तैत्तिरीय संहिता* का एक भाग है ताकि व्यक्ति, जीवन के अंतिम लक्ष्य का अनुभव करने में सक्षम बन सके, इस प्रकार किसी व्यक्ति के समग्र विकास के समकालीन दृष्टिकोण के साथ भारत के पारंपरिक सभ्यता ज्ञान का सामंजस्यपूर्ण सम्मिश्रण सुनिश्चित किया जा सके।

इस प्रयास की सफलता स्पष्ट रूप से उन चरणों पर निर्भर होगी, जो आँगनवाड़ी, स्कूल और संबंधित संस्थानों में इस स्तर पर बच्चों में उपयुक्त दक्षता विकसित करने तथा उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु उठाए जाएँगे। इन प्रयासों की सफलता हेतु अनुशंसित पाठ्यचर्या मुद्रित तथा ऑनलाइन रूपों में उपलब्ध एवं अनुशंसित विभिन्न अधिगम और शिक्षण सामग्री का उपयोग करने की आवश्यकता है। माता-पिता को भी आँगनवाड़ी, स्कूलों और संबंधित संस्थानों के मार्गदर्शन में इसे सावधानीपूर्वक अपनाना चाहिए।

पाठ्यक्रम के संकल्पनाकारों ने अलग-अलग दक्षताओं के विकास में अपनी भूमिका निभाई है, जिन्हें अधिगम के पाँच वर्षों में क्रमिक रूप से विकसित किया जाना है। इस कार्य के दौरान उन्होंने सामग्री की मात्रा से संबंधित

मुद्दों को भी संबोधित किया है। उन्होंने बुनियादी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर ज्ञानार्जन की प्रक्रिया के पुनर्गठन और पुनःअभिमुखीकरण के माध्यम से इसे पूर्ण किया है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बाल मनोविज्ञान पर अधिक ध्यान देने और विद्यालयों में अधिगम और शिक्षण के लिए उपलब्ध समय को ध्यान में रखा गया है।

तीन से छह वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के प्रशिक्षकों और उनके साथ कार्य करने वाले अन्य सभी को सक्षम बनाने को ध्यान में रखते हुए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के दृष्टिकोण के क्रियान्वयन हेतु, *उन्मुख* नामक इस प्रशिक्षक संदर्शिका को विकसित किया गया है। इस संदर्शिका में दक्षता-आधारित गतिविधियों के संचालन हेतु मार्गदर्शन किया गया है। ये गतिविधियाँ सरल, रुचिकर और बच्चों को गतिविधियों से जोड़ने वाली हैं। इस संदर्शिका को समावेशी प्रकृति का बनाया गया है साथ ही हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं का ध्यान रखा गया है और प्रशिक्षकों-शिक्षकों एवं अन्य हितधारकों की क्षमता विकास के लिए इसमें पर्याप्त अवसर प्रदान किए गए हैं ताकि वे बच्चों को स्वयं सीखने का व्यावहारिक अनुभव दे सकें।

इस संदर्शिका में कला और शिल्प कार्य को गतिविधियों में एकीकृत किया गया है, जिसके माध्यम से शिक्षक, बच्चों को ऐसी गतिविधियों में निहित सौंदर्यबोध की सराहना करने के लिए जागरूक और प्रेरित करते हैं। इस संदर्शिका में अंतर्निहित संकल्पनाओं को अपने स्वयं के संदर्भों में सरलता से संचालित करने के लिए स्थितिजन्य जागरूकता भी प्रदान की गई है। इस संदर्शिका में सीखने की भरपूर सामग्री के साथ विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान किए गए हैं। खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखने के विभिन्न तरीकों को एकीकृत करने के साथ-साथ कई अन्य गतिविधियाँ और ऐसे प्रश्न दिए गए हैं, जो बच्चों को महत्वपूर्ण सोच और समस्या को सुलझाने की क्षमता विकसित करने हेतु प्रेरित करते हैं। इसके अतिरिक्त संदर्शिका में प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन के लिए विस्तृत विषय सामग्री और विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ शामिल हैं, जिनसे बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने में भरपूर सहायता मिलेगी। इस संदर्शिका में राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के लिए अधिगम-शिक्षण की सामग्री में स्थानीय दृष्टिकोण के साथ स्थानीय सामग्री से जोड़ने की पर्याप्त गुंजाइश रखी गई है, जिसे वे *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुशंसाओं के अनुसार विकसित कर सकते हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, बुनियादी स्तर हेतु इस पाठ्यक्रम और अधिगम-शिक्षण की सामग्री को विकसित करने के लिए गठित समिति द्वारा किया गया गहन परिश्रम सराहनीय है। मैं, इस समिति की अध्यक्ष शशिकला वंजारी और अन्य सभी सदस्यों के प्रति इस कार्य को समय पर और सराहनीय तरीके से पूरा करने के लिए धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। मैं, उन सभी संस्थानों और संगठनों का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इसे संभव बनाने में उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की है। मैं, राष्ट्रीय संचालन समिति के अध्यक्ष के. कस्तूरीरंगन और समिति के अन्य सदस्यों, जिनमें अधिदेश समूह और समीक्षा समिति शामिल हैं, को उनके समयोचित और बहुमूल्य सुझावों के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ, जो इस संदर्शिका की संकल्पना और विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण रहे हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, भारत में स्कूली शिक्षा में सुधार के लिए प्रतिबद्ध एक संगठन के रूप में और सभी अधिगम और शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में निरंतर सुधार लाने और, रा.शै.अ.प्र.प. को इस संदर्शिका को और भी बेहतर बनाने के लिए अपने सभी हितधारकों से उनके महत्वपूर्ण टिप्पणियों और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

27 जनवरी 2023
नई दिल्ली

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

प्रशिक्षक संदर्शिका के बारे में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और बुनियादी स्तर की शिक्षा हेतु *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022* में 3–6 वर्ष के सभी बच्चों के लिए *आरंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा* (ई.सी.सी.ई.) को सार्वभौमिक बनाने और 6–8 वर्ष के बच्चों को इस आरंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के दायरे में लाने पर बल दिया गया है। यह कदम अधिगम के संकट को दूर करने और 3–8 साल के बच्चों के समग्र विकास को सक्षम करने के लिए किया गया है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में अनुभवात्मक अधिगम पर बल दिया गया है। इसके अनुसार बालवाटिका में प्रारंभिक कक्षाओं में उनके सामाजिक और व्यक्तिगत कौशलों सहित बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता को सुदृढ़ करने के लिए संकल्पनाओं के निर्माण और कौशल एवं दक्षताओं को विकसित करने पर ध्यान दिया गया है। *एन.सी.एफ.-एफ.एस.* भारत में 3–8 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए अब तक की प्रथम एकीकृत पाठ्यचर्या की रूपरेखा है। बालवाटिका का उद्देश्य बच्चों की पूर्ण क्षमता का इष्टतम विकास करना और उनके समग्र विकास की नींव रखना है।

एन.सी.एफ.-एफ.एस. की अनुशंसाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए प्रशिक्षकों और शिक्षकों दोनों का प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। बड़ी संख्या में शिक्षकों तक इसे पहुँचाने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. (NCERT), रा.शै.अ.प्र.प. (SCERT), डायट. (DIET), ब्लॉक संसाधन केंद्र (BRC) और संकुल संसाधन केंद्र (CRC) जैसे शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा छोटी या लंबी अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। प्रशिक्षण देने के लिए संसाधन व्यक्तियों को रा.शै.अ.प्र.प.के संकाय की तरह आर.आई.ई. (RIE), एस.सी.ई.आर.टी. डायट, विश्वविद्यालयों एवं शिक्षक शिक्षण संस्थानों के शैक्षणिक प्रशिक्षक, ई.सी.सी.ई. विशेषज्ञ आदि को विभिन्न संकायों से शामिल किया जाना चाहिए।

ई.सी.सी.ई. के क्षेत्र में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम सामान्यत: कैस्केड मॉडल में आयोजित किए जाते हैं, जिसमें प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण शामिल होता है, जो बाद में बालवाटिका शिक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे। ये प्रशिक्षक राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में अलग-अलग स्तर पर कार्य करते हैं। कुछ राज्यों में मास्टर प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रमुख संसाधन व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने की प्रथा है और मास्टर प्रशिक्षक आगे चलकर शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं। कुछ राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में सभी स्तरों पर प्रशिक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षक हैं और वे सीधे शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं। इसलिए प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षकों के पास मार्गदर्शन के लिए कुछ तैयार संदर्भ सामग्री होना आवश्यक है। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षकों के लिए संदर्शिका ***उन्मुख***, अंग्रेज़ी में जिसका अर्थ है 'ओरिएंट', तैयार की गई है। इसे प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत प्रशिक्षकों अथवा शिक्षक प्रशिक्षकों या संसाधन व्यक्तियों के लिए तैयार किया गया है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो बालवाटिका स्तर के बच्चों (3–6 वर्ष आयु वर्ग) के साथ कार्य कर रहे हैं।

इस संदर्शिका के दो भाग हैं। भाग 1 में ई.सी.सी.ई. और बालवाटिका की मूल बातें बताई गई हैं, जिससे प्रतिभागियों को *एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022* के अनुसार ई.सी.सी.ई. और बालवाटिका की एक समझ बनाने के लिए परिचित कराया गया है। इसमें अवलोकन के माध्यम से अंतर्निर्मित मूल्यांकन के साथ बालवाटिका कार्यक्रम

की आवश्यकता और महत्व, विधियों और सामग्रियों, योजना और लेन-देन के बारे में बताया गया है। बालवाटिका कार्यक्रम को कहानियों, तुकबंदियों, गीतों, खिलौनों आदि के माध्यम से खुशी के साथ खेल और गतिविधि-आधारित शिक्षण-शास्त्र का उपयोग करके कार्यान्वित करने की आवश्यकता है। संदर्शिका के भाग 2 में विभिन्न प्रकार की सुझावात्मक गतिविधियाँ शामिल हैं, जो 3–4, 4–5, और 5–6 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के साथ लगातार आयोजित की जा सकती हैं। ये गतिविधियाँ प्रगतिशील और एकीकृत प्रकृति की हैं, जिसमें एक प्रक्षेत्र (डोमेन) में गतिविधियों को करवाते समय, बच्चे अन्य डोमेन में दक्षताओं को विकसित करने में सक्षम होंगे। कक्षा के साथ-साथ किसी भी शिक्षण स्थल पर बच्चों की देखभाल करने वालों द्वारा उपयोग की जाने वाली गतिविधियों (जहाँ भी संभव हो) में विविधताओं का सुझाव देने का प्रयास किया गया है। सीखने में प्रगति और विकासात्मक देरी (यदि कोई हो) को समझने के लिए गतिविधियों को करवाते हुए उन बिंदुओं को भी ध्यान में रखने का सुझाव दिया गया है। संदर्शिका में बालवाटिका स्तर पर लिखित या मौखिक परीक्षा नहीं लेने पर बल दिया गया है।

सुझाई गई गतिविधियों को प्रशिक्षकों द्वारा शिक्षण स्थलों पर प्रदर्शित करने की आवश्यकता है। यदि बच्चे उपलब्ध नहीं हैं, तो शिक्षक-प्रशिक्षकों या संसाधन व्यक्तियों द्वारा कृत्रिम स्थितियों में बच्चों के रूप में अभिनय करने वाले प्रतिभागियों के साथ इनका प्रदर्शन किया जा सकता है।

यह संदर्शिका सभी स्तरों (केंद्रीय स्तर और राज्य स्तर) पर ई.सी.सी.ई. कार्मिकों को प्रशिक्षित करने में सहायक सिद्ध होगी, क्योंकि इसमें बालवाटिका के लिए सुझावात्मक गतिविधियों के साथ बुनियादी जानकारी भी शामिल है, जिसका उपयोग प्रशिक्षकों के साथ-साथ शिक्षक भी कर सकते हैं। इस संदर्शिका में शामिल गतिविधियों को नि:शुल्क अथवा कम लागत वाली संगत सामग्री के साथ किया जा सकता है। कुछ गतिविधियाँ बिना किसी सामग्री के भी संचालित की जा सकती हैं। क्षमता विकास कार्यक्रम को संचालित करते समय, इस बात को सुझाया गया है कि गतिविधियों के संचालन को बच्चों की भागीदारी के साथ करवाया जाना चाहिए।

यह संदर्शिका उन प्रशिक्षकों के उपयोग के लिए विकसित की गई है, जिनसे प्रशिक्षण की योजना बनाने और संचालन करने की अपेक्षा की जाती है, इसलिए इसमें क्षेत्र-स्तरीय पदाधिकारियों, शिक्षकों, देखभालकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए सुझावात्मक कार्यक्रम की अनुसूची (छह दिन) शामिल की गई है। ई.सी.सी.ई. में न केवल सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान देने पर बल दिया है, बल्कि बालवाटिका के बच्चों की विविध आवश्यकताओं को व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से संबोधित करने के लिए बुनियादी कौशल विकसित करने पर भी बल दिया गया है।

बालवाटिका में विभिन्न गतिविधियों का अभ्यास करते समय प्रशिक्षण के प्रभाव का आकलन करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के बाद प्रशिक्षित शिक्षकों का नियमित फॉलो-अप करना आवश्यक है। इसके लिए संदर्शिका के अनुलग्नक VIII में एक अवलोकन अनुसूची दी गई है, जिसका उपयोग प्रशिक्षक अपने कार्यस्थल पर शिक्षकों के प्रदर्शन का अवलोकन करने के लिए कर सकते हैं। प्रशिक्षक को एक सुविधा प्रदानकर्ता के रूप में कार्य करना चाहिए और सहायता प्रदान करनी चाहिए और कार्यक्रम का मूल्यांकन या निरीक्षण नहीं करना चाहिए।

प्रशिक्षकों के लिए कुछ युक्तियाँ

- प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने से पहले बालवाटिका के संदर्भ, सामग्री और प्रक्रियाओं की स्पष्ट समझ विकसित करने के लिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, *एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2021*, *2022* के *निपुण भारत दिशा-निर्देश* और रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित दस्तावेज़ों— *विद्याप्रवेश*, *उन्मुख बालवाटिका हेतु प्रशिक्षक संदर्शिका*, खिलौना-आधारित शिक्षण संदर्शिका (2022), *शालापूर्व पाठ्यक्रम* (2019) और *शालापूर्व शिक्षा* (2019) के लिए इनमें दिए दिशा-निर्देश पढ़ें।

- प्रशिक्षार्थी को संदर्शिका से जुड़ी पठन सामग्री के हैंडआउट पहले ही उपलब्ध करवाएँ ताकि वे प्रशिक्षण में आने से पहले उन्हें पढ़ सकें।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम से पहले प्रशिक्षार्थी की प्रशिक्षण आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं को जानें, जिससे उनकी प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आकलन हो सके।
- प्रशिक्षार्थी को जानने और रचनात्मक तरीके से उनके साथ संबंध बनाने के लिए एक परिचय सत्र के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करें, उदाहरण के लिए— उनके साथ कोई खेल खेलकर, जिसमें उन्हें अपनी पसंद-नापसंद, शौक आदि को एक-दूसरे के साथ साझा करने का मौका मिलता है।
- प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद, प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में प्रतिक्रिया (फीडबैक) लें, उदाहरण के लिए— उन्हें प्रदान की गई सामग्री, आयोजित गतिविधियों, गीतों और तुकबंदी के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम कितना उपयोगी था, प्रदान किए गए ऑन-साइट अनुभव, संसाधन व्यक्तियों की प्रभावशीलता आदि पर अगले प्रशिक्षण कार्यक्रम में सुधार के लिए भी सुझाव माँगें।
- छोटे समूह या बड़े समूह परिचर्चा आयोजित करने और भौतिक गतिविधियों के संचालन के लिए खुली जगह व बैठने की लचीली व्यवस्था हो। साथ ही प्रोजेक्टर, माइक्रोफोन, इंटरनेट सुविधा, बोर्ड, चार्ट पेपर, रंग, राइटिंग पैड आदि जैसी पर्याप्त प्रशिक्षण सुविधाओं के प्रावधान के साथ हल्की कुर्सियों वाले बड़े हॉल का प्रशिक्षण स्थल के लिए चयन किया जाए।
- प्रशिक्षण के सहभागी तरीकों, जैसे– छोटे और बड़े समूह चर्चा, प्रदर्शन, भूमिका निभाना आदि का उपयोग करें। सत्रों को विभिन्न प्रकार की ऑडियो-वीडियो सामग्री के प्रयोग द्वारा किया जाना चाहिए।
- गतिविधियों की सही प्रकृति को महसूस करने के लिए, संदर्शिका से कुछ गतिविधियों का चयन करें और प्रतिभागियों को भूमिका निभाने की स्थिति में प्रदर्शित करें, जिसमें प्रशिक्षक बालवाटिका शिक्षक के रूप में कार्य करें और जिसमें प्रशिक्षार्थी बालवाटिका कक्षा के छात्र हो सकते हैं।
- प्रशिक्षण में सरल भाषा का उपयोग करें ताकि प्रतिभागी विषयवस्तु को अच्छी तरह से समझ सकें।
- सीखने के वातावरण को सक्षम और विचारशील बनाने के लिए शिक्षकों का मार्गदर्शन करें जहाँ सभी बच्चों को खुशी-खुशी सीखने का मौका मिले। *एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022* में उल्लेखित पाठ्यचर्या के लक्ष्यों और दक्षताओं और सीखने के परिणामों के अनुरूप शैक्षणिक प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए सभी डोमेन को कवर करें। गतिविधियों को पूरा करने वाली मासिक, साप्ताहिक और दैनिक योजनाओं अथवा अनुसूचियों को विकसित करने में उनकी सहायता करें। समग्र विकास की ओर ले जाने के लिए प्रत्येक डोमेन के लिए स्वदेशी खिलौनों, कहानियों, तुकबंदियों आदि सहित सर्वांगीण विकास के लिए आयु और विकासात्मक रूप से उपयुक्त, संगत अधिगम-शिक्षण सामग्री एकत्र करें और उन्हें सहयोग करें। जहाँ भी आवश्यक हो गतिविधियों का प्रदर्शन करें, उन्हें बताएँ कि क्या देखना है और पोर्टफोलियो कैसे तैयार करना है, और समग्र प्रगति कार्ड तैयार करना है। साथ ही उन्हें विकास संबंधी देरी और सीखने की कठिनाइयों को दूर करने के तरीके सुझाएँ और बालवाटिका कार्यक्रम के सुचारु संचालन में माता-पिता और समुदाय को शामिल करें।
- शिक्षकों को उन बच्चों पर ध्यान देने की सलाह दें जो इनमें भाग नहीं ले पा रहे हैं, झिझक रहे हैं या उन्हें किसी प्रकार का भय है। उन्हें समझाएँ कि वे बच्चे को किसी भी गतिविधि के लिए विवश न करें, जिसके लिए बच्चे तैयार नहीं हैं। यदि कोई शिक्षक देखते हैं कि किसी बच्चे को विशेष प्रकार की आवश्यकताएँ हैं, उदाहरण के लिए– यदि किसी बच्चे को एलर्जी, बोलने में कठिनाई, या सुनने में कठिनाई जैसी स्वास्थ्य समस्याएँ हैं, तो उनके उचित हस्तक्षेप के लिए माता-पिता को सूचित करना चाहिए।

एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के अनुवर्ती स्तर (फॉलो-अप) के रूप में विकसित बुनियादी स्तर के लिए अधिगम-शिक्षण सामग्री

एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के अनुवर्तन के रूप में खेल-आधारित शिक्षा विज्ञान के साथ बालवाटिका और शालापूर्व का समर्थन प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार की अधिगम-शिक्षण सामग्री (एल.टी.एम.) विकसित करने के प्रयास किए गए हैं। *एन.सी.एफ.-एफ.एस.* दृष्टिकोण के आधार पर विकसित पाठ्यक्रम में कक्षा 1 और 2 के लिए पाठ्यपुस्तकों सहित इन सामग्रियों के विकास के लिए दिशा-निर्देश प्रदान किए गए हैं। *एन.सी.एफ.-एफ.एस.* के अनुवर्ती के रूप में विकसित एल.टी.एम. (LTM) में एक ही स्थान पर विविध सामग्री का संग्रह शामिल है, जो प्रशिक्षकों या शिक्षकों को आवश्यकता और संदर्भ के अनुसार लचीलापन प्रदान करता है। सामग्री के इस संग्रह तक सरलता से पहुँचने के लिए किसी बैग या शेल्फ या बॉक्स में रखा जा सकता है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा निर्मित इन सामग्रियों के संग्रह में खिलौने, कठपुतली, गतिविधि पुस्तक, वर्कशीट, फ्लैश कार्ड, कहानी कार्ड, पोस्टर, खिलौनों के उपयोग के लिए मैनुअल, शिक्षक मार्गदर्शिका आदि शामिल हैं। ये एल.टी.एम. मिलकर बच्चों के समग्र विकास की ओर ले जाते हैं। इस संग्रह के लिए, रा.शै.अ.प्र.प. ने प्रशिक्षकों के लिए *उन्मुख— बालवाटिका हेतु प्रशिक्षक संदर्शिका* तथा गतिविधि पुस्तक *'आनंद'* के साथ-साथ गणित के लिए खिलौने, फ्लैश कार्ड, पोस्टर आदि विकसित किए गए हैं।

संदर्शिका निर्माण समिति

सलाहकार

दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), नई दिल्ली

मार्गदर्शन

शशिकला वंजारी, *प्रोफेसर* (सेवानिवृत्त) और *पूर्व कुलपति*, एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र, *अध्यक्ष,* पाठ्यक्रम और अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति

सुनीति सनवाल, *विभागाध्यक्ष,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग एवं *सदस्य संयोजक*, पाठ्यक्रम और अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

योगदानकर्ता

आर. सविता, *समन्वयक,* संवित रिसर्च फाउंडेशन, बेंगलुरु, कर्नाटक

उमा ए. बापट, *शिक्षक*, मनोवैज्ञानिक संकाय, *ज्ञान प्रबोधिनी*, पुणे, महाराष्ट्र

कृष्णा कुमारी, *सी.डी.पी.ओ.* (सेवानिवृत्त), गुरुग्राम, हरियाणा

के. मयूरी, *प्रोफेसर* (सेवानिवृत्त), मानव विकास और परिवार अध्ययन विभाग, कॉलेज ऑफ कम्युनिटी साइंस, पी.जे.टी.एस.एयू., हैदराबाद, तेलंगाना

गंगा महतो, *सहायक प्रोफेसर*, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., भोपाल, मध्य प्रदेश

जोबी बालकृष्णन, *शिक्षक,* गवर्मेंट लोअर प्राइमरी स्कूल, मुली, अट्टापडी, केरल

दिव्यांशु दवे, *संस्थापक निदेशक*, सेंटर फॉर इनर एक्सीलेंस

प्रसाद बोकिल, *एसोसिएट प्रोफेसर*, आईडीसी स्कूल ऑफ डिजाइन, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान बॉम्बे, मुंबई

प्राची साठे, *शैक्षणिक सलाहकार*, मुंबई, महाराष्ट्र

भरतभाई धोकाई, *निदेशक*, कच्छ कल्याण संघ, समर्थ भारत, कच्छ, गुजरात

माधवी पटवर्धन, *अध्यक्ष,* ध्रुव एजुकेशनल एंड रिसर्च फाउंडेशन, पुणे, महाराष्ट्र

रीता सोनावत, *प्रोफेसर* (सेवानिवृत्त), मानव विकास, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई

रोमिला सोनी, *एसोसिएट प्रोफेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

समीक्षक

अमरेंद्र प्रसाद बेहरा, *प्रोफेसर* और *संयुक्त निदेशक*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

के. वी. श्रीदेवी, *सहायक प्रोफेसर*, पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

चोंग वी. शिमरे, *प्रोफेसर*, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

ज्योत्सना तिवारी, *प्रोफेसर* और *अध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन एवं कला और सौंदर्यशास्त्र शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

भारती, *प्रोफेसर*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* और *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

अकादमिक समन्वयक

पद्मा यादव, *प्रोफेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) *'उन्मुख'– बालवाटिका हेतु प्रशिक्षक संदर्शिका* के विकास में एन.सी.एफ. राष्ट्रीय संचालन समिति और अधिदेश समूह के *अध्यक्ष* के. कस्तूरीरंगन द्वारा प्रदान किए गए मार्गदर्शन और समर्थन के लिए आभार व्यक्त करती है। परिषद्, इस संदर्शिका के विकास में निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए शशिकला वंजारी, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष,* पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक समिति के सदस्यों के प्रति भी आभारी है।

रा.शै.अ.प्र.प. सामग्री की भाषा समीक्षा और संपादन के लिए स्वर्णा गुप्ता, *एसोसिएट प्रोफेसर* (सेवानिवृत्त), रा.शै.अ.प्र.प.; आशिमा गुप्ता, *टीजीटी (अंग्रेजी)* और गौरव कुमार, *लेक्चरर (अंग्रेजी)*, स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, द्वारका, नई दिल्ली; दिव्या गुप्ता, *टीजीटी (अंग्रेजी)*, एस.के.वी., दिल्ली; जे. पी. बेंजवाल, *सलाहकार (सतर्कता)*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; वैशाली, *सलाहकार* (संविदात्मक), पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. की आभारी है।

परिषद्, प्रशिक्षक संदर्शिका उन्मुख के हिंदी अनुवाद के लिए सुचेता त्यागी, *अध्यापिका*, निगम प्राथमिक विद्यालय, पश्चिमी विनोद नगर (प्रथम पाली), दिल्ली; अचला कुकरेती, *प्रधानचार्य*, नवयुग स्कूल (सेवानिवृत्त), नई दिल्ली; मंजू जैन, *प्रोफेसर* (सेवानिवृत्त), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), नई दिल्ली; अवन्तिका त्रिपाठी, *स्वतंत्र अनुवादक हिंदी*, नई दिल्ली की आभारी है।

पुस्तक को अंतिम रूप देने में दिनेश वशिष्ठ, *संपादक हिंदी* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; कहकशाँ, *सहायक संपादक हिंदी* (संविदा), अतुल मिश्रा, *संपादक हिंदी* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; अतुल गुप्ता, *सहायक संपादक हिंदी* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली एवं नरेश सिंह यादव, *संपादक* (सेवानिवृत्त), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली, किशोर सिंघल, *डीटीपी ऑपरेटर* (संविदा) और बिट्टू, *डीटीपी ऑपरेटर* (संविदा), प्राथमिक शिक्षा प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. को संदर्शिका के लेआउट बनाने तथा प्रारूपण करने के लिए आभारी है।

परिषद्, भूषण शालिग्राम, *स्वतंत्र कलाकार*; भारतीशा पी., *ग्राफिक डिजाइनर*, राष्ट्रोत्थान परिषद, बेंगलुरु तथा अन्य ग्राफिक डिजाइनरों को चित्र प्रदान करने हेतु धन्यवाद देती है। अनामिका, *जेपीएफ* (संविदा) और चंचल रानी, *एलडीसी* (संविदा), प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रयासों की इस संदर्शिका के विकास में सहायता प्रदान करने के लिए सराहना की जाती है।

परिषद्, प्रकाशन प्रभाग में सुरेन्द्र कुमार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. सेल; राकेश कुमार, *डीटीपी ऑपरेटर* (संविदा); सगीर अहमद, *डीटीपी ऑपरेटर* (संविदा) का संदर्शिका का प्रारूपण करने के प्रति आभारी है।

परिषद्, प्रकाशन प्रभाग में संदर्शिका की कंपेयरिंग तथा प्रूफरीडिंग हेतु माया, *प्रूफरीडर हिंदी*, (संविदा); श्रीया, *संपादन सहायक हिंदी* (संविदा) तथा भाषा संपादन हेतु अतुल गुप्ता, *सहायक संपादक हिंदी* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के प्रयासों के प्रति सहर्ष आभार व्यक्त करती है।

पढ़ेंगे
लिखेंगे
खेलेंगे
संग-संग

विषय-वस्तु

प्राक्कथन		*iii*
प्रशिक्षक संदर्शिका के बारे में		*v*
भाग 1	**बालवाटिका हेतु पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधि**	**1–70**
अध्याय 1	बालवाटिका का परिचय	3–14
अध्याय 2	बच्चे को समझना	15–20
अध्याय 3	विधियाँ और सामग्री	21–39
अध्याय 4	अधिगम गतिविधियों की योजना एवं आयोजन	40–63
अध्याय 5	शिक्षकों, माता-पिता एवं देखभालकर्ता और समुदाय की भूमिका	64–70
भाग 2	**पंचकोषीय विकास— सुझावात्मक गतिविधियाँ**	**71–274**
लक्ष्य 1–3	अन्नमय कोष एवं प्राणमय कोष (भौतिक, शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास)	75–120
लक्ष्य 4–6	मनोमय कोष (सामाजिक-भावात्मक एवं नैतिक विकास)	121–156
लक्ष्य 7–11	विज्ञानमय कोष (संज्ञानात्मक विकास- भाषा और साक्षरता कौशल, गणितीय कौशल, पर्यावरण के प्रति जागरूकता और वैज्ञानिक सोच)	157–252
लक्ष्य 12	आनंदमय कोष (सृजनात्मक और सौंदर्य अनुभूति संबंधी विकास)	253–264
लक्ष्य 13	सीखने की सकारात्मक आदतों का विकास	265–274
अनुलग्नक		**275–325**
अनुलग्नक I	बालवाटिका हेतु प्रक्षेत्र, पाठ्यचर्या के लक्ष्य और दक्षताएँ	277–280
अनुलग्नक II	कठपुतली बनाना (खिलौना-आधारित अधिगम)	281–286
अनुलग्नक III	कविताओं एवं गीतों के साथ कुछ अनुकरणीय गतिविधियाँ	287–294

अनुलग्नक IV	यातायात पर विषय-वस्तु-आधारित अधिगम योजना	295–299
अनुलग्नक V	बालवाटिका में एक दिन का शैक्षणिक कार्यक्रम	300–301
अनुलग्नक VI	बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल का विकास	302–307
अनुलग्नक VII	क्षमता निर्माण कार्यक्रम	308–310
अनुलग्नक VIII	बालवाटिका में एक दिन की गतिविधियों का अवलोकन	311
अनुलग्नक IX	समग्र प्रगति कार्ड (नमूनार्थ— बालवाटिका I)	312–315
अनुलग्नक X	समग्र प्रगति कार्ड (नमूनार्थ— बालवाटिका II)	316–320
अनुलग्नक XI	समग्र प्रगति कार्ड (नमूनार्थ— बालवाटिका III)	321–325
संदर्भ		326

भाग 1

बालवाटिका हेतु पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधि

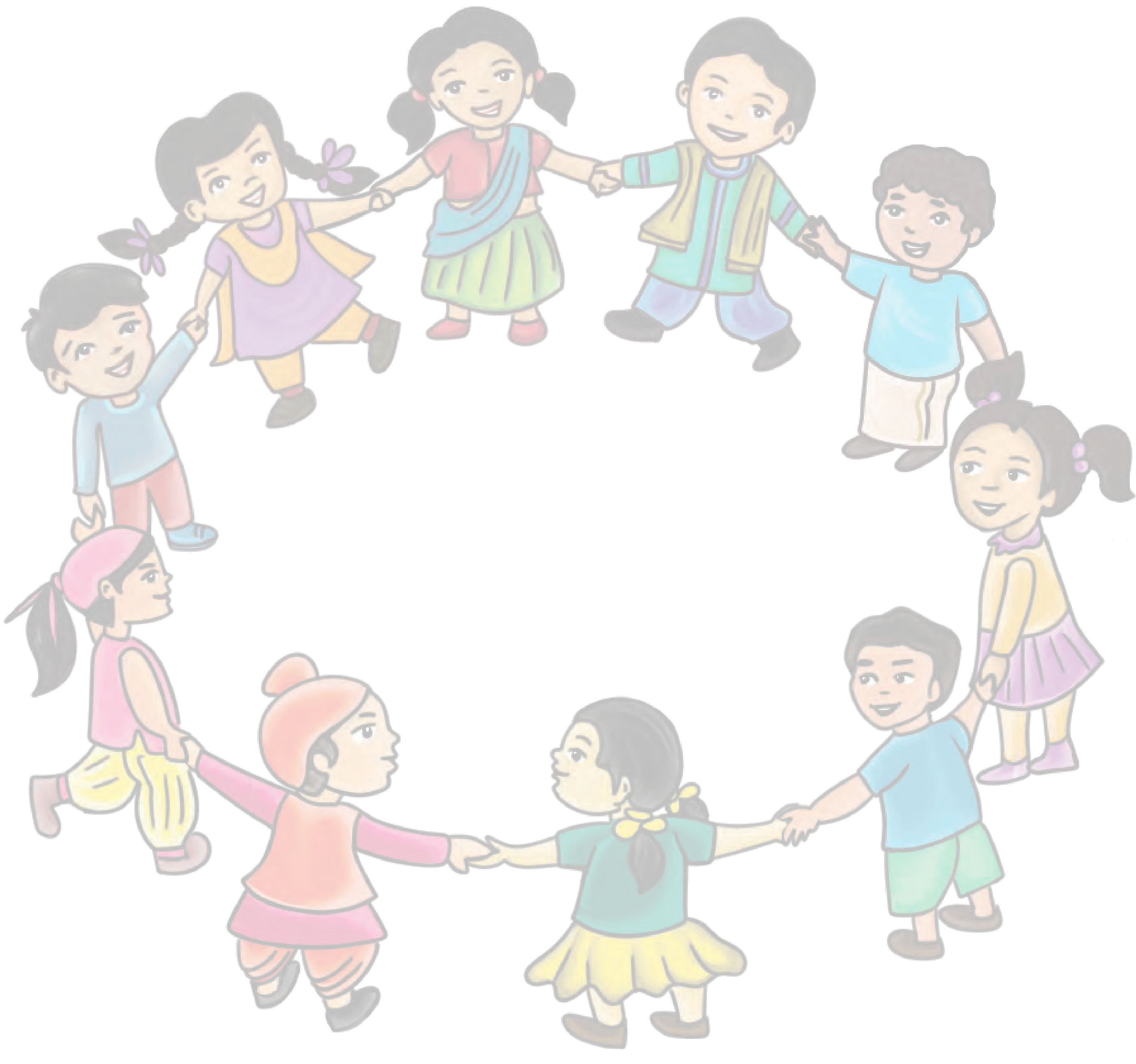

अध्याय 1

बालवाटिका का परिचय

बच्चे के जीवन के प्रारंभिक आठ वर्ष उसके विकास, कल्याण और आजीवन सीखने की एक मज़बूत नींव तैयार करते हैं, जिन्हें प्रारंभिक बाल्यावस्था के वर्षों के रूप में जाना जाता है। जीवन के ये प्रारंभिक वर्ष किसी भी बच्चे के जीवन काल में 'महत्वपूर्ण' होते हैं, क्योंकि इस चरण में विकास की दर विकास के किसी भी अन्य चरण की तुलना में अधिक तीव्र होती है। यदि बच्चे को इन वर्षों में एक उद्दीपक, अनुकूल मनो-सामाजिक वातावरण नहीं मिलता है तो मस्तिष्क की पूरी क्षमता के साथ विकास की संभावना अत्यधिक कम हो जाती है और अक्सर इस प्रकार कम हो जाती है कि अपरिवर्तनीय हो जाती है। इस प्रकार बड़ी संख्या में वंचित पृष्ठभूमि के उन बच्चों के लिए जो शिक्षा एवं विकास में पिछड़ने के खतरे में रहते हैं, अच्छी गुणवत्ता वाली प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) अधिक समान अवसर प्रदान करने में उपयोगी साबित हुई है, जिससे न केवल बच्चों को स्कूल में प्रदर्शन करने में उन्हें लाभ मिलता है, बल्कि आजीवन उनके सीखने और विकास पर भी प्रभाव पड़ता है।

भारत सरकार ने प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को उच्च प्राथमिकता देते हुए जुलाई 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति जारी की। इस नीति में प्रत्येक बच्चे को कक्षा 1 में प्रवेश के लिए तत्पर करने हेतु ई.सी.सी.ई. में सशक्त निवेश की आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। इस महत्व को दर्शाने हेतु स्कूली शिक्षा की संरचना में बदलाव किया गया है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को प्रभावित करने वाली नीतियाँ

- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, क्रियान्वयन कार्यक्रम योजना 1992*
- *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*
- *राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा 2013*
- सतत विकास लक्ष्य (4.2)
- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*

***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की मुख्य विशेषताएँ**

- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में उल्लेख है कि बुनियादी चरण (3–8 वर्ष की आयु) के प्रत्येक बच्चे को नि:शुल्क, सुरक्षित, उच्च गुणवत्ता वाली और विकासात्मक रूप से उपयुक्त प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) मिलनी चाहिए।
- बच्चे के मस्तिष्क के 85 प्रतिशत से अधिक का संचयी क्रमिक विकास छह वर्ष की आयु से पहले होता है, इसलिए स्वस्थ मस्तिष्क के विकास और वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए प्रारंभिक वर्षों में मस्तिष्क की उचित देखभाल और उद्दीपन का विशिष्ट महत्व दर्शाया जाता है। ई.सी.सी.ई. में समग्र विकास (शारीरिक, गत्यात्मक, संज्ञानात्मक, भाषा, रचनात्मक और सौंदर्य, सामाजिक-भावात्मक) और आजीवन सीखने के लिए मस्तिष्क के विकास को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान किया जाता है। इसमें निरंतरता बनाए रखने के लिए ई.सी.सी.ई. के अनुभवों को कक्षा 1 और 2 तक बढ़ाया जाना चाहिए।

नई शैक्षणिक और पाठ्यचर्या संरचना

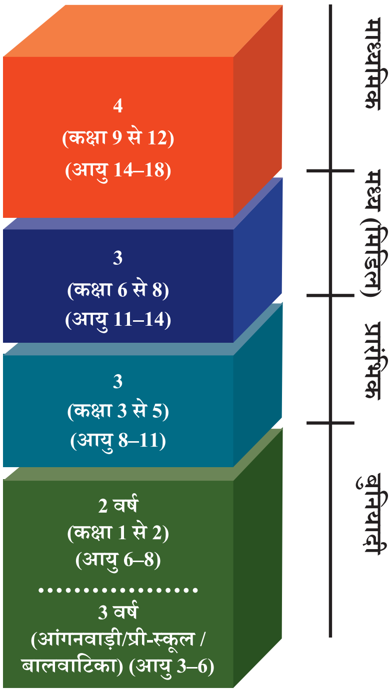

- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में लचीले, खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित और पूछताछ-आधारित अधिगम की अनुशंसा की जाती है, जिसमें अक्षर, भाषाएँ, संख्याएँ, गिनती, रंग, आकार, आंतरिक-बाहरी खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या-समाधान, ड्राइंग, पेंटिंग और दृश्य कला-शिल्प, नाटक और कठपुतली के खेल, संगीत के अन्य रूप और ई.सी.सी.ई. के लिए तैयार करना शामिल हैं। इसमें सामाजिक क्षमता, संवेदनशीलता, अच्छे व्यवहार, नैतिकता, व्यक्तिगत, सार्वजनिक स्वच्छता, टीम वर्क और सहयोग को विकसित करने पर ध्यान देना भी शामिल है।
- *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अनुसार बच्चों में न केवल, विचार, बल्कि आत्मा, बुद्धि और कर्मों में भारतीय होने के साथ-साथ ज्ञान, कौशल, मूल्यों और अच्छे स्वभाव को विकसित करने के लिए राष्ट्रीय गौरव पैदा करना शामिल है जिससे मानव अधिकारों, सतत विकास और जीवन और वैश्विक कल्याण के लिए ज़िम्मेदार प्रतिबद्धता का समर्थन किया जाता है, जिससे वास्तव में वैश्विक नागरिक होने का पता चलता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा बनाई गई नवीन 5+3+3+4 संरचना में, तीन वर्ष की आयु से प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) का एक मज़बूत आधार शामिल है, जिसका उद्देश्य समग्र शिक्षा, विकास और कल्याण को बढ़ावा देना है। शिक्षा नीति 2020 में कक्षा 1 से पहले 3 से 6 वर्ष के आयु वर्ग के लिए तीन वर्ष की आँगनवाड़ी अथवा प्री-स्कूल अथवा बालवाटिका का प्रस्ताव है।

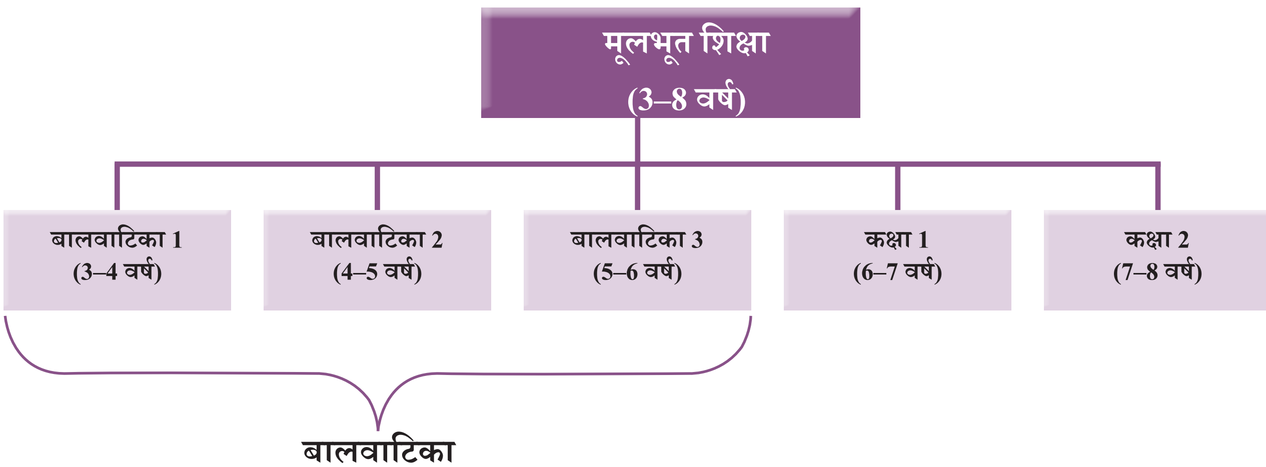

बालवाटिका क्या है?

बालवाटिका को 3–6 वर्ष के बीच के बच्चों के लिए शालापूर्व शिक्षा प्रदान करने वाले किसी भी संगठन, जैसे– आँगनवाड़ी, बालवाड़ी, नर्सरी, प्री-स्कूल, प्रारंभिक, पूर्व-प्राथमिक, एल.के.जी., यू.के.जी. आदि के रूप में परिभाषित किया गया है।

भारत में शालापूर्व शिक्षा सभी तीन क्षेत्रों अर्थात सरकारी क्षेत्र, निजी क्षेत्र और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रदान की जाती है। सरकारी क्षेत्र में यह मुख्य रूप से एकीकृत बाल विकास सेवा (आई.सी.डी.एस.) केंद्रों के माध्यम से प्रदान की जाती है, जिन्हें आँगनवाड़ी कहा जाता है। कई निजी प्रीस्कूल हैं, जो आमतौर पर नियंत्रित नहीं होते हैं और कुछ गैर सरकारी संगठन हैं, जो उपेक्षित और वंचित वर्गों से आने वाले बच्चों के सामाजिक कल्याण के लिए शालापूर्व शिक्षा प्रदान करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बाल्यावस्था शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए बताया गया है कि ई.सी.सी.ई. का समग्र उद्देश्य शारीरिक और गत्यात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-भावात्मक-नैतिक विकास, सांस्कृतिक अथवा कलात्मक विकास और संचार और प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्या ज्ञान के विकास के क्षेत्र में इष्टतम प्रतिफल प्राप्त करना है।

बालवाटिका का महत्व

छोटे बच्चे का विकास अनिवार्यत: बच्चे की सीखने और ज्ञान प्राप्त करने की अंतर्निहित क्षमता को प्रकट करने की एक प्रक्रिया है। इसलिए शालापूर्व शिक्षा या बालवाटिका की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। यहाँ एक उद्दीपक वातावरण प्रदान किया जाता है ताकि बच्चे अपने साथियों के समूह में वयस्कों और अन्य लोगों के साथ सार्थक और भरपूर अंत:क्रिया के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं, स्थानों और अवसरों का अनुभव कर सकें।

बालवाटिका में संज्ञानात्मक, भाषिक, शारीरिक, सामाजिक और भावात्मक विकास के लिए अनुभव प्रदान करने के माध्यम से समग्र विकास के अवसर प्रदान किए जाते हैं। इससे बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के लिए एक मज़बूत नींव बनाने में मदद मिलती है अर्थात उन्हें आगे चलकर स्कूल में सीखने के लिए आवश्यक बुनियादी संकल्पनाओं और कौशल के साथ तैयार किया जाता है।

इससे बच्चों को अन्य दक्षताओं को भी विकसित करने में सहायता मिलती है, जैसे कि अन्य बच्चों के साथ मिलना, एक दिन के कार्यक्रम का अनुपालन करना, बैठना सीखना और उन गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करना, जिनसे उनका ध्यान आकर्षित होता है। इन सभी दक्षताओं से प्राथमिक विद्यालय के आरंभिक कुछ वर्षों में बच्चों को समायोजित करने में मदद मिलती हैं, जिससे ड्रॉपआउट की संख्या में कमी आती है और प्राथमिक स्तर पर प्रतिधारण में सुधार होता है।

बच्चे का विकास— भारतीय संदर्भ

भारत में चहुँमुखी विकास को प्रोत्साहित करने के लिए परंपराओं और प्रथाओं की एक समृद्ध श्रृंखला है, जिसमें छोटे बच्चों में मूल्यों और सामाजिक क्षमताओं का विकास शामिल है। बाल्यावस्था के अनुभव पूरे भारत में धर्म, जाति तथा वर्ग, जेंडर और स्थान जैसे कारकों के साथ काफी भिन्न होते हैं। प्रत्येक बच्चे को जीवन जीने का, विकास, शिक्षा, संरक्षा और भागीदारी का अधिकार है; बच्चे के मानसिक, भावात्मक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को समग्र रूप से संबोधित किया जाना चाहिए।

भारतीय विचारक

- छोटे बच्चों की देखभाल और शिक्षा के लिए बाल-केंद्रित दृष्टिकोण की संकल्पना करने वाले गांधी, टैगोर, गिजुभाई बधेका और ताराबाई मोदक सबसे प्रमुख भारतीय थे।

बालवाटिका के लक्ष्य और उद्देश्य

निम्नलिखित क्षेत्रों में इष्टतम प्रतिफल प्राप्त करना—

- शारीरिक और गत्यात्मक विकास
- ज्ञान संबंधी विकास
- सामाजिक-भावात्मक-नैतिक विकास
- सृजनात्मक और सौंदर्य अनुभूति संबंधी विकास
- भाषा और साक्षरता विकास

''शिक्षा की भारतीय दृष्टि व्यापक और गहरी रही है, जिसमें यह विचार भी शामिल है कि शिक्षा को आंतरिक और बाहरी विकास दोनों को बढ़ावा देना चाहिए। बाहरी दुनिया के बारे में अधिगम किसी की आंतरिक वास्तविकता और स्वयं के बारे में सीखने के अनुरूप होना चाहिए।''

—एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022

बुनियादी स्तर 2022 के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

भारत सरकार ने 20 अक्तूबर 2022 को भारत में 3 से 8 वर्ष के बीच के बच्चों के लिए पहली बार एकीकृत पाठ्यचर्या की रूपरेखा आरंभ की। एन.सी.एफ.-एफ.एस. द्वारा पंचकोष विकास (पाँच गुना विकास) पर बल दिया गया है। तैत्तिरीय उपनिषद में पंचकोष का वर्णन है, जो मानव विकास के विभिन्न क्षेत्रों की प्रारंभिक अभिव्यक्तियों में से एक है। निम्नलिखित क्षेत्रों के माध्यम से उभरी आधुनिक समझ के साथ-साथ पंचकोष आज भी सार्थक हैं— विकासात्मक जीव विज्ञान, मनोविज्ञान और संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान आदि।

पंचकोषीय विकास एवं इसकी सार्थकता

एक बच्चे के जीवन के प्रारंभिक वर्षों को भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य में गहराई से महत्व दिया गया है। शिक्षा की भारतीय दृष्टि बहुत व्यापक और गहरी तथा वास्तव में सर्वव्यापी रही है, जो इस विचार पर आधारित है कि शिक्षा को एक व्यक्ति के आंतरिक और बाहरी विकास दोनों को बढ़ावा देना चाहिए।

बाहरी दुनिया का विकास आंतरिक दुनिया के विकास के अनुरूप होना चाहिए। इस संदर्भ में, 'आंतरिक' और 'बाहरी' शब्द के अर्थ क्रमशः 'सूक्ष्म अथवा आंतरिक स्वरूप' और 'बाहरी स्वरूप' होते हैं।

भौतिक विज्ञान, विशेष रूप से भौतिकी और जीवन विज्ञान में हुई प्रगति से पता लगता है कि जीवन जितना दिखाई देता है उससे कहीं अधिक सूक्ष्म और जटिल है। जीवन के सभी रूप चेतना और ऊर्जा के विभिन्न स्तरों की निरंतरता में होते हैं। चेतना की पूर्ण अभिव्यक्ति मनुष्य के रूप में हो पाती है।

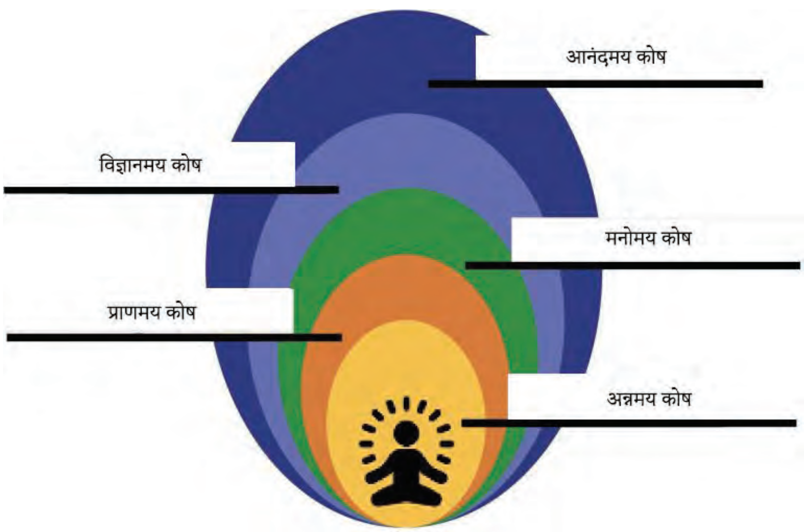

पंचकोष विकास

मनुष्यों में भी, चेतना के पाँच विभिन्न स्तर होते हैं, जिनके माध्यम से आत्मा (शुद्ध चेतना) स्वयं को अभिव्यक्त करती है। ये चेतना के विभिन्न स्तर हैं— (i) अन्नमय कोष (भौतिक स्तर), (ii) प्राणमय कोष (जीवंत स्तर), (iii) मनोमय कोष (भावात्मक, सामाजिक और नैतिक स्तर पर चिंतन), (iv) विज्ञानमय कोष (विश्लेषणात्मक स्तर पर चिंतन) और (v) आनंदमय कोष (हर्ष, करुणा, आनंद स्तर) आदि।

इसी के साथ भौतिक शरीर पाँच स्थूल तत्वों (पंचमहाभूत) अर्थात आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से बना है। यह 'सूक्ष्म से स्थूल' के क्रम में है। बच्चा पंचकोष या पाँच कोषों और पंचमहाभूतों वाला एक संपूर्ण प्राणी है। आइए, इन पाँच कोषों में से प्रत्येक के बारे में विस्तार से समझें।

(i) *अन्नमय कोष*— इस शब्द का अर्थ उस स्तर या कोष से है, जो भोजन (अन्न) पर निर्भर है; यह भौतिक शरीर, सभी अंग और आंतरिक अंग हैं। भौतिक शरीर भोजन से पोषित होता है। अतः भोजन और पोषण से संबंधित शिक्षा इसी आयाम से संबंधित है। इसमें स्वच्छता, शारीरिक तंदुरुस्ती और व्यायाम सहित स्वस्थ आदतें और दिनचर्या भी शामिल हैं।

अन्नमय कोष— इसमें बच्चे के शारीरिक विकास पर ध्यान केंद्रित होता है।

(ii) *प्राणमय कोष*— यह भौतिक शरीर (अन्नमय कोष) का एक अधिक सूक्ष्म पहलू है। इसके कार्य के कारण इसे जीवंत या ऊर्जा स्तर कहा जाता है। प्राण पाचन से लेकर हार्मोन के स्राव तक सभी शारीरिक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करता है। यह अधिक शक्तिशाली स्तर है, जो मानव शरीर की सभी प्रणालियों को संचालित करता है, जैसे कि भोजन का पाचन, नींद, स्फूर्ति, ऊर्जा, शक्ति, उत्साह और प्रजनन आदि। प्राण शारीरिक रूप से श्वास के माध्यम से संचालित होता है। संतुलित और गहरी साँस लेने से प्राणमय कोष को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है। ऐसा संतुलन और प्राण बच्चों को अधिक ऊर्जावान, उत्साही बनाता है और प्राणमय कोष को समृद्ध करने में मदद करता है।

प्राणमय कोष— शरीर की विभिन्न प्रणालियों के सुचारु संचालन के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण ऊर्जा प्रदान करता है।

(iii) *मनोमय कोष*— प्राणमय कोष से अधिक सूक्ष्म स्तर मनोमय कोष या विचार स्तर का है। इसमें सामाजिक और नैतिक विचारों के साथ-साथ सभी भावात्मक विचार भी शामिल हैं। यह आयाम बहुत चंचल और सरलता से परिवर्तनशील होता है। चूँकि यह प्राण से सूक्ष्म है और प्राण को नियंत्रित करने में सक्षम है। तथ्य यह है कि हमारी भावनाओं का हमारी श्वसन प्रक्रिया पर गहरा प्रभाव पड़ता है, इसलिए मनोमय कोष हमारे दैनिक जीवन में सरलतापूर्वक से अवलोकित किया जा सकता है। अपने विचारों को प्रबंधित करना सीखना किसी भी शैक्षिक प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए। कहा जाता है कि मन बहुत अच्छा नौकर है, लेकिन बहुत बुरा मालिक है। अपने मन को अपना सेवक बनाने के लिए उसे प्रशिक्षित करना चाहिए और उसे सही (उचित) दिशा देनी चाहिए। मनोमय कोष का विकास कैसे किया जाए, यह सीखने के लिए सचेतनता, स्थिरता यानी स्थिर बैठना, अपनी सांस का अवलोकन करना, किसी निश्चित बिंदु पर ध्यान केंद्रित करना, मौन, एकाग्रता आदि महत्वपूर्ण प्रक्रियाएँ हैं।

मनोमय कोष— भावना क्षेत्र को संबोधित करता है और इससे रिश्तों की समझ को बढ़ावा मिलता है।

(iv) *विज्ञानमय कोष*— इस भौतिक शरीर, जीवंत ऊर्जा और विचार की शक्ति (मस्तिष्क) के साथ मनुष्य को एक और सूक्ष्म एवं अंतस्थ शक्ति का उपहार मिला है, जिसे बुद्धि या विश्लेषणात्मक सोच के रूप में जाना जाता है। यह व्यक्ति को जटिल वस्तुओं को समझने और आत्मसात करने में सहायता करती है। बुद्धि सीखने की प्रक्रिया को तीव्र बनाती है। बुद्धि का विकास शिक्षा के उद्देश्यों में से एक है। ज्ञान केंद्रित समाज के पुनर्निर्माण के लिए विज्ञानमय कोष के विकास पर ध्यान देना अनिवार्य है। विवेक की महान शक्ति, सर्वव्यापी ज्ञान और प्रकृति के महान रहस्यों को खोलने की क्षमता विज्ञानमय कोष के आयाम से संबंधित हैं। ये मानवता की परिसंपत्तियाँ हैं, जिन्हें शिक्षा के माध्यम से तलाशने की आवश्यकता है।

विज्ञानमय कोष— बुद्धि, निर्णय लेने और अंतर करने की क्षमता के विकास को सुगम बनाता है।

विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक और रचनात्मक विचार भी इसी आयाम से संबंधित हैं। इसके अलावा, भाषा, संख्या ज्ञान और गणितीय और तार्किक प्रक्रियाओं के भाषा विज्ञान संबंधी पहलू विज्ञानमय कोष से संबंधित हैं। इस कोष को विकसित करने के लिए तार्किक प्रक्रियाओं पर आधारित गतिविधियों को सीखने में शामिल किया जाना चाहिए।

आनंदमय कोष— हमें आध्यात्मिक क्षेत्र से जोड़ता है

(v) आनंदमय कोष— आनंद वास्तव में अकारण अनाधार प्रसन्नता (निर्मल आनंद) की स्थिति है। यह हमारे अस्तित्व या चेतना का सबसे अंतस्थ मूल तत्व है। आनंदमय कोष नवजात शिशु का जन्मजात गुण है। यह चेतना का मूल रूप है। एक शिशु किसी शर्त के बिना खुश रहता है। हमारे व्यक्तित्व का अंतरतम केंद्र होने के नाते, यहाँ जो कुछ इसके सान्निध्य में आता है, वह स्थायी हो जाता है। सीखने को स्थायी और दीर्घकालीन बनाने के लिए इसे आनंद-केंद्रित और आनंदमय होना चाहिए। इन कोषों का विकास एक सतत प्रक्रिया है, जो आनंदमय कोष के रूप में परिलक्षित होती है।

बालवाटिका में क्या सिखाया जाए?

ई.सी.सी.ई. का उद्देश्य बच्चे का समग्र विकास (पंचकोषीय विकास) है। समग्र विकास के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही विकास के सभी क्षेत्रों (कोषों) में प्रेरक (उद्दीपक) अनुभव प्रदान किए जाएँ।

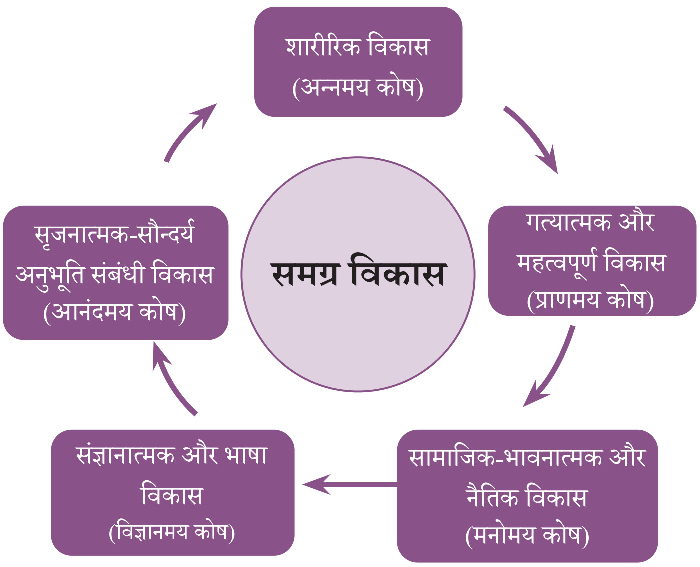

ये सभी क्षेत्र परस्पर संबंधित और एक-दूसरे पर आश्रित हैं और इनसे बच्चों के समग्र विकास के लिए सीखने के कई अवसर पैदा होते हैं। अत: इन सभी आयामों को समान रूप से संबोधित करने की आवश्यकता है।

बालवाटिका हेतु पाठ्यचर्या

बालवाटिका की पाठ्यचर्या विकास के इन क्षेत्रों (कोषों) के आस-पास घूमती है। बालवाटिका के पाठ्यचर्या लक्ष्यों को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की दृष्टि के अनुसार तैयार किया गया है।

एन.सी.एफ.-एफ.एस. में इन्हीं पाँच आयामों (शारीरिक विकास, सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषा और साक्षरता, सौंदर्य और सांस्कृतिक विकास) को सकारात्मक अधिगम के अतिरिक्त लक्ष्य के साथ 13 पाठ्यचर्या लक्ष्य निहित किए गए हैं, प्रत्येक लक्ष्य को पुन: दक्षताओं और प्रत्येक दक्षता को 3–8 वर्षों तक निरंतर चलने वाले सीखने के प्रतिफलों के रूप में रूपांतरित किया गया है। पाठ्यचर्या के लक्ष्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल सभी परस्पर संबंधित और आपस में एक-दूसरे पर आश्रित हैं।

पाठ्यचर्या के लक्ष्यों से बच्चों के ज्ञान और कौशल का निर्माण करने के लिए बालवाटिका की गतिविधियों का मार्गदर्शन होता है। *एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022* के अनुसार बालवाटिका के लिए 13 पाठ्यक्रम लक्ष्य हैं। (तालिका संख्या 1 देखें)

पाठ्यचर्या के लक्ष्य

बालवाटिका में पाठ्यचर्या के लक्ष्यों और दक्षताओं का उद्देश्य बच्चों का समग्र विकास करना है। शिक्षकों से यह सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती है कि पाठ्यचर्या संचालन के दौरान प्रत्येक संकल्पना या कौशल को विभिन्न तरीकों से संबोधित किया जाए। बच्चों को अपने अधिगम का निर्माण करने के लिए अन्वेषण, खोज, समस्या-समाधान और आलोचनात्मक चिंतन के अवसर प्रदान करते हुए *एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022* में दिए गए

सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करना होगा। अधिगम प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए शिक्षकों को गतिविधियों, अनुभवों, सामग्री और शैक्षणिक विधि को एक साथ समावेशित करने की आवश्यकता है।

दक्षताएँ

इसमें बच्चे को विद्यालय में प्राप्त होने वाले ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के साथ घर पर प्राप्त होने वाले अनुभवों को भी समेकित करने पर बल दिया गया है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी बच्चों को अपने पाठ्यचर्या लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उपयुक्त सीखने के अवसर प्राप्त हों, प्रत्येक पाठ्यचर्या लक्ष्यों के लिए दक्षताओं को प्राप्त करने की अपेक्षा की जाती है। जब दक्षता प्राप्त कर ली जाती है, तो इसका अर्थ है कि बच्चा पाठ्यचर्या में प्रगति कर रहा है। (बालवाटिका के क्षेत्र, पाठ्यचर्या के लक्ष्यों और दक्षताओं को समझने के लिए अनुलग्नक 1 देखें।)

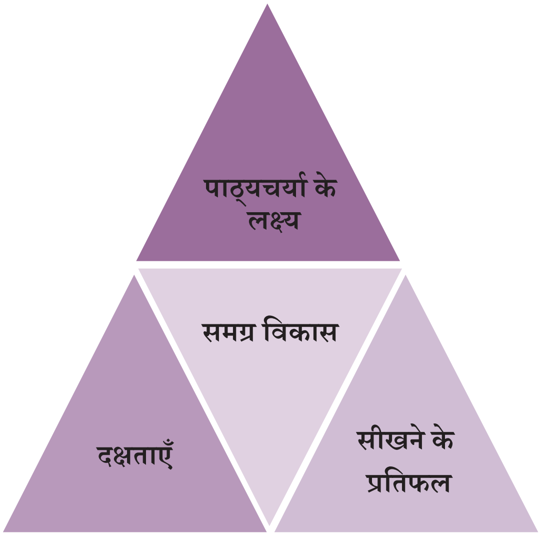

सीखने के प्रतिफल

सीखने के प्रतिफल गतिविधियों के अंत तक प्राप्त होने वाले अपेक्षित प्रतिफल हैं। ये देखने योग्य और मापने योग्य होते हैं। बालवाटिका के लिए *एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022* में सीखने के प्रतिफलों को परिभाषित किया गया है। सीखने के प्रतिफलों से इसके लिए सामग्री की योजना बनाने और व्यवस्थित करने, शैक्षणिक विधि तय करने और पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है। बालवाटिका के प्रतिफलों को एक सुलभ, स्पष्ट और सुनियोजित शैक्षणिक विधि के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

बच्चे का समग्र विकास पाठ्यचर्या के लक्ष्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है और सभी आपस में संबंधित हैं।

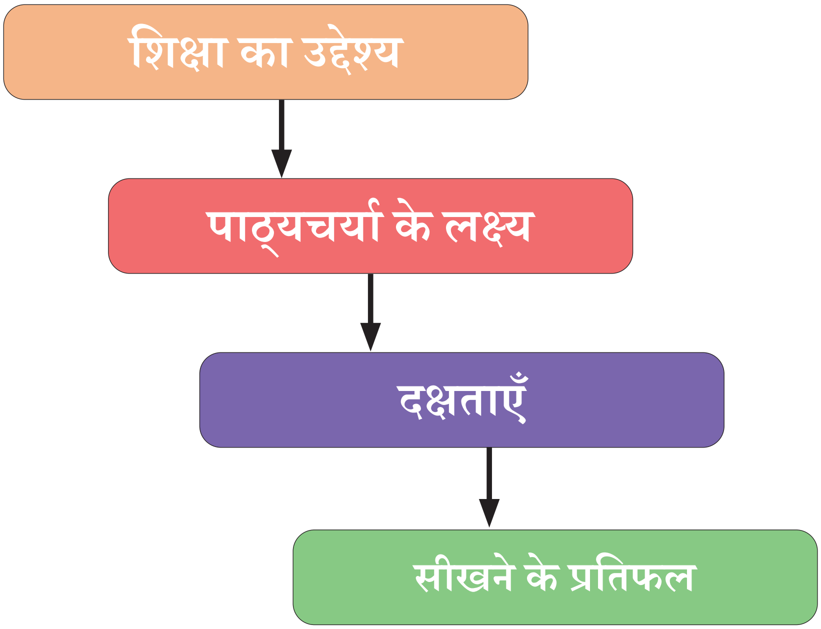

पाठ्यचर्या में निम्नलिखित पाठ्यचर्या के लक्ष्यों के माध्यम से विकास के सभी क्षेत्रों को संबोधित किया जाता है

तालिका 1— बालवाटिका के लिए पाठ्यचर्या लक्ष्य

प्रक्षेत्र	पाठ्यचर्या के लक्ष्य
अन्नमय कोष (भौतिक और गत्यात्मक विकास)	पाठ्यचर्या लक्ष्य–1 बच्चों में ऐसी आदतों का विकास करना, जो कि उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित बनाए रखें पाठ्यचर्या लक्ष्य–2 बच्चों में संवेदी कुशाग्रता का विकास करना पाठ्यचर्या लक्ष्य–3 बच्चों में स्वस्थ शरीर और लचीलेपन का विकास
मनोमय कोष (सामाजिक-भावात्मक और नैतिक विकास)	पाठ्यचर्या लक्ष्य–4 बच्चों में भावात्मक बुद्धिमता विकसित करना; जैसे अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देने में समर्थ होना पाठ्यचर्या लक्ष्य–5 बच्चों में उत्पादक कार्य तथा सेवाओं के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना पाठ्यचर्या लक्ष्य–6 बच्चों में अपने आसपास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना
विज्ञानमय कोष (संज्ञानात्मक विकास)	पाठ्यचर्या लक्ष्य–7 अवलोकन तथा तार्किक सोच के साथ अपने आस-पास की समझ बनाना पाठ्यचर्या लक्ष्य–8 बच्चों में गणितीय समझ विकसित करना और उनमें मात्रा, आकार और मापन के माध्यम से दैनिक गतिविधियों की समझ बनाना
विज्ञानमय कोष (भाषा और साक्षरता का विकास)	पाठ्यचर्या लक्ष्य–9 बच्चों में दैनिक अंत: क्रियाओं हेतु दो भाषाओं में प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करना पाठ्यचर्या लक्ष्य–10 बच्चों में भाषा 1 (एल1) में पढ़ने एवं लिखने में धारा प्रवाह का विकास करना पाठ्यचर्या लक्ष्य–11 बच्चों का भाषा 2 में पढ़ने एवं लिखने की शुरुआत करना
आनंदमय कोष (सौंदर्यशास्त्र और सांस्कृतिक विकास)	पाठ्यचर्या लक्ष्य–12 बच्चों में दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताओं तथा संवेदनाओं का विकास करना, अर्थपूर्ण और आनंदपूर्ण तरीकों से कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करना
उपर्युक्त पाठ्यचर्या संबंधी लक्ष्यों के अतिरिक्त, सीखने की सकारात्मक आदतें एक अन्य संगत लक्ष्य है।	
सीखने की सकारात्मक आदतें	पाठ्यचर्या लक्ष्य– 13 औपचारिक शिक्षण वातावरण जैसे विद्यालय की कक्षा में सहभागिता हेतु बच्चों में सीखने की अच्छी आदतों का विकास करना

टिप्पणी—

बालवाटिका में संदर्भ और उपयोग के लिए इस संदर्शिका के भाग 2 में पाठ्यचर्या के सभी लक्ष्यों और दक्षताओं के लिए सुझाई गई गतिविधियाँ दी गई हैं।

बालवाटिका 1, 2 और 3 के पाठ्यचर्या लक्ष्यों और सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने हेतु विकास के प्रत्येक क्षेत्र के लिए निम्नलिखित दक्षताएँ विकसित करने की आवश्यकता है—

- ***शारीरिक विकास या अन्नमय कोष और प्राणमय कोष*** को संयुक्त रूप में समझा जाना चाहिए। इसमें शारीरिक बोध और सभी संवेदी धारणाओं को सक्रिय भागीदारी द्वारा सीखना शामिल है।

दक्षताएँ, जैसे– निर्णय लेना और समस्या समाधान; स्वस्थ आदतें, साफ़-सफ़ाई, आत्म सुरक्षा हेतु स्वच्छ आदतें और स्वच्छता के प्रति जागरूकता का विकास; स्वाद, गंध, दृष्टि, ध्वनि और स्पर्श के लिए संवेदी विकास के अवसर; स्थूल गत्यात्मक कौशल का विकास (चलना, दौड़ना, कूदना, उछलना, रेंगना, चढ़ना, लयबद्ध गति, फेंकना, चढ़ना, पकड़ना); स्थूल और सूक्ष्म दोनों तरह की मांसपेशियों को मज़बूत करने और नेत्र-हस्त समन्वय को विकसित करने के लिए बारीक गत्यात्मक कौशल और आँखों तथा हाथों का आपस में समन्वय (थ्रेडिंग, फाड़ना, चिपकाना, लिखना, खींचना, रँगना, छपाई, मोल्डिंग, कागज़ मोड़ना) आदि शारीरिक गत्यात्मक विकास में शामिल हैं।

- **सामाजिक-भावात्मक और नैतिक विकास या *मनोमय कोष*** में अपनी भावनाओं के प्रति सजग होना और उन्हें कुशलता से संयमित करना शामिल है। इस प्रकार भारतीय परंपराओं की दृष्टिसे और शोध के अनुसार सामाजिक-भावात्मक और नैतिक विकास का आयाम विकास के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभर कर सामने आया है।

मनोमय कोष विकसित करने की दक्षताओं में शामिल हैं— स्वयं और दूसरों के बारे में जागरूकता; सकारात्मक स्व-संकल्पना का विकास; आत्म-नियमन; समाज सम्मत व्यवहार का विकास, जैसे– दूसरों का ध्यान रखना, साझा करना, सहयोग, करुणा और दूसरों की भावनाओं तथा अधिकारों के प्रति सम्मान; अच्छी आदतों का विकास, पहल करना, गतिविधियों में शामिल होना; सुरक्षा और विश्वास की भावना का विकास; सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीके, दृढ़ता, स्वतंत्रता और नेतृत्व में अपने व्यवहार और भावनाओं को नियंत्रित करने की क्षमता; बूढ़े लोगों, विशेष आवश्यकता और नि:शक्तों के प्रति सहानुभूति और मानवता के दृष्टिकोण का विकास; कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की भावना; एक अच्छा इंसान और देश का नागरिक बनने के लिए पर्यावरण, पेड़-पौधों, जानवरों, पक्षियों आदि की देखभाल और पालन-पोषण करना आदि।

संज्ञानात्मक विकास या विज्ञानमय कोष— मानव अनुभव के संज्ञानात्मक और सचेत पक्षों के साथ सार्थक रूप से जुड़ने पर बल देता है। **विज्ञानमय कोष (संज्ञानात्मक विकास)** विकसित करने की दक्षताओं में शामिल हैं—

संवेदी विकास	• दृष्टि • ध्वनि • स्पर्श • गंध • स्वाद
संज्ञानात्मक कौशल	• अवलोकन • पहचान • स्मृति • पैटर्न का मिलान • वर्गीकरण • अनुक्रमिक सोच • अन्वेषण • जिज्ञासा • समीक्षात्मक सोच • समस्या समाधान • तर्क • प्रयोग • रचनात्मक सोच
संकल्पना निर्माण	रंगों की संकल्पना: आकृतियों की संकल्पना **संख्यापूर्व संकल्पनाएँ** ▪ आकार की संकल्पना (बड़ा/छोटा) ▪ लंबाई की संकल्पना (लंबा/छोटा) ▪ भार की संकल्पना (भारी/हल्का) ▪ मोटाई की संकल्पना (मोटी/पतली) ▪ चौड़ाई की संकल्पना (चौड़ा/सँकरा) ▪ द्रव्यमान अथवा मात्रा की संकल्पना ▪ दूरी की संकल्पना (दूर/निकट) ▪ स्थान की संकल्पना, समय की संकल्पना ▪ तापमान की संकल्पना ▪ पर्यावरण से संबंधित संकल्पनाएँ ▪ जैविक (पशु, फल, सब्ज़ियाँ, भोजन) ▪ भौतिक (जल, वायु, ऋतु, सूर्य, चंद्रमा, दिन और रात) ▪ सामाजिक (स्वयं, परिवार, परिवहन, त्योहार, सामुदायिक
गणितीय कौशल	**संख्या बोध का विकास करना** ▪ एक का एक से संबंध ▪ संख्या-वस्तु संबंध ▪ गिनो और बताओ कितने ▪ अंकों की पहचान करना ▪ कही गई बात को समझना (20 तक की संख्या के आगे गिनती कर सकते हैं।)
भाषा और साक्षरता कौशल	**बात करना और सुनना** ▪ ध्यान-अवधि और सुनना ▪ रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और बात-चीत ▪ भाषा और रचनात्मक सोच ▪ शब्द-भंडार का विकास **आकस्मिक पठन** ▪ मुद्रण की जागरूकता और अर्थ निकालना ▪ किताबों से जुड़ाव ▪ दिशात्मकता

	▪ पढ़ने का नाटक करना ▪ ध्वनियों के प्रति सजगता ▪ अक्षर बोध/पहचान **लेखन उन्मुखता** ▪ आँखों और हाथों का समन्वय, उपयुक्त उपकरणों का उपयोग ▪ निशान बनाना अथवा लिखना ▪ लेखन अथवा ड्राइंग के माध्यम से रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति **द्वितीय भाषा से परिचय**
प्रौद्योगिकी का उपयोग	श्रवण, अवलोकन, रचनात्मक अभिव्यक्ति, संकल्पना निर्माण आदि।

आनंदमय कोष कला और संस्कृति के माध्यम से 3 से 6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों को उत्कृष्ट रूप में संबोधित करता है। इस प्रकार, बाल विकास में सौंदर्य और सांस्कृतिक विकास के आयाम को शामिल करते हुए बालवाटिका शैक्षिक अनुभव को समग्र और संपूर्ण संपूर्ण बनाती है

आनंदमय कोष को विकसित करने की दक्षताओं में शामिल हैं— कला और शिल्प द्वारा सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास (लयात्मक गति, भूमिका निभाना, नाटकीकरण, संगीत और गत्यात्मकता); पर्यावरण में रंग और सुंदरता के प्रति संवेदनशीलता; सुंदरता की सराहना; खुशी और आत्म-संतुष्टि के लिए रचनात्मक सोच का विकास, जैसे– मुक्त उत्तरीय प्रश्न, काल्पनिक चिंतन, रचनात्मक तुकबंदी, कहानियाँ, प्रकृति की सैर, कक्षा में प्रदर्शन आदि।)

विकास के आयामों पर आधारित उपरोक्त पाठ्यचर्या लक्ष्यों के अलावा, 'सकारात्मक सीखने की आदतों का विकास करना' बुनियादी चरण के लिए एक और महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

सीखने की सकारात्मक आदतों को विकसित करने के लिए दक्षताओं में शामिल हैं— नियमित उपस्थिति, समय की पाबंदी, कक्षा की गतिविधियों में भाग लेना और भागीदारी, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना, दूसरों की बात सुनना, दूसरों के दृष्टिकोण का सम्मान करना, नेतृत्व करना, समय पर कार्य को पूरा करना (कार्य पर दृढ़ता), सीखने के लिए सीखना जैसी आदतें आदि।

टिप्पणियाँ—

- बेहतर समझ के लिए एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के अनुसार बालवाटिका के लिए प्रक्षेत्रों, पाठ्यचर्या के लक्ष्यों और दक्षताओं का विवरण अनुलग्नक 1 में दिया गया है।
- बालवाटिका कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन के लिए बालवाटिका के प्रशिक्षकों और शिक्षकों दोनों को सभी प्रक्षेत्रों, पाठ्यचर्या के लक्ष्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों से परिचित होने की आवश्यकता है।

अध्याय 2

बच्चे को समझना

बच्चा कौन है?

सीखने की प्रक्रिया बच्चे के जन्म से पहले ही माँ के गर्भ में शुरू हो जाती है। हर बच्चे में सीखने की भरपूर क्षमता होती है और उसे अपने स्वयं के सीखने में सक्षम माना जाता है। जब बच्चे तीन साल के होते हैं तब तक वे शारीरिक गतिविधियों पर नियंत्रण विकसित करना शुरू कर देते हैं; वे चल सकते हैं, बात कर सकते हैं, अपने आप खा सकते हैं, छोटी-छोटी चीज़ें चुन सकते हैं आदि। वे अपने आस-पास के वातावरण की खोज करना शुरू कर देते हैं। वे अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ मेल-जोल करना शुरू करते हैं तथा अपनी आवश्यकताओं, पसंद और नापसंद को संप्रेषित करने के लिए भाषा और कार्यों का अनुकरण करते हैं और उनका उपयोग भी करते हैं।

जैसे-जैसे बच्चे तीन वर्ष की आयु तक पहुँचते हैं, तो अपने आप ही अधिक स्वायत्तता और अलगाव की चिंता को सहन करने की क्षमता प्रदर्शित करने लगते हैं।

बच्चे चार वर्ष की आयु तक आते आते एक सुरक्षात्मक और सुरक्षित वातावरण के अंदर खेल-आधारित सीखने के अनुभवों और सर्वांगीण विकास के अवसरों के लिए उच्च स्तर की परिपक्वता और तत्परता का प्रदर्शन करना शुरू कर देते हैं। वे सीखने के लिए बेहद जिज्ञासु और उत्सुक होते हैं और भाषा के माहौल में तल्लीन रहने पर मौखिक रूप में एक से अधिक भाषा भी सरलता से सीख सकते हैं।

अपने आस-पास की दुनिया को समझने के लिए वे आश्चर्य करते हैं, सवाल करते हैं, अन्वेषण करते हैं, खोज करते हैं। वे अपनी जिज्ञासा के लिए, खोज करना और अधिक सीखना जारी रखते हैं। वे सहज रूप से संगीत, तुकबंदी और ताल पर प्रतिक्रिया देते हैं। इस आयु वर्ग के बच्चे अनेक प्रकार की मौखिक क्षमता का प्रदर्शन करते हैं तथा पढ़ना, लिखना और तर्क देना शुरू कर देते हैं।

तीन से छह वर्ष की आयु के बच्चों को भाषा, संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावात्मक, शारीरिक और गत्यात्मक विकास तथा रचनात्मक और सौंदर्य क्षमताओं के विकास के लिए उन्हें खेल-आधारित सीखने के अवसरों की आवश्यकता होती है।

बच्चे होते हैं—

- जिज्ञासु
- सक्रिय
- सक्षम
- अपने स्वयं के अधिगम में सक्षम
- सीखने में रुचि
- आंतरिक रूप से प्रेरित
- स्वार्थरहित

बच्चे कैसे सीखते हैं?

प्रत्येक बच्चे में अपने माहौल से नई चीज़ें सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। बच्चे गतिविधि और खेल के माध्यम से सबसे अच्छी तरह सीखते हैं। वे मूर्त (Concrete) वस्तुओं से अधिक सीखते हैं, चीज़ों को उलटने-पलटने से जुड़े उनके शुरुआती अनुभव, अन्वेषण और प्रयोग के माध्यम से तथा अपने मौजूदा ज्ञान के आधार से सीखते हैं और

बच्चे के सीखने के विभिन्न तरीके

- अवलोकन और मॉडलिंग
- खेलना
- स्वयं के कार्य व अनुभव द्वारा
- चीज़ों को उलट-पलट कर देखना
- खोज करना
- प्रयोग करना
- नकल करना व दोहराना

अपनी सोच के अनुसार अनुभव करते हैं तथा उनमें समय के साथ तर्क कौशल का विकास होता है। विचार और चिंतन की इन सतत प्रक्रियाओं से बच्चे बाहरी दुनिया के बारे में अपनी समझ को और अधिक बनाते हैं। एक बार जब बच्चे शालापूर्व संगठन अथवा बालवाटिका जाना शुरू कर देते हैं, तो बच्चों के लिए इच्छुक रहना, प्रेरित रहना और सीखने में व्यस्त रहना महत्वपूर्ण होता है।

बच्चे खेल-खेल में सीखने के अनुभवों के माध्यम से सीखते हैं

- खेल बच्चों के सीखने का केंद्र होता है। खेल एक ऐसा माध्यम है, जिससे बच्चे अपने आस-पास के माहौल का पता लगाते हैं और दुनिया को अपने दृष्टिकोण से देखते व समझते हैं।
- बच्चे अपने आस-पास के भौतिक और सामाजिक परिवेश का पता लगाने के लिए अपनी ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करते हैं, जिसके वे अपनी इन इंद्रियों को परिष्कृत करते हैं और लोगों, स्थानों और चीज़ों के बारे में ज्ञान विकसित करते हैं।

बच्चे प्रतिक्रियाशील और सहज बात-चीत के माध्यम से सीखते हैं

- बच्चे अपने माता-पिता, परिवार, देखभाल करने वाले, शिक्षकों और समुदायों के साथ बात-चीत करके सीखते हैं। इन संबंधों के पोषण के परिणामस्वरूप वे आगे चलकर आशावादी, जिज्ञासु और संचारी व्यक्ति के रूप में विकसित होते हैं।
- बच्चों को जब अपनी परिकल्पना को प्रतिबिंबित करने, पहले से अनुमान लगाने, प्रश्न पूछने और परीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तो उनमें उच्च स्तर की सोच, कौशल और मूल्यों का विकास होता है।

बच्चे विभिन्न रूपों की कला, संगीत और हाव-भाव के माध्यम से सीखते हैं

- कला, संगीत, नृत्य और नाटक से बच्चों की कल्पना और रचनात्मकता को बढ़ावा देने में मदद मिलती है।
- कला, संगीत और हाव-भाव के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करने, अन्वेषण करने, सुधार करने और समस्या समाधान, रचनात्मक सोच और ज्ञान के अनुप्रयोग में संलग्न होने के अवसर मिलते हैं।
- कला और संगीत से बच्चे भावनाओं को व्यक्त करते है, जिससे उन्हें अत्यधिक ऊर्जा के उपयोग के अवसर मिलते हैं।

बच्चे दिनचर्या और बदलाव के माध्यम से सीखते हैं

- कक्षा और घर में रोज़ाना एक जैसी दिनचर्या या कार्यक्रम का पालन करने से बच्चों को घर में होने वाली बातों का अनुमान लगाने में मदद मिलती है। पहले से ही अनुमान लगा पाने से बच्चों में स्वयं पर नियंत्रण करने की क्षमता बढ़ती है, जिससे वे निर्णय लेते हैं कि दिन के समय में वे क्या कर सकते हैं या क्या नहीं कर सकते।
- दिन की निर्धारित दिनचर्या के बीच बदलाव होता रहता है (जब गतिविधियों में परिवर्तन होता है, स्थान अर्थात, घर के अंदर या बाहर या कभी-कभी कुछ कारणों से

शिक्षक बदलते हैं।) और इसमें कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए। ये बदलाव बच्चों में नवीनता लाते हैं, नई चीजें सीखने के पर्याप्त अवसर और नए उत्साह का संचार करते हैं।

बच्चे अपने आस-पास के परिवेश के माध्यम से सीखते हैं

- बच्चे अपनी ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से अपने परिवेश का पता लगाते हैं; वे स्वाभाविक रूप से जानने के लिए उत्सुक रहते हैं और उन्हें अपने आस-पास का पता लगाने, प्रयोग करने, चीज़ों को उलट-पलट करने, चीज़े बनाने और सीखने के अवसरों की आवश्यकता होती है।
- बच्चों की सोच उनके प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से लोगों, वस्तुओं और वास्तविक जीवन की स्थितियों के बारे में समझ से विकसित होती है।
- बच्चे अपने स्वयं के अनुभवों और सांस्कृतिक व्यवस्था के साथ-साथ अपनी स्वयं की विकासात्मक क्षमताओं के आधार पर अपने स्वयं के विचार, रुचियाँ और मान्यताएँ बनाते हैं।

दृश्य-श्रव्य अधिगम [देखना, सुनना, पढ़ना, लिखना और गतिज (काइनेस्टेटिक) अधिगम की शैलियाँ]

देखकर सीखने वाले बच्चे चित्रों, मॉडलों, वास्तविक जीवन से जुड़ी वस्तुओं, फिल्मों को पसंद करते हैं और जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, वे सीखने के लिए आरेखों, प्रवाह चार्टों, ग्राफों आदि के उपयोग में रुचि लेने लगते हैं। दृश्य सहायक सामग्री का उपयोग करके संकल्पनाओं को समझना देखकर सीखने वाले बच्चों के लिए सहज होता है।

सुनकर सीखने वाले बच्चे सुनने में आनंद लेते हैं; वे विचार-विमर्श, शिक्षक के नेतृत्व वाली बात-चीत, संगीत, कविताएँ, कहानियाँ सुनना और फिल्मों के ऑडियो पहलुओं को पसंद करते हैं। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, वे पाठों और व्याख्यानों को सुनने के माध्यम से सीखने में आनंद लेते हैं।

पढ़ने-लिखने वाले बच्चे मुद्रित सामग्री को पसंद करते हैं, जैसे– चित्र पढ़ना, कहानी पढ़ना, पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तिकाएँ, आदि। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, वे व्याख्यान, पठन सामग्री, लेखन कार्य, व्याख्यान नोट्स आदि में रुचि लेने लगते हैं।

गतिज (काइनेस्टेटिक) बच्चे ज्ञानेन्द्रियों के संयोजन का आनंद लेते हैं, जैसे कि जीवन के अनुभव, सिम्युलेटेड एक्शन, भूमिका निभाने, फील्ड ट्रिप, प्रदर्शन, वास्तविक जीवन से जुड़े इसी तरह के प्रकरण व उदाहरण आदि में रुचि लेने लगते हैं।

बच्चों के बीच व्यक्तिगत अंतर को समझना

यूँ तो सभी बच्चे विकास के समान क्रमानुसार आगे बढ़ते हैं, फिर भी प्रत्येक बच्चा अद्वितीय होता है और अपनी गति से क्षमताओं और कौशलों को विकसित करता है। प्रत्येक बच्चे की शारीरिक बनावट, आवश्यकताएँ, रुचियाँ, कौशल, संज्ञानात्मक क्षमताएँ, सीखने की शैली, सामाजिक-भावात्मक परिपक्वता, व्यवहार में अंतर, योग्यता, दृष्टिकोण, मूल्यों और नैतिक

संरूप में व्यक्तिगत अंतर को देखा जा सकता है। व्यक्तिगत मतभेद कई कारणों से होते हैं, जैसे– जेंडर, आनुवंशिकता, जन्म की प्रक्रिया, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, जीवन के अवसर और जीवन के प्रतिकूल अनुभव। अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों को बच्चों की व्यक्तिगत भिन्नताओं से परिचित होना चाहिए।

अलग-अलग अनुदेश

सभी बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार उनके अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया को वैयक्तीकृत करना चाहिए। अलग-अलग बच्चों के लिए विषय-वस्तु, सीखने के तरीके व सामग्री और मूल्यांकन की विधा अलग-अलग हो सकती हैं। वैसे यह ज्यादा बच्चों वाली बड़ी कक्षा में करना कठिन है, लेकिन उचित योजना के साथ यह कार्य किया जा सकता है। इसके लिए बच्चों का सूक्ष्म रूप से अवलोकन करें और उनके बारे में अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठा करें, जैसे– वे एक-दूसरे के साथ कैसे बात-चीत करते हैं, किसी विशेष खेल को क्यों चुनते हैं, उनके बीच किस तरह की बात-चीत होती है, सामग्री के साथ कैसे काम करते हैं, मौखिक भाषा का प्रयोग और लिखित भाषा में शब्दों का उपयोग कैसे करते है और फिर विभेदित निर्देश की योजना बनाएँ, उदाहरणार्थ– तितलियों के बारे में एक सत्र की योजना बनाते समय, बच्चों के एक समूह हेतु तितलियों पर एक कहानी की किताब का उपयोग किया जा सकता है, दूसरे समूह के लिए एक छोटी ऑडियो-विज़ुअल क्लिप, तीसरे समूह के लिए एक दिलचस्प तितली पहेली और चौथे समूह के लिए एक तितली मॉडल को लिया जा सकता है।

अलग-अलग अनुदेश के लिए उपयोग की जाने वाली अधिगम शिक्षण की सामग्री

- फ्लैश कार्ड
- फ्लिप चार्ट
- कठपुतली*
- मास्क
- मॉडल

***(i) रिसाइकल करने योग्य**— कहानी के लिए सामग्री, जैसे– आइसक्रीम स्टिक कठपुतलियाँ, प्लास्टिक की बोतलें, सीडी, पर्दे की छड़ें आदि का उपयोग किया जा सकता है।

***(ii) विभिन्नता**— विभिन्न प्रकार की कठपुतली, जैसे– अँगुली कठपुतली, छड़ी की कठपुतली, छड़-कठपुतली, दस्ताना-कठपुतली, जुर्राब कठपुतली, छाया-कठपुतली, स्ट्रिंग-कठपुतली, पेपर बैग-कठपुतली आदि का उपयोग किया जा सकता है। कुछ कठपुतलियों के उदाहरण अनुलग्नक 2 में दिखाए गए हैं।

शिक्षक जब यह समझ बना रहे हैं कि बच्चे कैसे सीखते हैं, तो उन्हें बच्चों के विकासात्मक रूप के उपयुक्त अभ्यासों को भी ध्यान में रखना चाहिए।

विकासात्मक रूप से उपयुक्त तरीके

टिप्पणियाँ

विकासात्मक रूप से उपयुक्त तरीकों के अभ्यास करने से शिक्षकों को पाठ्यचर्या, सामग्री, गतिविधियों, पद्धतियों के साथ-साथ मूल्यांकन के बारे में निर्णय लेने में मदद मिलती है। विकासात्मक रूप से उपयुक्त प्रविधियाँ आयु-उपयुक्त, विकासात्मक रूप से उपयुक्त और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ की दृष्टि से भी उपयुक्त होती हैं।

आयु के लिए उचित	विकासात्मक रूप से उपयुक्त	सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के अनुकूल
ऐसी गतिविधियाँ जो बच्चों की समान कालानुक्रमिक आयु या परिपक्वता के लिए उपयुक्त हों।	वे तरीके, जिनसे प्रत्येक बच्चे के अधिकतम विकास और सीखने को बढ़ावा मिलता है।	सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ समाज में मौजूद परंपराएँ, आदतें, पैटर्न और मान्यताएँ दर्शाते हैं।

बाल विकास के सिद्धांत और अधिगम

बालवाटिका कार्यक्रम को लागू करते समय शिक्षकों को निम्नलिखित सिद्धांतों पर विचार करना चाहिए। ये सिद्धांत बच्चों के विकास और अधिगम की आवश्यकताओं को समझने के लिए एक मार्गदर्शक की तरह हैं।

- बच्चे के जीवन के आरंभिक वर्षों को आजीवन विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण वर्ष माना जाता है। पिछले दशक में तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में किए अनुसंधान और विशेष रूप से मस्तिष्क पर किए शोध से प्रमाण मिलते हैं कि, जीवन के इन आरंभिक वर्षों की इन 'महत्वपूर्ण अवधियों' में मस्तिष्क में सिनैप्टिक कनेक्शन और मस्तिष्क की क्षमता का पूर्ण विकास हो जाता है।
- विकास और अधिगम कुछ ऐसी गतिशील प्रक्रियाएँ हैं, जो बच्चे के जैविक लक्षणों और उनसे जुड़े पर्यावरण के संयुक्त प्रभावों पर आधारित हैं, ये दोनों परस्पर संबंधित होती हैं। आनुवंशिकी मस्तिष्क की संरचना के काम करने के तरीके में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, ये अक्सर बच्चे के शुरुआती अनुभव होते हैं, जो यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण होते हैं कि मस्तिष्क अंततः कैसा आकार लेगा।
- बाल विकास के सभी प्रक्षेत्रों (डोमेन) के साथ-साथ अधिगम के तरीकों का समान महत्व होना चाहिए; वे इसे प्रभावित करते हैं और एक-दूसरे से प्रभावित भी होते हैं।
- वैसे तो सभी बच्चे विकास के समान क्रम के अनुसार विकसित होते हैं, फिर भी प्रत्येक बच्चा अद्वितीय होता है और अपनी गति से क्षमताओं और कौशलों को प्राप्त करता है। मतभेद विभिन्न कारकों के कारण हो सकते हैं, जैसे– वंशानुगत कारक, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शहरी-ग्रामीण अंतर, अनुभव में गुणवत्ता या इसकी कमी, रीति-रिवाज और परंपराएँ आदि।
- प्रत्येक बच्चे की अपनी सीखने की शैली होती है।
- बच्चों का विकास रटकर सीखने से नहीं होता है, बल्कि उनके पर्यावरण के सक्रिय अन्वेषण और चीज़ों के साथ काम करने के माध्यम से होता है। इस प्रकार खेल और गतिविधि उनके सीखने के लिए सबसे अच्छा माध्यम बनते हैं।
- खिलौनों और सामग्रियों (कम लागत वाली, स्वदेशी तथा बिना लागत वाली सामग्री) का उपयोग करने से सीखने के अवसरों को बढ़ाया जा सकता है।

टिप्पणियाँ

- जब बच्चे परस्पर क्रियात्मक प्रक्रियाओं में व्यस्त होते हैं तो उनके सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है। वे एक-दूसरे के साथ, वयस्कों के साथ और अपने पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं के साथ बात-चीत के दौरान संज्ञानात्मक और सामाजिक रूप से बहुत कुछ हासिल करते हैं।
- बच्चे अपने माता-पिता, परिवार, देखभाल करने वालों, शिक्षकों और समुदायों के साथ अपने संबंधों से सीखते हैं। बच्चों को रिश्तों के निभाने से उनमें सुरक्षा-भाव, आत्मविश्वास, जिज्ञासा और संप्रेषण की क्षमता का विकास होता है। इन रिश्तों और बातचीत से बच्चों को यह सीखने में मदद मिलती है कि कैसे अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना है और सामाजिक रूप से उचित तरीकों से दूसरों से जुड़ना है।
- एक अनुकूल वातावरण जहाँ बच्चे अपनापन महसूस करते हैं, तथा ऐसा महसूस करते हैं कि उनके पास कार्य करने का एक उद्देश्य तथा स्वतंत्रता है, इनसे बच्चों में सीखने की प्रेरणा को बढ़ावा मिलता है।
- शैक्षणिक प्रक्रियाओं को इस तरह से चुना जाना चाहिए कि संकल्पनाओं और विषयों को बच्चे एकीकृत तरीके से सीख सकें।
- बच्चों को जब चुनौतीपूर्ण अवसर, उनकी वर्तमान क्षमता से अधिक व नए कौशल का अभ्यास करने के अवसर दिए जाते हैं तो उनके विकास और सीखने में वृद्धि होती है।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या घर की भाषा होनी चाहिए। बच्चों की मातृभाषा या घर की भाषा शिक्षण का माध्यम हो, इस संकल्पना को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बच्चों के आरंभिक वर्षों के लिए सबसे उपयुक्त तरीके के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। यदि मातृभाषा के रूप में एक से अधिक भाषाएँ हैं, तो अभिव्यक्ति के लिए कक्षा में जितनी भाषाएँ हैं, उतनी भाषाएँ उपयोग करने की अनुमति दे सकते हैं। बाद में उन बच्चों को धीरे-धीरे स्कूल की भाषा से परिचित करवा सकते हैं। सभी बच्चों को भारतीय सांकेतिक भाषा से परिचित करवाने की आवश्यकता है। इससे समावेशन की नींव रखने में मदद मिलती है।
- जब प्रौद्योगिकी और इंटरेक्टिव मीडिया को उचित रूप से उपयोग किया जाता है तो ये सीखने की प्रक्रिया में मूल्यवान उपकरण साबित हो सकते हैं।
- माता-पिता और परिवार की भागीदारी से बच्चों के सीखने और विकास में योगदान मिलता है। बालवाटिका कार्यक्रम में शालापूर्व अथवा स्कूलों के साथ-साथ घर में भी परिजनों से सहयोग और भागीदारी की अनुशंसा की जाती है।

विधियाँ और सामग्री

बालवाटिका में कार्य करने वाले शिक्षकों को खेल की गतिविधियों के माध्यम से अधिगम के अनुभव को ठोस रूप में प्रदान करना चाहिए ताकि बच्चे अधिगम की इस प्रक्रिया में निष्क्रिय प्राप्तकर्ता न बनकर बल्कि सक्रिय भागीदार बन सकें।

बालवाटिका में शिक्षण विधि

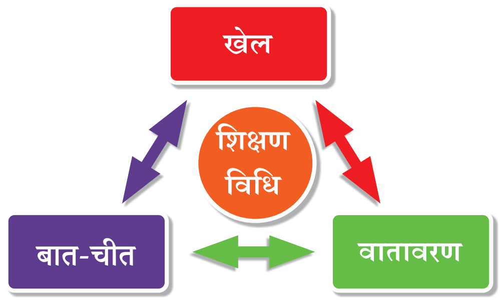

बालवाटिका में प्रयोग की जाने वाली शिक्षण विधि खेल और गतिविधि आधारित होनी चाहिए। बच्चे खेल कर सीखते हैं। वे परिवार और आस-पड़ोस में वयस्कों, भाई-बहनों और साथियों के साथ बात-चीत करते हैं। वे पर्यावरण में सामग्री और वस्तुओं का उपयोग करते हैं और उनके माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते हैं।

बच्चे खेल के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। खेल से उन्हें अपने आस-पास की दुनिया का पता लगाने और समझने में मदद मिलती है और इससे सामाजिक संबंधों के निर्माण में मदद मिलती है। खेल के माध्यम से बच्चे यह प्रदर्शित करते हैं कि वे क्या सीख रहे हैं, वे किसमें रुचि रखते हैं और वे किस बारे में और जानना चाहते हैं। जब बच्चे खेल गतिविधियों में संलग्न होते हैं तो उनकी ज्ञानेन्द्रियों का विकास होता है। उनके भाषा कौशल में वृद्धि होती है और रचनात्मकता प्रकट होती है। इसलिए बचपन में शिक्षा प्रदान करने के लिए खेल एक प्रभावी माध्यम बन जाता है।

- बालवाटिका में प्रयुक्त शिक्षण विधि को आयु और विकासात्मक रूप से उपयुक्त प्रथाओं को अपनाना चाहिए।
- शिक्षणि विधि में बच्चों के शारीरिक, भाषा और सामाजिक कौशल को बढ़ावा देने के साथ-साथ बच्चों में अवलोकन, प्रयोग, समस्या-समाधान और रचनात्मकता जैसी अधिगम की प्रक्रियाओं के विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षण विधि ऐसी विधि होनी चाहिए, जिसमें प्रत्येक बच्चे का व्यक्तिगत ध्यान और सतत मूल्यांकन की सुविधा प्रदान की जा सके।
- मूल्यांकन विधि, शिक्षण विधि का एक अभिन्न अंग होनी चाहिए। समूह और व्यक्तिगत गतिविधियों में बच्चों का अवलोकन करने से शिक्षक को तत्काल और सटीक प्रतिक्रिया प्राप्त होती है।

इसमें बच्चों को 'कैसे सीखें' सीखने में मदद करने पर फोकस होना चाहिए। ई.सी.सी.ई. में प्रयुक्त शिक्षण विधि को आत्मविश्वास के साथ सुनने, बोलने और लिखने की क्षमता को प्रोत्साहित करने वाला होना चाहिए। समय के साथ, अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया को उच्च स्तरीय संवाद, विचार एवं प्रश्न कौशलों को प्रोत्साहित करना चाहिए। सभी प्रयासों को बच्चों को 21वीं सदी के बच्चों के रूप में विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए।

शिक्षण विधियाँ

बच्चों में अधिगम को बढ़ाने के आशय से शिक्षण किया जाना चाहिए।

(i) पंचपदी— पाँच चरणों वाली प्रक्रिया

पंचपदी हमारी पारंपरिक समझ है कि कैसे एक बच्चा ज्ञान को ग्रहण करता है और आत्मसात करता है और वह ज्ञान का उपयोग और प्रचार किस प्रकार करता है।

पंचपदी		
1.	**अधीति (परिचय)**	शिक्षक, बच्चे के पूर्व ज्ञान के साथ संबंध स्थापित करके एक नई संकल्पना अथवा विषय का परिचय देते हैं।
2.	**बोध (वैचारिक समझ)**	बच्चे विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मूल संकल्पनाओं को समझने का प्रयास करते हैं।
3.	**अभ्यास**	बच्चे संकल्पनाओं की अपनी समझ को मजबूत करने के लिए विभिन्न गतिविधियों में संलग्न तथा व्यस्त होते हैं।
4.	**प्रयोग**	बच्चे अर्जित समझ को अपने दैनिक जीवन में लागू करते हैं।
5.	**प्रसार (विस्तार)**	बच्चे बात-चीत, गीतों, कहानियों, खेलों, किताबें आदि के माध्यम से अर्जित समझ को दूसरों तक पहुँचाते हैं।

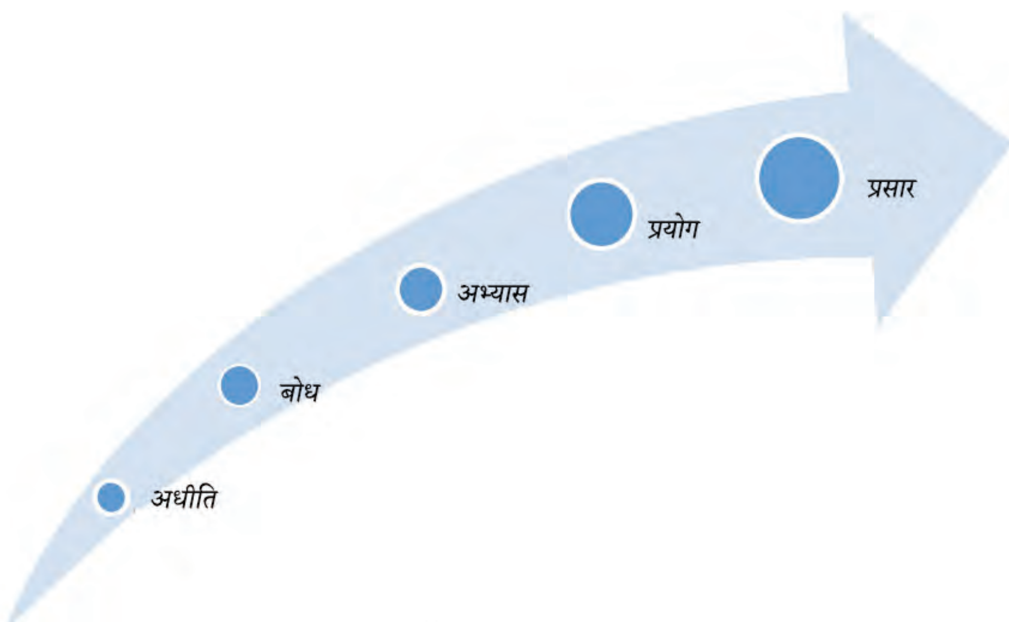

इससे बच्चे के अधिगम के प्रगतिशील विकास को एक संकल्पना के परिचय से लेकर अंत में विभिन्न स्थितियों में संकल्पना का उपयोग करने में सक्षम होने का संकेत मिलता है।

उदाहरण 1— फलों से संबंधित गतिविधि

अधीति (परिचय)	लाइव मॉडल (Working Model), पिक्चर कार्ड, चार्ट का उपयोग और बच्चों से फलों के बारे में जानकारी, उनकी विशेषताएँ, जैसे– आकार, रंग, गंध, स्वाद और उनके सेवन के तरीकों के बारे में बात करें।
बोध (वैचारिक समझ)	फलों के आकार, आकृति, बीज, पेड़-पौधे जिनसे वे आते हैं, इनके स्वाद में अंतर, उनके उपयोग आदि के बारे में विस्तार से चर्चा करें कि फल एक-दूसरे से कैसे भिन्न होते हैं।
अभ्यास	बच्चे ड्रॉइंग, पेंटिंग, कविता गायन का अभ्यास करते हैं, कहानियाँ सुनते हैं और बार-बार फलों पर निर्देशित बात-चीत करते हैं।
प्रयोग	बच्चे अध्यापक की मदद से फलों को काटते और खाते हैं, फलों की चाट बनाते हैं। अन्य खाद्य पदार्थों में फलों का उपयोग बार-बार करते हैं।
प्रसार (विस्तार)	बच्चे फल के बारे में बात करते हैं, समझाते हैं कि वे फलों के बारे में क्या समझते हैं, विभिन्न फलों में अंतर को जानते और सीखते हैं तथा साथियों अथवा माता-पिता को समझाते हैं।

उदाहरण 2— रंगोली बनाने की गतिविधि

अधीति (परिचय)	शिक्षक द्वारा रंगोली बनाने की विधि का प्रदर्शन। बच्चों को प्रदर्शन से यह समझने में मदद मिलती है कि रंगोली, जैसे– चॉक, पाउडर रंग, कंटेनर आदि बनाने में किस सामग्री का उपयोग किया जाता है। बच्चे रंगोली बनाने की विधि और सामग्री को देखेंगे और समझेंगे।
बोध (वैचारिक समझ)	बच्चे रंगोली बनाने का प्रयास करेंगे। वे चित्र बनाकर और फिर रंग भरने की प्रक्रिया को समझेंगे। इससे उनमें आकृतियों और रंगों की वैचारिक समझ आती है।
अभ्यास	बच्चे गतिविधि को समझने के बाद दोहराते हैं और उन्हें दरवाज़े के अग्रभाग, पूजा कक्ष के सामने और कागज़ों पर बनाकर उनका अभ्यास करते हैं, उपयोग की जाने वाली सामग्री को याद करते हैं।
प्रयोग	अन्य स्थितियों में रंगोली बनाने के कौशल का उपयोग करें, उदाहरण के लिए— कागज़ पर चित्र बनाना; रंगोली डिज़ाइन के साथ वॉल हैंगिंग बनाना; रंगोली के साथ पूजा कक्ष जैसे आंतरिक स्थान पर डिजाइन करना।
प्रसार (विस्तार)	बच्चे अपने साथियों और परिवार के सदस्यों को रंगोली बनाकर प्रदर्शित करते हैं।

टिप्पणियाँ

बच्चों को सीखने में मदद करने के लिए अन्य विचार– समर्थन देना (स्केफोल्डिंग) और धीरे-धीरे ज़िम्मेदारी से मुक्त होना

समर्थन देना (स्केफोल्डिंग) का अर्थ है कि निर्देश के दौरान समर्थन देना, संरचना और मार्गदर्शन प्रदान करना है। इस 'उत्तरदायित्व को धीरे-धीरे मुक्त करने' (जीआरआर) के माध्यम से प्रदान किया जा सकता है, जहाँ पहले शिक्षक, विचारों या कौशलों के मॉडल की व्याख्या करते हैं; जिसके बाद बच्चे और शिक्षक उन्हीं विचारों और कौशलों पर एक साथ काम करते हैं, जहाँ शिक्षक निर्देशित सहायता प्रदान करता है; और अंत में बच्चे व्यक्तिगत रूप से और स्वतंत्र रूप से अभ्यास करते हैं।

(ii) समर्थन देना (स्केफोल्डिंग) और धीरे-धीरे ज़िम्मेदारी से मुक्त होना

उत्तरदायित्व के क्रमिक समर्थन देना (स्केफोल्डिंग) का पालन करने के लिए गतिविधियों की योजना बनाई और डिज़ाइन की जा सकती है।

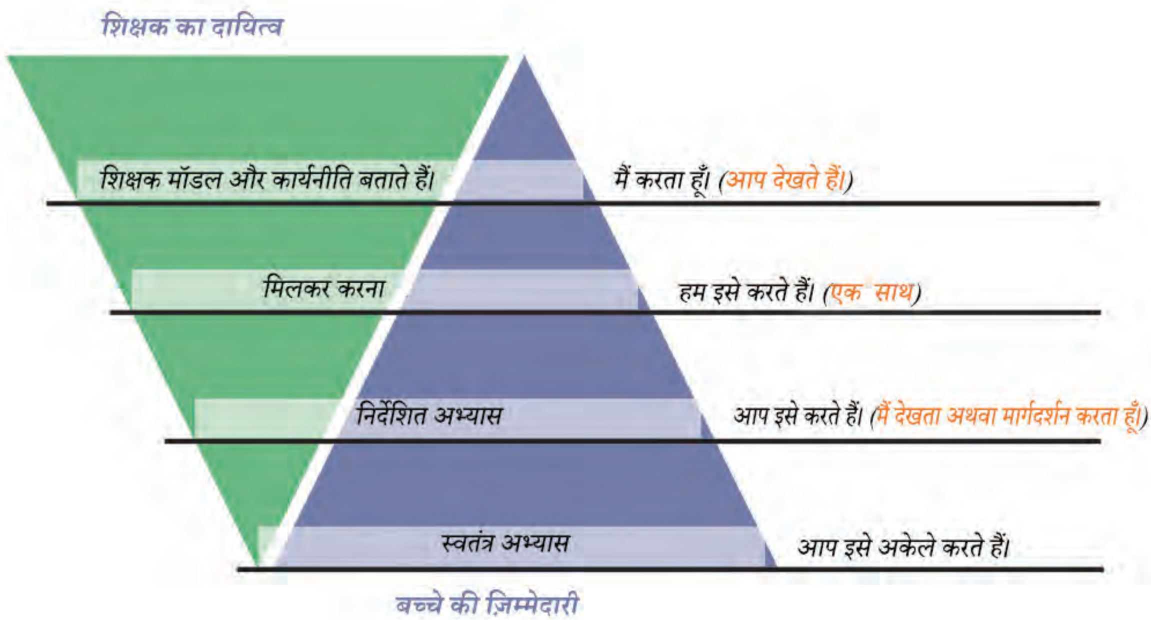

उत्तरदायित्व के क्रमिक स्केफोल्डिंग की प्रक्रिया

चरण 1– मैं करता हूँ— शिक्षक मुख्य विचारों या कौशलों को प्रदर्शित कर उनकी व्याख्या या मॉडल प्रस्तुत करता है।

चरण 2– हम करते हैं— शिक्षक और बच्चे मिलकर विचारों या कौशलों पर काम करते हैं।

चरण 3– आप करते हैं— बच्चे स्वतंत्र रूप से विचारों या कौशलों का अभ्यास या कार्य करते हैं।

टिप्पणी— शिक्षक अपने संदर्भ के अनुसार इस प्रक्रिया को चुन सकते हैं कि उनके लिए सबसे अच्छा क्या है और तदनुसार बालवाटिका के बच्चों के लिए वे अपनी अधिगम की योजना बनाएँ।

शैक्षणिक उपागम

विषय की प्रकृति के आधार पर ई.सी.सी.ई. में कई शैक्षणिक उपागमों का उपयोग किया जाता है, और बच्चों के स्तर पर विषयवस्तु-आधारित उपागम, परियोजना-आधारित उपागम, खेल-आधारित उपागम, गतिविधि-आधारित उपागम और कहानी-आधारित उपागम का उपयोग किया जा सकता है।

(क) विषय-वस्तु-आधारित उपागम

बच्चों की शिक्षा एकीकृत और समग्र तरीके से होती है और इसे गणित, भाषा या पर्यावरण अध्ययन में विभाजित नहीं किया जाता है। 'विषयगत उपागम' या 'एकीकृत उपागम' में सभी विषयों को एकीकृत करने और सभी विकासात्मक डोमेन में गतिविधियों को व्यवस्थित करने की संभावनाएँ प्रदान की जाती हैं। शिक्षक आयु-उपयुक्त विषयों, जैसे– मैं, परिवार, पौधे, जानवर, परिवहन, पक्षी आदि तय करते हैं और अधिगम की सुविधा के लिए उन विषयों के आस-पास की गतिविधियों की योजना बनाते हैं। शिक्षक, संकल्पनाओं का निर्माण करने और अधिगम को खेल और गतिविधि आधारित बनाने के लिए कहानियों, कविताओं, निर्देशित बात-चीत, खेल, नाटक, रोल प्ले (भूमिका निभाना) आदि का उपयोग करते हैं।

नीचे परिवहन विषय-वस्तु का एक उदाहरण दिया गया है। इसे विभिन्न उप-विषयों जैसे परिवहन के प्रकार, परिवहन के उपयोग आदि को 1 माह तक कक्षा में लिया जा सकता है, प्रत्येक बिंदु को एक सप्ताह की अवधि में विस्तार से कवर किया जाता है। शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में शिक्षकों द्वारा इसी तरह की योजनाएँ तैयार की जा सकती हैं, ताकि कुछ संकल्पनाओं के लिए इस उपागम का उपयोग करते हुए गतिविधियाँ की जा सकें।

'यातायात के साधन' विषय का एक उदाहरण

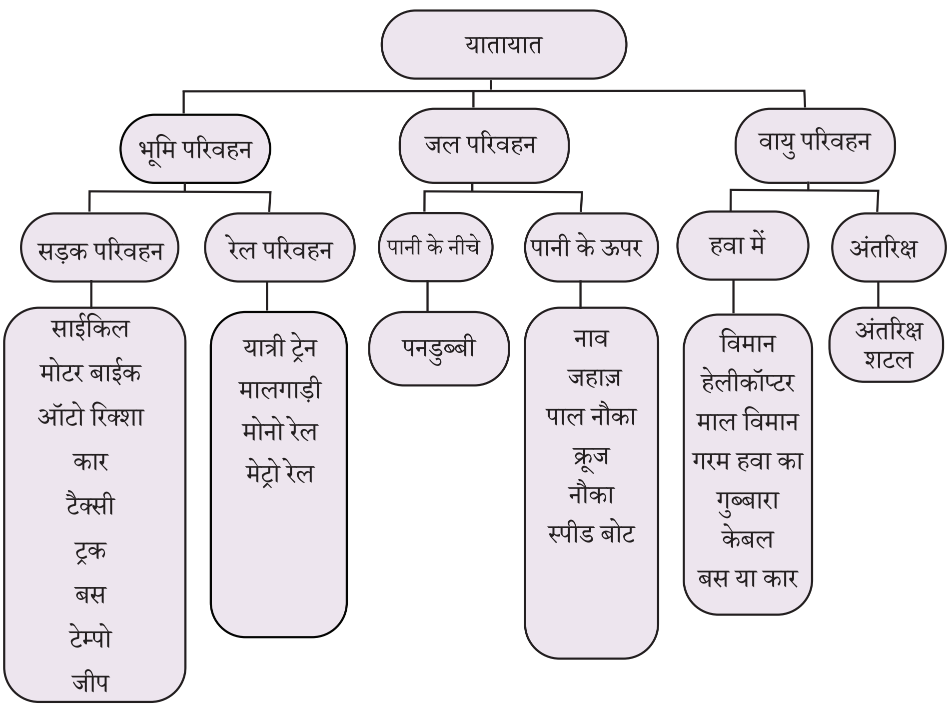

बच्चों को बेहतर सीखने में मदद करने के लिए निम्नलिखित तरीकों का उपयोग करें—

- स्वतंत्र और निर्देशित बात-चीत
- कहानी सुनाना
- खिलौनों (स्वदेशी, स्थानीय और संगत) का उपयोग
- गीत और कविताएँ
- संगीत एवं गतिमान क्रियाएँ
- कला और शिल्प
- घर के अंदर खेले जाने वाले खेल
- घर के बाहर खेले जाने वाले खेल
- प्रकृति में और उसके साथ समय बिताना
- भ्रमण
- प्रार्थना हेतु आंतरिक चक्र
- अर्ध चक्र (एक साथ भोजन करने के लिए)
- जन्मदिन समारोह
- त्योहार समारोह
- वार्षिक दिवस समारोह
- प्रकृति की सैर
- बालशिविर अथवा बच्चों के लिए कैंप
- बाल मेला

'यातायात के साधन' पर एक सुझावात्मक साप्ताहिक और दैनिक कार्यक्रम के लिए अनुलग्नक IV और V को देखें।

(ख) खेल-आधारित उपागम

बच्चे खेल के माध्यम से सबसे अच्छी तरह से सीखते हैं। उन्हें ऐसी खेल गतिविधियों में शामिल किया जाना चाहिए जो उनके विकासात्मक स्तर के लिए न तो बहुत चुनौतीपूर्ण हों और न ही बहुत सरल हों। शिक्षकों द्वारा खेल-आधारित दृष्टिकोण में प्रेरक सामग्री और गतिविधियाँ प्रदान की जाती हैं और चुनी गई गतिविधियाँ उनकी उम्र और रुचि के अनुसार होती हैं। शिक्षक की भूमिका एक सुविधाप्रदाता की होती है। बच्चों को इस दृष्टिकोण से लाभ प्रदान करने में सक्षम बनाने के लिए, शिक्षकों को सीखने के अवसरों को देखने और पहचानने और उपयोग के लिए खेल सामग्री उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। खेल-आधारित उपागम सीखने में मदद करता है। बच्चे खिलौनों, ब्लॉकों, भूल-भुलैया, पहेलियों आदि के साथ खेलकर कई तरह की संकल्पनाओं को सीखते हैं। वे गणितीय संकल्पनाएँ, जैसे– आकार, आकृति, गिनती करना आदि सीखते हैं।

खेल गतिविधियों में कहानी सुनाना, कविताएँ, बाहरी गतिविधियाँ और खेल, भाषा और संज्ञानात्मक विकास के लिए अंदर खेले जाने वाले खेल, नाटक, कठपुतली का खेल, रेत का खेल, पानी का खेल, रचनात्मक कला गतिविधियाँ, डोमिनोज़, कार्ड, पहेलियाँ और चार्ट जैसी शिक्षक-निर्मित सामग्री के साथ मुक्त खेल (फ्रीप्ले) गतिविधियाँ, उदाहरण के लिए— गुड़िया का खेल, ब्लॉकों, मोतियों, खिलौनों आदि के साथ खेलना शामिल हैं।

(ग) गतिविधि-आधारित उपागम

गतिविधि-आधारित शिक्षा एक प्रकार की शिक्षण विधि है, जहाँ बच्चे विभिन्न पर्यवेक्षित गतिविधियों के माध्यम से अपनी गति से सीखते हैं। यह खेल के माध्यम से अधिगम पर केंद्रित है। यहाँ, शिक्षक दक्षताओं और कौशलों को विकसित करने के लिए अंत:क्रियात्मक गतिविधियों और खेलों का उपयोग करते हैं। यदि बच्चों को एक उद्दीपन युक्त अधिगम के माहौल में स्वयं का पता लगाने के लिए निर्देशित किया जाता है, जिसमें शिक्षक केवल एक सहायक के रूप में काम करता है, जिससे अधिगम अधिक आनंददायक और लंबे समय तक चलने वाला होता है।

जब शिक्षक बच्चों को शामिल करते हुए एक गतिविधि का आयोजन करते हैं, तो वे निर्देशों का पालन करना सीखते हैं और गतिविधि में विभिन्न चरणों को समझते हैं और इसमें शामिल पूरी प्रक्रिया से अवगत होते हैं।

उदाहरण 1— गतिविधि– कोलाज बनाना

बच्चों को रंगीन कागज़ के टुकड़े या पुराने अखबार या प्रकृति की सैर में एकत्रित सामग्री, जैसे– पत्ते, फूल, टहनियाँ आदि को चार्ट पेपर पर फाड़कर चिपकाने को कहें। गतिविधि करते समय बच्चे एक-दूसरे के साथ मिलकर और छोटे-छोटे समूहों में काम करना सीखते हैं।

उदाहरण 2— खेल– क्या कमी है?

मेज पर कुछ वस्तुएँ रखें। बच्चों को मेज के पास बिठाएँ। बच्चों को एक-एक करके बुलाएँ और उन्हें वस्तुओं के नाम बताने को कहें। फिर एक बच्चे से अपनी आँखें बंद करने और फिर कोई एक वस्तु निकालने को कहें। बच्चे से अपनी आँखें खोलने को कहें और उससे अनुपस्थित वस्तु का नाम पूछें।

(घ) परियोजना या पूछताछ-आधारित उपागम

परियोजना या पूछताछ-आधारित शिक्षा तब होती है, जब बच्चे वास्तविक दुनिया के विषय की गहन जाँच करते हैं। यह एक पूछताछ-आधारित जाँच है, जिसे बच्चों के छोटे समूहों या पूरी कक्षा द्वारा या कभी-कभी किसी एक बच्चे द्वारा भी किया जाता है। शिक्षक कुछ ओपन-एंडेड ट्रिगर (खुले सिरे वाले उद्दीपन) प्रदान करता है और फिर बच्चों का अवलोकन करते हैं, उनकी कहानियों को सुनते हैं, उनके प्रश्नों को देखते हैं कि वे गतिविधि को कैसे आगे बढ़ाते हैं, उनकी रुचि के स्तर पर ध्यान देते हैं और बच्चों के साथ चर्चा करते हैं।

परियोजना या पूछताछ-आधारित उपागम के चरण

चरण 1– परियोजना की शुरुआत

बच्चे पौधों, पानी, जानवरों आदि जैसे विभिन्न विषयों का पता लगाते हैं और एक विषय तय करते हैं, जिसे वे अपनी परियोजना के लिए आगे खोज-बीन करना चाहते हैं। बच्चे विभिन्न प्रकार के माध्यम, जैसे– ड्रॉइंग, कोलाज का काम, मॉडल बनाना आदि के माध्यम से अपनी कहानियों को प्रस्तुत करते हैं और कक्षा के साथ साझा करते हैं।

तब इसके बाद बच्चे इस पर विचार-मंथन करते हैं और दस्तावेज़ बनाते हैं कि वे पहले से क्या जानते हैं और परियोजना के माध्यम से क्या खोजना और सीखना चाहते हैं।

चरण 2– जाँच और अनुसंधान

बच्चे चयन किए गए विषय पर अनुसंधान करते हैं, पहले से अनुमान लगाते हैं, चीज़ें जमा करते हैं, अन्वेषण करते हैं और उन वस्तुओं की जाँच व जानकारी प्राप्त करते हैं। बच्चे अपनी खोजों का प्रेक्षणात्मक चित्र बनाते हैं और विशेषज्ञों, शिक्षकों और माता-पिता से इसकी जानकारी प्राप्त करते हैं।

चरण 3– परियोजना की पूर्णता

बच्चे अपने काम को प्रदर्शित करके दूसरे बच्चों को अपनी सीखी चीज़ों के बारे में बताते हैं। परियोजना-आधारित शिक्षा के माध्यम से, बच्चे कला, गणितीय संकल्पनाओं, वैज्ञानिक सोच से जुड़ते हैं और प्रौद्योगिकी का पता लगाना सीखते हैं, उनकी भाषा और साक्षरता में विकास होता है और वे टीमों के साथ में काम करना सीखते हैं, अपने विचारों को एक-दूसरे के साथ साझा करना सीखते हैं।

उदाहरण– *भौतिक पर्यावरण से संबंधित संकल्पना विकसित करना– 'जल'* पर परियोजना बनाएँ, बच्चों को प्रकृति भ्रमण पर ले जाएँ। उन्हें पौधों, पेड़ों, पक्षियों, जानवरों, झीलों, पहाड़ियों आदि को देखने के मौके दें। बच्चों को यह चुनने दें कि वे क्या जाँच करना चाहते हैं या किस बारे में अधिक जानना चाहते हैं, उदाहरण के लिए— यदि वे पानी पर एक परियोजना करना चुनते हैं, तो चर्चा करें कि वे पानी के बारे में पहले से क्या जानते हैं, जिसमें घर पर जीवन में पानी के सामान्य उपयोग, पानी का महत्व, दैनिक जीवन में पानी की बचत आदि शामिल हैं। ड्राइंग तथा संबंधित चित्रों आदि के माध्यम से अपने विचारों को रिकॉर्ड करने में बच्चों की मदद करें। उनसे पूछें कि वे पानी के बारे में और क्या जानना चाहते हैं। वे अपने अवलोकन, समझ और जिज्ञासा के आधार पर पानी से जुड़े प्रश्न पूछ सकते हैं,

टिप्पणियाँ

जैसे– पानी कहाँ से आता है? यह हम तक कैसे पहुँचता है? हमें घर में या अपने इलाके के लोगों के लिए, भविष्य में उपयोग के लिए पानी का बचाव कैसे करना चाहिए? पानी को कैसे साफ किया जाता है और पानी को पीने योग्य कैसे बनाया जाता है? सड़क पर पानी की पोखर क्यों सूख जाती हैं? अब भ्रमण की योजना बनाएँ और बच्चों को पानी के जलाशय अथवा बाँध या झील पर ले जाएँ जहाँ पानी जमा होता है, बिजली का उत्पादन होता है, वर्षा जल-संचयन किया जाता है आदि, ताकि उनमें अनुभव का विस्तार हो सके। उन्हें चित्र, टीवी कार्यक्रम या वीडियो क्लिप आदि भी दिखाए जाएँ। उन्हें स्कूल में दूसरों के सामने अपने मॉडल या नई सीख प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करें। उनके माता-पिता को भी आमंत्रित करें। परियोजना शुरू होने से पहले बच्चों ने जो कुछ सीखा था, उसकी तुलना करने में उनकी मदद करें। उन्हें अपनी परियोजना की कहानी साझा करने के लिए डिस्प्ले बनाने दें।

परियोजना में कई क्षेत्र दौरे, प्रौद्योगिकी का उपयोग और क्षेत्र में संगत लोगों के साथ साक्षात्कार, अवलोकन आदि शामिल हो सकते हैं। परियोजना की अवधि चुने गए विषय और विवरण के अनुसार भिन्न हो सकती है।

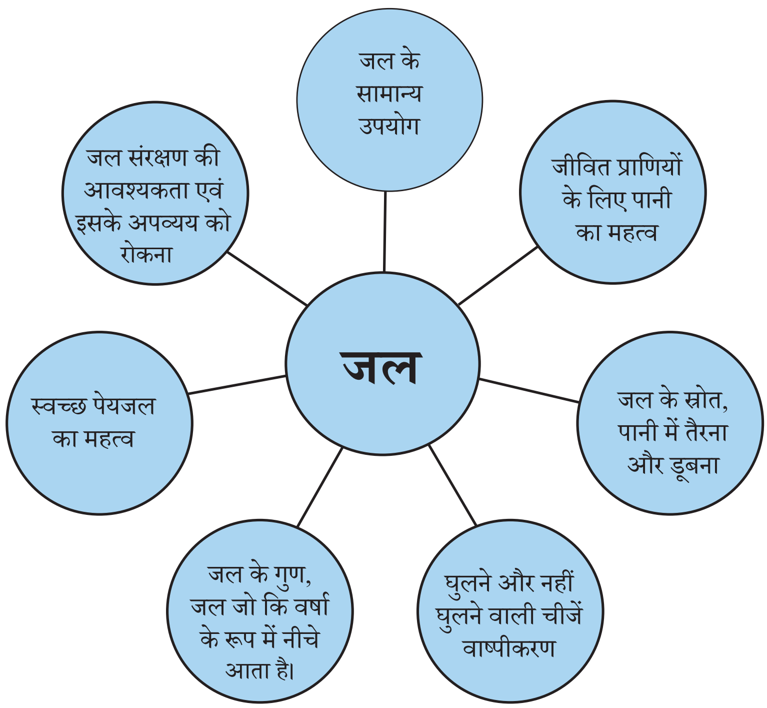

(ङ) कहानी-आधारित उपागम

कहानी सुनाना शिक्षण विधि में दिया एक महत्वपूर्ण तरीका है जिससे बच्चे अपनी कल्पना को विकसित करते हैं। कहानी सुनाना भाषा सीखने को बढ़ावा देता है, बच्चों के लिए एक मनोरंजक तरीके से भाषा सुनने के लिए एक भागीदारी और गहन अनुभव बनाता है। कहानियाँ सुनते समय बच्चे बिना किसी सीमा के अपने मन में कहानी का दृश्य बना लेते हैं। इससे उनकी रचनात्मकता का विकास होता है।

कहानी-आधारित अधिगम के लाभ

- रचनात्मकता और कल्पनाओं को उद्दीपित किया जाता है
- मूल्यों को स्थापित किया जाता है
- सांस्कृतिक जागरूकता को विकसित किया जाता है
- सुनने के कौशल को बढ़ावा मिलता है
- शब्दावली और भाषा कौशल विकसित होते हैं
- स्मृति तेज़ होती है

कहानी सुनाने की कुछ युक्तियाँ

- कहानी की योजना अच्छी तरह से बनाएँ
- सरल भाषा का प्रयोग करें, जिसे बच्चे समझ सकें
- बच्चों के साथ आँख से संपर्क बनाए रखें
- आवाज़ में भाव के अनुसार उतार-चढ़ाव लाएँ
- बच्चों को अपने शब्दों में कहानी फिर से सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें
- बच्चों को स्वयं कहानी बनाने के मौके दें या अनुमान लगाने दें कि आगे क्या होगा
- बच्चों की रुचि को बनाए रखने के लिए कठपुतलियों, कहानी की किताबों, कहानी कार्डों आदि का उपयोग करें
- बच्चों को वास्तविक या नकली वस्तुओं का उपयोग करते हुए कहानी के पात्रों का अभिनय करने दें।

(च) खिलौना-आधारित उपागम

खिलौना-आधारित उपागम शिक्षण-अधिगम का एक उपागम है जो 'खेल-खिलौने के माध्यम से' अधिगम पर आधारित है। खिलौना आधारित शिक्षण विधि में स्थानीय, स्वदेशी, लोकप्रिय खिलौनों और कठपुतलियों का उपयोग किया जाता है, जिनके साथ बच्चे खेलना, जैसे कि लट्टू, गुड़िया, झुनझुने, पतंग, नृत्य और गायन कठपुतलियाँ आदि पसंद करते हैं।

खिलौने खेलने से बच्चों में मूल्य और कौशल विकसित होते हैं। खेल-खिलौनों के माध्यम से बच्चों में साझा करने, सहानुभूति, प्यार, देखभाल आदि के मूल्य और निर्णय लेने, टीम-निर्माण, समस्या समाधान जैसे कौशल विकसित किए जाते हैं। यह देखा गया है कि सभी चरणों में उपयुक्त खिलौनों के साथ शिक्षण-अधिगम बच्चों की वृद्धि और विकास में सहायक होता है।

खिलौना-आधारित अधिगम के लाभ

बच्चे विकसित करते हैं—

- गत्यात्मक कौशल
- आँखों और हाथों का समन्वय
- समस्या समाधान करने की कुशलताएँ
- कल्पना करना
- कारण और प्रभाव में संबंध जानना
- प्रयोग करना
- रचनात्मक अभिव्यक्ति
- सौंदर्य बोध
- आनंद का भाव

(छ) चयनशील उपागम

चयनशील उपागम एक तरह से कई उपागमों का एक संयोजन है। शिक्षक, अपने संदर्भ में सुझाए गए तरीकों के संयोजन को चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। इसके उपयोग से एक संतुलित कार्यक्रम तैयार किया जाएगा। ऐसे दृष्टिकोणों में बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति प्रतिक्रिया करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों की वैचारिक पद्धतियों को एकीकृत किया जाता है। दिन का कार्यक्रम शिक्षक द्वारा शुरू की गई नियोजित गतिविधियों और बच्चे द्वारा शुरू किए गए मुक्त खेल के बीच बाँटा गया है, जिससे वे स्व-प्रेरित तरीके से सीखने की ओर अग्रसर होते हैं।

सीखने-सिखाने के अनुभवों के संचालन में याद रखने योग्य बातें

- बच्चों को बहु-संवेदी अनुभव प्रदान करें, क्योंकि प्रत्येक बच्चे के सीखने की शैली अलग-अलग होती है।
- बच्चे विषम समूहों में हमेशा एक-दूसरे से सीखते हैं और इसलिए 21वीं सदी के कौशलों को हासिल करने के लिए मिलकर काम करने, आपस में सहयोग, तार्किक चिंतन की सुविधा प्रदान करने हेतु बहु-आयु समूहों का प्रबंधन करें।
- बच्चों में सीखने की सकारात्मक आदतों को बढ़ावा देने के लिए सीखने के माहौल को विकसित करें।
- बच्चों को समान अवसर प्रदान करते हुए जेंडर आधारित पूर्वाग्रह, जेंडर उदासीन कहानियों, गीतों, कविताओं का उपयोग कर जेंडर संबंधी रुढ़िवादिता को तोड़ें।
- घर में जेंडर संबंधी भेदभाव से बचने के लिए माता-पिता में जेंडर मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता का विकास।
- बालवाटिका में बच्चों के प्रवेश के लिए कोई प्रवेश परीक्षा अथवा माता-पिता से बातचीत आदि को स्थान न देना।
- बालवाटिका स्तर पर कोई औपचारिक शिक्षण, आकलन, गृहकार्य, शिक्षण आदि नहीं होना चाहिए।
- बच्चों में रटने की आदत को हटाना तथा बच्चे पर निष्पादन करने का दबाव नहीं डालें।

शिक्षण विधियों से जुड़ी कुछ अपेक्षाएँ

अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया के दौरान कुछ मुद्दे सामने आते हैं और पाठ्यचर्या के बेहतर कार्यान्वयन के लिए उन्हें संबोधित करने की आवश्यकता होती है। प्रारंभिक शिक्षा और विकास से संबंधित कुछ अपेक्षाएँ इस प्रकार हैं—

(i) व्यवहार संबंधी मुद्दों से निपटना

बच्चों के प्रत्येक समूह में कुछ ऐसे बच्चे होते हैं, जिनके व्यवहार संबंधी मुद्दे कक्षा में, असुविधाजनक और विघटनकारी हो सकते हैं। व्यवहार संबंधी कुछ मुद्दे बार-बार दोहराई जाने वाली आदतें हो सकती हैं, जैसे– नाखून चबाना, खुजलाना, नाक के आस-पास खुजलाना व पकड़ना और अन्य, जैसे– विनिवर्तन (विड्रॉन) व्यवहार, अतिसक्रिय व्यवहार, विनाशकारी व्यवहार, अत्यधिक रोना और बेचैनी जैसी अनुचित अभिव्यक्तियाँ और अन्य अधिक गंभीर व्यवहार विचलन, जैसे– आक्रामक व्यवहार और अन्य असामाजिक व्यवहार हो सकते हैं।

शिक्षकों को क्या करने की आवश्यकता है?

- शिक्षक को इन व्यवहारों को जल्द से जल्द पहचानने की कोशिश करनी चाहिए।
- शिक्षकों को अंतःक्रियात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए व्यवहार को ठीक करने के लिए सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान करने की आवश्यकता है, उदाहरण के लिए— गलत व्यवहार की आलोचना करने के बजाय सही अथवा अपेक्षित व्यवहार पर बल देना और उसकी सराहना करना।
- शिक्षक को बच्चों की आयु के अनुसार उपयुक्त व्याख्या देने की आवश्यकता है।
- शिक्षक को बच्चों के कार्य में सहायक होना चाहिए, प्रत्येक बच्चे को महत्व देना चाहिए और उन्हें नीचा न दिखाएँ।
- शिक्षक को संबंधित बच्चे की सहायता हेतु अन्य बच्चों का सहयोग लेने की आवश्यकता है।
- बच्चे की मदद करने हेतु शिक्षक को माता-पिता के साथ ताल-मेल बिठाने की आवश्यकता है।
- शिक्षक को बच्चे के परेशान करने वाले व्यवहार को कम करने के लिए बार-बार उसका ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता है।
- विनिवर्तित व्यवहार वाले बच्चे को उसकी सीमाओं के अनुसार गतिविधियों में शामिल होने दें, लेकिन बच्चे को किसी भी स्तर पर व्यस्त रखें।
- यदि संभव हो तो, शिक्षक इन बच्चों की बेहतर मदद करने के लिए विशेषज्ञों और शिक्षकों का परामर्श ले सकते हैं।

(ii) अधिगम में भिन्नता को सँभालना

बच्चों में सीखने की क्षमता और सीखने की शैली भिन्न-भिन्न होती हैं।

बहु-आयु समूह प्रबंधन

बहु-आयु समूहों से कक्षा में छोटे और बड़े दोनों बच्चों को लाभ होता है। ऐसे विषम समूहों में बच्चे एक-दूसरे से सीखते हैं और इस प्रकार सहकारी अधिगम होने से कौशल को सुगमता से हासिल किया जा सकता है। इसलिए बहु-आयु वर्ग के बच्चों का एक वर्ग उनसे और उनके लिए अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए प्रबंधित किया जा सकता है।

शिक्षकों को क्या करने की आवश्यकता है?

- इस बात पर ध्यान दें कि बच्चों को क्या सीखने की आवश्यकता है या वे जानकारी तक कैसे पहुँच पाएँगे।
- कुछ डिजाइन गतिविधियाँ काटें, जिससे बच्चा सामग्री को समझने या उसे प्राप्त करने हेतु उससे जुड़ा रहता है।
- उन परियोजनाओं को पूरा करें, जिनसे बच्चों को किसी विषय से सीखी गई बातों का पूर्वाभ्यास करने, लागू करने और विस्तार करने में सक्षमता हासिल होती है।
- बच्चों को अलग-अलग समूहों में काम करने की सुविधा दें, जैसे कि समान स्तर वाले बच्चों के साथ या मिश्रित समूहों के साथ, समान रुचियों वाले बच्चों के साथ या अलग-अलग रुचियों वाले बच्चों के साथ, ऐसे साथियों के साथ जो वे स्वयं करके सीखते हैं, किसी भी ढंग से सीखते हैं और अक्सर पूरी कक्षा को एक साथ में मिलाकर काम करवाते हैं।
- अलग-अलग क्षमताओं और आयु वाले बच्चों के पूरे समूह को दो समूहों में विभाजित करें। एक तरफ उभरती क्षमताओं वाले बच्चों का छोटा आयु समूह मुक्त रूप से खेल में शामिल हो और दूसरी ओर शिक्षक उच्च क्षमता वाले बच्चों के बड़े आयु वर्ग के साथ निर्देशित गतिविधियों का संचालन करें। फिर 30 मिनट की अवधि के बाद शिक्षक, बच्चों के छोटे आयु वर्ग के लिए निर्देशित गतिविधियों का संचालन कर सकते हैं, जबकि बड़े आयु वर्ग के बच्चों को मुक्त खेल से जोड़ें।

(iii) जेंडर संबंधी समानता सुनिश्चित करना और प्रोत्साहित करना

जेंडर संबंधी रुढ़ियों को तोड़ने के लिए शालापूर्व केंद्र इसका प्रारंभिक स्थान हो सकता है।

शिक्षकों को क्या करने की आवश्यकता है?

- लड़के, लड़कियों का समान ध्यान, सम्मान और समान अवसर प्रदान करें और उचित अपेक्षाएँ प्रदर्शित करें।
- जेंडर संबंधी पक्षपात रहित पुस्तकों, नाटकों और अन्य गतिविधियों का चयन करें।
- एक ही जेंडर को सीमित करने वाली भाषा से सदैव बचें और जेंडर तटस्थ भाषा का प्रयोग करें।।
- उन कहानियों, गीतों, गतिविधियों और सुविधा के साधनों का उपयोग करें, जो सभी तरह के व्यवसायों में पुरुषों और महिलाओं के समान भूमिकाओं में लड़कियों और

- लड़कों को चित्रित करते हैं, जिनमें कुछ विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हैं। इनमें महिलाओं और पुरुषों दोनों को नेता, नायक और समस्या समाधानकर्ता आदि के रूप में प्रकट होना चाहिए।
- घर पर इन प्रथाओं का समर्थन करने के लिए माता-पिता को नियमित रूप से जागरूक करें। भेदभाव को समझने और रोकने में उनकी मदद करना महत्वपूर्ण है

(iv) प्रारंभिक औपचारिक निर्देशों से बचें

बच्चों में ज्ञान, कौशल और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास पर शुरुआत से ही बहुत अधिक ध्यान देने से उनके सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होने, सीखने के स्वभाव, चिंतनशील होने, जिज्ञासु होने, आविष्कारशील होने, साधन संपन्न होने और समस्या-समाधान करने की उनकी क्षमता को नुकसान पहुँचता है।

शिक्षकों को क्या करने की आवश्यकता है?

- संकल्पनाओं के निर्माण, दक्षताओं और कौशल को सशक्त बनाने पर ध्यान दें।
- बच्चों को गतिविधियों और नई सामग्री या संकल्पनाओं के प्रति जिज्ञासा और रचनात्मक व्यवहार को प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करें।
- केवल रटने पर आधारित, शिक्षक द्वारा निर्देशित शिक्षा देने से बचें, जिसमें कोई सार्थक संदर्भ नहीं हो।
- बच्चों पर अनावश्यक दबाव न डालें।

(v) विकास संबंधी देरी और नि:शक्तता पर ध्यान देना

बच्चों में विकास संबंधी देरी का अर्थ है उनकी विकासात्मक उपलब्धियाँ प्राप्त करने में देरी होना। यह देरी किसी भी डोमेन या डोमेन के संयोजन में हो सकती है। विकासात्मक अक्षमता, जैसे– ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर, सेरेब्रल पाल्सी, बौद्धिक अक्षमता, दृश्य और श्रवण दोष होने से उनके विकास और सीखने में देरी होती है। शिक्षक को सभी तरह के विकासात्मक डोमेन में बच्चे की कार्यप्रणाली को समझने के लिए बच्चे का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करना चाहिए; बच्चे की दैनिक या साप्ताहिक टिप्पणियों का रिकॉर्ड रखें; माता-पिता और परिवार के साथ उनसे जुड़ी समस्याओं को साझा करें; बच्चे को उपयुक्त चिकित्सक के पास यह जाँचने के लिए भेजें कि क्या विकास संबंधी देरी या अक्षमता वास्तव में है या नहीं।

नि:शक्त बच्चों का समावेशन सावधानीपूर्वक सुनिश्चित करें। बच्चों में शिक्षा-अधिगम ऐसे माहौल में सबसे अच्छा होता है, जिस कक्षा में जाति, वर्ग, धर्म, जेंडर और क्षमता सहित सभी प्रकार की विविधता के साथ प्रत्येक बच्चे को एक समान, समावेशी और सराहनीय रूप से स्वीकार किया जाता है और उचित सम्मान दिया जाता है। प्रारंभिक हस्तक्षेप कई रूपों में पेश किया जा सकता है, उदाहरण के लिए— बोलने और भाषा चिकित्सा में श्रवण यंत्रों का उपयोग करते हुए सुनने में सुधार लाने में मदद मिल सकती है। इसी तरह फिजियोथेरेपी उन्हें बैठने, चलने, दौड़ने, कूदने, घिसटनें और संतुलन बनाने आदि के लिए गत्यात्मक कौशल के विकास में सहायता कर सकती है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए

- नि:शक्त बच्चों (दिव्यांग) की आवश्यकताओं को पूरा करें।
- उन्हें सभी गतिविधियों में शामिल करें।
- दूसरों बच्चों को उनकी मदद करने के लिए संवेदनशील बनाएँ।
- माता-पिता को सलाह दें और उनका मार्गदर्शन करें
- विशेष शिक्षक की सहायता लें और सलाह का पालन करें।

शिक्षक को क्या करने की आवश्यकता है?

- सभी बच्चों के प्रारंभिक विकास की जाँच कर उनकी क्षमताओं की पहचान करें।
- इन्हें जल्दी पहचानने और देखभाल के महत्व को समझें।
- यह सुनिश्चित करने के लिए भौतिक वातावरण में समायोजन करें कि यह बाधा मुक्त है।
- विभिन्न नि:शक्त बच्चों के लिए पाठ्यक्रम को लचीला और उनकी पहुँच योग्य सुलभ बनाएँ।
- उचित मूल्यांकन और मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों का उपयोग करें।
- उनकी क्षमता का निर्माण करें और सभी हितधारकों को अपने स्वयं के दृष्टिकोण पर फिर से विचार करने और यदि आवश्यक हो तो उन्हें बदलने की दिशा में काम करने के लिए सशक्त बनाएँ। नि:शक्त बच्चों के साथ काम करते समय धीरे-धीरे उन्हें सकारात्मक शब्दावली का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- आयु के अनुकूल खेल और अधिगम सामग्री का उपयोग करें।
- माता-पिता और समुदाय का संवेदीकरण, अभिविन्यास, प्रशिक्षण और परामर्श किया जाना चाहिए। स्तर पर बदलाव के लिए बच्चों को द्विभाषी या बहुभाषी सुगम वातावरण की आवश्यकता होती है।

(vi) सह-संबंध बनाना

जब बच्चे एक प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम से दूसरे प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम में जाते हैं तो निरंतरता की कमी का अनुभव करते हैं और इससे उनके अधिगम में बाधा उत्पन्न होती है और कभी-कभी उन्हें एक कक्षा दोहरानी पड़ती है या ड्रॉप-आउट हो जाते हैं। भौतिक सुविधाओं और शिक्षक की मौजूदगी दोनों के संदर्भ में बच्चों की भागीदारी, नामांकन, प्रतिधारण, उपलब्धि और प्रभावी संसाधनों के उपयोग को बढ़ाने के लिए आपसी सह-संबंध बनाना महत्वपूर्ण है।

सुचारु और सफल बदलाव के लिए

- बालवाटिका के शिक्षकों को कक्षा 1 और कक्षा 2 के शिक्षकों के साथ पाठ्यचर्या, संसाधनों के बँटवारे, मूल्यांकन आदि के संबंध में निरंतर बात-चीत करनी चाहिए।
- कक्षा 1 और कक्षा 2 के शिक्षकों के लिए संयुक्त प्रशिक्षण सत्र आयोजित होने चाहिए।।

सह-संबंधों को बढ़ावा देने के लिए कुछ प्रविधियाँ

- प्राथमिक विद्यालय के परिसर में या प्राथमिक विद्यालयों के निकट शालापूर्व केंद्र का प्रावधान करना, जैसा कि कुछ राज्यों अथवा संघ राज्य क्षेत्रों में आँगनवाड़ी को प्राथमिक विद्यालय परिसर के आस-पास ही स्थित किया गया हैं।
- इनके समय (बालवाटिका अथवा साथ में स्थित आँगनवाड़ी और प्राथमिक विद्यालय) को समकालिक बनाना ताकि छोटे बच्चे बड़े बच्चों के साथ स्कूल आ सकें और माता-पिता भी एक ही समय में आसानी से लाने और ले जाने का काम कर सकें।
- कक्षा 1 और कक्षा 2 के कक्ष के सेट-अप की योजना उसी तरह से बनाई जानी चाहिए जैसे कि शालापूर्व केंद्र में गतिविधि क्षेत्र, मुद्रित सामग्री से समृद्ध वातावरण और बच्चों के काम का प्रदर्शन।

- बैठने की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि इसमें बच्चों को बात-चीत करने और अनुभव साझा करने, समस्या समाधान कौशल विकसित करने, कौशल को उभारने, नियमों का पालन करने और सामाजिक और भावात्मक विकास प्राप्त करने की सुविधा मिल सके।
- शिक्षण और अधिगम के साथ-साथ परिचितता बनाए रखने में समान शैक्षणिक प्रक्रियाओं का उपयोग करें।
- स्कूल के समान भौतिक और सामाजिक-भावात्मक वातावरण (मूल संरचनाओं, संसाधनों, शिक्षक-बच्चे की बात-चीत आदि के संदर्भ में) को इनमें भी साझा करें।
- अगली कक्षा के शिक्षक के साथ बच्चों के पोर्टफोलियो को साझा करें ताकि उन्हें सीखने के बेहतर अवसर प्रदान किए जा सकें।
- प्राथमिक ग्रेड के साथ संसाधनों को साझा करने और संयुक्त गतिविधियों, जैसे– वार्षिक दिवस, खेल दिवस, ई.सी.सी.ई. दिवस का उत्सव, त्यौहार, बालमेला, वृक्षारोपण दिवस आदि आयोजित करने की आवश्यकता है। एक व्यवस्थापक द्वारा निगरानी और पर्यवेक्षण की व्यवस्था सरलता से की जा सकती है।

बालवाटिका उपकरण और सामग्री

बचपन की अवस्था में बच्चे बहुत सक्रिय होते हैं। वे हमेशा दौड़ते और कूदते-भागते रहते हैं। इसलिए, बालवाटिका में न केवल छोटे बच्चों को भाग-दौड़ करने की स्वतंत्रता देने के लिए इनडोर और आउटडोर दोनों जगह सुरक्षित वातावरण होना चाहिए, बल्कि बच्चों को उनके समग्र विकास के लिए चुनौतीपूर्ण और दिलचस्प सीखने के अनुभव प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरण और सामग्री भी होने चाहिए। बालवाटिका में बच्चों की मांसपेशियों के समन्वय, सामाजिक कौशल, भाषा, रचनात्मकता, कल्पना और अन्य संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास के लिए विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक या शिक्षक-निर्मित सामग्रियों की आवश्यकता होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक, बालवाटिका के लिए उपकरणों के चयन और सामग्री तैयार करने में अत्यंत सावधानी बरतें।

अधिगम-शिक्षण सामग्री में क्या शामिल हो?

बालवाटिका के लिए अधिगम-शिक्षण सामग्री (लर्निंग टीचिंग मेटेरियल यानी एल.टी.एम.) में विभिन्न तरह की सामग्री, जैसे– खरीदी गई सामग्री, स्थानीय रूप से निर्मित सामग्री, शिक्षकों द्वारा बनाई गई सामग्री और यहाँ तक कि बच्चों द्वारा बनाई गई सामग्री भी शामिल होती हैं। बच्चे जब अपनी कई ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करते हैं और सक्रिय रूप से अपने हाथों का उपयोग करते हैं तो बेहतर सीखते हैं। बच्चों के सीखने और खोजबीन करने के लिए उन्हें गिनती और संख्या जानने के लिए साधारण खिलौनों से लेकर विशिष्ट जोड़-तोड़ वाले खिलौनों तक, विभिन्न प्रकार की अधिगम-शिक्षण सामग्री देना आवश्यक है। प्रारंभिक

बाल्यावस्था के सीखने के माहौल को समृद्ध बनाने और पढ़ने के उत्साह को बढ़ावा देने के लिए सामान्य रूप से किताबें और बाल साहित्य अनिवार्य हैं। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, उनके लिए कार्यपुस्तिका और कार्य-शीट का उपयोग भी उचित होता है। (एन.सी.एफ.-एफ. एस. 2022)

(i) शिक्षकों द्वारा तैयार की जाने वाली सामग्री

बालवाटिका के लिए आवश्यक अधिकांश एलटीएम स्थानीय रूप से उपलब्ध और कम लागत वाली सामग्री के उपयोग से बनाया जा सकता है। इसे प्रमुख रूप से स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री से तैयार किया जा सकता है, जैसे– कार्डबोर्ड, स्ट्रॉ, पैकेजिंग सामग्री, पुराने कपड़े, बोतल के ढक्कन, बीज, कंकड़ (गिनने के लिए), माचिस की तीली (रसायनों को हटाकर), पुराने टायर, प्लास्टिक की बोतलें, और कंटेनर (मापने के लिए), नारियल के गोले, प्रयोग किए गए कागज़, प्रयोग किए गए अंडे के कार्टन (छँटाई के लिए) आदि एल.टी.एम. विकसित करने के स्रोत बन सकते हैं।

(ii) बच्चों द्वारा तैयार की जाने वाली सामग्री

बच्चे कला और शिल्प कार्य या मिट्टी के काम से संबंधित अपनी सूक्ष्म गत्यात्मक विकास गतिविधियों से जुड़ी सरल खेल सामग्री बना सकते हैं। शिक्षक, बच्चों के साथ छड़ से बनी कठपुतली, मास्क, बोर्ड गेम, मिट्टी से खिलौने (जैसे— पहिए, गेंद), अखबार की गेंद या गुड़िया आदि बना सकते हैं। ये छोटे बच्चों के लिए बहुत ही आकर्षक गतिविधियाँ हैं, और इन सामग्रियों को डिजाइन करने और बनाने में बच्चों को सभी डोमेन विकसित करने का अवसर मिलता है।

(iii) बाज़ार से खरीदी जाने वाली सामग्री

कुछ सामग्री जैसे अलग-अलग आकार, आकृति और रंग के बिल्डिंग ब्लॉक सेट, रंगीन मोती और तार, लेसिंग बोर्ड, सरल पहेली, आवर्धक काँच, किचन सेट, फल और सब्ज़ियों के मॉडल, विभिन्न आकारों के कप, बिना धार वाली कैंची, गोंद, टेप, कटोरे, बाल्टी, जग, चम्मच, कीप, पेंट ब्रश, विभिन्न प्रकार के चमकीले, पुनर्नवीनीकृत कागज़, क्रेयॉन, मार्कर, रंगीन पेंसिल, रंगीन चॉक, रस्सियाँ, मैट, प्लास्टिक बैलेंस स्केल, वजन मशीन, डॉक्टर सेट, ढपली, चित्र पुस्तकें, अक्षर या संख्या कार्ड, चुंबक, विभिन्न आकार की गेंदें, मिट्टी (क्ले) आदि बाज़ार से प्राप्त की जा सकती हैं।

संसाधन मानचित्रण

संसाधन मानचित्रण बालवाटिका पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन में संसाधनों, जैसे– सामग्री, विभिन्न लोग, संस्थान, स्थानीय प्राधिकरण और अन्य की पहचान करने और उनका उपयोग करने की एक प्रक्रिया है।

शिक्षकों को स्थानीय संसाधनों की पहचान करने और उनका प्रभावी उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है

- बच्चे संकल्पनाओं को बेहतर ढंग से समझते हैं।
- संसाधनों की उपलब्धता में निरंतरता बनी रहती है, क्योंकि संसाधन स्थानीय रूप से उपलब्ध हैं।
- अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया के माध्यम से सांस्कृतिक संदर्भ को संबोधित किया जाता है।
- इसमें लागत और उपलब्धता बाधा नहीं बनती।

संसाधन मानचित्रण के चरण

- उपलब्ध संसाधनों की पहचान करें।
- स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हुए गतिविधियों की योजना बनाएँ।
- संसाधनों तक पहुँचने के तरीके खोजें।
- संसाधनों का रिकॉर्ड रखें।

खिलौने बनाना— बनाने में आसान, खोजबीन में आनंददायक!

यहाँ शिक्षकों अथवा देखभाल करने वालों अथवा माता-पिता के लिए खिलौने बनाने के कुछ उदाहरण दिए गए हैं, जो पर्यावरण के अनुकूल तथा आर्थिक रूप से कम खर्चे में बनने वाले और बनाने में मज़ेदार हों। हालाँकि ऐसे खिलौने देखने में सरल लगते हैं, लेकिन इनमें बच्चे को विभिन्न तरह से सीखने की प्रक्रियाओं में शामिल करने की बहुत क्षमता होती है। विभिन्न क्षमताओं वाले बच्चे ऐसे खिलौनों से खेल सकते हैं।

कपड़े की गेंद

खिलौने का नाम— कपड़े की गेंद और अनाज के लिए अलग-अलग आकार के बैग

इस खिलौना सामग्री की खूबी यह है कि एक ही खेल सामग्री का कई तरीकों से और विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है। बहुउद्देश्यीय उपयोग के साथ एक सरल खिलौना बनाने में प्रयासों को निवेश करके शिक्षकों अथवा माता-पिता अथवा देखभाल करने वालों पर कम बोझ आता है, उदाहरण— कपड़े के एक गोल थैले के आकार को एक कागज़ पर खींचे गए वृत्त के आकार के साथ मिलाया जा सकता है— संख्यात्मकता क्षेत्र के तहत आकृति की पहचान के कौशल को सुगम बनाया जा सकता है। कपड़े के गोल बैग के समान आकार को अक्षर 'C' के साथ मिलान किया जा सकता है— सर्कल के लिए– साक्षरता डोमेन के तहत पत्र पहचान को बढ़ावा दिया जा सकता है। शिक्षक इसी खेल सामग्री का उपयोग करते हुए अन्य क्षेत्रों में ऐसी कई गतिविधियों के बारे में सोच सकते हैं। सकारात्मक अधिगम की आदतों को विकसित करने के लिए, टर्न-टेकिंग, समूह खेलों में सहयोग, इन सामग्रियों के उपयोग से किया जा सकता है।

इसे स्वयं करें (डू इट योर सेल्फ यानी DIY)— कैसे बनाएँ

- एक बड़े रुमाल के बराबर का सूती कपड़ा लें, इसे दो गोल आकार में काट लें— इसमें दोनों किनारों को खोलकर सिलाई करें।
- इसको कपड़े के छोटे टुकड़ों से भरें। (कपड़े को सिले जाने के बाद कटे हुए टुकड़ों

का उपयोग करें।) बचे हुए हिस्सों का उपयोग करते हुए एक गेंद बनाएँ और सिले हुए किनारों के अंदर भरें।

त्रिभुज आकार की थैली

विभिन्न तरीके

- थैलियों को दानों से भरकर वर्ग, त्रिभुज, आयत आदि विभिन्न आकार बनाएँ।
- इसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध अलग-अलग अनाज, जैसे– चना, राजमा, राई, ज्वार, बाजरा आदि भरें।

इनका उपयोग

- गेंद की तरह पकड़ें और फेंकें।
- आकार की पहचान के लिए, आकार का मिलान करें। (जैसा चित्र में दिखाया गया है।)
- वस्तुओं की गिनती, आकृतियों को छाँटने आदि का काम करें।
- सभी बच्चों हेतु एक संवेदी इनपुट के रूप में, यह दृष्टिबाधित बच्चों हेतु भी उपयुक्त है।
- गीतों में प्रॉप के रूप में, अपनी बारी आने पर, सामूहिक खेलों के लिए।
- बच्चों को चुप करने के लिए उन्हें हाथों में पकड़ने के लिए दें।
- अक्षरों की पहचान के लिए, आकृतियों के नाम के साथ आकृतियों का मिलान, उदाहरण के लिए— अक्षर 'C' से मिलान करने के लिए वृत्त का आकार बनाएँ।

कपड़े की गेंदें इनसे संबंधित उद्दीपन प्रदान करती हैं

- आँखों और हाथों का समन्वय
- ध्यान और एकाग्रता
- आकार की पहचान, आकार की छँटाई और अंक ज्ञान कौशल एवं गिनती से संबंधित
- अक्षरों की पहचान– साक्षरता कौशल
- स्पर्श संवेदना
- दो हाथों की पकड़
- भावात्मक तसल्ली व विकास के लिए
- सामाजिक विकास हेतु– सीखने में सहयोग, अपनी बारी आने पर अवसर का सदुपयोग

कठपुतली बनाना

कठपुतली पारंपरिक और सांस्कृतिक कलाओं में से एक है, जिसका उपयोग ज्यादातर मनोरंजन और कहानियाँ सुनाने में किया जाता है। इनका उपयोग शिक्षकों द्वारा कक्षा में पाठ्यचर्या के संचालन के लिए भी किया जाता है। विभिन्न प्रकार की कठपुतलियाँ कैसे बनाई जाती हैं और उनका उपयोग संदर्भ के लिए अनुलग्नक II में दिया गया है।

प्रशिक्षकों को शिक्षकों अथवा देखभालकर्ताओं के लिए सामग्री निर्माण पर एक सत्र आयोजित करने की आवश्यकता है। कठपुतली बनाने के लिए एक अस्थायी कार्यक्रम अनुसूची और विचार अनुलग्नक VII और II में दिए गए हैं।

आर्थिक कमी से जुड़े मुद्दे ध्यान रखने का विषय है। यह ध्यान में रखते हुए सुझाव दिया जाता है कि निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार किया जाना चाहिए—

- सूचीबद्ध सामग्रियाँ आदेशात्मक नहीं, बल्कि सुझावात्मक हैं। जहाँ भी संभव और आवश्यक हो, अपने आप तैयार की गई रचनाओं का सहारा लिया जा सकता है।

- खरीदी अथवा विकसित की गई सामग्री के लागत प्रभावी होने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के उपयोग में आ सकती है।
- विभिन्न विकासात्मक उद्देश्यों के लिए सामग्री की व्यापक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शिक्षक-निर्मित सामग्रियों का उपयोग लेना आवश्यक होगा।
- इन गतिविधियों को करने के लिए सामग्री का चयन अथवा विकास करते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सामग्री सुरक्षित है और इसमें सीखने के साथ-साथ बच्चों द्वारा उनसे खेलने या उलट-पलट करने की क्षमता होती है और यह केवल एक शिक्षण सहायक सामग्री मात्र नहीं है।
- बच्चों की ओर से सार्थक अधिगम हेतु सामग्री संस्कृति और क्षेत्र विशिष्ट होनी चाहिए।
- विशेष रूप से छोटे समूहों में गतिविधि-आधारित शिक्षण-अधिगम के प्रभावी संचालन के लिए, पर्याप्त इनडोर सामग्री प्रदान करना आवश्यक है, जिसमें एक साथ कक्षा में बच्चों के चार समूहों को नहीं, तो कम से कम तीन को शामिल किया जा सके।
- खेल सामग्री का नियमित और उचित रख-रखाव आवश्यक है, जिसके लिए कर्मचारियों को समय-समय पर प्रशिक्षण देने के साथ-साथ आकस्मिक व्यय हेतु आवर्ती-वित्तीय आवंटन की आवश्यकता है।

समय-समय पर बच्चों के लिए कठपुतली शो का आयोजन किया जाना चाहिए

अध्याय
4

अधिगम गतिविधियों की योजना एवं आयोजन

खेल और गतिविधि-आधारित अधिगम के लिए आयु के उपयुक्त खेल और सीखने की सामग्री के साथ अनुकूल आंतरिक और बाहरी कक्षा-कक्ष का वातावरण आवश्यक है। कक्षा-कक्ष के वातावरण में भौतिक और साथ ही साथ भावात्मक रूप में सहायक अधिगम का वातावरण शामिल होता है। एक सुरक्षित, आरामदायक और खुशहाल कक्षा-कक्ष का माहौल होने से बच्चों को कुशलता से सीखने में मदद मिलती है।

कक्षा-कक्ष अधिगम के माहौल के घटक

- भौतिक वातावरण— इसमें कक्षा सामग्री की व्यवस्था, गतिविधि क्षेत्र, बच्चों के अनुकूल आसानी से स्टैकेबल फर्नीचर और भंडारण स्थान (शिक्षकों और बच्चों दोनों के लिए), प्रकाश व्यवस्था, वेंटिलेशन और शालापूर्व भवन में सामान्य सफाई शामिल हैं।
- सामाजिक वातावरण— इसमें बच्चों में एक साथ काम करने (छोटे और बड़े समूह), एक-दूसरे के साथ बात-चीत करने और एक साथ खेलने के लिए जगह शामिल हैं। ई.सी.सी.ई. के अनुभव को कक्षा 1 से 2 तक भी बढ़ाया जाना चाहिए।
- टेंपोरल (आस-पास की परिस्थिति का) वातावरण— इसमें गतिविधियों की अवधि, समय और अनुक्रम, और बालवाटिका चरण में होने वाली गतिविधियों में लचीलापन शामिल हैं। इसमें बदलाव करने की गतिविधियाँ भी शामिल हैं।

कक्षा-कक्ष का संगठन

बालवाटिका कक्षा ऐसी होनी चाहिए, जहाँ खेल और गतिविधि-आधारित शिक्षा के कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान की जा सके। कक्षा को इस तरह से व्यवस्थित किया जाना चाहिए ताकि विभिन्न गतिविधियों को करते समय बच्चे स्वतंत्र रूप से आ और जा सकें। कक्षा के अंदर वातावरण अच्छी रोशनी वाला और हवादार होना चाहिए। इसे बच्चों के लिए सुरक्षित और स्वागत योग्य महसूस कराना चाहिए। कक्षा-कक्ष में बैठने की व्यवस्था लचीली होनी चाहिए। कभी-कभी बच्चों को व्यक्तिगत समय की आवश्यकता होती है, कभी-कभी वे जोड़े या छोटे समूहों में काम करते हैं, और कभी-कभी सभी बच्चे एक समूह में एक साथ काम करते हैं। कक्षा-कक्ष में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को सक्षम करने के लिए अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया में आकर्षक अधिगम के माहौल को डिजाइन करने से इस पर बहुत दूरगामी प्रभाव होता है।

कक्षा-कक्ष का आयोजन करने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करना आवश्यक है—

- रंग-बिरंगी पेंट की हुई दीवारें।
- कम ऊँचाई पर चौड़ी खिड़कियाँ, जिनमें से रोशनी और ताजी हवा आ सके।
- बच्चों की आँखों के स्तर पर प्रदर्शित आकर्षक चित्र चार्ट टाँगें।
- प्रदर्शन बोर्ड कम ऊँचाई पर हों ताकि बच्चे अपनी कलाकृति को ठीक कर सकें।
- बच्चों के लिए खुद को देखने के लिए एक पूरी लंबाई का आइना हो।
- लेबल वाले कंटेनर अथवा बक्सों में खेल और अधिगम की सामग्री जो बच्चों के लिए आसानी से सुलभ हो और उन्हें उठाकर वापस रख सकें।
- आयु और विकासात्मक रूप से उपयुक्त अधिगम-शिक्षण सामग्री की उपलब्धता।
- बच्चों के विचार, रुचि और जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने हेतु गुड़िया खेलने का क्षेत्र, ब्लॉक क्षेत्र, पढ़ने का क्षेत्र, विज्ञान क्षेत्र, रचनात्मक कला क्षेत्र आदि जैसे गतिविधि क्षेत्रों को अंकित करना।
- बच्चों के लंच पैक आदि रखने के लिए जगह।
- बच्चों के लिए ड्रॉइंग, स्क्रिबलिंग आदि के लिए स्वतंत्र रूप से उपयोग करने हेतु कम ऊँचाई पर रनिंग बोर्ड उपलब्ध हो।
- व्यक्तिगत कार्य और समूह कार्य दोनों के लिए पर्याप्त आंतरिक स्थान।
- अलग-अलग सक्षमताओं वाले बच्चों के लिए आराम से चलने, सँभालने और अन्य बच्चों के साथ घुलने-मिलने के लिए जगह और अवसर, जहाँ उन्हें संबंधित शिक्षकों द्वारा पूरे समूह के साथ सीखने के प्रयासों में मदद की जाती है; समावेशी कक्षा हो।

समग्र अधिगम का माहौल लचीला, खुला होना चाहिए, संसाधनों तक पहुँच प्रदान करना और सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देना चाहिए। नीचे दिए गए महत्वपूर्ण विचार आंतरिक और बाहरी वातावरण को डिजाइन करते समय अपनाए जाएँ।

I. कक्षा के अंदर (आंतरिक) का वातावरण

(क) गतिविधि क्षेत्र

यहाँ गतिविधि क्षेत्र को कक्षा-कक्ष में व्यवस्थित किया जाता है और विभिन्न प्रकार की खेल सामग्री और खिलौनों से सुसज्जित किया जाता है; उदाहरण के लिए— गुड़ियों का क्षेत्र, ब्लॉक-बिल्डिंग आदि हो सकता है। बच्चों का एक छोटा समूह या यहाँ तक कि एक बच्चा भी अधिगम और खेल सामग्री का उपयोग करके वहाँ खेल सकता है। शिक्षक, गतिविधि क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से खेलते हुए बच्चों को चुपचाप देखते हैं और आवश्यकता पड़ने पर ही हस्तक्षेप करते हैं। सामग्री को निचले रैक, बक्से और अलमारियों में रखा जाता है ताकि बच्चे आसानी से उस तक पहुँच सकें। इससे बच्चों को निम्नलिखित कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है—

- सामाजिक कौशल
- आत्मनिर्भरता
- सहयोग की भावना (सहकारिता)
- समय प्रबंधन
- स्व-नियमन
- स्वयं की रुचि
- संप्रेषण कौशल
- गलतियाँ, अभ्यास करके और इसी तरह की अन्य चीज़ों के द्वारा शुरुआती सीखने का कौशल
- नए कौशल और उनके सीखने का विस्तार

'गतिविधि क्षेत्रों' के लिए सामग्री

(i) गुड़िया और नाटकीय खेल क्षेत्र— गुड़िया वाले क्षेत्र में कपड़े, मिट्टी, लकड़ी, कागज़ आदि से बनी गुड़ियों का संग्रह होना चाहिए। एक छोटा बिस्तर, सोफा, कुर्सियाँ, टेबल और घरेलू सामान जैसे कि किचन सेट, चाय का सेट, डॉक्टर का सेट और पुराने कपड़े से बने हैंडबैग, जूते, टोपी परिधान आदि भी रखे जाने चाहिए। गुड़िया क्षेत्र का फर्नीचर ऐसा होना चाहिए, जिसे बच्चे भी अपने खेलने में इस्तेमाल कर सकें। वहाँ खेलने वाले बच्चों को गोपनीयता देने के लिए गुड़िया क्षेत्र को एक छोटे पर्दे से विभाजित किया जाना चाहिए। गुड़ियों के साथ खेलने से बच्चे दूसरों के विचारों और भावनाओं के बारे में बात करने और समझने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। गुड़ियों के साथ काल्पनिक खेल खेलने से बच्चों को

मदद करने, साझा करने, पालन-पोषण और देखभाल करने जैसे सामाजिक कौशल विकसित करने में मदद मिलती है।

(ii) विज्ञान क्षेत्र— विज्ञान क्षेत्र में आवर्धक काँच, चुंबक, विभिन्न वजन वाली वस्तु के लिए तराजू, तरल पदार्थ को मापने के लिए डिब्बे का एक सेट, माइक्रोस्कोप, दूरबीन, प्रिज्म और कम्पास आदि शामिल हैं। विज्ञान क्षेत्र में बच्चों में उनके आस-पास की दुनिया के बारे में खोजबीन करने में मदद मिलती है।

(iii) बिल्डिंग ब्लॉक एरिया— इस गतिविधि क्षेत्र में घरों, अस्पताल, स्कूल, आराधना स्थल आदि जैसी विभिन्न संरचनाओं के निर्माण के लिए हल्की लकड़ी से बने विभिन्न आकारों और आकृतियों के बिल्डिंग ब्लॉक्स के साथ एक शेल्फ होना चाहिए। शेल्फ में आयताकार तख्ते, बड़ी ईंटें, छोटी ईंटें, बेलन, त्रिकोण, वर्गाकार ब्लॉक, खंभे आदि जैसी सामग्रियाँ होनी चाहिए। इन सभी भवन ब्लॉकों को अलग-अलग चमकीले इनेमल रंगों से रंगा जाना चाहिए। इस कोने में लकड़ी की ट्रेन, कार, ट्रक, खींचने वाले खिलौने, लकड़ी या प्लास्टिक पुल, लकड़ी या प्लास्टिक रेलवे ट्रैक आदि जैसी सामग्री होनी चाहिए। बच्चे सड़क बनाना और विभिन्न प्रकार के छोटे वाहनों के साथ खेलना पसंद करते हैं, इसलिए इस कोने में सड़कों से संबंधित सामग्री, जैसे– ब्लॉक, रैंप, जेबरा क्रॉसिंग, ट्रैफिक लाइट, लकड़ी अथवा प्लास्टिक अथवा धातु के छोटे वाहन (सड़क परिवहन, हवाई परिवहन, जल परिवहन), मानव मॉडल के रूप में लोग, पेड़ आदि भी होने चाहिए। इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ भी होनी चाहिए, जैसे कि नेस्टेड खिलौने, लकड़ी के ब्लॉक, कठपुतली आदि। बच्चों के लिए जानवरों, कारों, बसों आदि के चित्र रुचिकर होते हैं, इसलिए पहेलियों की कम-से-कम दो ट्रे होनी चाहिए, जिनमें केवल दो या तीन टुकड़े हों, जिन्हें बहुत छोटे बच्चे इस्तेमाल कर सकें। कुछ बड़े बच्चों के समूह के लिए चार या पाँच टुकड़ों वाली कुछ पहेलियाँ हो सकती हैं। यदि ये सामग्री बाज़ार में आसानी से उपलब्ध नहीं हैं तो इन्हें शिक्षक द्वारा तैयार किया जा सकता है। ब्लॉक प्ले के लिए सूक्ष्म और स्थूल गत्यात्मक कौशल की आवश्यकता होती है। ब्लॉक से बच्चों को घुमाव लेना और सामग्री साझा करना सीखने में मदद मिलती है, उनमें दोस्ताना रवैया विकसित होता है और उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है।

चुनी गई सामग्री होनी चाहिए—

- आकर्षक और सुरक्षित
- जिज्ञासा के साथ अन्वेषण एवं प्रयोग करने के पर्याप्त अवसर प्रदान करे।
- टिकाऊ
- स्थानीय रूप से निर्मित या उपलब्ध हो।

(iv) पढ़ने का क्षेत्र— इसमें शब्दरहित चित्र वाली पुस्तकें, सचित्र पुस्तकें, कहानी पुस्तकें, कविता संग्रह, सूचनात्मक पुस्तकें, रोचक वर्णमाला और नंबर पुस्तकें, कहानी पुस्तकें (शिक्षकों द्वारा तैयार या आसानी से उपलब्ध) एक, दो या तीन पंक्तियों में बड़े चित्रों के साथ लिखित सामग्री बच्चों को स्वतंत्र रूप से चुनने और पढ़ने के लिए निचले स्तर पर रखी जाए। श्रव्य-दृश्य कार्यक्रम देखने के लिए टेलीविजन, एनिमेटेड लघु कथाएँ अथवा कविता आदि दिखाने के लिए एल.सी.डी. प्रोजेक्टर और स्क्रीन आदि को इस क्षेत्र में बच्चों के लिए रखा जाना चाहिए और यह उनकी कक्षा का एक हिस्सा भी होना चाहिए। यहाँ बच्चों को आकर्षक प्रदर्शित पुस्तकों की एक शृंखला से चुनने की स्वतंत्रता होती है। यहाँ ड्राइंग, कलरिंग और

लिखने हेतु कलर (रंग), व्हाइट पेपर और चार्ट पेपर रखे जा सकते हैं।

(v) गणित क्षेत्र— यहाँ मिलान, छँटाई, व्यवस्था, वर्गीकरण, समस्या-समाधान, स्मृति और अनुक्रमिक सोच के लिए स्व-सुधारात्मक कार्ड, चित्र पहेली और चित्र कार्ड जैसी सामग्री रखी जानी चाहिए। गणित और जोड़-तोड़ के क्षेत्र में संकल्पनाओं के लिए सामग्री शामिल होनी चाहिए, जैसे कि रंग, आकार, स्थान, संख्यापूर्व (pre-number) संकल्पनाएँ और सामाजिक, भौतिक और जैविक पर्यावरण से संबंधित संकल्पनाएँ आदि। बाज़ार में मैचिंग कार्ड, नंबर कार्ड यदि उपलब्ध न हों तो शिक्षक द्वारा विकसित किए जा सकते हैं। गणित या जोड़-तोड़ के क्षेत्र में गणितीय खेल गतिविधियों के दौरान, बच्चों को विभिन्न प्रकार की दैनिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है और वे उनके लिए कई समाधान खोजते हैं। इस तरह के खेल गणितीय शिक्षा को रटने से परे ले जाते हैं, क्योंकि जब बच्चे इन समस्याओं को सुलझाते हैं तो उनको बात करने, सोचने, तर्क करने और आश्चर्यजनक विचार बढ़ाने में प्रोत्साहन मिलता है।

(vi) कला क्षेत्र— इसमें फाड़ने और चिपकाने की गतिविधियों के लिए कैंची, चमकीला कागज़, टिशू पेपर, पुरानी पत्रिकाएँ, पुराने समाचार पत्र, कपड़ा, गोंद, फेवीकॉल, धागा आदि जैसी सामग्री शामिल हैं। यहाँ ड्रॉइंग, कलरिंग अथवा पेंटिंग के लिए क्रेयॉन, पेंट कलर, पेंट ब्रश, पेपर, रंगीन चाक, स्लेट आदि उपलब्ध होने चाहिए। मिट्टी के काम के लिए मिट्टी, उथले बेसिन, प्लास्टिक के कपड़े, छलनी, गिलास आदि को शामिल किया जाना चाहिए। सिलाई के लिए मोटी सुई, रंगीन धागा, बोरी, सूती कपड़ा, प्लास्टिक की जाली उपलब्ध होनी चाहिए। तीन मूल रंगों लाल, नीला, पीला में मध्यम और बड़े आकार के मोती उपलब्ध होने चाहिए। इन मोतियों को पिरोने के लिए प्लास्टिक के धागे के साथ और मोतियों को रखने के लिए मध्यम आकार के कटोरे आदि हों। ऊन के टुकड़े, कपड़े के टुकड़े, रंगीन और हस्तनिर्मित कागज़, पंख, कोलाज कार्य करने के लिए पत्ते, बीज, बुरादा, मूँगफली के बीज के छिलके, पिस्ता आदि। बच्चों के लिए चित्र वाली पुस्तकें बनाने के लिए पुरानी पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि से चुने गए चित्रों (कट-आउट) का उपयोग किया जा सकता है। कला कार्य करने से बच्चों को पैटर्न बनाने और कारण और प्रभाव संबंध जैसे कौशल सीखने और अभ्यास करने में मदद मिलती है। बच्चे जो कुछ भी बनाना चाहते हैं, उसकी मानसिक योजना (मेंटल प्लान) या चित्र बनाकर महत्वपूर्ण चिंतन कौशल का भी अभ्यास कर सकते हैं।

(vii) संगीत और गत्यात्मक क्रियाओं का क्षेत्र— हारमोनियम, ढपली, ढोलक, ड्रम, बाँसुरी, माउथ ऑर्गन, मंजीरा, घुंघरू और संगीत बनाने के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध या शिक्षक द्वारा तुरंत बनाई गई सामग्री आदि। संगीत और गत्यात्मक वाले क्षेत्र में सूक्ष्म और स्थूल गत्यात्मक कौशल के विकास, भावनाओं को व्यक्त करने और संतुलन और समन्वय में सुधार करने आदि में मदद मिलती है। इससे बच्चे की स्मृति और संज्ञानात्मक विकास को तेज़ करके उनके सीखने की क्षमता में सुधार आता है।

(viii) पुस्तकालय और पढ़ने का क्षेत्र— भाषा और शब्दावली के विकास के लिए पुस्तकालय और साक्षरता क्षेत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं। यह एक ऐसा स्थान है, जिसका उपयोग बच्चे स्वतंत्र रूप से किताबें पढ़ने हेतु कर सकते हैं।

शिक्षक को किताब ऊँचे स्वर में पढ़नी चाहिए, बच्चों को किताब के बारे में अपनी प्रतिक्रिया

साझा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। शिक्षक को उनकी बात सुननी चाहिए और बच्चों को दूसरों की बात सुनने के मौके देने चाहिए। स्वतंत्र पठन के लिए कुछ समय अलग रखें और प्रदर्शित करें कि पढ़ना एक रुचिमय गतिविधि है। पुस्तकालय और साक्षरता क्षेत्र में कहानी सुनाने के सत्रों के आयोजन से बच्चों को पाठक और लेखक बनाने में मदद मिलती है। कहानी कहने के माध्यम से सुनने के कौशल को विकसित करने के लिए, चित्र-पुस्तकें, कठपुतली, फ्लेनलग्राफ, कहानी कार्ड, साउंड बॉक्स आदि जैसे सहायक उपकरण उपयोगी होते हैं और उन्हें इस क्षेत्र में रखा जाना चाहिए। शब्दावली निर्माण और मौखिक अभिव्यक्ति के लिए सामग्री, जैसे– वार्तालाप चार्ट, चित्र, फ्लैश कार्ड, चित्र डोमिनोज, चित्र पुस्तकें, कविताओं और कहानियों का संग्रह बहुत उपयोगी है। शिक्षक इन साधनों या सामग्रियों को विकसित कर सकते हैं और उपयोग के लिए तैयार रख सकते हैं। उदीयमान पठन विकसित करने के लिए, श्रवण और दृश्य में अंतर कर पाने के लिए चित्र कार्ड अथवा पट्टियाँ अथवा चार्ट और श्रवण और दृश्य के मिले-जुले कार्ड बनाए और रखे जा सकते हैं। सहज लेखन के लिए स्लेट, चॉक, क्रेयॉन, ब्लैक या ग्रीन बोर्ड, ड्राइंग पेपर, स्टेंसिल आदि उपयोगी होते हैं। लोककथाओं, हास्य पुस्तकों, तथ्यात्मक पुस्तकों, सूचनात्मक पुस्तकों जैसी विभिन्न प्रकार की कहानी पुस्तकें एक उपयोगी सामग्री हैं।

टिप्पणी— गतिविधि क्षेत्र में सामग्री के अलावा, प्रत्येक कक्षा में एक दर्पण, घड़ी और जूते रखने और कूड़ेदान रखने के लिए स्थान आबंटित होना चाहिए।

(ix) प्रौद्योगिकी— नई संकल्पनाओं को प्रस्तुत करते समय बच्चों की शिक्षा का विस्तार करने, शब्दावली बनाने, गत्यात्मक नियंत्रण आदि के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा सकता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के विकास के लिए प्रौद्योगिकी उपयोगी हो सकती है।

सावधानी— बच्चों के खेल और अन्वेषण, शारीरिक गतिविधि और सामाजिक संपर्क की जगह प्रौद्योगिकी को हावी नहीं होने देना चाहिए।

टिप्पणी— भारत में विकसित 'प्रज्ञता दिशा-निर्देश' (एन.सी.ई.आर.टी. और शिक्षा मंत्रालय) के अनुसार पूर्व-प्राथमिक छात्रों के लिए 30 मिनट से अधिक ऑनलाइन कक्षाएँ आयोजित नहीं की जानी चाहिए, जबकि कक्षा 1 से 8 के लिए 30–45 मिनट तक के दो ऑनलाइन सत्र आयोजित किए जा सकते हैं।

प्रौद्योगिकी का उपयोग क्षमता निर्माण के लिए किया जा सकता है। निष्ठा (स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल) का उद्देश्य बच्चों के अधिगम के परिणामों को शामिल करना है। यह एक डिजिटल रूप से सक्षम शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जो ऑनलाइन विधि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षक दीक्षा (डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग) पर स्व-विकसित सामग्री भी अपलोड कर सकते हैं।

क्या करें	क्या नहीं करें
• कक्षा में कई सारे सीखने या गतिविधि क्षेत्रों में से आई.सी.टी. एक को क्षेत्र बनाएँ। • उपकरणों के उपयोग और रख-रखाव के लिए दिशा-निर्देश निर्धारित करें। • बच्चों के लिए ऐसे ऐप्स और गेम्स खोजें, जो इंटरएक्टिव हों, आयु के अनुरूप एवं उपयुक्त हों और माता-पिता या देखभाल करने वालों की भागीदारी को प्रोत्साहन देने वाले हों। • पाठ्यसामग्री और अन्य खेल गतिविधियों को समृद्ध करने हेतु प्रौद्योगिकी का प्रयोग करें। • समुचित व्यवहार के संबंध में आवश्यक मूलभूत नियम बनाएँ। • ऐसी सुरक्षा रखें कि अनुपयुक्त सॉफ्टवेयर का उपयोग बच्चे न करें।	• स्क्रीन टाइम में व्यक्तिगत बात नहीं करनी चाहिए। • सकारात्मक व्यवहार के पुरस्कार के स्वरूप कंप्यूटर या फोन पर खेलने हेतु समय न दें। • आई.सी.टी. के प्रयोग से आधारभूत कला सामग्री, खेल सामग्री, किताबें और वास्तविक वस्तुओं और व्यावहारिक अनुभवों का त्याग न हो।

स्कूलों द्वारा प्रौद्योगिकी की मदद रेडियो, टी.वी., ओ.टी.टी. प्लेटफॉर्म जैसे प्रसारण मीडिया के साथ-साथ आई.वी.आर. और अन्य माध्यमों से संदेश भेजकर उत्तरदायी पालन-पोषण को प्रोत्साहित करने में ली जा सकती है।

(ख) कक्षा-कक्ष में प्रिंट से भरपूर वातावरण

प्रिंट से भरपूर वातावरण में बच्चे प्रिंट के कई रूपों के साथ मेल-जोल करते हैं। इससे पढ़ने के लिए आवश्यक कौशल को बढ़ावा देने में सहायता मिलती है। प्रत्येक शिक्षक को कमरे की वस्तुओं और क्षेत्रों, फर्नीचर और दरवाज़ों पर लेबल लगाना चाहिए, पोस्टर तथा कैलेंडर और डिस्प्ले बोर्ड लगाने चाहिए, जिनसे शब्दों और संख्याओं आदि को सही तरीके से प्रदर्शित किया जा सकता है।

कक्षा-कक्ष में प्रदर्शन (डिस्प्ले)

डिस्प्ले बोर्ड, बच्चों के सीखने में विजुअल लर्निंग में सहायता के द्वारा मदद मिलती है। शिक्षक, बालवाटिका में बच्चों को देखने और सीखने के लिए संगत चित्रों को प्रदर्शित करने के लिए डिस्प्ले बोर्ड का उपयोग करते हैं। डिस्प्ले बोर्ड पर बच्चों के काम के नमूने प्रदर्शित किए गए हैं। बच्चों की आँखों के स्तर पर चार्ट को दीवार पर लटकाने की ज़रूरत है। कक्षा में उपकरणों तथा मुद्रित सामग्री की लेबलिंग इस प्रकार की जानी चाहिए कि कक्षा के गतिविधि क्षेत्र के वातावरण को प्रिंट समृद्ध, रंगीन, रोचक एवं आनंदमय बनाए।

कक्षा-कक्ष में बच्चों के कार्य को प्रदर्शित करते समय अग्रलिखित बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए—

- प्रदर्शन बच्चों की आँखों के स्तर पर होना चाहिए ताकि वे सरलता से देख सकें।
- बच्चों के चल रहे कार्य और तैयार कार्य के नमूने प्रदर्शित किए जाने चाहिए ताकि अंतिम उत्पाद के साथ-साथ सीखने की प्रक्रिया को भी महत्व दिया जाए।
- इस प्रदर्शन को समय-समय पर बदलना चाहिए। यह बच्चों को विषय अथवा विषय-वस्तु अथवा परियोजना के प्रति जिज्ञासु और रुचिकर बनाता है।

चार्ट

(i) **मौसम के चार्ट**— कक्षा में मौसम की दैनिक जानकारी के साथ-साथ साप्ताहिक मौसम चार्ट भी प्रदर्शित किया जा सकता है। बुनियादी साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए दिन के मौसम को चित्र और प्रिंट के माध्यम से दर्शाया जा सकता है।

(ii) **मानदंड और नियम चार्ट**— सीखने की सकारात्मक आदतों पर चार्ट प्रदर्शित करना महत्वपूर्ण है; उदाहरणार्थ— अपनी कक्षा को साफ रखें, अपनी बारी की प्रतीक्षा करें, एक-दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करें, धन्यवाद करें, दूसरों की बात सुनें आदि। इन चार्टों को स्थायी रूप से निर्देश क्रम में न रखकर, बल्कि चित्रों और कहानियों के माध्यम से रचनात्मक रूप से व्यक्त किया जाना चाहिए।

(iii) **दैनिक दिनचर्या चार्ट**— यह महत्वपूर्ण है कि दैनिक दिनचर्या चार्ट स्पष्ट रूप से और बच्चों की आँखों के स्तर पर प्रदर्शित हो, क्योंकि इस उम्र के बच्चे प्रदर्शित किए गए चार्ट आदि की सराहना करते हैं। इससे शिक्षक के साथ-साथ बच्चों का भी मार्गदर्शन होता है।

(iv) **शिक्षक द्वारा तैयार किए गए चार्ट**— शिक्षक और बच्चे विशेष रूप से 'थीम बोर्ड' के प्रदर्शन के लिए एक साथ चार्ट तैयार कर सकते हैं। थीम चार्ट को एक साथ बनाने से बच्चों को दिए गए किसी विषय पर चर्चा करने में मदद मिलेगी। ये चार्ट विभिन्न थीम जैसे अच्छी आदतें, परिवहन, पानी, पक्षी आदि जैसी किसी परियोजना से संबंधित हो सकते हैं। अपनी कक्षा के लिए डिस्प्ले चार्ट तैयार करने से बच्चों में अपनेपन और स्वामित्व की भावना विकसित होती है।

मौसम के चार्ट

कक्षा के लिए मानदंड

- कक्षा को साफ रखें।
- सुरक्षित रूप से खेलें।
- दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करें।
- शिक्षकों की बात सुनें।

दैनिक दिनचर्या चार्ट

गतिविधि

- स्वागत
- प्रार्थना
- स्वतंत्र बात-चीत
- बाहरी खेल खेलना
- भोजन का समय
- इन्डोर फ्री प्ले
- स्ट्रक्चर्ड (निर्मित) बात-चीत
- कहानी का समय
- छुट्टी का समय

II. कक्षा बाह्य (बाहरी) वातावरण

बालवाटिका के बाहरी वातावरण को सुरक्षित बनाने की आवश्यकता है और इसमें मुक्त खेल के साथ-साथ संगठित खेल दोनों की व्यवस्था होनी चाहिए। बाहर खेलने की जगह चढ़ने, फिसलने, घुमाने, झूलने, देखने तथा संतुलन हेतु के उपकरण आदि के लिए स्वदेशी सामग्री से खरीदे गए या बनाए गए खेल के उपकरण शामिल होने चाहिए।

आराम से खेलने के लिए बच्चों के छोटे समूह के लिए एक रेत का गड्ढा, सामग्री के साथ पानी का खेल क्षेत्र और अन्य नियोजित और मुक्त खेलने की गतिविधियों के लिए कुछ खाली जगह बाहरी वातावरण में होनी चाहिए। यदि स्थान उपलब्ध होता है तो बगीचे की व्यवस्था की जा सकती है, जिसका उपयोग बच्चे बागवानी की गतिविधि के लिए कर सकते हैं। क्ले मॉडलिंग को छोटे समूहों में बाहर भी आयोजित किया जा सकता है।

शिक्षक, बच्चों को कक्षा के बाहर व अंदर दोनों के उपयोग हेतु सामग्री, उपकरण और उपकरण की एक विस्तृत शृंखला प्रदान करें।

कक्षा के बाहर खेल के उपकरण अथवा सामग्री

- चढ़ने, कूदने, संतुलन बनाने, झूलने, लटकने, साइकिल चलाने, जंगल, जिम, झूले, तिपहिया साइकिल, रॉकिंग बोट, सहारे के साथ दो पहिए वाली बेबी साइकिल, स्कूटर, पेडलिंग कार, तख्तों के साथ नेस्टिंग फ्रेम, तख्तों के साथ त्रिकोण का सेट जैसे अनुभव प्रदान करने के लिए बाज़ार से उपलब्ध उपकरण या वहीं तैयार किए गए उपकरण आदि।
- फेंकने, लुढ़काने, पकड़ने और पैर से मारने के उपकरण, जैसे– रबर की गेंदें (बड़े, मध्यम, छोटे) और पुराने टायर आदि।

- विभिन्न प्रकार के कंटेनरों के साथ सैंडपिट, जैसे– ट्रे, कटोरे, प्लास्टिक छलनी, प्लास्टिक मग, कटोरी तथा विभिन्न साँचे आदि।
- पानी के खेल के लिए वैडिंग पूल या एक बड़ा टब, छोटी बाल्टी, मग और विभिन्न आकार के कप, छलनी और तैरने वाले खिलौने, जैसे– रबर की बतखें, नावें आदि
- बागवानी गतिविधियों के लिए पानी के डिब्बे।
- गाड़ियाँ खींचना और धकेलना
- रेंगकर निकलने के लिए लगभग 8 फीट लंबा बड़ा सीमेंटेड पाइप।

खेल उपकरण एवं सामग्री होनी चाहिए—

- सुरक्षित
- टिकाऊ
- स्थानीय
- आकर्षक

खेल गतिविधियाँ (खेल-कूद)— इनसे शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास को बढ़ावा मिलेगा तथा साथ ही समग्र विकास को भी बढ़ावा मिलता है जबकि संज्ञानात्मक क्षमताओं को भी बढ़ाया जा सकता है और उनमें सहयोग, आत्म-पहल, आत्म-निर्देशन, आत्म-अनुशासन, टीम वर्क, जिम्मेदारी, नागरिकता, आदि जैसे कौशल विकसित होते हैं। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) स्कूलों को संबंधित राज्य या क्षेत्र के पारंपरिक या क्षेत्रीय खेल और कम मूल्य के खेल उपकरण शामिल करने होंगे। खेल-कूद गतिविधियों के अलावा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने, कार्यक्रम आयोजित करने, स्कूल के बाहर के स्थानों की यात्रा (पिकनिक या भ्रमण) आदि अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है।

कक्षा गतिविधियों की योजना और कार्यान्वयन

खेल और गतिविधि-आधारित विधियों को लागू करने के लिए पहले से योजना बनाना महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को पहले पूरे शैक्षणिक वर्ष के लिए गतिविधियों की योजना बनाने की आवश्यकता है। फिर वार्षिक योजना के आधार पर मासिक, साप्ताहिक और दैनिक गतिविधियों की योजना विकसित करने की आवश्यकता है। साप्ताहिक योजना और दैनिक योजना का एक नमूना क्रमशः अनुलग्नक IV और V में दिया गया है।

अच्छी योजना हेतु निम्नलिखित को समझने की आवश्यकता होती है—

- पाठ्यचर्या के लक्ष्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त किया जाना
- जिन बच्चों के लिए योजना बनाई जा रही है, उनकी पूर्व तैयारी
- उपलब्ध अधिगम-शिक्षण सामग्री और उपयोग की जाने वाली सामग्री
- गतिविधियाँ— उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक-निर्देशित, शिक्षक-मार्गदर्शित और बच्चे के नेतृत्व वाली गतिविधियाँ
- गतिविधियों की अवधि और उनका क्रम
- गतिविधियों में उपयोग की जाने वाली सामग्री
- कक्षा की व्यवस्था, जैसे– बैठने की व्यवस्था, प्रदर्शन, सामग्री की व्यवस्था आदि।
- उन बच्चों के लिए विशिष्ट कार्य नीतियाँ, जिन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है।
- आकलन के तरीके

बालवाटिका कार्यक्रम को निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए नियोजित करने की आवश्यकता है—

- स्थानीय संदर्भ
- सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण और प्रचलित प्रथाएँ
- बालवाटिका की मूल संरचना और उपलब्ध सामग्री
- बच्चों की आवश्यकताएँ

इसकी योजना में आयु का चयन और विकासात्मक रूप से उपयुक्त शिक्षण-विधि, उपयोग किए जाने वाले संसाधन, तथा अंतर्निर्मित मूल्यांकन आदि शामिल हैं। इसमें बच्चों के लिए सहायक गतिविधियाँ, घर के लिए विस्तारित गतिविधियाँ, जो पढ़ाया जा रहा है या जो सिखाने की आवश्यकता है, उससे संबंधित प्रदर्शन भी शामिल हैं। प्रदान की जाने वाली गतिविधियों और सीखने के अनुभवों का क्रम एन.सी.एफ.एफ.एस. 2022 में उल्लिखित प्रत्येक दक्षताओं के लिए अपेक्षित सीखने के प्रतिफलों के अनुसार होना चाहिए।

बालवाटिका में तीन वर्ष से कम आयु के किसी भी बच्चे को प्रवेश नहीं देना चाहिए।

बालवाटिका के लिए बालक तब तैयार होता है जब वह—

(i) परिवार से अलगाव की चिंता से निपटने में सक्षम हो चुका हो।
(ii) उसमें कुछ मौखिक क्षमता विकसित हो चुकी हो।
(iii) शौचालय का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित हो गया हो।
(iv) मूलभूत आवश्यकताओं के बारे में बात कर सकता हो।

बालवाटिका की अवधि

बालवाटिका शिक्षा कार्यक्रम की अवधि लगभग प्रतिदिन चार घंटे होनी चाहिए।
कार्यक्रम में दिन के दौरान आराम की अवधि भी निश्चित करनी चाहिए।
शिक्षक को बच्चों से पहले आना चाहिए और उनके बाद जाना चाहिए ताकि वह अगले दिन की तैयारी अच्छी तरह से कर सकें।
बच्चों को सप्ताह में पाँच दिन अर्थात सोमवार से शुक्रवार तक बालवाटिका में भाग लेना चाहिए। शनिवार के दिन शिक्षकों द्वारा बालवाटिका कार्यक्रम के मूल्यांकन, अगले सप्ताह के कार्यक्रम की योजना बनाने, सीखने-सिखाने की सामग्री तैयार करने, माता-पिता से संपर्क, रिकॉर्ड, रजिस्टर और पोर्टफोलियो तैयार करने आदि के लिए उपयोग किया जा सकता है।

दैनिक कार्यक्रम

अनुसूचियाँ एक दिन की दिनचर्या को व्यापक रूप से प्रस्तुत करती हैं। बच्चे दिनचर्या को एक नियमित गतिविधि के रूप में समझते हैं, क्योंकि वे अनुमान लगाना सीखते हैं कि आगे क्या होगा। इसमें प्रतिदिन की जाने वाली मुख्य गतिविधियाँ शामिल हैं।

दिन के कार्यक्रम की योजना बनाते समय निम्नलिखित गतिविधियों में संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है—

1	**बच्चों के लिए सक्रिय समय**	**बच्चों को अन्य कार्यों हेतु दिया समय**
उदाहरण	संगीत और लयात्मक गति	एक साथ भोजन करना (भोजन का समय)
2	**बड़े समूह की गतिविधियाँ**	**छोटे समूह की गतिविधियाँ**
उदाहरण	एक समूह में कहानी सुनना	एक छोटे समूह में बिल्डिंग ब्लॉक्स
3	**आंतरिक गतिविधियाँ**	**बाहरी गतिविधियाँ**
उदाहरण	पहेलियाँ सुलझाना अथवा वर्कशीट बनाना	आंतरिक खेल (मुक्त और संगठित)
4	**बच्चे द्वारा शुरू की गई गतिविधियाँ**	**शिक्षक द्वारा निर्देशित गतिविधियाँ**
उदाहरण	गतिविधि क्षेत्रों में मुक्त रूप से खेलना	सीखने की संकल्पनाएँ जैसे शिक्षक द्वारा जानवरों के विषय में बात-चीत करना आदि।

बालवाटिका के लिए कार्यक्रम योजना

- शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में पूरे साल की योजना या कैलेंडर बनाएँ।
- योजना में गतिविधियों सहित क्षेत्र का दौरा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, बाल मेला आदि के लिए संभावित तिथियों को तय किया जाए।

→

साप्ताहिक योजना प्रत्येक सप्ताह के अंतिम दिन नियमित रूप से तैयार की जा सकती है।

→

प्रत्येक दिन की योजना में संतुलन दर्शाने हेतु नियोजित किया जाना चाहिए—

- व्यक्तिगत और समूह की गतिविधियाँ
- बाहरी और भीतरी गतिविधियाँ
- स्वतंत्र और निर्देशित गतिविधियाँ

शिक्षक द्वारा उनके संदर्भ को ध्यान में रखते हुए दैनिक कार्यक्रम विकसित किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर 3–4, 4–5 और 5–6 वर्ष आयु वर्ग हेतु अनुसूचियाँ निम्नानुसार हैं—

3–4 वर्ष

समय	गतिविधि
सुबह 09:00 बजे	मुक्त खेल या सर्किल टाइम या बात-चीत
सुबह 09:20 बजे	गाना और खेल या संगीत या लयात्मक गति
सुबह 09:40 बजे	संकल्पना समय
सुबह 10:00 बजे	बाहरी गतिविधि या खेल
सुबह 10:20 बजे	उदीयमान साक्षरता समय
सुबह 10:30 बजे	वॉशरूम टाइम या रेस्ट टाइम
सुबह 11:00 बजे	सृजनात्मकता
सुबह 11:30 बजे	संख्या से जुड़ी गति विधि (संख्या ज्ञान)
दोपहर 12:00 बजे	छुट्टी का समय

बालवाटिका के लिए सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण आवश्यक है।

4–5 वर्ष

समय	गतिविधि
सुबह 08:30 बजे	आगमन एवं बच्चों की स्वच्छता का परीक्षण
सुबह 08:45 बजे	प्रार्थना
सुबह 09:00 बजे	मुक्त वार्तालाप
सुबह 09:20 बजे	संज्ञानात्मक या भाषा गतिविधि
सुबह 09:40 बजे	कक्षा के बाहर खेल
सुबह 10:10 बजे	हाथ धोना, जलपान और आराम
सुबह 10:50 बजे	एक रचनात्मक गतिविधि के साथ छोटे समूहों में कक्षा में मुक्त रूप से खेलना
सुबह 11:20 बजे	परियोजना पर बात-चीत करना
सुबह 11:50 बजे	कहानी और कविताएँ या नाटकीकरण या लयबद्ध गति
दोपहर 12:20 बजे	छुट्टी का समय

बच्चों को सुरक्षित, आरामदायक और सहज अनुभूति होनी चाहिए।

5–6 वर्ष (एन.सी.एफ.–एफ.एस. 2022)

समय	गतिविधि
सुबह 09:30 बजे	सर्किल समय में बात-चीत
सुबह 10:15 बजे	नाश्ता का समय (स्नैक ब्रेक)
सुबह 10:30 बजे	कविता या गीत या संगीत या लयात्मक गति
सुबह 10:45 बजे	संकल्पना समय या संख्यापूर्व समय
सुबह 11:45 बजे	कला या शिल्प या मुक्त खेल
दोपहर 12:15 बजे	गतिविधि क्षेत्र में क्रियाकलाप
दोपहर 01:00 बजे	भोजन का समय (लंच ब्रेक) (3 से 4 साल के बच्चे घर जाते हैं।)
दोपहर 01:45 बजे	उदीयमान साक्षरता या कहानी का समय
दोपहर 02:30 बजे	आउटडोर प्ले और छुट्टी का समय

अधिगम स्थल की गतिविधियाँ— कैसे व्यवस्थित करते हैं?

कैलेंडर गतिविधि

- एक डिस्प्ले बोर्ड डिजाइन करें, जिसमें दिनांक, माह और मौसम को दर्शाया जा सके।
- सर्किल टाइम के दौरान, चार्ट में सप्ताह के दिनों को संकेतिक करें और बच्चों से दिन की पहचान करने के लिए कहें। 'आज कौन-सा दिन है?' जैसे प्रश्न पूछें।
- उन्हें मौसम, जैसे– धूप, बादल अथवा बरसात के बारे में बात करने का अवसर दें।

अधिगम-शिक्षण अभ्यास (लर्निंग-टीचिंग प्रैक्टिस यानी एल.टी.पी.) वे तरीके हैं, जिनसे शिक्षक द्वारा बालवाटिका कार्यक्रम संचालित किया जाता है। निम्नलिखित कुछ अभ्यासों के उदाहरण दिए गए हैं, जिनका उपयोग शिक्षक कक्षा में करते हैं—

कक्षा के अंदर अथवा बाहर खेली जाने वाली कुछ खेल गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं—

(क) सर्किल टाइम

सर्किल टाइम में बच्चे, शिक्षक के साथ एक घेरे में बैठते हैं। सर्किल टाइम में कुछ गतिविधियों में अनौपचारिक बात-चीत, गीत गाना, तुकबंदी, कहानी सुनना, शिक्षक और आपस में एक-दूसरे के साथ विभिन्न संकल्पनाओं के बारे में बात करना शामिल है। सर्किल टाइम के दौरान बच्चों को सामाजिक मेल-जोल के लिए एक समूह में एक साथ लाया जाता है। शिक्षक हाव-भाव के साथ गीत गाते हैं, कैलेंडर में दी गई गतिविधि करते हैं, स्वास्थ्य और स्वच्छता के रख-रखाव के बारे में बात करते हैं, आज की ताज़ा ख़बर पर बात-चीत और कौशल विकसित करने के लिए गतिविधियों का आयोजन करते हैं। (बच्चों को स्वतंत्र रूप से स्वयं को अभिव्यक्त करने दें।)

लाभ

- शिक्षक और बच्चे सुविधा से एक-दूसरे के सामने होते हैं।
- शिक्षक सभी बच्चों पर एक साथ ध्यान दे सकते हैं।
- सभी के बीच दोस्ती और एकता की भावना महसूस होती है।
- दृश्य सामग्री और प्रदर्शन सामग्री सभी बच्चों को स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
- शिक्षक द्वारा किए गए कार्य सभी बच्चों को स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

(ख) बात-चीत

बात-चीत सहजता से होने के साथ-साथ निर्देशित भी हो सकती है और इससे मौखिक भाषा के विकास में मदद मिलती है।

(i) **सहज बात-चीत**— बच्चों को अपने दैनिक अनुभवों से संबंधित किसी भी विषय पर बात करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे बच्चों को कक्षा के माहौल में समायोजित करने में मदद मिलती है क्योंकि इसके जरिए बच्चों को अपनी भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। किसी स्थानीय भ्रमण, त्यौहार के उत्सव, बच्चों के नए अनुभव आदि के बाद सहज बात-चीत का उपयोग किया जा सकता है। इनका उपयोग किसी बात को आधार प्रदान करने के लिए भी किया जा सकता है।

(ii) **निर्देशित बात-चीत**— शिक्षक द्वारा निर्देशित बात-चीत की शुरुआत किसी विशेष विषय या प्रसंग के आस-पास की जानी चाहिए। अधिगम-शिक्षण सामग्री (एल.टी.एम.) का उपयोग पिक्चर कार्ड, चार्ट, ऑडियो-विजुअल सामग्री, मॉडल, विभिन्न स्थानों के भ्रमण आदि जैसी निर्देशित बात-चीत में किया जाता है। इनसे बच्चे की संकल्पनाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है।

बात-चीत से बच्चों की भाषा कौशल, सामाजिक मेल-जोल, अवधारणा बनाने, सुनने और बोलने के कौशल में मदद मिलती है। शिक्षकों को उपयुक्त एल.टी.एम. का उपयोग करने, दिलचस्प तरीके से बात-चीत शुरू करने, सभी बच्चों को भाग लेने का अवसर देने जैसे अभ्यास अपनाने चाहिए।

चित्र पढ़ना

- बच्चों को कहानी की किताबों से चित्र या रेखांकन पढ़ने और उनके बारे में बात करने में प्रोत्साहन मिलता है।
- एक ही चित्र जिसमें ढेर सारी रोचक क्रियाएँ हो सकती हैं, जिसे बात-चीत करने और कहानी बनाने के लिए भी उपयोग किया जा सकता है।
- प्रिंट के प्रति जागरूकता विकसित करना।
- पुस्तकों के साथ जुड़ाव विकसित करना।

(ग) कहानी सुनाना

बच्चे बचपन से ही परिवार के सदस्यों से कहानियाँ सुनते हैं और बालवाटिका में भी इसे जारी रखते हैं। कहानियाँ सुनाना संज्ञानात्मक क्षमताओं, भाषाओं, अवधारणा विकास, संबंधों को समझने, वार्तालाप कौशल विकसित करने के लिए समृद्ध स्रोत मानी गई हैं। बालवाटिका में प्रतिदिन कथा सत्र का आयोजन किया जाता है। बालवाटिका में कथा-आधारित शिक्षण-विधि उपयोगी सिद्ध हुई है, इससे बच्चों को आनंद आता है, उनकी कल्पनाशक्ति का विकास होता है और ज्ञान में वृद्धि होती है।

पिक्चर चार्ट, स्टोरी कार्ड, ऑडियो-विजुअल सामग्री, पिक्चर स्टोरी बुक्स, वीडियो, फिल्म, रोल प्ले और कभी-कभी सिर्फ आवाज़ में उतार-चढ़ाव के द्वारा कहानियों को विभिन्न तरीकों से बताया जा सकता है। कहानियाँ सुनाते समय पात्रों और स्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए। शिक्षक, प्रॉप्स, वॉयस मॉड्यूलेशन और एक्शन का उपयोग करके कहानी को रोचक तरीके से बताते हैं।

(घ) संगीत और लयात्मक गति से जुड़ी गतिविधियाँ

बच्चों के शारीरिक विकास, ध्वनि की प्रशंसा (आवाज़ की प्रशंसा), गायन कौशल विकास, सामाजिक मेल-जोल, अवधारणा विकास, भाषा आदि विभिन्न उद्देश्यों के लिए संगीत और लयात्मक गति से जुड़ी गतिविधियों का उपयोग किया जा सकता है। मूल रूप से संगीत के

उपयोग से जुड़ी कोई भी शिक्षा आनंददायक शिक्षा होगी। बच्चे स्वाभाविक रूप से संगीत सुनना पसंद करते हैं।

जैसे-जैसे बच्चा गायन, सुनने, लयबद्ध संगीत के अनुभवों को बनाने के लिए बताए गए विकासात्मक अनुक्रमों के माध्यम से आगे बढ़ता है, इनके द्वारा उसे कई तरह से विकसित होने में सहायता मिल सकती है। संगीत की गतिविधियाँ अलग-अलग तरीकों से सुनना, एक साथ गाना, वाद्ययंत्र बजाते हुए गाना (टैम्बोरिन, मंजीरा अथवा एक साथ ताली बजाना) स्वतंत्र रूप से या आर्केस्ट्रा बनाकर की जा सकती हैं। बच्चे स्वदेशी कम लागत और बिना लागत वाली सामग्री बना सकते हैं, उदाहरण के लिए— पत्ते से सरल संगीत वाद्ययंत्र आदि।

गायन तुकबंदी— कविताओं में लयबद्ध ध्वनि वाले शब्द होते हैं, जिन्हें सार्थक रूप से एक साथ समूह में गाया जाता है और उनके अर्थों के साथ संबंधित क्रियाओं के साथ गाया जाता है। तुकबंदी का उपयोग नए शब्दों, संकल्पनाओं, सामाजिक कौशल, मनोरंजन तथा आनंद हेतु सीखने में किया जा सकता है।

(ङ) संज्ञानात्मक और भाषा संबंधी गतिविधियाँ

संज्ञानात्मक और भाषा विकास संबंधी गतिविधियों से बच्चों को अपने आस-पास के परिवेश को जानने में सहायता मिलती है। बालवाटिका बच्चों को वे अनुभव देने वाली पहली अवस्था है, जिसकी सहायता से बच्चों में बुनियादी संकल्पनाओं, वैज्ञानिक प्रवृत्ति, उत्सुक मन, समस्या समाधान कौशल आदि का विकास होता है। ये कौशल उनके बाद वाले वर्षों में सीखने के आधार हैं। बालवाटिका में सभी गतिविधियों में सामान्यत: संज्ञानात्मक और भाषा के विकास को पूरा किया जाता है; बुनियादी संकल्पनाओं को सीखने के लिए विशिष्ट गतिविधियों का आयोजन किया जाता है जैसे कि पौधे कैसे बढ़ते हैं, पौधे के हिस्से, तैरने वाली और डूबने वाली वस्तुएँ, घुलनशील और अघुलनशील पदार्थ, गर्म और ठंडे पदार्थ, सजीव और निर्जीव चीज़ें आदि।

बालवाटिका में बच्चों को भाषा साक्षरता, जैसे– वर्णमाला, शब्द, आकृतियों, आकारों और गणितीय संकल्पनाओं जैसे संख्या, गिनती, पैटर्न, वर्गीकरण, क्रम आदि से परिचित कराया जाता है, उदाहरणार्थ— यदि एक बच्चे में रंग की संकल्पना विकसित हो गई है तो वह इस आयाम के आधार पर पर्यावरण में वस्तुओं को वर्गीकृत या श्रेणीबद्ध करने में सक्षम होगा। बच्चों में बुनियादी संकल्पनाओं का निर्माण पर्यावरण के प्रति उनकी समझ हेतु महत्वपूर्ण है। अपने परिवेश में विभिन्न वस्तुओं का निरीक्षण, वर्गीकृत या श्रेणीबद्ध करने में केवल तभी सक्षम होंगे यदि उनके मन में ये संकल्पनाएँ स्पष्ट हो चुकी हैं, वे अवधारणा पर आधारित तार्किक तर्क से प्रगति करेंगे। अधिकांश स्थानीय खिलौने, अन्य शिक्षण सामग्री, जैसे– पिक्चर कार्ड, पहेलियाँ आदि संकल्पनाओं को प्रस्तुत करने हेतु उपयोगी हैं। शिक्षक के साथ-साथ बच्चे संकल्पनाओं पर चर्चा करने के लिए सामग्री बना या ला सकते हैं।

> भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक पर्यावरण के साथ प्रत्यक्ष अनुभवों और अंत:क्रिया के माध्यम से वैज्ञानिक सोच और पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित होती है।

(च) वैज्ञानिक जागरूकता की गतिविधियाँ

बच्चों को विज्ञान के अनुभव इस प्रकार होने चाहिए कि वे उस पर्यावरण के बारे में अच्छी तरह जानकर उसकी सराहना करें, जिसे वे हर दिन देखते हैं। बच्चों में धीरे-धीरे स्थानीय,

राष्ट्रीय और व्यापक संदर्भों में प्राकृतिक पर्यावरण के विभिन्न भागों, पौधों और जानवरों (मनुष्यों सहित) की परस्पर निर्भरता के बारे में जागरूकता विकसित होती है।

क्षेत्र भ्रमण अथवा प्रकृति की सैर (नेचर वॉक) से बच्चों को ऐसी प्राकृतिक घटनाओं और गतिविधियों को देखने का अवसर मिलता है, जिन्हें कक्षा में नहीं लाया जा सकता है

सीखने के अनुभवों में प्रकृति की सैर के दौरान संग्रह की गई वस्तुओं की एक विस्तृत शृंखला इसका एक हिस्सा हो सकती है, जिसे कक्षा में लाया जा सकता है, जैसे कि विभिन्न प्रकार के पत्ते, कंकड़, फूल, आदि। कक्षा में सरल प्रयोग किए जा सकते हैं, जैसे– रोपण, अंकुरण और वस्तुओं के गुण जैसे तैरना अथवा डूबना, घुलनशील अथवा अघुलनशील आदि का अध्ययन करना।

(छ) बुनियादी साक्षरता

बच्चों के सामने पहले इन कौशलों को औपचारिक रूप से स्कूल में पेश किया जाता है, क्योंकि यह सीखने का प्रारंभिक चरण है, जिसमें बच्चे पढ़ने और लिखने के लिए उत्सुक व व्यस्त होते हैं। बच्चे घर में पहले तीन वर्षों में भाषा का ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह सुनने और बोलने के माध्यम से इनके अनुकरण से होता है। बाद में, इससे भाषाओं में साक्षरता कौशल के निर्माण में मदद मिलती है। उभरती साक्षरता में प्रमुख घटक प्रतीकों और उनकी ध्वनियों की समझ के आधार पर लिखित शब्दों को डिकोड करना, प्रवाह सहित पढ़ना, व्याख्या करना और अक्षरों और शब्दों को लिखने में दक्षता लाना शामिल है। मौखिक भाषा का विकास सुनने और बोलने से होता है, जबकि साक्षरता अक्षरों, वर्ण, शब्दों और चित्रों की समझ से शुरू होती है। इसमें ध्वन्यात्मक जागरूकता भी शामिल है, अर्थात ध्वनि-प्रतीक के मेल और ज्ञान प्राप्त करने में इनका प्रभावी तरीके से उपयोग करना।

उदीयमान साक्षरता कौशल विकसित करने के लिए सामग्री में चित्र पुस्तकें, चार्ट, फ्लैश कार्ड, अक्षरों और शब्दों के साथ डोमिनोज, चित्रों के साथ कहानी की किताबें, कविताओं का संग्रह, तुकबंदी और गीत शामिल हैं।

ध्वनि माध्यम से जागरूकता

- शब्दों और शब्दांश के बारे में जागरूकता।
- तुकबंदी (आम, राम, शाम, काम)।
- सम्मिश्रण और विभाजन (शब्दों को बनाने या किसी शब्द को उसकी अलग-अलग ध्वनियों में विभाजन हेतु ध्वनियों को एक साथ रखना)।
- शुरुआत, मध्य और अंत की ध्वनियाँ पहचानना
- ध्वनियों और शब्दांश में बदलाव करना, उदाहरण के लिए— 'जल' में, 'ज' को 'फ' से बदलें, यह 'फल' बन जाता है।

(ज) बुनियादी संख्या ज्ञान

बुनियादी संख्या ज्ञान का अर्थ है सीखने का प्रारंभिक चरण जब बच्चों को स्कूल में औपचारिक रूप से इनका परिचय कराने से पहले बुनियादी संख्या ज्ञान की संकल्पनाओं और गणना कौशल के साथ परिचित कराया जाता है। प्रारंभिक गणित के प्रमुख आयाम और घटक संख्यापूर्व संकल्पनाएँ, संख्याओं और उनके प्रतीकों की गिनती और समझ, संख्याओं, आकृतियों और स्थानिक समझ से जुड़े सरल कार्य हैं।

शिक्षक को ऐसी गतिविधियाँ कराने की आवश्यकता है, जिससे बच्चों को यह सीखने में मदद मिल सके कि कैसे गिनना है; आकृतियाँ; आकार; रंग कैसे पहचानना है आदि। इनसे बच्चों को शुरुआती संख्या विकसित करने में मदद मिल सकती है। बच्चों को आकृतियों से संबंधित आकार (बड़ा, छोटा, मध्यम); समूह (समान अथवा अलग, तेज़ अथवा धीमा, दूर अथवा निकट); रंगों में व्यवस्थित करना; क्रम (पहला, दूसरा, आखिरी) और इसी तरह संकल्पनाओं को बनाते समय तुकबंदी, गीत, कहानी, और खेल-खिलौने गतिविधियों के माध्यम से संख्याओं से परिचित कराया जा सकता है।

टिप्पणी— पर्यावरण के प्रति जागरूकता और वैज्ञानिक सोच के साथ बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल विकसित करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण सरोकार है। इन कौशलों को विकसित करने के विवरण हेतु अनुलग्नक IV देखें।

(झ) अंदर खेले जाने वाले खेल (इनडोर प्ले) व गतिविधियाँ

यह गतिविधि अनौपचारिक रूप से भी की जा सकती है, जहाँ बच्चों को एक-दूसरे के साथ अनौपचारिक बात-चीत करते हुए अपने पसंदीदा खिलौने का चयन करते हैं और कक्षा या विद्यालय भवन के अंदर खेल में व्यस्त होने के लिए समय दिया जाता है। स्कूल के अंदर खेलने से बच्चों को गुड़िया, ब्लॉक, टॉय कार आदि के साथ खेलते समय अपनी कल्पना का उपयोग करने में प्रोत्साहन मिलता है।

स्कूल के अंदर खेलने के लिए गुड़िया के साथ खेलने के स्थान, ब्लॉक के साथ खेलने के स्थान, कला और शिल्प के स्थान आदि पर उपयुक्त सामग्री के साथ गतिविधि क्षेत्रों का उपयोग करके इस प्रकार के खेलों का आयोजन किया जा सकता है, जहाँ शिक्षक बच्चों को कुछ मार्गदर्शन और सलाह दे सकते हैं, लेकिन मुख्य रूप से एक पर्यवेक्षक के रूप में कार्य करते हैं। यदि पर्याप्त जगह है, तो चिड़ियाघर, परिवहन आदि जैसे कुछ विषयों पर खेल खुले मैदान में बाहरी गतिविधियों के रूप में आयोजित किए जा सकते हैं।

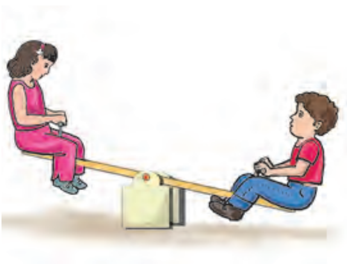

(ञ) बाहरी खेल (आउटोर प्ले) गतिविधियाँ

बच्चों को स्वयं अपने हाथों से काम करने का अनुभव देने और अनुभव पर आधारित अधिगम को संभव बनाने के लिए प्रकृति और बाहरी खेल से जुड़ाव सबसे महत्वपूर्ण है। बाहर खेले जाने वाले खेलों को मुक्त रूप से खेला जा सकता है, जहाँ बच्चे इधर-उधर दौड़ते हैं, चढ़ते हैं, कूदते हैं, झूलते हैं, फिसलपट्टी (स्लाइड) और झूलों का उपयोग करते हैं और अपनी इच्छा से खेलते हैं। दूसरी ओर, बाहरी खेल शिक्षक-निर्देशित अथवा संगठित गतिविधि भी हो सकती हैं; उदाहरण के लिए— हॉप्सकॉच और सर्किल गेम को शिक्षकों द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए। बाहरी खेल गतिविधियों में बागवानी को भी शामिल किया जा सकता है।

(ट) जलक्रीड़ा (वॉटर प्ले) गतिविधियाँ

जब भी संभव हो, शिक्षक को पानी से जुड़ी खेल गतिविधियों की व्यवस्था करनी चाहिए, जैसे कि पानी डालना, छिड़काव करना, छानना, भरना, पौधों को पानी देना, सफाई करना, वॉटर कलर को मिलाना, तैराना अथवा डुबाना, घोलना अथवा तलछट बनाना आदि जैसी विज्ञान संबंधी गतिविधियों में पानी का उपयोग किया जा सकता है। सर्किल टाइम में और विभिन्न संकल्पनाओं के निर्माण के दौरान पानी के उपयोगों की चर्चा की जा सकती है।

(ठ) रेत में खेलना (सैंड प्ले) कुछ गतिविधियाँ

रेत का खेल बाहरी खेल गतिविधियों में से एक है, जिसमें बच्चे जिस स्तर पर चाहें शामिल हो सकते हैं। बार-बार अपनी अँगुलियाँ चलाकर धीरे-धीरे रेत को ढूँढने से लेकर विस्तृत रूप से सड़कें और गाँव बनाने तक, इस खुली सामग्री के साथ खेलने का कोई गलत तरीका नहीं है। खेलने का तरीका ऐसा होना चाहिए, जिससे बच्चों को वैज्ञानिक संकल्पनाओं जैसे गीला और सूखा, मात्रा, डालना, और मज़ेदार तरीके से शिफ्टिंग का पता लगाने का अवसर प्राप्त हो सके।

(ड) रचनात्मक कला अभिव्यक्ति गतिविधियाँ

बच्चों में रोलप्ले (भूमिका निभाना), संगीत, नृत्य, कला और शिल्प के माध्यम से रचनात्मक और सौंदर्य बोध का विकास रचनात्मकता को बढ़ावा देने में सहायक होता है। ये गतिविधियाँ उन्हें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने और संप्रेषण कौशल विकसित करने का अवसर प्रदान करती हैं। उन्हें इन कार्यों से समन्वय और गत्यात्मक कौशल विकसित करने, अभ्यास करने और सुधारने में भी मदद मिलती है और उन्हें चीज़ों को देखने के नए तरीके खोजने में सक्षमता मिलती है। इससे आगे बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ावा मिलता है और निर्णय लेने, समस्या सुलझाने और महत्वपूर्ण चिंतन क्षमताओं का अभ्यास करने का अवसर मिलता है। रचनात्मक और सौंदर्यपरक गतिविधियाँ कल्पना को बढ़ावा देती हैं, जो एक महत्वपूर्ण लेखनपूर्व कौशल है। बच्चों को रेत का खेल, पानी का खेल, मिट्टी की ढलाई, ड्रॉइंग, पेंटिंग, कोलाज बनाने, फाड़ने, काटने, चिपकाने आदि के अवसर प्रदान करना महत्वपूर्ण है। इससे उन्हें यह समझने में मदद मिलेगी कि वास्तविक जीवन की वस्तुओं और घटनाओं को विभिन्न तरीकों से कैसे-कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है। बच्चों की कला और शिल्प के काम को दीवारों पर उनके देखने के स्तर पर या मेज पर प्रदर्शित किया जाना चाहिए। इस प्रकार उन्हें उस गतिविधि को याद रखने में मदद मिलती है और उन्हें अधिक से अधिक भागीदारी के लिए प्रोत्साहन एवं प्रेरणा मिलती है। इससे उनके आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ावा मिलता है, क्योंकि उन्हें लगता है कि उनका काम मूल्यवान है।

कला सीखने का एक आधार है। कला और शिल्प का अध्ययन न केवल सौंदर्य बोध को विकसित करने के लिए आवश्यक है, बल्कि यह सीखने के लिए भी आवश्यक है कि सामग्री में छोटे-मोटे बदलाव से उसे कैसे बदलें और काम के लिए आवश्यक दृष्टिकोण और कौशल विकसित करें। पाठ्यचर्या में बच्चों को व्यावहारिक जीवन कौशल और विभिन्न प्रकार के कार्य अनुभवों से अवगत कराया जाना चाहिए। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भारतीय कला और संस्कृति के एकीकरण के माध्यम से भारतीय लोकाचार को आत्मसात करने के लिए कला एकीकृत शिक्षा को कक्षा के लेन-देन में शामिल किया जाना है। इससे शिक्षा और संस्कृति (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) के बीच संबंध को मजबूत बनाया जाएगा।

(ढ) रोलप्ले (भूमिका निभाना) अथवा नाटकीकरण

रोलप्ले या नाटक में हिस्सा लेना बच्चों के लिए उनकी जानी और समझी चीज़ों को प्रदर्शित करने का एक अच्छा तरीका है, जिनसे वे परिचित होते हैं। ऐसी गतिविधियों को कक्षा में नाटकीय खेल के माध्यम से बढ़ावा दिया जा सकता है। रोल-प्ले या नाटकीकरण के दौरान बच्चों को अभिनय करने, शब्दों और इशारों का उपयोग करने और विभिन्न भूमिकाएँ निभाने का अवसर दें।

(ण) भोजन का समय

दैनिक दिनचर्या का एक महत्वपूर्ण भाग 'भोजन का समय' है। इससे बच्चों को अपना भोजन करने, आराम करने, खेलने और आपस में मिलने-जुलने को समय मिलता है। इसके लिए कम-से-कम 30 मिनट का समय देना चाहिए। इस समय के दौरान बहुत सारी गतिविधियाँ की जा सकती हैं, जैसे– भोजन से पहले और बाद में हाथ धोना (विशेष रूप से कोविड-19 की रोकथाम व अन्य फैलने वाली बीमारियों के लिए और शिक्षकों द्वारा इस पर बल दिया जाना चाहिए।); सहपाठियों के साथ भोजन करना; बिना गिराए अपने आप भोजन करना; स्वस्थ भोजन, विभिन्न प्रकार के भोजन और स्वस्थ खाने की आदतों के बारे में बात करना आदि।

(त) छुट्‌टी का समय

'छुट्‌टी का समय' में बच्चों को दिन के दौरान आयोजित की जाने वाली गतिविधियों को दोहराने का मौका मिलता है। ऐसा करते समय, बच्चों को अपनी सीखी गई बातों को आपस में साझा करने, अपनी पसंदीदा गतिविधियों के बारे में बात करने और किसी भी अवधारणा और यदि कोई बात ठीक से समझ में नहीं आई है तो सीखने से संबंधित स्पष्टीकरण माँगने का अवसर मिलता है। छुट्‌टी का समय दिन भर की गतिविधियों से सुखद प्रस्थान सुनिश्चित करने हेतु एवं बच्चों को अगले दिन की गतिविधियों के लिए तैयार किया जाता है।

अधिगम (सीखने) हेतु योजनाएँ

अधिगम योजनाएँ बच्चों के साथ दैनिक कक्षा की गतिविधियों के सुचारु निष्पादन के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। जब सावधानीपूर्वक सोची-समझी पाठ योजनाएँ बनाई जाती हैं, तो शिक्षक अपना कर्तव्य निभाने के लिए अच्छी तरह से तैयार रहता है। अधिगम योजना एक मार्गदर्शक के साथ-साथ एक आकलन का उपकरण भी है

अधिगम योजना का एक नमूना प्रारूप

कक्षा— बालवाटिका 1

आयु समूह— 3–4 वर्ष

विषय या विषय-वस्तु—...

दिनांक—.............................. दिन— ....

बच्चे पहले से क्या जानते हैं? (विषय या विषय-वस्तु से संबंधित)

....

विषय-वस्तु

....

अधिगम परिणाम

....

नियोजित गतिविधि (गतिविधि का शीर्षक और अवधि)

(i) अन्नमय कोष और प्राणमय कोष (शारीरिक तथा गत्यात्मक विकास)—

....

उदाहरण—

- खाने योग्य स्वास्थ्यप्रद वस्तुओं की पहचान और नाम
- गेंद से खेलना (बाहरी गतिविधि)

(ii) मनोमय कोष (सामाजिक विकास)—

....

उदाहरण— सर्किल टाइम चर्चा में भाग लेना

(iii) विज्ञानमय कोष (संज्ञानात्मक विकास)—

....

उदाहरण— वस्तुओं को रंगों के अनुसार क्रमबद्ध करना

(iv) विज्ञानमय कोष (भाषा विकास)—

....

उदाहरण— कहानी सुनना और नाटक में भाग लेना

पूर्व तैयारी— (कक्षा व्यवस्था, रंग तैयार करना, बैठने की व्यवस्था, सामग्री प्रदर्शित करना)

....

टिप्पणी— इस पुस्तिका के भाग II में विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ शामिल की गई हैं, जिन्हें शिक्षक अधिगम योजना में उपयोग करने के लिए चुन सकते हैं।

बालवाटिका में शिक्षा 'विकासोन्मुखी' होती है। पाठ्यक्रम के लक्ष्यों, दक्षताओं और अधिगम परिणामों की प्राप्ति के संदर्भ में बच्चे का निरंतर अनौपचारिक आकलन करना आवश्यक है।

आकलन

आकलन को शैक्षणिक अभ्यासों का एक समेकित हिस्सा बनाने की आवश्यकता है और इसे 'अनौपचारिक रूप से किया जाने वाला' होना चाहिए। यह सभी बच्चों के समग्र विकास के लिए अग्रणी दक्षताओं की प्राप्ति पर आधारित होना चाहिए। इसे खेल और अन्य गतिविधियों में बच्चों की भागीदारी के निरंतर तथा व्यवस्थित अवलोकन के माध्यम से अनौपचारिक रूप से किया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए— यह सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाने चाहिए कि शैक्षणिक वर्ष के अंत तक बालवाटिका में बच्चों के लिए आयु-विशिष्ट अपेक्षित अधिगम परिणाम प्राप्त हो जाएँ। पाठ्यक्रम के संचालन के दौरान प्रदान किए गए अनुभवों का केवल आकलन किया जाना चाहिए। बालवाटिका में कागज़-पेंसिल के साथ छोटी परीक्षा और बड़ी परीक्षा नहीं होनी चाहिए।

आकलन के प्रकार

आकलन दो प्रकार के होते हैं, जो बालवाटिका के लिए उपयुक्त माने जाते हैं अर्थात बच्चे का अवलोकन करना और उनके द्वारा निर्मित कृतियों का विश्लेषण करना, जिन्हें बच्चे ने अपने सीखने के अनुभवों के एक भाग के रूप में प्रस्तुत किया है।

बच्चे का अवलोकन— समय के साथ बच्चे का अवलोकन करने से बच्चे के सीखने की व्यापक समझ हासिल होती है। बच्चे किसी काम को करने, दिखाने और बताने के द्वारा अपनी समझ दर्शाते हैं। आकलन के लिए निरंतर व्यवस्थित अवलोकन में योजना बनाना, जानकारी इकट्ठा करना, प्रतिक्रिया देना और आकलन करना शामिल है। अवलोकन के लिए निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया जाता है—

(i) **जाँच सूची**
किसी बच्चे की अधिगम उपलब्धियों, व्यवहारों या लक्षणों की सूची जो प्राप्त होने की अपेक्षा है। (शिक्षक को 'हाँ' या 'ना' चिह्नित करना चाहिए।)

(ii) **कहानी पर आधारित अभिलेख**
इसमें किसी स्थिति, घटना या व्यवहार का संक्षिप्त और तथ्यात्मक विवरण प्रदान किया जाता है।

(iii) **रेटिंग स्केल**
इससे हर उपलब्धि के आकलन को 3 पॉइंट पर रेट किया जाता है।

(iv) **घटना का नमूना**
किसी एक घंटे की गतिविधि के 10 मिनट की अवधि में एक क्रिया को रिकॉर्ड करना।

(v) **पोर्टफोलियो**
काम के नमूने, तसवीरें, बच्चों के चित्र शामिल हैं।

(vi) **कार्यपत्रक (वर्कशीट)**
वर्कशीट में ऐसे कार्य होते हैं, जो बच्चे करते हैं और लिखित में जवाब देते हैं। शिक्षक कार्यपत्रकों में प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करते हैं, जिससे बच्चे के सीखने के स्तर की स्पष्ट समझ हासिल होती है।

आकलन उपकरण

(i) जाँचसूची— जाँचसूची बच्चों की पहचान और रिकॉर्ड रखने का एक उपकरण है। ये उपकरण बच्चे के सूचीबद्ध अधिगम परिणामों को बताते या दर्शाते हैं। इसमें विकास के किसी विशेष क्षेत्र में अधिगम परिणामों, व्यवहारों या बच्चे के लक्षणों की सूची शामिल है। इसमें शिक्षक को यह निर्धारित करना होता है कि बच्चे ने उन्हें पूरा किया है या नहीं। शिक्षक को जाँचसूची पर इसे बताने के लिए 'हाँ' या 'नहीं' के रूप में चिह्नित करना होगा कि बच्चा अवलोकन अवधि के दौरान व्यवहार प्रदर्शित करता है या नहीं।

उत्कृष्ट गत्यात्मक कौशल विकास के अवलोकन हेतु संदर्भित एक नमूना जाँचसूची

क्र. सं.	सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल	तिमाही 1		तिमाही 2	
		हाँ	**नहीं**	**हाँ**	**नहीं**
1.	कागज़ काटने की कला प्रदर्शित करता है।				
2.	क्रेयॉन अथवा पेंसिल का उपयोग करके कागज़ पर चित्र बनाता है।				
3.	अँगुलियों के निशान से चित्र बनाता है।				
4.	ग्लास से उड़ेलता है।				
5.	एक सीधी रेखा खींचता है।				

क्र. सं.	सुनना और बोलने के कौशल	तिमाही 1		तिमाही 2	
		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1.	ध्यान से सुनता है और बोलता है।				
2.	छोटी-छोटी कविताएँ सुनाता है, दोहराता है।				
3.	2 या 3 चरण के निर्देशों का पालन करने में सक्षम है।				
4.	वाक्यों की सहायता से प्रश्नों का उत्तर देता है।				
5.	उपयुक्त शब्दावली का उपयोग करता है और अपने अनुभवों को पूरे वाक्य में बोलता है				

एन.सी.एफ.-एफ.एस. (2022) का संदर्भ

बच्चे का आकलन व्यक्तिगत रूप से किया जाना चाहिए और इसमें विकास के सभी पहलुओं जैसे– सामाजिक-भावनात्मक, शारीरिक-गत्यात्मक, संज्ञानात्मक और भाषा को शामिल किया जाना चाहिए।

(ii) कहानी द्वारा अभिलेख— उपाख्यानात्मक या कहानी द्वारा अभिलेख एक विशिष्ट प्रकरण या घटना को विस्तार से दर्ज करने का एक प्रयास है, जो बच्चे की विशेष रुचि या उनसे जुड़े सरोकार को दर्शाता है। जब किसी विशिष्ट घटना पर शिक्षक का ध्यान आकर्षित

होता है, तो वे जितनी जल्दी हो सके घटना का विवरण लिख सकते हैं। एक उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड इस बात का अवलोकन करता है कि जब बच्चे किसी विशेष गतिविधि में लगे होते हैं तो वे क्या कहते और करते हैं।

(iii) रेटिंग स्केल— रेटिंग स्केल का उद्देश्य शिक्षक और माता-पिता को बच्चों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने और साझा करने में मदद करना है, जिसमें उन विशेषताओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जो सीखने अथवा विकासात्मक प्रगति या सीखने की कठिनाइयों के शुरुआती संकेतों को दर्शाती हैं। इससे शिक्षकों और माता-पिता को व्यवस्थित रूप से जानकारी प्रदान करने और बच्चों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करने में मदद मिल सकती है।

(iv) घटना के नमूने का चयन— जब भी कोई लक्षित घटना होती है, तो शिक्षक घटना की शुरुआत से लेकर अंत तक जितना संभव हो उतना विवरण लिखित रूप में लेता है। किसी घटना या उसकी आवृत्ति के नमूने दर्ज करना विशेष रूप से तब उपयोगी होता है, जब शिक्षक बच्चों के अस्वीकार्य व्यवहार या कार्यों को पुनर्निर्देशित करना चाहते हैं। शिक्षक जाँच करते हैं कि अस्वीकार्य व्यवहार या उस पर की कार्रवाई होने की संख्या कितनी है। यदि शिक्षक समस्या की तीव्रता को समझने के लिए नियमित अंतराल पर कुछ व्यवहार या क्रियाओं का आकलन करना चाहता है, तो वे इसे 'टाइम सैंपलिंग' में कर सकते हैं जैसे एक घंटे की गतिविधि के दौरान 10 मिनट की अवधि में किसी क्रिया को रिकॉर्ड करना आदि।

बालवाटिका में शिक्षकों या देखभाल करने वालों द्वारा बच्चे के व्यवहार और प्रतिक्रियाओं का अवलोकन विभिन्न खेल गतिविधियों, जैसे– पहेली खेल आदि के दौरान किया जाता है।

(v) पोर्टफोलियो— एक पोर्टफोलियो बच्चे के सीखने के कई आयामों को दर्शाने वाले फोल्डर में महत्वपूर्ण कार्य के नमूने और बच्चों के रिकॉर्ड का एक संग्रह है। यह बच्चों की कलाकृति, पेंटिंग, क्राफ्ट वर्क, कोलाज मेकिंग, एक्शन में बच्चों की तसवीरें, यदि संभव हो तो वीडियो अथवा साउंड रिकॉर्डिंग का भी संकलन है। यह विशिष्ट अधिगम के परिणामों के प्रयासों और उपलब्धि का प्रमाण प्रदान करता है। पोर्टफोलियो में एक समय की अवधि में बच्चे की क्षमताओं में प्रगतिशील सुधार का वर्णन किया जाता है, उदाहरण के लिए— अच्छे गत्यात्मक कौशल में सुधार, आँखों और हाथों का समन्वय, संरचित चित्रों अथवा लेखन के लिए स्क्रिबलिंग आदि। शिक्षक को विशिष्ट अधिगम परिणामों के संबंध में बच्चे के पोर्टफोलियो का विश्लेषण करना चाहिए और बच्चे की प्रगति को उसकी दक्षताओं के अनुसार चिह्नित करना चाहिए।

(vi) कार्यपत्रक (वर्कशीट्स)— कार्यपत्रक में ऐसे कार्य होते हैं, जिन्हें बच्चे लिखित रूप में करते हैं और उनका उत्तर देते हैं। इन कार्यों को विशिष्ट सीखने के परिणामों को प्राप्त करने के लिए डिजाइन किया जा सकता है। शिक्षकों द्वारा कार्यपत्रकों का प्रभावी आकलन उपकरण के रूप में उपयोग किया जा सकता है। कार्यपत्रकों में छात्र प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने से शिक्षक को बच्चे के अधिगम स्तर की स्पष्ट समझ मिल सकती है।

बच्चे के विकास और सीखने की प्रगति को रिकॉर्ड करना

बच्चे की प्रगति में मदद करने और विकासात्मक देरी अथवा अधिगम के अंतराल को दूर करने के लिए माता-पिता और अन्य हितधारकों के साथ बच्चे के विकास और सीखने की प्रगति को रिकॉर्ड करना और साझा करना महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अधिगम और विकास में बच्चों की प्रगति को दर्ज करने और रिपोर्ट करने के लिए समग्र प्रगति

कार्ड (एच.पी.सी.) के उपयोग की अनुशंसा की गई है। एच.पी.सी. एक समग्र, 360-डिग्री बहुआयामी रिपोर्ट है, जिसमें विस्तार से प्रत्येक बच्चे की प्रगति के साथ-साथ संज्ञानात्मक, भावात्मक और साइकोमोटर डोमेन में प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता दर्शाई जाती है।

प्रत्येक बच्चे की सत्र-आधारित प्रगति को ट्रैक करने के लिए सभी तीन आयु समूहों (3–4, 4–5 और 5–6 वर्ष) के लिए समग्र प्रगति कार्ड क्रमशः अनुलग्नक IX, X और XI में दिए गए हैं।

बच्चों की सीखने की प्रगति को रिकॉर्ड करने के सुझाव—

- प्रत्येक बच्चे का पोर्टफोलियो विकसित करें।
- जब बच्चे अलग-अलग सीखने के अनुभवों में लगे हुए हैं तब उनका निरीक्षण करें।
- यह जानें कि किन दक्षताओं या कौशलों का निरीक्षण करना है।
- एक समय में बच्चों के छोटे समूहों को देखने पर ध्यान दें।
- जो देखा गया है उसके लिए उपाख्यान (विवरण) लिखें।
- अपने अवलोकन में उद्देश्यपूर्ण होना याद रखें।
- संदर्भ बिंदु के रूप में पिछले स्तर पर विचार करते हुए प्रत्येक बच्चे की प्रगति का आकलन करें।
- एक बच्चे की दूसरे बच्चों से तुलना न करें।
- आकलन के बाद, प्रत्येक बच्चे को सहयोग करने; सीखने के अनुभवों की योजना बनाने; माता-पिता के साथ प्रगति या देरी को साझा करने और कार्यक्रम को और संशोधित करने के लिए उसके अवलोकन रिकॉर्ड का उपयोग करें।

सुनियोजित और व्यवस्थित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से ज्ञान और व्यावसायिक कौशल में सुधार किया जा सकता है। शिक्षकों को ई.सी.सी.ई. शैक्षणिक प्रथाओं से संबंधित नवीनतम शोधों या साहित्य को पढ़कर खुद को पेशेवर रूप से उन्नत करने की आवश्यकता है। उन्हें एन.आई.पी.सी.डी., रा.शै.अ.प्र.प., एस.सी.ई.आर.टी., डायट आदि जैसे शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा समय-समय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों या पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में अपना नामांकन करने की आवश्यकता होती है।

प्रशिक्षकों को इन बिंदुओं पर शिक्षकों का मार्गदर्शन करना चाहिए—

- बालवाटिका I, II और III के लिए समग्र प्रगति कार्ड का विकास और रख-रखाव।
- विभिन्न रिकॉर्ड, रजिस्टर और बालवाटिका गतिविधियों के कैलेंडर को व्यवस्थित रूप से बनाए रखना।
- बालवाटिका के समग्र प्रगति कार्ड को कक्षा 1 के शिक्षकों के साथ साझा करें।
- सीखने में बच्चे की प्रगति के आधार पर उनके सीखने के अनुभवों की योजना बनाना।

टिप्पणी—

सुझाई गई क्षमता निर्माण कार्यक्रम अनुसूची और एक अनुवर्ती अवलोकन प्रोफार्मा संदर्भ के लिए अनुलग्नक VII और VIII में संलग्न किया गया है। इसे आवश्यकतानुसार अनुकूलित किया या अपनाया जा सकता है। कठपुतली बनाने या गीतों और छंदों के साथ गतिविधियों के आयोजन पर कार्यशाला के कुछ उदाहरण अनुलग्नक II और III में कार्यक्रम अनुसूची में दिए गए हैं।

अध्याय
5

शिक्षकों, माता-पिता, देखभालकर्ता और समुदाय की भूमिका

शिक्षक, बालवाटिका की अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे बच्चों के भविष्य को सँवारने के लिए जिम्मेदार होते हैं। इस स्तर पर बच्चे को एक शिक्षक और देखभाल करने वाले की आवश्यकता होती है, जिसके पास छोटे बच्चे को सँभालने के लिए संवेदनशीलता, समझ और कौशल हो और वे बच्चों को सीखने हेतु प्रोत्साहित कर सकें।

एक अच्छे शिक्षक की विशेषताएँ

- ज्ञान, कौशल और शिक्षण के प्रति रुझान से सुसज्जित होना।
- सीखने को तैयार और खुले विचार से नई चीज़ों और विचारों को स्वीकार करना।
- बच्चों के स्तर को समझकर सार्थक रूप से बात-चीत और संवाद करना।
- अच्छी समझ के साथ ऊर्जावान, नवाचारी, हंसमुख और विनोदप्रिय प्रवृत्ति होना।
- धैर्यवान और भावात्मक रूप से स्थिर होना।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करने के प्रति संवेदनशील होना।
- उत्साही और दयालु होना।
- अच्छा श्रोता, विनम्रता से बोलने एवं सही भाषा का प्रयोग करने वाला होना।
- बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ को स्वीकार करने वाला और सराहना करने वाला होना।
- अतिरिक्त संसाधन में रचनात्मक और प्रदर्शन कला के कौशल का उपयोग करने वाला होना।

बालवाटिका के शिक्षकों का दायित्व

बालवाटिका में शिक्षकों की भूमिका बहुत ही चुनौतीपूर्ण है। उन्हें गतिविधियों की योजना बनानी होती है और कक्षा में बच्चों (समान समूह या अलग-अलग आयु के समूह) की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप अधिगम माहौल को तैयार करना होता है। साथ ही उनसे उम्मीद की जाती है कि वे बच्चों के माता-पिता को उनमें देखी गई विकास संबंधी देरी (यदि कोई हो) के बारे में बताएँ।

एक शिक्षक के पास उपयुक्त अधिगम माहौल को बनाने के लिए पाठ्यक्रम, बच्चे, माता-पिता अथवा परिवारों और समुदाय के संबंध में कई जिम्मेदारियाँ होती हैं।

बालवाटिका के शिक्षकों का दायित्व

पाठ्यचर्या

- पाठ्यचर्या और सामग्री को अच्छी तरह से जानना।
- गतिविधियों की योजना बनाते समय पाठ्यचर्या के लक्ष्यों, आयु-वार दक्षताओं और अधिगम परिणामों को समझना।
- वर्ष अथवा सप्ताह अथवा दिनों की योजना बनाना।
- विभिन्न प्रकार के अधिगम-शिक्षण के तरीकों और स्थानीय या संगत सामग्री का उपयोग करना।
- कक्षा में उपयुक्त अधिगम का माहौल बनाना।
- विषयवस्तु/परियोजना के अनुसार डिस्प्ले बोर्ड व्यवस्थित करना।

बच्चे

- सुरक्षा और संरक्षा प्रदान करना।
- अपनत्व का व्यवहार और देखभाल करना।
- बुनियादी संकल्पनाओं का विकास, पुनर्कथन और पुनर्बलन करना।
- सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना।
- रचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करना।
- आदेश या अनुशासन की भावना पैदा करना।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करना।
- मातृभाषा या बच्चे की भाषा में बात करना।
- सभी बच्चों का समान ध्यान रखना और समान अवसर देना।
- नैतिक मूल्यों को सही तरीके से विकसित करना।
- बच्चे की क्षमता पर विश्वास करना।
- उत्साहजनक शब्दों का प्रयोग करना।
- हर बच्चे को स्वीकार करना।
- बच्चों को सुनना।
- बच्चों के साथ सहानुभूति रखना।
- उनके विचारों को सम्मान देना।
- उनकी आवश्यकताओं को जानना।
- मुद्दों को लोकतांत्रिक तरीके से हल करना।
- सही और गलत के बीच अंतर स्पष्ट करना।

अभिभावक

- बच्चे के सीखने में अभिभावक को भागीदार बनाना।
- अच्छे संबंध बनाए रखना।
- उनके साथ संचार को खुला और उसे निरंतर बनाए रखना।
- बच्चों को छोड़ने के दौरान और लेने के समय उनसे मिलना एवं बात-चीत करना।
- उनके घर जाना और मिलना।
- पी.टी.एम. में भागीदारी रखना।
- गतिविधियों में शामिल करना, जैसे– कहानी सुनाने में, बागवानी, फूड फेस्टिवल, खिलौने बनाना आदि।
- स्थानीय भ्रमण आदि के दौरान संसाधन के रूप में उनकी मदद लेना।
- कार्यशाला के आयोजन से उन्हें सशक्त बनाना।

समुदाय

- ई.सी.सी.ई. की आवश्यकता की व्याख्या करना।
- संसाधन के रूप में समुदाय की मदद लेना।
- आयोजनों में समुदाय को शामिल करना, जैसे– बाल-मेला, प्रदर्शनी, क्षेत्र भ्रमण आदि।
- स्थानीय नेताओं अथवा सरपंच अथवा स्वयं सेवकों से मिलना, उन्हें स्कूल में आमंत्रित करना और स्वास्थ्य जाँच, पेयजल सुविधा, बच्चों के अनुकूल शौचालय बनाने आदि के लिए सहयोग लेना।

शिक्षकों और बच्चों के बीच सकारात्मक संबंध बनाना

बालवाटिका में अनुकूल वातावरण इस बात से बहुत प्रभावित होता है कि शिक्षक बच्चों के साथ किस तरह का संबंध बनाए रखते हैं। इस संबंध को बनाए रखने के लिए शिक्षक को निम्नलिखित बातों पर विचार करना चाहिए—

- प्रत्येक बच्चे को व्यक्तिगत रूप से जानना— बच्चों के नाम, घर, परिवार, उनकी रुचियाँ, आवश्यकताएँ आदि।
- बच्चों के काम और उनके प्रयासों की सराहना करना।
- दैनिक बात-चीत में अवसर आने पर मान्यताओं या संस्कारों में वृद्धि करने पर बल देना।
- पूरे दिन रुचि और उत्साह बनाए रखना।
- बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना।
- सभी बच्चों पर ध्यान देना— सक्रिय बच्चों के साथ-साथ अंतर्मुखी बच्चों पर भी ध्यान देना।
- बच्चों को जानने के लिए उत्सुकता दिखाना कि प्रत्येक बच्चा विभिन्न स्थितियों के बारे में कैसे सोचता है, तर्क करता है और प्रतिक्रिया करता है।
- आलोचना करने और धमकी देने से बचना।
- बच्चे का ध्यान केंद्रित करने के लिए, बच्चे के स्तर को समझना और कक्षा में बात-चीत अथवा व्याख्या करते समय उनसे संपर्क बनाए रखना।
- बात-चीत, कहानी सुनाने और एक साथ खेलने के माध्यम से बच्चों की भावनाओं और मनोदशाओं को पहचानना और उन पर प्रतिक्रिया देना।

अभिभावक की भागीदारी

परिवार के सदस्यों को कई तरीकों से बालवाटिका की कई गतिविधियों में शामिल किया जा सकता है, क्योंकि उनका योगदान न केवल लाभप्रद है, बल्कि उनसे जुड़े गुणों और संस्कारों का समावेश बच्चे के समग्र विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। परिवारों को शामिल करने की प्रक्रिया में संवेदनशीलता, विश्वास, लचीलापन, प्रतिक्रियात्मक सुनना और एक सहायक पोषण संबंधी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

अभिभावक को शामिल करने के तरीके

- अभिभावक को स्कूल में आमंत्रित करें और उन्हें कक्षा की विभिन्न गतिविधियों से जोड़ें ताकि वे अधिगम-शिक्षण की प्रक्रियाओं को देख सकें और समझ सकें।
- गतिविधियों और क्षेत्र भ्रमण के आयोजन में स्वयंसेवकों के रूप में सहायता लें तथा बालवाटिका कार्यक्रम में माता-पिता को शामिल करें।
- सभी बच्चों के लाभ हेतु माता-पिता को अपनी विशेष प्रतिभा और कौशल प्रदर्शित करने के अवसर दें और आमंत्रित करें।
- बच्चों की पृष्ठभूमि या सांस्कृतिक विविधता को समझने और बच्चों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने के लिए उनके घर उनसे मिलने जाएँ।
- महीने में एक बार या आवश्यकतानुसार अभिभावक अथवा शिक्षक बैठक का आयोजन करें

- जब अभिभावक अपने बच्चों को छोड़ने या लेने आएँ तो उनसे बात-चीत करें।
- अभिभावक को स्कूल प्रबंधन समिति में सदस्यों के रूप में शामिल करें ताकि अभिभावक से बात-चीत द्वारा मुद्दों को हल किया जा सके।
- अभिभावक को स्कूल की गतिविधियों या अन्य मुद्दों पर अपडेट देने के लिए डायरी में प्रतिदिन संदेश या ई-मेल के माध्यम से संपर्क बनाएँ।
- अभिभावक को सांस्कृतिक कार्यक्रमों, नियमित गतिविधियों, संसाधन सामग्री विकसित करने में शामिल करें।

अभिभावक को सशक्त बनाना

समय-समय पर अभिभावक के लिए बुनियादी शिक्षा पर कार्यक्रम आयोजित करें। अभिभावक को सस्वर पाठ, कहानी सुनाने, कठपुतलियाँ तैयार करने और कम लागत वाले मज़ेदार खिलौने आदि से संबंधित सरल कौशल सिखाएँ। इससे न केवल शिक्षक को मदद मिलेगी, बल्कि अभिभावक और बच्चे में बात-चीत की गुणवत्ता में भी सुधार होगा। अभिभावक के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम भी आयोजित करें, उन्हें बच्चे के बारे में विकासात्मक पड़ावों के बारे में जागरूक करें। बच्चे को उनकी क्षमता से अधिक न सिखाने पर बल देना, बच्चे की सामाजिक, भावात्मक और पोषण संबंधी आवश्यकताएँ, खेल का महत्व और बच्चे के विकास में प्रारंभिक उद्दीपन, बालवाटिका में उपयोग की जाने वाली शिक्षण विधि, मातृभाषा में शिक्षण के महत्व, बाल विकास में अभिभावक और समुदाय की भूमिका के बारे में बताएँ।

अभिभावक और परिजन को कुछ सुझाव

- बच्चे को नियमित रूप से और समय पर स्कूल भेजना चाहिए।
- स्कूल के अधिकारियों को उस व्यक्ति की पहचान के बारे में सूचित किया जाना चाहिए, जो बच्चे को स्कूल में लाने और स्कूल से घर ले जाने वाला है।
- यदि बच्चे को जल्दी ले जाना हो तो स्कूल से पहले अनुमति लें।
- बच्चे की प्रगति या समस्या, यदि कोई हो, तो उस पर चर्चा करने के लिए शिक्षकों से मिलें।
- स्कूल की गतिविधियों और छुट्टियों के बारे में नोटिसों पर नियमित रूप से ध्यान दें।
- शिक्षक द्वारा आयोजित बैठकों में अभिभावक नियमित रूप से भाग लें।

समुदाय की भागीदारी

बच्चे राष्ट्र की मूल्यवान निधि हैं। बच्चे का पालन-पोषण उनके अभिभावक, परिवार और समुदाय का संयुक्त दायित्व होता है। परिवार-केंद्रित समाज और बाल-केंद्रित परिवार विकसित करने के लिए बच्चों के प्रति सामाजिक-पारिवारिक समझ बढ़ाना आवश्यक है। सामुदायिक भागीदारी के कई लाभ हैं, जैसे–

- इससे बच्चों में अपनेपन एवं जुड़ाव की भावना विकसित होती है।
- बच्चे समुदाय के प्रति समझ; सामाजिक कौशल और जागरूकता विकसित करते हैं।
- बच्चे सरलता से समाज में दूसरों के साथ मिलना-जुलना सीखते हैं।
- समुदाय विद्यालय को भौतिक संसाधन एवं विशेषज्ञों की भूमिका प्रदान कर सकते हैं।
- समुदाय अच्छे काम के लिए मान्यता और पुरस्कार प्रदान करके स्कूल में अच्छी प्रथाओं को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

समुदाय जागरूक हो तो ही बच्चों की आवश्यकताएँ पूरी की जा सकती हैं। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से सामुदायिक जागरूकता हासिल की जा सकती है—

- लोकगीत, नुक्कड़ नाटक, कठपुतली शो, जुलूस, रैली आदि करवाकर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना।
- त्यौहार समारोह, खेल आयोजन, बाल-मेला आदि जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करके विद्यालयों की लोकप्रियता बढ़ाना, जहाँ समुदाय के लोग भाग ले सकते हैं।

प्रारंभिक बचपन की शिक्षा की आवश्यकता को जब समुदाय के लोग पहचान लेते हैं तो समुदाय के सदस्यों के बीच बालवाटिका का स्वामित्व निश्चित रूप से विकसित हो जाता है। सामान्यत: यह देखा गया है कि समुदाय के सदस्य कई तरह से स्कूलों की मदद करते हैं, जैसे– पीने का पानी उपलब्ध करवाना, स्कूल एवं खेल के मैदान हेतु स्थान देना और अन्य संसाधन उपलब्ध कराना आदि। स्कूल प्रबंधन समिति में समुदाय के कुछ सदस्यों को विभिन्न पदों पर नियुक्त किया जा सकता है। यदि वे प्रशिक्षित या योग्यता प्राप्त नहीं हों, फिर भी वे बालवाटिका के उद्देश्यों को पूरा करने की दिशा में आवश्यकतानुसार योगदान करने में सक्षम होंगे।

समुदाय को शामिल करने के उपाय

शिक्षकों को सभी अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और स्कूल को समुदाय का अभिन्न अंग बनाने में मदद करनी चाहिए। समुदाय को निम्नलिखित तरीकों से स्कूल को समर्थन देने के लिए शामिल किया जा सकता है, जैसे–

- स्कूल की गतिविधियों में स्थानीय समुदाय के सदस्यों की प्रत्यक्ष भागीदारी, जैसे– स्कूल प्रबंधन समिति के सदस्यों के रूप में बच्चों का नामांकन और उनकी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना, समुदाय के साथ टिप्पणियों को साझा करना, विद्यालय विकास योजनाओं की तैयारी में उनकी सहायता लेना आदि।
- बालवाटिका में अधिगम-शिक्षण की प्रक्रियाओं में स्वयंसेवकों के रूप में स्थानीय समुदाय के सदस्यों को शामिल करना।
- बच्चों की शिक्षा और विकास में सुधार के लिए समुदाय का समर्थन लेना और संसाधन के रूप में उपयोग करना।
- खेल के मैदान, पीने के पानी की सुविधा, अतिरिक्त कमरे, बच्चों के लिए बेहतर पोषण संबंधी सहायता आदि जैसी किसी भी सहायता की आवश्यकता होने पर समुदाय के कार्यकर्ताओं से चर्चा करना।
- समुदाय में विभिन्न गतिविधियों, जैसे– मिट्टी के बर्तन, बढ़ईगीरी, मुर्गी पालन (पोल्ट्री), मत्स्य पालन, खेती, स्वास्थ्य केंद्र, स्कूल आदि के बारे में बच्चों को जानकारी प्रदान करने में सामुदायिक सहायता पाने का प्रयास करना।

इस तरह, अभिभावक और समुदाय दोनों की भागीदारी बच्चों के लिए अधिगम-शिक्षण के माहौल को समृद्ध कर सकती है। बच्चों को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए स्कूलों को हमेशा समुदाय की मदद लेनी चाहिए।

परिवार और समुदाय की भागीदारी बच्चों के सीखने में महत्वपूर्ण योगदान करती है। वे बच्चों के लिए रोल मॉडल हैं। जब शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के बीच परस्पर सहयोग होता है, तो बच्चे अकादमिक, व्यवहारिक और सामाजिक रूप से बेहतर बनते हैं।

भाग 2

पंचकोषीय विकास—
सुझावात्मक गतिविधियाँ

भाग 2

पंचकोषीय विकास हेतु क्षेत्रवार प्रत्येक डोमेन हेतु गतिविधियों का सुझाव दिया गया है। ये गतिविधियाँ दक्षता-आधारित होती हैं और आपस में एक-दूसरे पर निर्भर और परस्पर संबंधित हैं, उदाहरणार्थ— एक क्षेत्र या डोमेन में गतिविधियों का संचालन करते समय, बच्चे अन्य डोमेन से संबंधित दक्षताओं को भी विकसित करने में सक्षम होंगे। इसी प्रकार, एक पाठ्यचर्या लक्ष्य में शामिल गतिविधियाँ अन्य पाठ्यचर्या लक्ष्यों के विकास की ओर भी ले जा सकती हैं। एक गतिविधि विभिन्न दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों को संबोधित कर सकती है।

अन्नमय एवं प्राणमय कोष

अन्नमय कोष

(भौतिक विकास)

यह शरीर की सबसे बाहरी परत है, स्थूल भौतिक शरीर, जो मांसपेशियों और हड्डियों का प्रतिनिधित्व करता है। हम जो भोजन करते हैं, वह 'अन्न' द्वारा पोषित और अनुरक्षित होता है, इसलिए इसे अन्नमय कहा जाता है। यह स्वस्थ और पौष्टिक भोजन खाने, स्वच्छता और अच्छी आदतों को बनाए रखने, व्यायाम और योग करने से विकसित होता है।

प्राणमय कोष

(शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास)

यह शरीर की जीवन शक्ति है। यह सभी हार्मोन और पाचक रसों को नियंत्रित करता है। यह स्वस्थ और पौष्टिक भोजन खाने के साथ-साथ अच्छी नींद सहित स्वस्थ दिनचर्या का पालन करने से विकसित होता है। इसके अलावा श्वसन से जुड़े अभ्यासों, जैसे– प्राणायाम, आसन, व्यायाम, और शारीरिक गतिविधियों, जैसे– दौड़ना, कूदना, साइकिल चलाना, तैरना आदि द्वारा इसका पोषण किया जाता है।

यह शक्ति और जीवन शक्ति, उत्साह, साहस और फुर्ती के रूप में परिलक्षित होता है।

अन्नमय एवं प्राणमय कोष से संबंधित पाठ्यचर्या लक्ष्य

पाठ्यचर्या लक्ष्य 1— *बच्चों में ऐसी आदतों का विकास करना, जो कि उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित बनाएँ।*

पाठ्यचर्या लक्ष्य 2— *बच्चों में संवेदी कुशाग्रता का विकास करना*

पाठ्यचर्या लक्ष्य 3— *बच्चों में स्वस्थ शरीर और लचीलेपन का विकास*

लक्ष्य 1

अन्नमय कोष एवं प्राणमय कोष

भौतिक, शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 1: बच्चों में ऐसी आदतों का विकास, जो कि उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित बनाएँ

- लंबाई, वज़न एवं सामान्य स्वास्थ्य की मासिक जाँच।
- टीकाकरण को सुनिश्चित एवं उसका नियमित रिकार्ड रखना।
- पूरक आहार की व्यवस्था।
- पौष्टिक एवं संतुलित आहार दे अथवा बच्चों को पौष्टिक आहार लाने को कहें।
- बच्चों को शौचालय का उचित रूप से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें एवं शौचालय का प्रयोग करने के पश्चात उन्हें हाथ धोने के लिए कहें।
- आग, नुकीली वस्तुओं, बिजली के स्विच, खुली नालियों या गड्ढों, सड़कों, अनजान व्यक्तियों आदि से सुरक्षा को सुनिश्चित करने हेतु नियम बनाएँ तथा बच्चों में नियमों का पालन करने की भावना का विकास करें।

1.1: पौष्टिक भोजन के प्रति अपनी रुचि व समझ का प्रदर्शन करना तथा भोजन बर्बाद नहीं करना

गतिविधि 1
मेरा पसंदीदा भोजन

आवश्यक सामग्री	खाद्य पदार्थों एवं अखाद्य पदार्थों के चित्र या कार्ड्स
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	एक कटोरी में खाद्य एवं अखाद्य पदार्थों के चित्र कार्ड रखें। बच्चों को एक-एक करके बुलाएँ और उन्हें कटोरी में से एक कार्ड उठाकर उस तस्वीर को पहचानने के लिए कहें कि वह खाद्य पदार्थ है या अखाद्य पदार्थ है। यदि वह एक खाद्य पदार्थ है तो बच्चे से उसे आपको देने के लिए कहें अन्यथा उसे वापस कटोरी में रखने के लिए कहें। (इसका गतिविधि उपयोग मूल्यांकन गतिविधि के रूप में भी किया जा सकता है।)

4–5 वर्ष	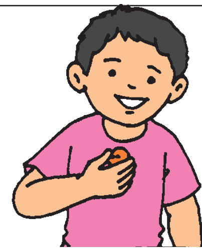 • खेल खेलें— 'वाक्य पूरा करें'। • बच्चों को अर्धवृत्ताकार में बैठने को कहें। • बच्चों को अपने पसंदीदा भोजन के बारे में सोचने दें। उनकी बगल में बैठे बच्चे से शुरू करते हुए, उस बच्चे को अपनी पसंदीदा मिठाई के बारे में सोचने और उस पर एक पूरा वाक्य बोलने के लिए कहें, उदाहरण के लिए—'मुझे जलेबी पसंद है', फिर अगला बच्चा बोलेगा 'मुझे रसगुल्ला पसंद है' और इसी तरह आगे गतिविधि के पूरा होने के बाद सभी बच्चों से तालियाँ बजाने और खुशी व्यक्त करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	इसी तरह का खेल सब्ज़ियों और फलों के साथ भी खेलें। बच्चों को पूरे वाक्य में उत्तर देने के लिए प्रेरित करें।
5–6 वर्ष	बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाएँ। बच्चों को अपने पसंदीदा खाद्य पदार्थों के चित्र एक चार्ट पेपर पर बनाने को कहें और शिक्षक उस पर लेबल लगाने में सहायता करने के लिए कहें। समूहों को अपना चित्र कक्षा के सामने प्रस्तुत करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों के साथ एक पोस्टर तैयार करें, जिसमें यह दर्शाया जाए कि दैनिक रूप से क्या खाया अथवा पिया जाए और क्या कभी-कभी खाया जा सकता है। बच्चों को घर पर फल, सब्ज़ी एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थों के चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों से संतुलित आहार के महत्व, पौष्टिक एवं अखाद्य पदार्थों के बारे में बात करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	अवलोकन, शब्दावली विकास, रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति, संप्रेषण, व्यक्तिगत देखभाल एवं स्वच्छता, संवेदी अनुभूति, दृश्यात्मक स्मृति, पौष्टिक भोजन के लिए पसंद को प्रदर्शित करना और खाने को बर्बाद न करना आदि सीखना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे द्वारा खाई जाने वाली वस्तुओं को पहचानना, विविध खाद्य पदार्थों को नाम देना, भोजन के समय बिना गिराए स्वयं भोजन करना, पौष्टिक एवं अखाद्य पदार्थों को पहचानना, स्मृति का प्रयोग करना, खाए हुए भोजन को याद करना आदि।

गतिविधि 2

भोजन का सुखद समय

आवश्यक सामग्री	कार्डबोर्ड, स्केच पेन्स, कैंची, दोनों ओर चिपकने वाली टेप
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	विराम अथवा भोजन-अवकाश के समय बच्चों को अपने-अपने टिफिन बॉक्स को लेकर एक साथ बैठने दें। उनसे खुलकर बात करें। उनसे अपनी भावनाएँ व्यक्त करने को कहें। आपको विविध प्रतिक्रियाएँ इस दौरान मिल सकती हैं। उन्हें पूछें 'क्या आप सभी को भूख लगी हैं?' और उनकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा करें। उनसे पूछे कि अगर हम खाना नहीं खाएँगे तो क्या होगा? उन्हें सोचने दें। आपको अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ मिल सकती हैं। इस तरह सहज बात-चीत के द्वारा बच्चों को यह समझने दें कि हमें प्रतिदिन और समय पर भोजन करना चाहिए और खाना बर्बाद नहीं करना चाहिए। भोजन से हमें वृद्धि करने, स्वस्थ, मज़बूत और ऊर्जावान बनने में मदद मिलती है। सुनिश्चित करें कि सभी बच्चे खाने से पहले और बाद में अपने हाथ धो लें और फलों के छिलके, कागज आदि को कूड़ेदान में डालें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक प्लेकार्ड बनाएँ, जिस पर विराम का समय या भोजनावकाश लिखा हो। कोई एक बच्चा प्लेकार्ड विराम के समय या भोजन-अवकाश के वक्त पर प्लेकार्ड प्रदर्शित करे ताकि सभी बच्चे अपना-अपना कार्य खत्म कर अपना टिफिन बॉक्स, पानी की बोतल निकालकर और हाथ धोकर खाना खाने के लिए तैयार हो जाएँ। बच्चे बारी-बारी से प्लेकार्ड प्रदर्शित कर सकते हैं।
4–5 वर्ष	विराम समय या भोजनावकाश के दौरान, बच्चे क्या खा रहे हैं, उसका स्वाद कैसा है, आदि पर बात करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें। उनके साथ चर्चा करें कि उन्हें भोजन की आवश्यकता क्यों है। उन्हें भोजन के महत्व के प्रति जागरूक करें। स्थानीय संदर्भ के अनुसार कोई गीत अथवा कविता गाएँ या भोजन के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए एक श्लोक पढ़ें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को आँखें बंद करके और चुपचाप प्रार्थना करने दें और जो पानी हम पीते हैं और जिस हवा में हम साँस लेते हैं उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	• विराम के समय सभी बच्चों के ढंग से बैठने के बाद सरल पहेलियाँ, जैसे– 'मैं कुछ खाने वाला लाया या लाई हूँ, जिसका रंग लाल है, इसे कच्चा खाया जाता है और कभी-कभी पकाया भी जाता है।' बताओं यह क्या है? या ऐसी ही और पहेलियाँ पूछें। • उन्हें सोचने और दोस्तों से सरल पहेलियाँ पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। • उन्हें टिफिन या प्लेट में खाना न छोड़ने या बर्बाद न करने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें कुछ पलों के लिए आँखें बंद करके ईश्वर का आभार व्यक्त करने या स्थानीय संदर्भानुसार कोई गीत, कविता, प्रार्थना अथवा श्लोक बोलने हेतु प्रोत्साहित करें। • बच्चों से उन लोगों की भूमिका के बारे में बात करें, जिनकी मदद से खाद्य पदार्थ हम तक पहुँचते हैं जैसे कि किसान आदि। उनके प्रति आभार व्यक्त करें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	समारोह अथवा प्रतिभोज में बचे हुए भोजन या कूड़ेदान में फेंके गए खाद्य पदार्थों के चित्र या पोस्टर दिखाएँ। साथ ही, उन्हें भूख से मर रहे, खाने से वंचित, कमज़ोर और बीमार लोगों की तस्वीरें दिखाएँ। बच्चों को सोचने दें कि इन समस्याओं को दूर करने के लिए क्या किया जा सकता है। उन्हें भोजन को बर्बाद न करने और ज़रूरतमंद लोगों के साथ भोजन साझा करने के लिए जागरूक करें। बच्चों के माता-पिता को भी घर पर भोजन बर्बाद न करने के प्रति जागरूक करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संप्रेषण कौशल, तर्कसंगत सोच, सीखने की सकारात्मक आदतें, साझा एवं सहयोग करना आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चा भोजन को महत्व देता है, भोजन को बर्बाद किए बिना खाता है, भोजन उचित मात्रा में लेता है

गतिविधि 3
आओ खाद्य चार्ट बनाएँ

आवश्यक सामग्री	खाद्य पदार्थों का चार्ट, कठपुतली
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	दैनिक खाद्य पदार्थों, जैसे– दाल, रोटी, दूध, दही, फल और सब्ज़ियों का एक चित्र चार्ट तैयार करें। इस चित्र चार्ट को बच्चों की आँखों के स्तर पर लगाएँ। बच्चों को चित्र चार्ट को देखने दें और अपने पसंदीदा खाद्य पदार्थ को पहचानने और उसके बारे में शिक्षक को बताने दें। बच्चों के साथ फलों और सब्ज़ियों जैसी कठपुतलियाँ बनाएँ और उनसे संबंधित कविता गाएँ एवं सुनाएँ।
4–5 वर्ष	• फलों और सब्ज़ियों के चित्रों वाला एक डिस्प्ले बोर्ड बनाएँ, जिससे बच्चे विभिन्न फलों और सब्ज़ियों के नाम सीख सकें। • कक्षा में असली फल, सब्ज़ियाँ और विभिन्न अनाज लाएँ। बच्चों को उन्हें छूने दें, उन्हें सूँघने दें और फिर उनसे उन फलों और सब्ज़ियों को चखने को कहें, जिन्हें कच्चा खाया जा सकता है। उनसे उनके स्वाद, रंग, गंध आदि के बारे में पूछें। • बच्चों से कहें कि वे उन फलों और सब्ज़ियों को पहचानें और उनका नाम बताएँ, जो उन्होंने खाई हैं। उन्हें वह अपनी भाषा में क्या कहते हैं? वे इसे कैसे खाते हैं— कच्चा या पका हुआ? उनसे पूछें कि हमें रोज़ फल और सब्ज़ियाँ क्यों खानी चाहिए। • फलों अथवा सब्ज़ियों से जुड़ें तुकबंदी गीत गाएँ। उनसे पूछें कि उन्हें फल और सब्ज़ियाँ कहाँ से मिलती हैं। उन्हें सब्ज़ी विक्रेता, फल विक्रेता और किसानों की भूमिकाएँ निभाने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे फलों और सब्ज़ियों के कट-आउट को किसी डंडी पर चिपकाकर शिक्षक के साथ सब्ज़ियों और फलों की छड़ीनुमा कठपुतली बना सकते हैं। पौष्टिक भोजन करने के महत्व के बारे में बच्चों को संवेदनशील बनाने के लिए कठपुतली प्रदर्शन का आयोजन करें।

5–6 वर्ष	एक भोजन मेला आयोजित करें और उसमें अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को शामिल करें। इसके माध्यम से बच्चों को पौष्टिक खाद्य पदार्थों के बारे में जागरूक होने का मौका दें। पौष्टिक खाद्य पदार्थों, जैसे– मूँगफली, गुड़, भुने हुए चने, फल, नींबू, सब्ज़ियाँ आदि की व्यवस्था करें। उन्हें मिश्रित मूँगफली, गुड़ और भुने हुए चने खाने का आनंद लेने दें। अभिभावक को पौष्टिक नाश्ते, फलों की चाट, नींबू पानी आदि तैयार करने दें और बच्चों को वही परोसें। अभिभावकों से कहें कि बच्चों को साधारण फल-सब्ज़ियाँ काटने, मूँगफली, गुड़ और भुने चने को आपस में मिलाने में शामिल करें और बच्चों को खाने की चीजें परोसें और स्वयं भी इसका आनंद लें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• पौष्टिक भोजन से संबंधित कठपुतली प्रदर्शन की गतिविधि करें। पौष्टिक खाद्य पदार्थों की वर्कशीट बनाकर बच्चों से पौष्टिक पदार्थों पर सही का निशान लगाने को कहें। • एक पौष्टिक भोजन से संबंधित भूल-भुलैया बनाएँ। भूल-भुलैया से निकलने में रवि की मदद करें। उन्हें सभी पौष्टिक आहारों के माध्यम से अपना रास्ता खोजने को कहें। • बच्चों को पौष्टिक खाद्य पदार्थों के महत्व को समझने दें। कक्षा में तौलने की मशीन रखें और बच्चों को एक-दूसरे का भार मापने दें। बच्चों को उनके शारीरिक विकास और स्वस्थ शरीर के लिए पौष्टिक भोजन के महत्व के बारे में बताएँ। • उन्हें तीन-तीन के समूहों में अपनी ऊँचाई की तुलना करने दें और बताएँ कि समूह में कौन लंबा, कौन उससे लंबा और कौन सबसे लंबा है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	छँटाई, वर्गीकरण, तार्किक चिंतन, सहजता से बात-चीत, सहयोग, सकारात्मक प्रतिक्रिया, शब्दावली, कलात्मक कार्य और सराहना करते हैं, स्वस्थ और सुरक्षित आदतें, संवेदी अनुभूतियों में तीक्ष्णता, दृश्यात्मक स्मृति, रंग और आकारों के बीच अंतर एवं समग्र जागरूकता रखने के बारे में बताएँ।
अवलोकन बिंदु	पौष्टिक भोजन के बारे में जागरूकता, भागीदारी एवं जुड़ाव, जिज्ञासा, स्मृति, स्मरण, ध्यान, निर्णय लेना, पौष्टिक भोजन को पसंद करने और भोजन को बर्बाद न करने, सामग्री और सरल उपकरणों का सुरक्षित उपयोग करने के बारे में बताएँ।

1.2: व्यक्तिगत देखभाल एवं स्वच्छता हेतु आवश्यक अभ्यास करना

गतिविधि 1
आओ गीत गाएँ

आवश्यक सामग्री	कविताओं एवं गीतों का संग्रहण, शारीरिक अंगों से संबंधित छड़ीनुमा कठपुतलियाँ
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष 	कविताएँ एवं गीत बच्चों तक संगत एवं उचित संदेश पहुँचाने में प्रभावी भूमिका निभाते हैं— *Here we go around the mango tree,* *Mango tree, mango tree* *Early in the morning* *This is the way we brush our teeth* *Brush our teeth, brush our teeth* *Early in the morning* *This is the way we comb our hair…* (चेहरा, हाथ धोने आदि के समय गाना गाया जा सकता है।) गाना गाते समय ताली बजाएँ और क्रियाएँ करें। गाने को तीन से चार बार दोहराएँ। स्वच्छता से संबंधित बात-चीत करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	व्यक्तिगत स्वच्छता से संबंधित नियमित गतिविधियों से जुड़ी स्वतंत्र और व्यवस्थित बात-चीत करें। स्वास्थ्य, पोषण और स्वच्छता से संबंधित मुद्दों पर कक्षा में बच्चों के साथ और पी.टी.एम. या नियोजित या कभी-कभी होने वाली बैठकों के दौरान माता-पिता के साथ चर्चा करें।
4–5 वर्ष	**हाथ धुलाओ भाई** "साबुन आओ, पानी आओ मिल-जुल कर, मेरे हाथ धुलाओ हाथ धुलाओ भई, हाथ धुलाओ। हाथ धुलाओ भई, हाथ धुलाओ।।" ढपली के साथ गीत को हाव-भाव के साथ गाएँ। गाने को तीन से चार बार दोहराएँ। बच्चों को साफ़-सफाई का महत्व समझाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे, स्थितियों का नाटकीकरण, उदाहरणार्थ— सुबह तैयार होने की गतिविधि में कंघी, नेलकटर, टूथब्रश आदि स्वयं को संवारने वाली वस्तुओं का परिचय दें। उनसे पूछें कि अगर हम अपनी देख-रेख नहीं करते हैं तो क्या होगा। बच्चों को नित्य स्नान करके एवं साफ़-सुथरे होकर विद्यालय आने के लिए प्रेरित करें।

5-6 वर्ष	**हाँ जी हाँ, ना जी ना** तुम खाना खाते हो? हाँ जी हाँ, हाँ जी हाँ तुम खाने से पहले हाथ धोते हो? ना जी ना, ना जी ना खाने की हाँ, हाथ धोने की ना, ऐसे कैसे चले जहाँ? तुम गंदा करते हो? हाँ जी हाँ, हाँ जी हाँ तुम सफाई भी करते हो? ना जी ना, ना जी ना गंदे की हाँ, सफाई की ना, ऐसे कैसे चले जहाँ? तुम कपड़े पहनते हो? हाँ जी हाँ, हाँ जी हाँ तुम कपड़े धोते भी होगे? ना जी ना, ना जी ना, पहनने की हाँ, धोने की ना, ऐसे कैसे चले जहाँ? (कमला भसीन द्वारा रचित मूल कविता के आधार पर) शिक्षक या शिक्षिका इसी धुन पर इस कविता को आगे बढ़ा सकते हैं, जैसे– खाने की हाँ, हाथ धोने की भी हाँ, गंदे की ना, सफाई की हाँ, पहनने की हाँ, धोने की भी हाँ ऐसे चले जहाँ (किसी वाद्ययंत्र का प्रयोग करके हाव-भाव के साथ गीत गाएँ। गाने को तीन-चार बार दोहराएँ। बच्चों को गीत का आनंद लेने दें। उन्हें स्वच्छता संबंधी आदतें विकसित करने को प्रोत्साहित करें।)
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	कक्षा में बच्चों की ऊँचाई के अनुसार एक दर्पण लगाएँ। उन्हें खुद को, उनके कपड़ों, दाँतों, बालों आदि को देखने को कहें और पूछें कि अच्छे कपड़े पहनने पर उन्हें कैसा महसूस होता है। उन्हें खुद जूते पहनने को कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	व्यक्तिगत देखभाल और स्वच्छता को बनाएँ रखें। स्वस्थ आदतों का विकास, स्वयं को पहचानना, बात-चीत करना, सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देना, प्रभाव पैदा करना, उपयुक्त उपकरणों का उपयोग करना, गाने सुनना और सराहना करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे व्यक्तिगत देखभाल और स्वच्छता बनाएँ रखते हैं, अपने कपड़े और जूते खुद पहन सकते हैं, गंदे होने पर, खाने से पहले और बाद में और शौचालय का उपयोग करने के बाद हाथ धोते हैं।

गतिविधि 2
स्वच्छ, स्वच्छ, स्वच्छ

आवश्यक सामग्री	पानी की बाल्टी, फल (मॉडल या असली), तौलिया, सब्ज़ियाँ (मॉडल या असली)
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	हाथ धोना, व्यक्तिगत साफ़-सफ़ाई बनाए रखना, बिना गिराए अपना भोजन करना, शौचालय का उचित उपयोग करना, कचरे को कूड़ेदान में डालना आदि को प्रदर्शित करना। बच्चों को आपका अनुपालन करने के लिए कहें। हाथ धोने के बाद उन्हें हाथ सुखाने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को भोजन से पहले या मिट्टी या रेत में खेलने के बाद हाथ धोने और साफ़ करने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	• बच्चों को सभी चरणों का पालन करते हुए हाथ धोने का तरीका दिखाएँ। • साफ़-सफ़ाई पर बात करें। बाहर खेले जाने वाले खेलों या भोजन अवकाश के बाद, उन्हें शौचालय में ले जाएँ और उन्हें इसका सही तरीके से उपयोग करने हेतु मार्गदर्शन करें और हर बार उपयोग के बाद पानी डालने की सीख दें। बाहर जाते समय उन्हें चप्पल पहनने को कहें। • हाथ धोने के चरणों पर अनुक्रम कार्ड बनाएँ, उन्हें मिश्रित रूप से प्रस्तुत करें और बच्चों को इसे सही क्रम में व्यवस्थित करने दें और हाथ धोने की आवश्यकता पर उनसे बात करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	नाश्ते के समय का उचित उपयोग करें। नाश्ते का समय कई अच्छी आदतें सीखने का अवसर प्रदान करता है, जैसे– दूसरों की प्रतीक्षा करना, भोजन से पहले आभार व्यक्त करना, बिना गिराए खाना, रद्दी कागज़ या छिलके को कूड़ेदान में डालना, चीज़ों को उनकी निर्धारित जगह पर रखना आदि।
5–6 वर्ष	बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाएँ, प्रत्येक समूह को फल या फल का मॉडल दें और बच्चों को फल धोने के लिए प्रोत्साहित करें तथा उन्हें बताएँ कि खाने से पहले फल और सब्ज़ियों को धोना क्यों आवश्यक है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक पासा (डाइस) की सहायता से साँप-सीढ़ी का खेल खेलें। इस खेल के माध्यम से स्वस्थ आदतों की संकल्पना का परिचय दें। नियमों की व्याख्या करें, यदि आप सही स्वस्थ आदत का पालन करेंगे तो आप सीढ़ी चढ़ेंगे और यदि आप सही आदतों का पालन नहीं करेंगे तो आप नीचे आ जाएँगे।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	स्वास्थ्यवर्धक आदतों का विकास, उचित गत्यात्मक विकास, मौखिक निर्देशों को समझना, कारण और प्रभाव को देखना तथा समझना, सहयोगी व्यवहार दिखाना, सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया, व्यक्तिगत देखभाल के प्रति जागरूकता आदि।
अवलोकन बिंदु	व्यक्तिगत देखभाल की वस्तुओं का स्वयं उपयोग करना, स्वच्छता का ध्यान रखना एवं पालन, बाहर जाते समय जूते-चप्पल पहनना, दूसरों की सहायता के बिना व्यक्तिगत देखभाल करना।

गतिविधि 3
आओ चुनें

आवश्यक सामग्री	थाली, कपड़ें, किताबें
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	चार या पाँच साफ़ और गंदी (जो लंबे समय से इस्तेमाल न हुए हों) थालियाँ और चम्मच एक जगह अलग-अलग रखें। भोजन के लिए तैयार होते समय उन्हें एक थाली उठाने के लिए कहें। देखें कि बच्चे कौन-सी थाली चुनते हैं। चर्चा करें कि उन्होंने साफ़ थाली क्यों उठाई।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	हाथ पोंछने के लिए एक गंदा और एक साफ़ तौलिया रखें। उनसे पूछें कि वे किसका उपयोग करना चाहेंगे और क्यों।
4–5 वर्ष	बच्चों से पूछें कि जब वे अपने परिवार के साथ बाहर जाते हैं या विद्यालय (स्कूल) आते हैं तो वे क्या पहनते हैं। वे किस तरह के कपड़े पहनना पसंद करेंगे— साफ़ या गंदे? क्यों? कपड़ों को साफ़ सुथरा कैसे रखें? आपके कपड़े कौन धोता है? कैसे?
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों से उनके दाँत ब्रश करने के बारे में बात करें। अगर हम रोजाना अपने दाँतों को साफ नहीं करते हैं तो क्या होता है? हाव-भाव द्वारा दाँतों को साफ़ करने का तरीके को प्रदर्शित करें और संबंधित कविता गाएँ। साफ़ और स्वच्छ सफ़ेद दाँतों का मॉडल दिखाएँ और पीले दाँतों या गंदे दाँतों का चित्र भी दिखाएँ। उनसे पूछें कि उन्हें कैसे दाँत चाहिए और क्यों? साफ़ दाँत पाने के लिए उन्हें क्या-क्या करना चाहिए?
5–6 वर्ष	बच्चों के साथ छोटे समूहों में स्वच्छता और सफ़ाई से संबंधित नाटक आयोजित करें। बच्चों में भूमिकाओं का विभाजन करें, जिसमें दिए गए पात्रों, जैसे– एक डॉक्टर, एक छोटा बच्चा (जो अक्सर बीमार पड़ने के कारण विद्यालय नहीं जा पाता है और इसी कारण अपने विद्यालय के समय को याद करता है।), शिक्षक और माता-पिता आदि। उन्हें कुछ संवाद दें और इस नाटक का मंचन करके उन्हें स्वास्थ्य, स्वच्छता, सफ़ाई तथा पौष्टिक भोजन के महत्व के बारे में जागरूक करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• पौष्टिक आहार लेने के महत्व पर बच्चों के लिए कठपुतली प्रदर्शन का आयोजन करें। • कक्षा में 4–5 बच्चों का समूह बनाएँ और उन्हें कागज़ की लंबी पट्टियों द्वारा एक-दूसरे की ऊँचाई को मापने दें। संबंधित पट्टियों पर उनका नाम लिखकर दीवार पर इस प्रकार चिपकाएँ कि उनकी तुलना हो सकें। बच्चों को देखने दें और पहचानें कि 'कौन सबसे लंबा है।' इसे पौष्टिक आहार करने, पीने के पानी, व्यायाम, उचित नींद, स्वच्छता बनाए रखने आदि से जोड़ें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	स्वास्थवर्धक, सीखने की सकारात्मक आदतों का विकास एवं रचनात्मकता, सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया, कारण और प्रभाव को समझना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे द्वारा साफ़-सुथरी वस्तुओं को चुनना और इस्तेमाल करना, अस्वच्छ चीज़ों को धोकर स्वच्छ बनाना और साफ़-सफ़ाई बनाएँ रखना।

1.3: विद्यालय अथवा कक्षा को स्वच्छ एवं व्यवस्थित रखना

गतिविधि

घर के अंदर खेले जाने वाले खेल

आवश्यक सामग्री	जूतों का खाली कार्टन, खिलौने, गोंद की बोतल, दोनों ओर से चिपकने वाली टेप, पुराने समाचार पत्र
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को गतिविधि क्षेत्रों में खेलने दें। खेलने का समय समाप्त हो जाने के बाद खिलौनों को वापस उनके भंडारण स्थान पर रखकर गतिविधि क्षेत्र को साफ़ करने के लिए प्रोत्साहित करें। कचरे को फेंकने के लिए कूड़ेदान का प्रयोग करें और कक्षा को साफ़ सुथरा रखें। • बच्चों को क्रेयॉन, पेंसिल आदि को किसी कटोरी या बॉक्स में रखकर छोटे-छोटे पौधों, खिलौनों और डिस्प्ले से कक्षा को सजाने दें और उनके सामान को सही जगह पर रखने दें।
4–5 वर्ष	• भोजन के समय और बाद में, उन्हें फलों के छिलके या कोई रद्दी कागज़ कक्षा में रखे कूड़ेदान में डालने के लिए कहें। पैकेजिंग सामग्री का उपयोग करके कूड़ेदान बनाने में बच्चों को शामिल करें और उसका उपयोग कचरा डालने के लिए करें। • अगर हम प्रत्येक वस्तु को सही जगह पर रखते हैं, तो हम नियोजित महसूस करते हैं और इससे हमें चीज़ों को आसानी से खोजने में मदद मिलती है। बच्चों में इन भावनाओं को पैदा करें।
5–6 वर्ष 	• सजावट के लिए पुरानी पत्रिकाओं, समाचार पत्रों या चार्ट पेपरों से चित्र तथा कैंची, रंग, गोंद की बोतल आदि प्रदान करें। • कक्षा को सुंदर बनाने के लिए उन्हें एक साथ कार्य करने के लिए कहें। कक्षा को उनके द्वारा बनाए गए रेखाचित्रों, कोलाज आदि से सजाने के लिए कहें। उन्हें घर में न काम आने वाली सामग्री लाने के लिए कहें, जिसे सजावट के लिए पुन: उपयोग किया जा सकता है। उन्हें अपनी रचनात्मकता का उपयोग उन चीज़ों को बनाने में करने दें, जो उनकी कक्षा को आकर्षक बनाए।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• गलियारे, डिस्प्ले बोर्ड या विद्यालय के मैदान की सजावट और स्वच्छता अभियान का आयोजन करें। • बच्चों को रंगों या खिलौने का डिब्बा बनाने और उसे सजाने को कहें। उन्हें अपने निजी सामान, जैसे– बैग, बोतल, जूते आदि अपने स्थान पर रखने और पुनः वहीं से लेने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	रचनात्मकता, कल्पना, सौंदर्यबोध, सामग्री और सरल उपकरण के सुरक्षित उपयोग का अभ्यास करना, समन्वय और लचीलापन, सहयोगी व्यवहार, दूसरों की मदद करना।
अवलोकन बिंदु	किसी वस्तु का उसको रखने के उपयुक्त स्थान से संबंध; अपने व्यक्तिगत सामान को अच्छे स्वरूप में बनाए रखना; खाने के डिब्बे, थाली और बर्तन धोना, कचरे को फेंकने के लिए कूड़ेदान का प्रयोग करना।

1.4: सरल उपकरणों एवं सामग्री के सुरक्षित उपयोग का अभ्यास करना

गतिविधि

उपयोग करें और सीखें

आवश्यक सामग्री	बच्चों के अनुकूल चाकू और कैंची, सेब और रस्सी
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• एक चित्रकला गतिविधि आयोजित करें और बच्चों को उनकी पसंद का कोई भी चित्र बनाने दें और बच्चे उसके क्रेयॉन, ब्रश आदि जैसे उपयुक्त साधन से रंग भरने दें। • उन्हें कक्षा में जन्मदिन समारोह के दौरान केक या पेस्ट्री काटने के लिए उनके अनुकूल चाकू का उपयोग करने का अवसर प्रदान करें। • बच्चों को चाकू, कैंची, माचिस की तीली जैसी वस्तुओं के सुरक्षित उपयोग के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए कठपुतली प्रदर्शन का आयोजन करें। • बच्चों के लिए कार्टन के डिब्बे को सजाने, काटने और चिपकाने की गतिविधि का आयोजन करें और उन्हें विभिन्न आकारों को काटने के लिए उनके अनुकूल कैंची का उपयोग करने दें और कार्टन के डिब्बे पर चिपका कर सजाने दें। वे अपनी पढ़ाई में उपयोग आने वाले सामान को रखने के लिए इस कार्टन के डिब्बे का उपयोग करें।
4–5 वर्ष	• बच्चों के लिए अनुकूल कैंची लें। बच्चों को बिंदीदार रेखाओं के अनुसार कागज़ काटने के लिए प्रोत्साहित करें। पुरानी पत्रिकाओं और समाचार पत्रों से कागज़ और चित्र काटते समय कैंची को संभालने हेतु मार्गदर्शन दें। केक या पेस्ट्री काटते समय चाकू का सावधानीपूर्वक प्रयोग करवाएँ। • बच्चों के लिए रेत का खेल (सैंड प्ले) की गतिविधि का आयोजन करें। उन्हें फावड़ियों, छोटी बाल्टियों और साँचों जैसे उचित उपकरणों की मदद से रेत के खेल का आनंद लेने दें। उन्हें जागरूक करें कि घर, सड़क, मंदिर आदि के लिए रेत के गड्ढे भरने में रेत का उपयोग कैसे होता है और रेत में खेलते समय अन्य पर रेत नहीं डालनी चाहिए। • एक रोल प्ले या नाटक की योजना बनाएँ, जिसमें बच्चे अभिनय कर सकें एवं खेल सामग्री और उपकरणों के सुरक्षित उपयोग के बारे में बात कर सकें।
5–6 वर्ष	गुड़ियों के क्षेत्र (डॉल एरिया) में खेलने के चाकू, स्टोव और नकली माचिस आदि के साथ रसोई के सामान का सेट रखें। बच्चों को एक प्लास्टिक का चाकू लेने दें और ऐसा व्यवहार करने दें जैसे कि वे सब्ज़ी काट रहे हैं, खाना बनाने के लिए पानी और अन्य आवश्यक सामग्री ले जा रहे हैं। उनसे बात करें कि वे क्या पका रहे हैं और वे किस सामग्री का उपयोग कर रहे हैं आदि। सुनिश्चित करें कि वे सावधानी के साथ उपकरणों का उपयोग करना सीखें। बच्चों से चाय बनाने की प्रक्रिया के बारे में सोचने को कहें। उन्हें एक रोलप्ले करने दें, जिसमें खाना खाने, पानी पीने, कार्यालय के लिए तैयार हो रहे हों आदि।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों के लिए उपयुक्त बागवानी उपकरणों का उपयोग करके बागवानी गतिविधि की योजना बनाएँ। यह सुनिश्चित करें कि वे आपकी देख-रेख में उनका उपयोग करें। • घातक उपकरण (नुकीले व धार वाले) अथवा नुकसान न पहुँचानें वाले उपकरण के चित्रों की व्यवस्था करें और उन्हें वर्गीकृत करने के लिए कहें।
अन्य दक्षताओं को संबोधित करना	सामग्री और विभिन्न उपकरणों का सुरक्षित उपयोग, समन्वय और लचीलापन, सहयोगी व्यवहार, दूसरों की मदद करना।
अवलोकन बिंदु	सुरक्षा, स्वयं की देखभाल और संबंधित शब्दावली के निर्माण के बारे में जागरूकता प्रदर्शित करना।

1.5: कार्य (चलने, दौड़ने, साइकिल चलाने) करने में सुरक्षा के प्रति जागरूकता प्रदर्शित करना और उसके अनुरूप व्यवहार करना

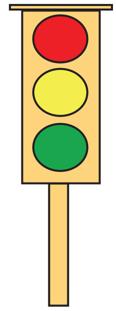

गतिविधि

सड़क सुरक्षा

आवश्यक सामग्री	लाल, पीले और हरे रंग के कार्ड (बड़े आकार में)
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को तीन मुख्य ट्रैफिक लाइट के के रंग सीखने में मदद करें— लाल, हरा और पीला। दो बोर्ड लगाएँ— हरे रंग का और लाल रंग का। बच्चों को एक घेरे में खड़े हो जाने दो। निर्देश दें— जब वे एक हरा बोर्ड देखते हैं, तो उन्हें दौड़ना चाहिए, और जब वे एक लाल रंग देखते हैं, तो उन्हें रुक जाना चाहिए। उन्हें ट्रैफिक लाइट के संबंध में लाल रंग और हरे रंग के साथ अपनी विशिष्ट क्रियाओं को जोड़ने में सक्षम करें। उनके साथ ट्रैफिक लाइट की संकल्पना पर चर्चा करें।
4–5 वर्ष	एक बच्चे को ट्रैफिक लाइट की पोशाक (कार्डबोर्ड या कपड़ा या चार्ट पेपर से बनी।) पहनाएँ और दूसरे बच्चों को कहने दें— 'लाल बत्ती, लाल बत्ती; आप क्या कहती हैं?'। पोशाक पहने बच्चा कहता है, 'रुको, रुको, रुको'। फिर दूसरे बच्चे पूछते हैं— 'हरी बत्ती, हरी बत्ती, तुम क्या कहते हो?' पोशाक पहने बच्चा कहता है, 'जाओ, जाओ, जाओ'। इसी तरह पीली रोशनी कहती है— 'अभी रुको और चलने को तैयार हो जाओ।'
5–6 वर्ष	ज़मीन पर एक बड़ा वर्ग बनाएँ और एक बच्चे को तीन रंगों के कार्ड के साथ खड़ा करें। कुछ दूरी पर जेबरा क्रॉसिंग की लाइन के साथ एक सड़क बनाएँ। अन्य बच्चों से ऐसे अभिनय करने के लिए कहें जैसे वे सड़क पर गाड़ी चला रहे हों। अब बच्चे को वर्ग में हरा रंग दिखाने को कहें। आप ज़ोर देने के लिए ज़ोर से रंग का नाम पुकारें। बच्चों को निर्देश दें कि जब वे हरे रंग को देखें या सुनें तो उन्हें सड़क पर वाहन चलाना चाहिए। जब वे लाल देखें या सुनें, उन्हें रुकना चाहिए; जब वे पीला देखते या सुनते हैं, तो उन्हें प्रतीक्षा करनी चाहिए और सतर्क रहना चाहिए। इस गतिविधि से वे सड़क पार करने और सड़क सुरक्षा नियम के बारे में जानेंगे। बच्चों से बात-चीत करें कि उन्हें ट्रैफिक सिग्नल का पालन क्यों करना चाहिए।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• एक कला और शिल्प गतिविधि के रूप में बच्चों को लाल, हरे और पीले रंग के कागज़ से ट्रैफिक लाइट बनाने को कहें और इस पर बात करें। इससे संबंधित कविता वाचन करें। • ट्रैफिक सिग्नल या सड़क सुरक्षा गतिविधियों पर वीडियो, गाना या रोलप्ले आदि करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	आत्म-सुरक्षा के लिए जागरूकता विकसित करना, सामग्री और सरल उपकरण, आकार, रंग का सावधानी से प्रयोग करना, अपने हाथों और अँगुलियों की मदद से काम करने में सटीकता और नियंत्रण आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चे ट्रैफिक लाइट और अन्य ट्रैफिक संकेतों, जैसे– ज़ेबरा क्रॉसिंग की पहचान करते हैं, सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करते हैं और खतरों से बचते हैं।

1.6: असुरक्षित स्थिति समझना और मदद माँगना

गतिविधि

कहानी सुनना अथवा कठपुतली प्रदर्शन

आवश्यक सामग्री	चित्र वाला कार्ड, कहानी वाला कार्ड, कठपुतली
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• अनजान लोगों से खिलौने, चॉकलेट, पैसे या अन्य चीज़ें न लेने का संदेश देने वाली कहानी सुनाएँ। • बच्चों को तालाबों, झीलों, नदियों आदि से सुरक्षित दूरी बनाए रखने के लिए जागरूक करने हेतु एक कहानी सुनाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• शरीर के अंगों की सुरक्षा के बारे में बात करें। चार्ट पेपर पर दी गई स्थितियों को दिखाकर बच्चों से सुरक्षित और असुरक्षित स्थितियों के बारे में पूछें— सड़क पर खेलना, आग के पास जाना, आँख या नाक में अँगुली डालना, बस की खिड़की के बाहर हाथ या मुँह निकालना, बीच सड़क पर चलना, सड़क के बाईं ओर चलना आदि। उन्हें चर्चा करने दें कि कौन-सी स्थिति सुरक्षित है और कौन-सी असुरक्षित है। **सुरक्षित** **असुरक्षित** • साथ ही, उनसे जलते चूल्हे या गैस बर्नर, स्विच या केबल के पास जाने और नंगे पैर चलने आदि में शामिल जोखिमों के बारे में बात करें। • बच्चों को शामिल करते हुए सुरक्षित और असुरक्षित स्थितियों से संबंधित कहानी सुनाएँ या कठपुतली प्रदर्शन आयोजित करें।

4–5 वर्ष	• उन्हें अपनी सुरक्षा के बारे में अपने माता-पिता या शिक्षकों के साथ उन्मुक्त संप्रेषण करने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें आश्वस्त करें कि उनकी सुरक्षा हमारी चिंता का विषय है और जब भी वे असुरक्षित महसूस करें, तो उन्हें जाकर परिवार के किसी विश्वसनीय सदस्य या शिक्षक से बात करनी चाहिए।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए 'क्या करें और क्या न करें' से संबंधित वर्कशीट या चित्र कार्ड तैयार करें। • माता-पिता का फोन नंबर और घर का पता याद रखने में उनकी मदद करें। • सुरक्षित और असुरक्षित स्थितियों से संबंधित छोटी कार्टून फिल्में या कहानियाँ दिखाएँ।
5–6 वर्ष	• बच्चों को उनकी सुरक्षा के बारे में जागरूक करने के लिए और अगर वे परिवार या बाहर किसी के साथ असहज महसूस कर रहे हैं तो किसी विश्वसनीय वयस्क (माता-पिता या शिक्षक या अभिभावक) से बाते करें, इसके लिए कहानियों सुनाएँ या नाटक या रोलप्ले का आयोजन करें। • उन्हें शिक्षक या माता-पिता या परिवार के सदस्यों को बताए बिना कहीं न जाने के लिए कहें। विद्यालय या खेल के मैदान में जाने के लिए हमेशा मुख्य सड़क का उपयोग करें और शॉर्टकट और सुनसान जगहों से बचें। • अगर कोई उन्हें छूने की कोशिश करता है या उन्हें डराने, असहज करने या भ्रमित करने की कोशिश करता है, तो उन्हें 'नहीं' कहने के लिए कहें। (यद्यपि हमें बच्चों को अपरिचित लोगों से भयभीत करने से बचना चाहिए, हम चाहते हैं कि वे सतर्क रहें और किसी अजनबी के मित्रवत होने या अच्छे दिखने पर भी अत्यधिक विश्वास न करें।)
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• सुरक्षित और असुरक्षित स्थितियों पर कठपुतलियों का उपयोग करके कहानी सुनाने के सत्र आयोजित करें। • मिलान की गतिविधि— बच्चों को डॉक्टर, दमकलकर्मी, पुलिस जैसे समुदाय सहायकों की तस्वीर से उनकी भूमिकाओं के साथ मिलान करने दें। चर्चा करें कि वे हमें कैसे सुरक्षित और संरक्षित महसूस कराते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	बच्चा सुरक्षित और असुरक्षित स्थितियों को समझता है; आत्मनिर्भरता, नेतृत्व, सीखने की सकारात्मक आदतें, निर्देशों का पालन करना, स्मृति विकास, सावधानी, समस्या सुलझाने के कौशल और आत्म-सुरक्षा जैसे गुणों को विकसित करता है।
अवलोकन बिंदु	बच्चा जान-पहचान व बिना जान-पहचान वाले व्यक्तियों अथवा वस्तुओं को पहचानता है; असहजता को संप्रेषित करता है, अजनबियों से दूरी बनाए रखता है, मदद माँगता है आदि।

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 2: बच्चों में संवेदी कुशाग्रता का विकास करना

- स्वाद, गंध, दृष्टि, ध्वनि और स्पर्श के लिए संवेदी विकास के अवसर देना।
- चखने और अनुमान लगाने से संबंधित गतिविधियाँ— खाद्य फलों अथवा सब्ज़ियों के साथ स्वाद का पता लगाना और उन्हें नाम देना।
- विभिन्न गंध वाली सामग्री की पहचान।
- सुगंधित क्ले से प्रयोग करना, मिट्टी से आकृतियाँ बनाना।
- लुका-छिपी जैसे खेल खेलना।
- ध्वनि के अनुसार चीजों को क्रम से लगाना, जैसे– डिब्बों में बीज या मोती भरकर आवाज़ सुनना।
- बाहरी ध्वनि का पता लगाना।
- अक्षरों को बनावट के अनुसार छाँटना।

2.1: आकृतियों, रंगों और रंगों के विभिन्न प्रकारों को समझना

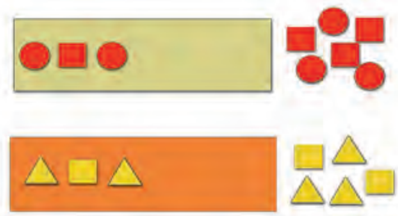

गतिविधि 1
रंगों की पहचान करना

आवश्यक सामग्री	विभिन्न रंग, चार्ट, कार्ड, फल, सब्ज़ियाँ, आदि, ओरिगेमी पेपर
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष **(रंग मिलाना)**	कक्षा में विभिन्न रंगीन वस्तुओं (केवल प्राथमिक रंग) का उपयोग करें, जैसे– खिलौने, ब्लॉक, चार्ट, फूलों, फलों, सब्ज़ियों आदि के चित्र। • इन सहायक सामग्रियों का उपयोग करके रंगों के बारे में बात करें और बच्चों को रंगों की पहचान करने और उन्हें नाम देने के लिए कहें। • बच्चों को एक-दूसरे की पोशाक के रंग से मेल करने के लिए कहें। • रंगीन मोतियों के साथ गतिविधियों का आयोजन करें, मोतियों को एक रंग व क्रम में पिरोएँ। • अलग-अलग रंग के कागज़ का उपयोग करके बच्चों के साथ टोपी, नाव आदि बनाने जैसी सरल ओरिगेमी गतिविधियों का आयोजन करें। 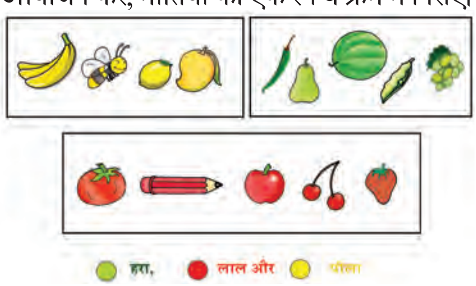

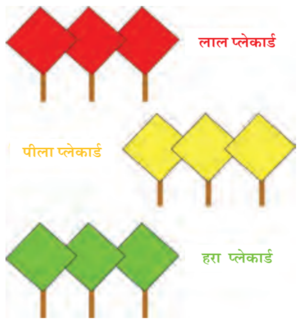 	• लाल रंग की खिलौने जैसी कोई विशेष वस्तु लें और बच्चों को कक्षा में या अपने आस-पास समान रंग खोजने के लिए कहें। • रंगों पर लयबद्ध पंक्तियाँ और गीत गाएँ। • विभिन्न रंगों, जैसे– लाल, पीले और हरे रंग की तीन तख्तियाँ तैयार करें और उन्हें कक्षा के तीनों कोनों में रखें। आप बच्चों के साथ चौथे कोने पर खड़े हों। ढपली बजाएँ और फिर रुककर किसी एक रंग का नाम लें, जैसे– हरा। सभी बच्चों को हरा रंग वाले कोने की ओर दौड़ने के लिए कहें। इसी प्रकार, हर बच्चे को अलग-अलग रंगों के साथ खेल जारी रखने का अवसर दें।
4–5 वर्ष **(छाँटना)** 	• विभिन्न रंगों पर चर्चा करें और बच्चों को रंगों के आधार पर वस्तुओं को छाँटने और वर्गीकृत करने के लिए कहें। एक बार जब बच्चे रंगों के नामकरण की अवस्था में पहुँच जाएँ, तो उन्हें रंगीन कार्ड दें। वर्गीकरण का एक सरल खेल खेलें। • उदाहरण के लिए– आवाज़ लगाएँ— 'लाल'। लाल कार्ड वाले सभी बच्चे आगे आएँगे। इसी प्रकार, आवाज़ लगाएँ— 'हरा'। इसके बाद केवल हरे कार्ड वाले बच्चे ही आगे आएँगे और इसी प्रकार आगे बढ़ें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ 	कई अलग-अलग रंग के कार्ड (लाल, नीला, पीला) तैयार करें और प्रत्येक बच्चे को एक कार्ड दें। बीच में एक रंग का कार्ड रखें। बीच में रखे गए कार्ड का नाम कहें, जैसे– लाल और उन्हें अपने कार्ड को देखने, रंग की पहचान करने और बीच में रखे कार्ड से अपने कार्ड का मिलान करने दें। लाल रंग के कार्ड वाले बच्चे आगे आकर अपना कार्ड बीच (मैचिंग-मैचिंग) में रखेंगे।
5–6 वर्ष 	• सर्किल टाइम में प्रकृति के रंगों, जैसे– पत्ती, फूल आदि के रंग पर चर्चा करें। बच्चों को बगीचे, खेत, बाज़ार आदि जैसे किसी भी दृश्य को बनाने के लिए कहें। चित्र कला और रंग भरने से रंगों के साथ प्रयोग करने के बहुत सारे अवसर मिलते हैं। • बच्चों को नए शेड बनाने के लिए रंगों को मिलाकर प्रयोग करने के लिए कहें। • पाँच अलग-अलग रंगों के रंगीन कार्ड बनाएँ। उन्हें इन कार्डों को हल्के से गहरे रंग के क्रम में व्यवस्थित करने के लिए कहें। • रंगीन डोमिनोज कार्ड या साँचे तैयार करें और बच्चों को रंगों का मिलान करने के लिए कहें। उन्हें रंगों से संबंधित सरल पहेलियों को हल करने के लिए कहें। • तीन बड़े घेरे बनाएँ। एक में लाल वस्तु, दूसरे में नीली वस्तु और तीसरे में पीली वस्तु रखें। कक्षा के सभी बच्चों को लाल, नीले और पीले रंग के कार्ड दें। ढोल बजाएँ और बच्चों को इधर-उधर भागने के लिए कहें। जैसे ही ढोल की थाप बंद हो, बच्चे उस घेरे की ओर दौड़ेंगे, जिसमें उनके कार्ड के रंग से मेल खाती वस्तु है। • बच्चों को उनके चारों ओर रंगों का अवलोकन करने हेतु प्रकृति की सैर पर ले जाएँ।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ 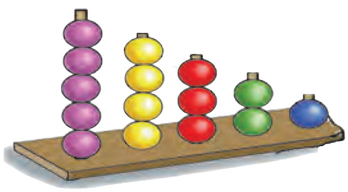	• कक्षा में एक ही रंग की वस्तुएँ खोजें। • बच्चों को रंग के आधार पर एक-दूसरे के कपड़े मिलाने के लिए कहें। • रंगीन कार्ड बनाने वाले बच्चों के साथ घेरे वाला खेल खेलें। • रंग संकल्पना पर लयबद्ध पंक्तियाँ और गाने सिखाएँ। • रंगों के वर्गीकरण के खेल खेलें। • एक खेल ''कटी पतंग, कौन-सा रंग'' खेलें। • बच्चों को रंगों पर सरल पहेलियों को हल करने के लिए कहें। • बच्चों को रंगों के नाम सीखने और बोलने में मदद करें। • चित्रकला और चित्रकारी गतिविधियों का आयोजन करें, क्योंकि इनमें बच्चों को रंगों के साथ प्रयोग करने के बहुत सारे अवसर प्राप्त होते हैं। • रंगीन मनकों को पैटर्न या अनुक्रम में पिरोएँ, उदाहरण के लिए— लाल, नीला, हरा, लाल, नीला, हरा। **समावेशन हेतु**— बनावट और रंगों की संकल्पनाओं को मिलाएँ और बच्चे को बनावट और रंगीन कार्डों को छाँटने के लिए कहें। **प्रतिभावान बच्चों हेतु**— विभिन्न रंगों का उपयोग करके रंगों को मिश्रित करना, एक रंग के जिलेटिन पेपर के पीछे दूसरे रंग का पेपर रखें, इस तरह एक तीसरा रंग दिखाई देता है। बच्चों के बीच विभिन्न विविधताओं के लिए ऐसी गतिविधियों की योजना बनाने की आवश्यकता है। यहाँ दो उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	रचनात्मक और सौंदर्य कौशल, भाषा कौशल, आकृतियों का अवलोकन करना और समझना, शब्दों का उपयोग करना, समझना और मौखिक निर्देश देना, संवेदी धारणा, समन्वय और गति दिखाना, प्रकृति की सराहना करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की रुचि; गतिविधि में भागीदारी स्तर; शब्दावली; रंगों में भेद करते हैं और नाम देते हैं, रंगों के आधार पर वस्तुओं के समूह बनाते हैं, रंगों और नए बनने वाले रंगों का पूर्वानुमान लगा पाते हैं, रंगों के साथ प्रयोग करते हैं और चित्रों में रंग का उपयोग करते हैं।

गतिविधि 2
आकृतियों की पहचान करना (घर में खेले जाने वाले खेल)

आवश्यक सामग्री	आकृति पहेलियाँ, लकड़ी या प्लास्टिक के ब्लॉक, कागज़, मिट्टी, चॉक, बोतल के ढक्कन, कंकड़, ब्लॉक, आकृति कार्ड, डोमिनोज, धागा, गत्ता, विभिन्न आकार के कार्ड, पहेलियाँ, क्रेयॉन और रेत
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• निर्देशित बात-चीत के माध्यम से बच्चों को हमारे पर्यावरण में बुनियादी आकृतियों से अवगत कराया जा सकता है। आकृतियों के बारे में बात करें और उन्हें हल करने के लिए आकृति पहेलियाँ दें। • कला गतिविधियों के दौरान उन्हें अलग-अलग आकृतियों में रंग भरने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• चंदा गोल, सूरज गोल आदि आकृतियों से संबंधित लयबद्ध पंक्तियाँ और गीत गाएँ। • आकृतियों पर सरल पहेलियाँ पूछें।
4–5 वर्ष	बच्चों को रचनात्मक गतिविधियों, जैसे– फाड़ना एवं चिपकाना, मिट्टी का काम करने के लिए अलग-अलग आकार दिए जा सकते हैं और छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर उन्हें एक डिजाइन पर चिपकाने के लिए कहा जा सकता है, या वे मिट्टी की विभिन्न आकृतियों के मॉडल पर चिपका सकते हैं। चार साल की आयु होने पर बच्चे, हाथों से ही वृत्त बना सकते हैं और तीनों मूल आकृतियों को नाम दे सकते हैं, जैसे– वृत्त, वर्ग और त्रिभुज आदि।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• गीली ज़मीन पर चॉक या डंडे से एक घेरा, वर्ग और त्रिकोण बनाएँ। • बच्चों को बोतल के ढक्कन या कंकड़ दें और उन्हें दी गई आकृतियों की रूपरेखा पर रखने के लिए कहें। • गोल दायरे का खेल खेलें। उन्हें बड़ा वृत्त, छोटा वृत्त आदि बनाने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	निर्माण गतिविधियों के लिए— विभिन्न आकृतियों के ब्लॉक या किसी भी सामग्री का उपयोग करें, जैसे कि गत्ते के खाली डिब्बे, टिन, माचिस आदि। बच्चों को आकृतियों की पहचान करने के लिए कहें और निर्माण गतिविधियों में उनका उचित उपयोग करें। उनके साथ विभिन्न आकृतियों पर चर्चा करें और उन्हें आकृतियों के बारे में बात करने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ 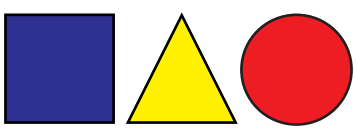	• आकृतियों से संबंधित लयबद्ध पंक्तियाँ और गीत आकृतियों को विभिन्न वस्तुओं के साथ संबद्ध करने और आकृतियों के नाम याद रखने में मदद करते हैं। • बच्चों को आकृति कार्ड (उभार अथवा बनावट अथवा स्पर्श योग्य) एक-दूसरे पर रखने के लिए कहें जैसे कि वृत्त पर वृत्त, वर्ग पर वर्ग, त्रिभुज पर त्रिभुज आदि।

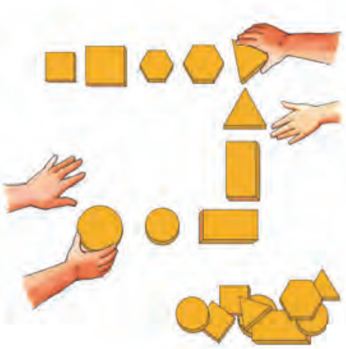	• पुराने अखबारों, पत्रिकाओं और ओरिगेमी कागज़ से अलग-अलग रंग के कागज़ लें और प्रत्येक रंग के कागज़ से वृत्त, त्रिकोण और वर्ग जैसी आकृतियाँ काटें। उन्हें मिला दें। उन्हें अलग-अलग रंगों वाली समान आकृतियों का चयन करने के लिए कहें, कि 'उनमें कौन-सी अलग है' कागज़-पट्टिका भी बनाई जा सकती हैं। • प्रत्येक डोमिनोज कार्ड पर दो आकृतियों के साथ आकृति डोमिनोज कार्ड बनाएँ जा सकते हैं। बच्चों को डोमिनोज के साथ एक पैटर्न बनाने के लिए कहें, उन्हें इस तरह से रखें कि दो आसन्न आकृतियाँ एक जैसी हों। • कीलों की सहायता से लकड़ी के तख्तों पर एक वृत्त, वर्ग और त्रिभुज की रूपरेखा बनाएँ। कीलों के ऊपरी हिस्से को ढक दें ताकि इससे बच्चों को नुकसान न हो। बच्चों को इन कीलों पर धागा लपेटकर आकृतियाँ बनाने के लिए कहें। उन्हें पैटर्न को पूरा करने या आकृतियों से संबंधित पैटर्न का विस्तार करने के लिए कहें। • बच्चों को यह पता लगाने के लिए कहें कि कागज़ की आकृति (नाव, बक्सा, टोपी, टोकरी, घर, जानवर आदि) बनाने के लिए कागज़ को कैसे मोड़ा जाता है; उन्हें दिखाएँ कि बच्चों के अनुकूल कैंची का उपयोग करके कागज़ को कागज़ की पट्टियों में कैसे काटा और कागज़ के टुकड़ों से कोलाज कैसे बनाया जाता है। • विभिन्न आकृतियों के गत्ते के कट-आउट के साथ आकृति पहेलियाँ बनाएँ। उन्हें एक साथ रखकर अलग-अलग रूपों में बनाने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— आदमी, पक्षी, घर की आकृति आदि।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	समान आकृतियों का मिलान करने में सक्षम होना, शारीरिक कौशल विकसित करना, सामाजिक कौशल, संकल्पना निर्माण, समन्वय एवं स्वेच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करना, उपयुक्त उपकरण का उपयोग करना, वस्तुओं को छाँटना, पैटर्न की पहचान करना, मौखिक निर्देशों को समझना और देना, अन्वेषण करना और खेलना, सहयोगी रूप से काम करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चा आकृतियों की पहचान करता है, पैटर्न बनाता है, पहेलियाँ हल करता है, विभिन्न आकृतियों, रंगों और उनके हल्के-गहरे प्रकारों का समूह बनाता है, गतिविधियों के दौरान उपयुक्त आकार की वस्तुओं का उपयोग करता है। दृश्य विशेषताओं के आधार पर समूह बनाता है, जैसे– सभी पीले घेरे एक साथ, सभी पत्ते एक साथ आदि।

गतिविधि 3
आकृतियों के खेल (बाहर खेले जाने वाले खेल)

आवश्यक सामग्री	ब्लॉक, चित्र और वर्णमाला कार्ड, चॉक, संगीत वाद्ययंत्र
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	आकृतियों का खेल खेलें। ज़मीन पर चॉक (या यदि ज़मीन गीली है तो छड़ी से) से एक बड़ा वृत्त, एक वर्ग और एक त्रिभुज बनाएँ। ढोल या ढपली बजाएँ और बच्चों को इधर-उधर दौड़ने के लिए कहें। ढोल या ढपली बजाना बंद करें और किसी आकृति का नाम पुकारें, उदाहरणार्थ— 'वृत्त' कहें। सभी बच्चों को वृत्त में आने की कोशिश करनी चाहिए और जो लोग गलत आकृति में चले जाएँगे या बाहर रह जाएँगे, उन्हें इंतजार करना होगा।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को आस-पास में भागने के लिए कहें। ढपली बजाएँ और उन्हें बुलाएँ। उन्हें एक घेरा बनाने के लिए कहें। तेज़, धीमी और बहुत धीमी गति से ढपली की थाप पर एक घेरे में चलने के लिए उनका मार्गदर्शन करें। • आप एक बड़ा वर्ग या त्रिभुज बना सकते हैं और बच्चों को इसकी रूपरेखा पर तेज़, धीमी और बहुत धीमी गति से चलने को कह सकते हैं।
4–5 वर्ष	बच्चों के साथ आकृतियों का खेल खेलें। उन्हें घेरे में बैठने के लिए कहें। शिक्षक 'जल्दी करो....', मुझे वर्गाकार चीज़ों के नाम बताओ आदि कहकर या खेल शुरू करते हैं। इसे हाथों की ताली और चुटकियों के साथ लय में कहा जाना चाहिए। बच्चा उसी लय में उस वस्तु के नाम का उत्तर देता है जो उस विशेष आकार (जैसे– स्लेट) की होती है। वृत्त, त्रिभुज और वर्ग जैसी अन्य आकृतियों के लिए भी यही खेला जा सकता है।
5–6 वर्ष	• बाहर खुले स्थान पर बच्चों को रेत, ब्लॉक आदि का उपयोग करते हुए विभिन्न आकृतियों की बनावट बनाने के लिए कहें। • उन्हें अलग-अलग आकृतियाँ बनाने के लिए मिट्टी दें। • उन्हें केवल वृत्त, त्रिभुज और वर्ग का उपयोग करके कोई भी आकृति बनाने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	प्रकृति की सैर और क्षेत्र भ्रमण की व्यवस्था करें, जहाँ बच्चे विभिन्न आकृतियाँ पहचान सकें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	शारीरिक और गत्यात्मक कौशल; संतुलन, गतिविधियों में समन्वयन और लचीलापन; सहयोग, आकृतियों में अंतर, सामाजिक कौशल, सीखने की सकारात्मक आदतों का विकास, समन्वय आदि।
अवलोकन बिंदु	आकृतियों की पहचान, खेलते समय सहयोग, आनंद, लक्ष्य-निर्देशित क्रियाओं और सफ़ाई में सटीकता का निरीक्षण करता है।

2.2: संकेतों और प्रतिरूपों के प्रति दृष्टि स्मृति विकसित करना

गतिविधि

संकेतों को जानें और अंतर पहचानें

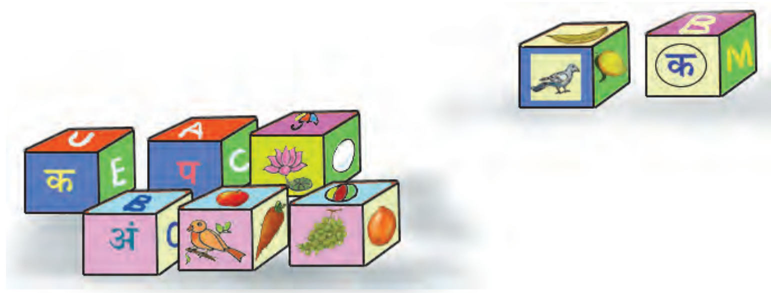

आवश्यक सामग्री	ब्लॉक, बीड्स, कार्ड्स, स्वयं सुधारात्मक, चित्र कार्ड्स
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• ब्लॉक बनाने के क्षेत्र में अलग-अलग आकृति के ब्लॉक रखें और बच्चों को उनके चारों ओर बिठाएँ। फिर बच्चों से उसी रंग या आकृति के ब्लॉक मिलाने को कहें। प्रत्येक बच्चे को अवसर दें। • बच्चों को एक ही रंग या आकृति के मोती छाँटने को कहें। • मूल आकृति के तीन कार्ड दिखाएँ और उन्हें एक के बाद एक मेज़ पर रखें। उन्हें अपनी आँखें बंद करने और एक आकृति कार्ड निकालने के लिए कहें। उन्हें अपनी आँखें खोलकर पता करने के लिए कहें कि क्या गायब है?
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• सभी बच्चों के नाम कार्ड तैयार करें। उन्हें अपना स्वयं का कार्ड खोजने के लिए प्रोत्साहित करें (उपस्थिति गतिविधि के लिए इसका उपयोग करें। जो बच्चे उपस्थित हैं, उन्हें अपने नाम कार्ड को एक निर्धारित स्थान पर रखने के लिए कहा जा सकता है। इससे शिक्षक आसानी से पहचान सकते हैं कि कौन अनुपस्थित है।)
4–5 वर्ष	• बच्चों को 'क्या अलग है' गतिविधि करने के लिए कहें। एक अलग और तीन समान चित्रों के साथ एक पट्टिका तैयार करें, जैसे– तीन सब्ज़ियाँ और एक फल। अब उन्हें चारों में जो अलग है, उसे चिह्नित करने के लिए कहें। • तीन अलग-अलग चित्रों वाली पट्टियाँ तैयार करें। उन तीनों चित्रों के कट-आउट अलग-अलग रखें। फिर तीनों में से एक चित्र एक बच्चे को दें और उसे पट्टी पर वही चित्र ढूँढने को कहें और मिलान वाले चित्र पर कार्ड लगाने को कहें। बाकी सभी बच्चे इस बच्चे के लिए ताली बजाएँ।
5–6 वर्ष	• आरंभ और अंत ध्वनियों के साथ गतिविधियाँ करते समय बच्चों को प्रथम भाषा या परिचित भाषा के अक्षरों से अवगत कराएँ। वे ध्वनि को प्रतीक के साथ जोड़कर अक्षर को पहचानना सीखेंगे। • पहेलियों के रूप में स्व-सुधारात्मक (उभरे हुए या स्पर्शनीय) चित्र कार्ड (चित्र और उसके नाम के) बनाएँ। उन्हें मिलाएँ। प्रत्येक बच्चे को चित्रों को उनकी ध्वनि से मिलाने को कहें।

<table>
<tr>
<td>

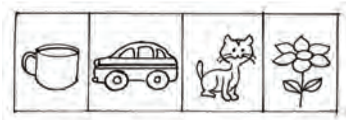
</td>
<td>

- कोई शब्द बोलें और बच्चों को संबंधित चित्र खोजने को कहें।
- बच्चों को 'टब', 'पेड़', 'कप', 'गुब्बारा' आदि जैसी परिचित वस्तुओं के चित्र दें। किसी भी वस्तु की आरंभ ध्वनि जैसे 'ट' बोलें और बच्चों को इस आरंभ ध्वनि से चित्रों का मिलान करने के लिए कहें और उस ध्वनि के चित्र देखने के लिए कहें।
- वस्तुओं के चित्र वाली पट्टियाँ बनाएँ। प्रत्येक पट्टी में चार चित्र हो सकते हैं। इनमें से तीन के नामों का आरंभ एक जैसा होना चाहिए और चौथा अलग होना चाहिए। अब बच्चों को अलग ध्वनि वाले चित्र की पहचान करने के लिए कहें।

- 'क्या अलग है' गतिविधि के लिए बताए गए तरीके से पट्टियाँ बनाएँ।

चित्रों या डिजाइनों के बजाय 5–6 वर्ष आयु वर्ग के लिए वर्णमाला के अक्षरों और शब्दों का उपयोग करें। बच्चों को अलग-अलग अक्षरों और शब्दों की पहचान करने के लिए कहें।

- 'ब' जैसी कोई भी ध्वनि निकालें। बच्चों को वर्णमाला के 'ब' अक्षर से ध्वनि का मिलान करने के लिए कहें और चित्र के आधार पर ध्वनि-अक्षरों का मिलान करें।

ब	ब	न	ब	ब

</td>
</tr>
<tr>
<td>मिलती-जुलती गतिविधियाँ</td>
<td>

- दो समान चित्र बनाएँ, जिनमें केवल एक प्रमुख अंतर हो। बच्चों को अंतर ढूँढने को कहें।
- पठन क्षेत्र में, बच्चों को चित्र कार्ड, चित्र पुस्तकें प्रदान करें और पृष्ठों को सही दिशा में पलटने के लिए कहें।
- बच्चों को कहानी कार्ड या वर्णमाला कार्ड दें और बाएँ से दाएँ दिशा में व्यवस्थित करने के लिए कहें।
- बच्चों को बाएँ से दाएँ दिशा में काम करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए कार्यपत्रक दिए जा सकते हैं।

</td>
</tr>
<tr>
<td>अन्य संवर्धित दक्षताएँ</td>
<td>ध्वनियों में अंतर करता है, सहभागिता के प्रति इच्छुक होता है, उपयुक्त शब्दावली का प्रदर्शन करता है, मौखिक निर्देशों को समझता है, पहचानता है और कहता है, ध्वन्यात्मक जागरूकता विकसित करता है, विभिन्न सामग्रियों के साथ अन्वेषण करता है और खेलता है।</td>
</tr>
<tr>
<td>अवलोकन बिंदु</td>
<td>आकृतियों की पहचान और उनका नामकरण, समान पैटर्न के साथ प्रतीकों का मिलान करता है, स्मृति, स्मरण, खेलते समय सहयोग, आनंद, लक्ष्य-निर्देशित क्रियाएँ और स्वच्छता आदि।</td>
</tr>
</table>

2.3: ध्वनि और ध्वनि पैटर्न में उनके स्वरमान और आवाज़ के स्तर पर भेद करना

गतिविधि 1
ध्वनि की पहचान करना

आवश्यक सामग्री	विभिन्न ध्वनियों के लिए संगीत वाद्ययंत्र, श्रव्य उपकरण
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को कुत्ते, गाय, बिल्ली, पक्षी आदि जैसे विभिन्न जानवरों की आवाज़ निकालनें और उनकी तरह चलने की नकल करने के लिए कहें। • उन्हें मोटरसाइकिल, बस, कार, ऑटो, रेलगाड़ी जैसे विभिन्न वाहनों की आवाज़ पहचानने के लिए कहें। • उन्हें वातावरण में सावधानीपूर्वक आवाज़ सुनने के लिए कहें। • बच्चों को अपनी आँखें बंद करने दें, ध्वनि सुनें, ध्वनि को पहचानें और सुनाई गई ध्वनि के बारे में बताएँ, जैसे– पंखे की आवाज़, दरवाज़ा बंद करने और खोलने की आवाज़, पक्षियों की चहचहाहट, ताली की आवाज़ आदि। • पशु-पक्षियों की आवाज़ का ऑडियो चलाएँ और बच्चों को उन्हें पहचानने को कहें। • विभिन्न ध्वनियों वाले संगीत वाद्ययंत्र बजाएँ। बच्चों से कहें कि वे अपनी आँखें बंद करके इसे सुनें और यंत्रों की पहचान करें।
4–5 वर्ष	बच्चों को लोकप्रिय लयबद्ध पंक्तियाँ सुनने के लिए कहें और ध्वनि, स्वरमान (उच्च, निम्न) और लय की पहचान करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• ध्वनियों को समझने के लिए बच्चों को सरल वाद्ययंत्र बजाने के लिए कहें।
5–6 वर्ष 	• बच्चों को ध्वनि की पहचान करने के लिए कहें और बताएँ कि उन्होंने कौन-सी ध्वनि सुनी है, जैसे– पक्षियों और पशुओं की आवाज़ें, लोगों की आवाज़ें, खेलते हुए बच्चे आदि। • बच्चों से कहें कि वे सुबह सबसे पहले जो आवाज़ सुनते हैं, उसे सुनें और साझा करें। • बच्चों को पास के एक खेल के मैदान, उद्यान,अभ्यारण्य अथवा चिड़ियाघर के बाहर घूमने ले जाएँ, जहाँ उन्हें पशुओं और पक्षियों की आवाज़ देखने और सुनने का मौका मिलता है। • बच्चों को अलग-अलग स्वरमानों पर गीत गाने के लिए कहें। • बच्चों को विभिन्न भारतीय संगीत वाद्ययंत्र, ढोलक, हारमोनियम, बाँसुरी, ढपली, ढोल आदि के साथ छोड़ दें। बच्चों को उन्हें बजाने का प्रयास करने के लिए कहें। बच्चों से स्वरमानों (ऊँचा स्वर, नीचा स्वर), तान आदि जैसी ध्वनियों के बारे में चर्चा करवाएँ।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	ध्वनि की समझ, स्मृति, पर्यावरण जागरूकता, आनंद, ध्वनियों और संगीत की प्रशंसा।
अवलोकन बिंदु	ध्वनियों को पहचानने और उनमें अंतर करने की क्षमता, ध्वनि उत्पन्न करने की क्षमता, आनंद आदि।

गतिविधि 2
आओ धुन पर नृत्य करें

आवश्यक सामग्री	खुला स्थान, संगीत उपकरण, उपयुक्त गीत और वाद्ययंत्र
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• एक आनंदमय गीत चलाएँ और बच्चों को इसकी धुन पर नृत्य करने के लिए कहें; उन्हें तेज़ एवं धीमी धुन को पहचानने के लिए कहें और आनंद लेने दें!
4–5 वर्ष	• एक तेज़ धुन वाला गाना बजाएँ, फिर धीमी धुन वाला गाना बजाएँ। बच्चों को दोनों प्रकार की धुनों पर नृत्य करने में अंतर का अनुभव करने के लिए कहें। • सभी बच्चों को अँगुलियों और आँखों के हाव-भाव से सरल शास्त्रीय नृत्य मुद्राएँ सिखाएँ।
5–6 वर्ष	• बच्चों को धुन के साथ-साथ गाने के स्वरमानों और तान पर भी ध्यान दिलवाएँ और उनसे कहें कि वे नृत्य करते समय भाव दिखाएँ। • बच्चों को ढपली, ढोलक, हारमोनियम आदि जैसे संगीत वाद्ययंत्र बजाने के लिए कहें। • जलतरंग गतिविधि के माध्यम से बच्चों को एक कप में पानी के विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग ध्वनियों को पहचानने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	सभी विद्यालयों में राष्ट्रीय पर्व मनाया जाता है। सभी आयु वर्ग के बच्चों को इन समारोहों में नृत्य और संगीत के माध्यम से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय त्यौहारों के उत्सव में भाग लेने के लिए सभी बच्चों को सम्मिलित करते हुए एक नृत्य तैयार करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संगीत, शारीरिक कौशल और शारीरिक गतिविधियों में रचनात्मकता, आनंद, कला में सहयोगी रूप से काम करता है, और संगीतमय आवाज़ें निकालता और अपनी आवाज़ के साथ अन्वेषण करता और नृत्य करता है और विभिन्न मुद्राएँ बनाता है, कला के विभिन्न रूपों की प्रशंसा और अनुभव करता है।
अवलोकन बिंदु	सक्रिय सहभागिता, रचनात्मक नृत्य मुद्राएँ, आनंद, चेहरे के हाव-भाव, आँखों की मुद्राएँ, अँगुलियों की मुद्राएँ।

गतिविधि 3
सुनो और बताओ

आवश्यक सामग्री	ध्वनि पैदा करने वाली विभिन्न वस्तुएँ सेल फोन जैसे सरल श्रव्य उपकरण या किसी अन्य श्रव्य उपकरण का इस्तेमाल किया जा सकता है।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष	• बच्चों को अलग-अलग वस्तुएँ, जैसे– सीटी, ड्रम, चाबियाँ आदि की आवाज़ पहचानने के लिए कहें। • बच्चों से आँखें बंद करके जानवरों, जैसे– कुत्ते, बिल्ली, कौए की आवाज़ निकालने और उन्हें पहचानने को कहें। • कक्षा के सभी बच्चों को अपनी आँखें बंद करने के लिए कहें। चूड़ी, ढपली, घुँघरू आदि की आवाज़ निकालें और बच्चों से आवाज़ पहचानने को कहें। • गाना गाएँ— 'मैं तो सो रही थी, मुझे बिल्ली ने जगाया, बोली म्याऊँ-म्याऊँ-म्याऊँ...' • बच्चों को जाने-पहचाने पशुओं (घरेलू अथवा जंगली) की आवाज़ें निकालने के लिए कहें। • बच्चों को पशुओं और पक्षियों की वेशभूषा अथवा मास्क पहनने और भूमिका निर्वहन (रोलप्ले) करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक बच्चे को बोलने के लिए कहें और दूसरे को अनुमान लगाने के लिए कहें कि कौन बोल रहा है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	ध्वनि की धीमी और तेज़ गति में अंतर समझ पाता है। पशु ध्वनि की पहचान कर पाता है, ध्वनियाँ बनाता है, मौखिक निर्देशों को समझता है, सरल गीतों की सराहना करता है, एक-दूसरे की मदद करता है।
अवलोकन बिंदु	सक्रिय भागीदारी, पहचान की सटीकता, समाजीकरण और अपने आस-पास के वातावरण में मनुष्यों, पशुओं, वाहनों, तेज़ और धीमी आदि ध्वनियों के बीच अंतर करता है।

2.4 : विभिन्न प्रकार की सुगंधों और स्वादों को जानना

गतिविधि 1
सूँघें और बताएँ

आवश्यक सामग्री	कुछ फल, पका हुआ भोजन, अगरबत्ती, डेटॉल, इत्र
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**

3–4 वर्ष	• बच्चों को घेरे में बैठाएँ और विभिन्न फलों पर चर्चा करें। उन्हें केले, संतरा, अमरूद आदि फलों की गंध की पहचान कराएँ। • खेल गतिविधि— बच्चों को अपनी आँखें बंद करने के लिए कहें। उन्हें गुलाब का फूल सुंघाएँ और फिर उसे छिपा दें। उन्हें गंध की पहचान करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• इसी तरह उन्हें अगरबत्ती, डेटॉल, इत्र आदि की गंध की पहचान करने के लिए कहें। • "अच्छी गंध" और "खराब गंध" पर सरल चार्ट बनाएँ।
4–5 वर्ष 	• बच्चों को अपनी आँखें बंद करने और सूँघकर चीज़ों की पहचान करने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— कॉफी, संतरा, पुदीना आदि। • नाश्ता या भोजन परोसने से पहले, बच्चों को अपनी आँखें बंद कर अपनी सूँघने की क्षमता का उपयोग कर परोसे जा रहे भोजन का अनुमान लगाने को कहें, जैसे– अचार, खीर आदि। • कक्षा में तेज़ महक वाली परिचित वस्तुएँ लाएँ, उदाहरण के लिए— अगरबत्ती, इत्र, गीली मिट्टी आदि। प्रत्येक बच्चे को अपनी आँखें बंद करने और वस्तु को उसकी गंध से पहचानने का प्रयास करने के लिए कहें। कुछ ऐसी वस्तुओं को भी शामिल करें, जिनमें कोई गंध नहीं है, उदाहरण के लिए— चीनी, पानी आदि। • कला और शिल्प गतिविधियों के दौरान, बच्चों को सुगंधित मार्कर अथवा गंध वाली गुँथी मिट्टी, सुगंधित रबड़ अथवा गोंद आदि की पहचान करने दें। • बच्चों को प्रकृति की सैर पर ले जाएँ और उन्हें सुखद और अप्रिय गंध वाली वस्तुओं को देखने और इंगित करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को जड़ी-बूटियों के बगीचे में घुमाने ले जाएँ और उन्हें अलग-अलग गंध वाले विभिन्न पत्तों को देखने और उनके बारे में बात करने और सूँघने के लिए कहें, जैसे– तुलसी, करीपत्ता, अजवाइन, धनिया, पुदीना आदि.
5–6 वर्ष 	• बच्चों को एक पका हुआ व्यंजन दें, जैसे हलवा और उन्हें इसकी गंध और स्वाद पहचानने के लिए कहें। उन्हें इमोजी के माध्यम से अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए कहें। • प्लास्टिक की छोटी बोतलें, कॉटन बॉल और महक वाली वस्तुएँ, जैसे– इत्र, हींग, कॉफी आदि को इकट्ठा करें। कॉटन बॉल को तीन अलग-अलग बोतलों में डालें। प्रत्येक कॉटन बॉल पर कॉफी घोल, हींग पेस्ट, परफ्यूम की कुछ बूँदें रखें और 'गंध वाली या सुगंधित बोतलें' बनाएँ। कॉटन बॉल्स को कॉफी के घोल, हींग, परफ्यूम में डुबोएँ और कॉटन बॉल को बोतलों में डालकर ढक्कन बंद कर दें। 'सूँघो और पहचानो' खेल खेलो। • विभिन्न वस्तुओं, जैसे– लहसुन, गुलाब, चूना, विभिन्न फल, टैल्कम पाउडर, खाद के साथ-साथ विभिन्न वस्तुओं अथवा परिस्थितियों जैसे कचरे के डिब्बे आदि को दिखाते हुए चित्र कार्ड बनाएँ। उन्हें सुखद और अप्रिय गंध के आधार पर वर्गीकृत करने के लिए कहें • नाक के बारे में बात करें, जो हमें सूँघने में मदद करती है। इसी तरह विभिन्न पशु और कीड़े कैसे सूँघते हैं, इसके पर बात करें। गंध से संबंधित शब्दावली जैसे– फूलों की गंध, मीठा, बदबूदार, धूल की गंध आदि विकसित करें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• नीम, तुलसी, गुलाब, चमेली, ग्लिसरीन, औषधीय साबुन आदि जैसे विभिन्न साबुनों के रैपर इकट्ठा करें और बच्चों को साबुन के प्रकार की पहचान करने के लिए कहें। • किसी खाद्य पदार्थ का नाम पुकारें और उनसे उसकी गंध (सुखद, अप्रिय) या स्वाद (मीठा, नमकीन) का नाम बताने के लिए कहें। • खेल की स्थिति में बच्चों को विभिन्न गंधों के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का नाटक रचने के लिए कहें। उन्हें अर्धवृत्त में बैठने के लिए कहें। विशिष्ट गंध वाली किसी भी वस्तु का नाम पुकारें। यदि वस्तु की गंध सुखद है तो बच्चों को 'अहा' और उपयुक्त भाव के साथ उत्तर देने के लिए कहें, यदि गंध अप्रिय हो, तो उन्हें 'छी-छी!' और संबंधित भावों के साथ प्रतिक्रिया देने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा कौशल, समाजीकरण, विभिन्न अनुभवों के बारे में सौंदर्यबोध, संवेदी अनुभूति का विकास, आत्म अभिव्यक्ति, वस्तुओं को समूहों में क्रमबद्ध करना, विभिन्न भावनाओं को पहचानना, सहयोगात्मक व्यवहार दिखाना, आराम से बात-चीत करना और सहयोगी रूप से काम करना।
अवलोकन बिंदु	सुगंध और दुर्गंध की पहचान करता है, विभिन्न इत्रों की सुगंधों में अंतर करता है, खतरे या जोखिम का संकेत देने वाली गंध जैसे जलने, धुएँ आदि की पहचान करता है।

गतिविधि 2
स्वाद की अनुभूति

आवश्यक सामग्री	बच्चों द्वारा लाया जाने वाला अल्पाहार भोजन, विभिन्न स्वादों वाले भोजन नमूने
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	अल्पाहार समय के दौरान बच्चों को एक मंडली में बैठकर एक साथ खाने और वे जो खा रहे हैं, उसके स्वाद को पहचानने और एक-दूसरे को बताने के लिए प्रोत्साहित करें। अल्पाहार समय का उपयोग विभिन्न खाद्य पदार्थों के स्वाद पर चर्चा करने के लिए करें। आप पहले भोजन दिखा सकते हैं और फिर उन्हें स्वाद का अनुमान लगाने के लिए कह सकते हैं, जैसे– मीठा या नमकीन।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों के साथ भोजन पकाएँ— खीर जैसी कोई चीज बनाएँ और बच्चों को उसे सूँघने और चखने के लिए कहें। उन्हें एक-दूसरे के साथ खाने और आनंद लेने दें।
4–5 वर्ष	बच्चों के लिए अलग-अलग स्वाद वाली खाद्य सामग्री के नमूने लेकर आएँ, उदाहरण के लिए— चूना, इमली, चीनी, नमक, नीम आदि। प्रत्येक बच्चे को अलग-अलग स्वादों की पहचान करने और उन्हें खाद्य पदार्थ के साथ जोड़ने का प्रयास करने दें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	खाद्य सामग्री के नमूने लेकर आएँ। बच्चों से अपनी आँखें बंद करने और उन्हें अलग-अलग खाद्य पदार्थों के स्वाद की पहचान करने के लिए कहें। आप ऐसा फलों, सब्जियों और स्नैक्स जैसी थीम बनाकर और खट्टा, कड़वा, मीठा आदि जैसी शब्दावली के तहत भी कर सकते हैं.
5–6 वर्ष 	• बच्चों को परिचित खाद्य पदार्थों को चखकर पहचानने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— बच्चों को अपनी आँखें बंद करने के लिए कहें और उनके मुँह में रोटी, आलू, केला या आमतौर पर खाए जाने वाले किन्हीं अन्य खाद्य पदार्थों का एक छोटा टुकड़ा डालें। बच्चों को अनुमान लगाने के लिए कहें कि यह क्या है। उनसे इसके स्वाद के बारे में पूछें। • रंग, गंध, बनावट और ध्वनि (यदि कोई हो), जैसे कुरकुरे, नरम, आदि के बारे में बात करें। • बच्चों को कच्चा आँवला, पका हुआ आँवला, सूखा और नमकीन आँवला, चीनी युक्त आँवला का स्वाद लेने के लिए कहें और उनकी राय जानें। • उन चीज़ों के बारे में चर्चा करें, जो खाने के लिए नहीं हैं, स्वाद खराब कर सकती हैं या हमें बीमार भी कर सकती हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	भिन्न-भिन्न स्वाद वाले खाद्य पदार्थों के कुछ चित्र कार्ड बनाइए। बच्चों को इन्हें नमकीन, खट्टा, मीठा, कड़वा और तीखा के रूप में वर्गीकृत करने के लिए कहें। बच्चों को नमक और पिसी हुई चीनी भी दिखाएँ। बात करें कि वे कैसे देखते हैं, सूँघते हैं और महसूस करते हैं। बच्चों को चखकर पता करने के लिए कहें कि कौन-सा नमकीन है और कौन-सा मीठा। मीठी और नमकीन चीज़ों के बारे में बात करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा कौशल, समाजीकरण, पौष्टिक भोजन के प्रति पसंद और समझ को दर्शाता है और भोजन को बर्बाद नहीं करता है, स्वयं की देखभाल और स्वच्छता, गंध और स्वाद, पसंद या नापसंद की प्राथमिकताओं में अंतर करता है।
अवलोकन बिंदु	स्वाद की पहचान करने में सटीकता, आनंदानुभूति, विभिन्न स्वादों— मीठा, नमकीन, कड़वा, मसालेदार आदि को जानता एवं पहचानता है।

2.5: स्पर्श के आधार पर चीज़ों में अंतर करना

गतिविधि
स्पर्श संवेदना

आवश्यक सामग्री	स्पर्श कार्ड, विभिन्न बनावट वाली प्राकृतिक सामग्री, स्टेशनरी सामग्रियाँ, जैसे– कागज़, पेंसिल, स्पर्श गतिविधियों के लिए कपड़े के थैले
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**

3–4 वर्ष	• बच्चों को पर्यावरण में विभिन्न वस्तुओं को सँभालने और स्वतंत्र रूप से मिलती-जुलती गतिविधि करने का अवसर दें। उन्हें वस्तुओं की सतहों को महसूस करके उनकी तुलना करने के लिए प्रोत्साहित करें और 'कठोर' और 'मुलायम' या 'खुरदुरा' और 'चिकना' शब्दों का उचित रूप से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें। • बच्चों को आसानी से उपलब्ध वस्तुओं का एक वर्गीकरण बताएँ, उदाहरण के लिए— पत्ते, टहनियाँ, रुई, पेड़ की छाल, लकड़ी, मिट्टी, रेत, कंकड़ आदि और उन्हें सख्त व मुलायम या खुरदुरे व चिकने के रूप में सँभालने और छाँटने के लिए कहें। • विभिन्न प्रकार के कपड़े के टुकड़ों से स्पर्श कार्ड बनाएँ, उदाहरण के लिए— साटन, जूट, कपास, ऊन आदि। बच्चों को बनावट के अनुसार कार्ड मिलाने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	• एक 'फीली' थैला (ऐसा थैला, जिसमें हाथ डालकर वस्तुओं को महसूस किया जा सके।) बनाएँ जिसमें विभिन्न आकार और बनावट की वस्तुएँ, उदाहरण के लिए— लकड़ी के छोटे क्यूब्स, ऊन या कपास की गेंद, पेंसिल, कपड़े का टुकड़ा, पत्थर, पंख आदि भरे हों। बच्चों से इन वस्तुओं को वस्तुओं को छूने और महसूस करने के लिए कहें। उसी सामग्री का एक समान सेट थैले के बाहर रखा जा सकता है। प्रत्येक बच्चे को बाहर की वस्तुओं में से किसी एक को महसूस करने के लिए कहें और फिर थैले में देखे बिना केवल स्पर्श के माध्यम से थैले में उससे मेल खाने वाली वस्तु का पता लगाने का प्रयास करें।
	• ग्रेडेड टेक्सचर, पतंगी कागज़, क्रेप पेपर, ऊनी सामग्री, साटन, सूती कपड़े, जूट आदि के सैंडपेपर का उपयोग करके 'स्पर्श कार्ड' बनाएँ। किसी बच्चे को कोई तीन स्पर्श कार्ड दें और उसे खुरदुरे से चिकने क्रम में व्यवस्थित करने के लिए कहें। बच्चों को बनावट के आधार पर इन स्पर्श कार्डों को वर्गीकृत करने के लिए भी कहा जा सकता है— खुरदुरे एक ढेर में और चिकने वाले दूसरे ढेर में।
5–6 वर्ष	• बच्चों को एक बार में तीन से अधिक स्पर्श कार्ड या अलग-अलग बनावट की वस्तुएँ दें और उन्हें खुरदुरे से चिकने क्रम में व्यवस्थित करने के लिए कहें। • बच्चों को गोल घेरे में बैठने के लिए कहें। एक बच्चे को कुछ बच्चों के पीछे जानी-पहचानी वस्तुएँ, जैसे– पेंसिल, रबर, डस्टर आदि रखने को कहा जा सकता है। प्रत्येक बच्चे को बिना पीछे देखे पता लगाना है कि क्या उसके पीछे कुछ है। यदि कुछ है, तो उसे केवल महसूस करके ही उस वस्तु को पहचानना और उसका नाम बताना है

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा कौशल, समाजीकरण, संवेदी अनुभूति, मौखिक निर्देशों को समझता है, धाराप्रवाह बात-चीत करता है, विभिन्न वस्तुओं के साथ अन्वेषण करता है और खेलता है, सहयोगी रूप से काम करता है, विभिन्न भावनाओं को पहचानता है, सहयोगी व्यवहार दिखाता है।
अवलोकन बिंदु	वस्तुओं के 'स्पर्श और अनुभव' को नाम देने में सटीकता; उन्हें सटीक रूप से क्रमबद्ध करने की क्षमता; कठोर और मुलायम, गर्म और ठंडे, खुरदुरी और चिकनी सतहों में अंतर कर पाता है; कठोर और मुलायम, ठंडे और गरम, खुरदुरे और चिकने के आधार पर सही शब्दावली के साथ दो वस्तुओं की तुलना करता है।

2.6: अनुभवों की समग्र जागरूकता प्राप्त करने के लिए संवेदी धारणाओं को एकीकृत करना

गतिविधि

फलों की चाट या सलाद बनाना

आवश्यक सामग्री	फल, नींबू, नमक, चम्मच, चाकू, प्लेट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
(सभी आयु वर्गों के लिए)	• बच्चों से शिक्षक को फलों का सलाद बनाते हुए देखने के लिए कहें। सलाद बनाने में 4–5 वर्ष और 5–6 वर्ष के बच्चों की मदद लें— फलों को धोना, छीलना, बीज निकालना, सँभालना, चीज़ों को सजाना आदि। फलों को काटते, मिलाते और सजाते समय बच्चों से उनके रंग, बनावट, स्वाद, गंध आदि के बारे में बात करें। • उन्हें फलों का सलाद खाने दें और इसमें शामिल विभिन्न फलों के स्वाद का अनुभव करने दें। • उन्हें स्वाद से संबंधित शब्दावली, जैसे– मीठा, खट्टा, नमकीन आदि का उपयोग करने में सहायता करें। • उन्हें बताएँ कि फलों का आकार, रंग, रूप, गंध और स्वाद कैसे उनके नाम से संबंधित हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	उपरोक्त सभी चरणों का पालन करते हुए बच्चों को अंकुरित दालें, सलाद बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। दोपहर के भोजन के समय का उपयोग उन खाद्य पदार्थों की विभिन्न गंधों, स्वाद और उनकी बनावट पर चर्चा करें, जो वे खा रहे हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सहयोग, साझा करना, अपने हाथों और अँगुलियों से काम करने में सटीकता और नियंत्रण दिखाता है, पौष्टिक भोजन के लिए पसंद दिखाता है; सामग्री और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का अभ्यास करता है, अलग-अलग स्वादों में अंतर करता है, मौखिक निर्देश देता है और समझता है, सहयोगी रूप से काम करता है।
अवलोकन बिंदु	फलों की गंध, उनकी बनावट और स्वादों को पहचानने की सटीकता और एक संपूर्ण संवेदी अनुभव होना।

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 3: बच्चों में स्वस्थ शरीर और लचीलेपन का विकास

- स्थूल गत्यात्मक विकास कौशल (चलना, दौड़ना, कूदना, फुदकना, रेंगना, चढ़ना, लयबद्ध गति, फेंकना, पकड़ना, पैर से किक करना आदि।)
- सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल और आँखों-हाथों के बीच समन्वय (थ्रेडिंग, फाड़ना, चिपकाना, स्क्रिबलिंग, चित्र बनाना, रंग भरना, छापना, ढालना, कागज मोड़ना आदि।)

3.1: विभिन्न गतिविधियों में इंद्रियों एवं शारीरिक गति में तालमेल दर्शाना

गतिविधि 1
आओ, गेंद फेंकें और पकड़ें

आवश्यक सामग्री	छोटी और बड़ी गेंद
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को स्वतंत्र रूप से खेलने के लिए एक गेंद (कम भार वाली) दें। • बच्चों को गेंद लुढ़काने और फेंकने दें तथा दूसरे बच्चों को पकड़ने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	गुब्बारा फुलाना— सभी बच्चों को गुब्बारे बाँटें। उन्हें गुब्बारा फुलाने के लिए कहें। बच्चों को गुब्बारे से खेलने दें। गुब्बारे पर उनका नाम लिखें।
4–5 वर्ष 	• गेंद अथवा गुब्बारे के साथ खेलना। • बच्चों को एक घेरे में खड़े होने के लिए कहें। उनके बीच में एक खाली बाल्टी या खाली कार्टन रखें और बच्चों से उसमें गेंद फेंकने के लिए कहें। • बच्चों को एक घेरे में खड़ा होने के लिए कहें। एक बच्चे के पास गेंद होगी। दूसरा बच्चा घेरे में खड़े किसी भी बच्चे का नाम लेगा, जिस बच्चे के पास गेंद है, वह उसी बच्चे को गेंद दें, जिसका नाम पुकारा गया है। (बच्चों को गेंद पकड़ने के लिए तैयार रहना होगा।)
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को कागज़ के खाली गिलासों से एक पिरामिड बनाने को कहें और बच्चों को पिरामिड पर गेंद फेंकने के लिए कहें। गेंद फेंकने के कारण पिरामिड के नीचे गिर जाने पर बच्चों को उसे एक साथ दोबारा बनाने के लिए कहें। • एक टायर को किसी पेड़ या बीम से नीचे लटकाएँ और बच्चों को इसके बीच से गेंद फेंकने के लिए कहें।

5–6 वर्ष	• गतिविधियाँ 3, 4 वर्ष और 4, 5 वर्ष तथा 5, 6 वर्ष के बच्चों के लिए भी उपयुक्त हैं। • बच्चों को गोले में खड़े होने के लिए कहें। आप केंद्र में खड़े होकर प्रत्येक बच्चे की ओर बेतरतीब ढंग से गेंद फेंकें, बच्चे को उसे पकड़ने के लिए कहें, जो बच्चा गेंद को पकड़ने में विफल रहता है वह बीच में आ जाएगा और दूसरे बच्चों की ओर गेंद फेंकेगा, इसी प्रकार खेल जारी रहेगा।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को एक हल्की गेंद ऊपर की ओर उछालने और उसके बाद ताली बजाकर उस गेंद को वापस पकड़ने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	एकाग्रता, सतर्कता, सहयोग, अपनी बारी की प्रतीक्षा।
अवलोकन बिंदु	दूरी का अनुमान लगाना, शारीरिक तंदुरुस्ती, लचीला शरीर, सुस्पष्टता और शारीरिक बल और सहनशीलता।

गतिविधि 2
आओ गेंद से खेलें (गेंद किक करना)

आवश्यक सामग्री	गेंद, डिब्बा, चॉक
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को कतार में खड़ा करें। प्रत्येक बच्चे को पैर से किक मारकर किसी भी दिशा में गेंद को किक मारने का अवसर दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	गेंद फेंकने की दिशा निर्धारित करें और उसी दिशा में बच्चों को गेंद फेंकने या किक मारने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	कुछ दूरी पर एक डिब्बा या मेज़ रखें। प्रत्येक बच्चे को पैर से उस ओर गेंद फेंकने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक खाली कार्टन लें, जो दोनों सिरों से खुला हो। इसे खुले स्थान या मैदान में रखें और बच्चों को पैर से गेंद फेंक कर उसमें से गुजारने को कहें।
5–6 वर्ष	प्रत्येक बच्चे को बारी-बारी दूर से गोलपोस्ट में गेंद को पैर से फेंकने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को एक घेरे में खड़ा करें और घेरे में किसी का भी नाम लेते हुए अपने पैर से उसकी ओर गेंद फेंकने के लिए कहें। साथ ही बच्चे यह भी कोशिश करें कि गेंद घेरे से बाहर न जाए।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	एकाग्रता, समन्वय, शारीरिक बल, अनुमान लगाना।
अवलोकन बिंदु	गेंद को पैर से फेंककर दूरी तथा गति का अनुमान लगाते हैं, लक्ष्य पर ध्यान लगाते हैं।

गतिविधि 3
आओ नाचें गाएँ (लयात्मक क्रियाएँ)

आवश्यक सामग्री	ढपली, ढोलक
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	कक्षा के बाहर या अंदर संगीत और लयबद्ध नृत्य गतिविधियों को बच्चों द्वारा झुकना, झूमना, कूदना और चलना करवाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	थाप देने के लिए ढपली का प्रयोग करें। बच्चे थाप के अनुसार तालियाँ बजा सकते हैं। थाप की गति तेज़ से हल्की और हल्की से तेज़ की जा सकती है।
4–5 वर्ष	बच्चों को अर्धवृत्ताकार में खड़े होने के लिए कहें। शरीर के अंगों पर गीत गाने के लिए कहें। बच्चों को उसी प्रकार अपने शरीर के अंग (अंगों) को छूना होगा। गीत— सिर, कंधे, घुटने और पैर की अंगुलियाँ
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक ढपली या ढोलक का प्रबंध करें। वाद्ययंत्र को बजाते हुए गाना गाएँ और बच्चों को धुन पर नाचने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	म्यूजिकल चेयर— एक बड़े घेरे में 5, 6 कुर्सियाँ रखें। यदि कुर्सियाँ उपलब्ध न हों तो आप कागज़, कपड़े, पुराने टायर और चटाई रख सकते हैं। खेल में भाग लेने वाले बच्चों की संख्या से एक कुर्सी कम रखें। बच्चों को कुर्सियों के चारों ओर दौड़ने के लिए कहें और आयोजक होने के नाते आप ढपली या कोई संगीत बजाएँ। हर बच्चे से कहें कि जैसे ही ढपली की थाप रुकेगी या संगीत बंद हो उन्हें जल्दी से कुर्सी पर बैठना होगा। उस समय जो बच्चा कुर्सी पर बैठने में असफल होगा वह ढपली बजाएगा। अब एक कुर्सी निकालकर पुनः खेल प्रारंभ करें, जब तक खेल में एक बच्चा न रह जाए। आखिर में कुर्सी पर बैठने वाला विजेता होगा।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	कोई देशभक्ति गीत या त्यौहार आदि के गीत को गाएँ। बच्चों को थाप के अनुसार नाचने दें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	एकाग्रता, आत्म-अभिव्यक्ति सृजनात्मक, ध्वन्यात्मक जागरूकता-लयबद्ध कविताएँ, गाना, पर्यावरणीय संकल्पानाएँ, शब्दावली का विकास
अवलोकन बिंदु	थाप पर लयबद्ध शारीरिक हरकतें और सक्रिय रूप से भाग लेने की इच्छा के साथ (गाने और नाचने) आदि का अवलोकन करें।

गतिविधि 4
खिसकना, रेंगना और लुढ़कना

आवश्यक सामग्री	ढपली, रस्सी
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	ढपली पर थाप देते हुए किसी एक पशु का नाम लें, जैसे कि 'बंदर' या 'खरगोश' और थाप पर बच्चों को इस पशु की चाल चलने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों से किसी समतल तल पर गेंद की तरह लुढ़कने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	दो बच्चों से एक रस्सी को कम ऊँचाई पर पकड़ने के लिए कहें और दूसरे बच्चों को एक-एक करके उसके नीचे से रेंगकर वापस अपने स्थान पर जाने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	इसी प्रकार आप बच्चों को कम ऊँचाई पर रस्सी रखकर उसे पार करने के लिए कहें या जमीन पर फैली रस्सी पर टेढ़े-मेढ़े तरीके से चलने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	बच्चों से आगे की ओर तथा पीछे की ओर लुढ़कने के लिए कहें और जमीन पर रॉक एंड रोल करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	हाथों से अभिनय करते हुए उन्हें "लेट्स गो रोलिंग, रोलिंग, रोलिंग" गाना बच्चों को गाने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	तंत्रिका समन्वय, शारीरिक गतिविधि, एकाग्रता, निर्णय लेना, सामाजिक-भावनात्मक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चे द्वारा लचीलेपन और निर्देशों का पालन करते हुए सही शारीरिक क्रियाएँ एवं गतिविधि को पूरा करना, सक्रिय भागीदारी प्रदर्शित करना और शारीरिक क्रियाएँ करना, सुरक्षित और असुरक्षित स्थितियों को समझना, क्रियाओं को करते समय जागरूकता प्रदर्शित करना।

नोट— इन गतिविधियों में बच्चों की सुरक्षा का ध्यान रखें।

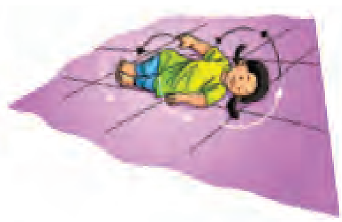

3.2: विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में संतुलन, तालमेल एवं लचीलापन प्रदर्शित करना

गतिविधि
संतुलन बनाए रखना

आवश्यक सामग्री	तख्ता, रस्सी
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	ईंटों के सहारे से एक लंबा और संकरा लकड़ी का तख्ता लगाए। सभी बच्चों को एक पंक्ति में खड़ा करें और एक-एक करके इधर-उधर पैर रखे बिना और सहारा लिए बिना उस पर चलने के लिए कहें। आवश्यकता पड़ने पर सहारा दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	तख्ता न हो तो सीधी रस्सी भी जमीन पर डाली जा सकती है। तख्ता या रस्सी छोटी और सीधी होनी चाहिए। धीरे-धीरे इसकी लंबाई बढ़ाई जा सकती है। रस्सी को टेढ़े-मेढ़े तरीके से फर्श पर डालें, जिससे बच्चे चल सकें।
4–5 वर्ष	जमीन पर दो समानांतर रेखाएँ खींचें और बच्चों को इन रेखाओं के बीच चलने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को ढलानों पर खेलने दें, जहाँ उन्हें झुकी हुई स्थिति में चलने का मौका मिले। • उन्हें एक पैर से एक बार या दो-तीन बार आगे कूदने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	• बाधा दौड़ (हर्डल रेस) का आयोजन करें। लकड़ी के पटरे, टायर एक के बाद एक ऐसे रखें, जिस पर बच्चों को चलना एवं कूदना हो। दो से तीन छोटे तख्तों एवं पुराने टायरों का उपयोग किया जा सकता है। संतुलन गतिविधि को और अधिक जटिल बनाने के लिए इन्हें तिकोने या टेढ़े-मेढ़े आकार में रखें। • बच्चों के लिए दौड़ का आयोजन करें, जिसमें उन्हें कुछ वस्तुओं, जैसे– उनके सिर पर किताब रखकर या उनके हाथों में एक पानी का गिलास (बिना पानी गिराएँ) देकर उन्हें सिर पर या अपने हाथों में लेकर चलने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ (सभी गतिविधियाँ 3–4 वर्ष या 4–5 वर्ष और यहाँ तक कि 5–6 वर्ष के बच्चों द्वारा भी की जा सकती हैं।)	• एक ऐसी नाट्य स्थिति का निर्माण करें, जिसमें बच्चे लकड़ी के तख्तों से पुल बनाएँ और उन्हें उस पर ऐसे चलने को कहें, जैसे वे वास्तव में किसी पुल पर चल रहे हों, जिसके बाहर की ओर पानी ही पानी है। आप कह सकते हैं कि 'सावधानी से चलें, पानी में नहीं गिर जाएँ'। • बच्चों से उनकी कमर पर हूप घुमाने एवं संतुलित करने को कहें। कमर को 5 से 10 बार घुमाएँ और जब वह घुमाने में सक्षम हो तब धीरे-धीरे चक्करों की संख्या बढ़ाएँ। शरीर के अन्य अंगों (हाथ या पैर) से घेरे (हूप) को घुमाने की कोशिश करने के लिए भी उन्हें प्रोत्साहित करें।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	शरीर का बल, ध्यान और एकाग्रता, लचीलापन, स्वयं की देखभाल, सामग्री का सुरक्षित उपयोग, क्रियाओं में सुरक्षा का पालन, संतुलन, समन्वय और विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में लचीलापन।
अवलोकन बिंदु	बच्चे निर्देशों का पालन करते हैं, शारीरिक संतुलन और जागरूकता विकसित होती है, सहजता से बात-चीत करते हैं, सहयोगी व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं।

3.3: हाथों और अँगुलियों से काम करते समय समन्वय और नियंत्रण दर्शाना

गतिविधि 1
आओ, पिरोएँ

आवश्यक सामग्री	धागा, मोती, कटोरी, पेंसिल, रंग
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को एक छोटी टोकरी में विभिन्न रंगों के कुछ मोती दें। बच्चों को इन्हें धागे या तार में डालने को कहें। (इसे और चुनौतीपूर्ण बनाने के लिए, रंगों के एक विशिष्ट अनुक्रम के साथ मोतियों को पिरोने और बच्चों को उसी क्रम में माला को पूरा करने के लिए कहें। उदाहरणार्थ— लाल, नीला, पीला और इसी क्रम को दोहराने को कहें।) माला बनाने के लिए मोती की जगह फूल या पत्तियों का उपयोग किया जा सकता है।
4–5 वर्ष	बच्चों को तख्ता दें और इसे उनकी पसंद की आकृति या आकार में काटने के लिए मदद करें। विभिन्न रंगों, रंगीन पेंसिल, पानी के रंग (वॉटर कलर), रंगने के लिए धागा आदि की मदद से बनाएँ और उसे टाँगने के लिए एक छोटा सा छेद बनाएँ। बच्चों को धागे का प्रयोग करके इसे वॉल आर्ट बनाने के लिए कहें। बच्चों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए आप इन्हें वॉल आर्ट्स की तरह कक्षा में लटका सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	तख्ते के एक टुकड़े (कॉपी का पुराना कवर) के साथ 'थ्रेडिंग फ्रेम' बनाएँ। किसी भी साधारण वस्तु का आकार बनाएँ, उदाहरण के लिए— पेड़ या मछली। इस आकार के चारों ओर छेद करके इसे पंच करें। बच्चों को इस आकार के चारों ओर एक कड़े धागे, तार या पुराने जूतों के फीते लगाने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	बच्चों को पशुओं की जटिल आकृतियों, क, ख, ग.. या ए, बी, सी, डी... आदि वर्णों के रेखाचित्र बनाकर दें। इन्हें ऊपर से छेद करके एक कड़े तार या धागे से बाँध कर दें। ये आकार कॉपी के पुराने कवर, पुराने ग्रीटिंग कार्ड आदि पर बनाए जा सकते हैं।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	आँखों-हाथों के बीच समन्वय, एकाग्रता, दृश्य-गत्यात्मक कौशल, अच्छी आदतें, सहयोगात्मक कार्य, नवाचार कार्य, समस्या समाधान करना, संवेदी अनुभूतियों में तीक्ष्णता आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चे मोतियों या जूते के फीतों को अलग-अलग जगह पर रखते हैं और पकड़ने वाली वस्तुओं में हाथ की क्रियाओं, रचनात्मकता, आँखों-हाथों के बीच समन्वय विकसित करते हैं।

गतिविधि 2
आओ कागज़ फाड़े, काटें और चिपकाएँ

आवश्यक सामग्री	कागज़, गोंद
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को काम न आने वाले कागज़ दें, उदाहरण के लिए— पुरानी पत्रिकाएँ, समाचार पत्रों के पन्ने आदि। कागज़ के एक बड़े टुकड़े पर किसी पशु या वस्तु की आकृति बनाएँ। आकृति बड़ी और विशाल होनी चाहिए। इस आकृति पर गोंद लगाएँ और बच्चों को उन रद्दी कागज़ के टुकड़ें को फाड़ने के लिए कहें और कागज़ के टुकड़ों को इस आकृति के अंदर चिपकाने को कहें। ये आकृतियाँ पेड़, झोपड़ी, गेंद, बिल्ली आदि की हो सकती है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को पुरानी पत्रिकाओं, अखबारों आदि से चित्र काटकर कोलाज बनाने को कहें।
4–5 वर्ष	बच्चों को साधारण आकृतियाँ कागज़ पर जैसे वर्ग या त्रिभुजाकार बनाकर दें और उन्हें इस आकृति को कागज़ से काटने को कहें। (सुनिश्चित करें कि कैंची बहुत तेज या नुकीली नहीं हो।)
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	प्रत्येक बच्चे के लिए नामपत्र तैयार करें। उन्हें रंगीन कागज़ या अखबार के माध्यम से फाड़ने-चिपकाने की गतिविधि करने को कहें। उस कागज़ को नाम के पहले अक्षर पर चिपका दें। बच्चे फाड़ने-चिपकाने की गतिविधि के द्वारा भी अपना नाम लिख सकते हैं।
5–6 वर्ष	बच्चों को पुराने अखबारों, पत्रिकाओं आदि के पन्ने दें। उन्हें अपने द्वारा तैयार की गई किसी भी आकृति में टुकड़ों को चिपकाकर अपना कोलाज बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें पुराने कपड़े के टुकड़े और अन्य अनुपयोगी वस्तुएँ, पत्ते, पंखुड़ियाँ आदि दी जा सकती हैं, जिनका उपयोग वे कोलाज के काम में चिपकाने के लिए कर सकते थे।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को काटने, फाड़ने-चिपकाने की गतिविधि के लिए जूतों के डिब्बे या उपहार के डिब्बे को लें और उन्हें उसे सजाने के लिए दें।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	रचनात्मकता और कल्पना, हाथों की गति, सटीकता और नियंत्रण, हाथों-आँखों का समन्वय, अलग-अलग आकार, रंग तथा पैटर्न में अंतर व पहचान करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे वांछित आकार में कागज़ काटते, फाड़ते या चिपकाते हैं और ठीक वैसा ही करना सीखते हैं, मौखिक निर्देशों को समझते हैं, धारा प्रवाह बोलते हैं, नवाचार करते हैं, कल्पनाशील रूप से काम करते हैं।

गतिविधि 3
आओ चित्र बनाएँ और रंग भरें।

आवश्यक सामग्री	रंग, जलरंग प्राकृतिक रंग के कागज़, धागा
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को रंग और पुराने अखबार या कोई भी अन्य कागज़ दें। उन्हें कागज़ पर चित्र बनाने के लिए रंगों का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को थोड़ी गीली मिट्टी, छड़ी या लकड़ी का टुकड़ा दें ताकि वे उस पर लिख सकें।
4–5 वर्ष	चिह्नित किए क्षेत्रों पर एक दी गई आकृति को बनाएँ और बच्चों से उस आकृति में अलग-अलग रंगों को भरने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को हल्दी अथवा फूलों के रंग विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक रंगों को भरने की सामग्री का उपयोग करने दें। • उन्हें वर्षा ऋतु के दृश्य बनाने दें। उन्हें इंद्रधनुष बनाने और रंग भरने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	• बच्चे पुराने टूथब्रश को पेंट में डुबाकर और पेंट स्प्रे करने के लिए ब्रश के ब्रिसल्स का उपयोग करके स्प्रे-पेंटिंग कर सकते हैं। • बच्चों को उनकी पसंद की कोई भी विषयवस्तु दें और उन्हें उनकी समझ के अनुसार दृश्य बनाने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• विभिन्न प्रकार की चित्रकारी से बच्चे के हाथों-आँखों के बीच समन्वय और शारीरिक निपुणता को मजबूत करने में मदद मिल सकती है। • बच्चों को अपनी अँगुलियों व हाथों से काम करने का मौका दें (फिंगर पेंटिंग)। ब्रश से पेंटिंग करने से उन्हें ब्रश पकड़ना सीखने में मदद मिलती है और एक उपकरण के रूप में इसका उपयोग करके उस पर अधिक नियंत्रण प्राप्त करना सीखते है। • कागज़ के बीच रंग में डूबा हुआ धागा रखें, जिससे धागे का एक सिरा बाहर लटक रहा हो। इसके ऊपर एक और शीट रखें। अब एक बच्चे को उसे जोर से दबाने दें और दूसरे बच्चे से धागे के बाहर निकले हुए सिरे को बाहर खींचने के लिए कहें। एक रंगीन बनावट उभराकर सामने आएगी। बाद में बच्चों को इस कागज़ में छेद करके उसे अपने एक फाइल फोल्डर में रखकर, अपना पोर्टफोलियो बनाने के लिए कहें।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	आँखों-हाथों के बीच समन्वय, नियंत्रण, रचनात्मकता और कल्पना, कला रूपों का निर्माण करते हुए विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं का संप्रेषण और सराहना करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे रचनात्मकता के साथ चित्र बनाते हैं, रंग भरते हैं और चित्रकारी करते हैं और अपनी कल्पना को प्रदर्शित करते हैं। सक्रिय रूप से एकाग्रता के साथ भाग लेते हैं। विभिन्न सामग्रियों और उपकरणों को समझते हैं और उनके साथ खेलते हैं।

गतिविधि 4
आओ पैटर्न बनाएँ

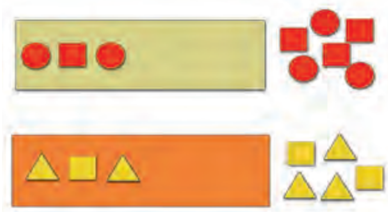

आवश्यक सामग्री	छोटे रंगीन पत्थर (पेबल्स), रंगीन मोती, अनाज, गोले, पत्ते, माचिस
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	विभिन्न रंगों के ब्लॉक मिलाकर उन्हें दें। पैटर्न गतिविधि ब्लॉकों के एक सेट के साथ की जा सकती है। पैटर्न बनाने की शुरुआत करें और बच्चों से इसे आगे बढ़ाने के लिए कहें। उन्हें चुनौती दें कि वह आपको बताएँ कि नियम क्या है। (एक लाल ब्लॉक, दो पीले ब्लॉक, इसे दोहराएँ।) इसमें उनके छाँटने के कौशल और फिर पैटर्न बनाने की ओर आगे बढ़ाने को ध्यान में रखा जाएगा।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	स्क्रिबलिंग गतिविधियों को करवाएँ और धीरे-धीरे उन्हें रंग में डूबी अँगुलियों के साथ कागज़ की शीट पर पैटर्न बनाने की ओर ले जाएँ।
4–5 वर्ष	बोर्ड पर एक पैटर्न बनाएँ, इसे बच्चों की आँखों के स्तर पर रखें और बच्चों को मोतियों, माचिस की तीलियों अथवा रंगीन कंकड़ जैसी वस्तुओं का चयन करके उस पैटर्न का अनुसरण करने दें। इस तरह वे बड़ी कक्षाओं में जाने पर बोर्ड पर लिखे अक्षरों का अनुसरण करना सीखेंगे।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	ऐसी वर्कशीट बनाएँ, जिसमें बच्चों को बिंदुओं को मिलाकर आकृति बनाने के अभ्यास करने का अवसर मिलेगा।
5–6 वर्ष	बच्चों को रंगीन छोटे पत्थर, रंगीन मोती, अनाज, गोले, पत्ते, माचिस आदि को उनके रंग, आकृति या आकार के अनुसार छाँटने दें और एक ही वस्तु को एक साथ चिपकाकर समूह बना लें जैसे एक घेरे में सभी कंकड़, दूसरे घेरे में पत्ते आदि। वे कितने कंकड़ गिनते हैं? कितने पत्ते? क्या अधिक है? आदि।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	वर्णमाला और नंबर के कार्डों को एक साथ मिलाएँ। बच्चों को इन्हें छाँटने दें और अलग-अलग छोटी टोकरियों में रख दें। उन्हें उनके साथ एक पैटर्न बनाने को दें, उदाहरण के लिए— कोई एक अक्षर, संख्या, फिर अक्षर संख्या आदि।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	रंग, आकार का बोध, पर्यावरण जागरूकता की संकल्पना, वर्गीकरण, आकृतियों में अंतर करना, दृश्य स्मृति, वस्तुओं को छाँटना, समझना।
अवलोकन बिंदु	ब्लॉक और अन्य सामग्री को छाँटने से बच्चों में समस्या-समाधान कौशल का विकास होता है तथा वह स्मरण शक्ति को दर्शाता है। बच्चे, अवलोकन कौशल का उपयोग करते हैं और पैटर्न बनाने की गतिविधि को पूरा करते हैं, नवाचार के साथ कल्पनाशीलता के साथ काम करते हैं, विभिन्न प्रकार की सामग्री की खोज करते हैं और खेलते हैं।

गतिविधि 5
मनोरंजन के छापे बनाना

आवश्यक सामग्री	कागज़, रंग और छपाई की सामग्री
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• ब्लॉक प्रिंटिंग की जा सकती है। • पत्तों को रंगों में डुबाकर प्रयोग किया जा सकता है। पैर और हाथ की मदद से छपाई (फुट एंड हैंड प्रिंट) की जा सकती है। • बच्चों को प्याज का टुकड़ा या भिंडी के टुकड़े को रंग में डालने और उसके बाद कागज़ पर छापने को कहें। • एक आकृति या डिजाइन बनाएँ। आलू को आधा काट लें। उन्हें इसे रंग में डुबोकर कागज़ पर छापने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को रंगों, पेंट ब्रश, अँगुलियों की छाप, सब्ज़ियों की छाप आदि से चित्र बनाने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को एकत्र करें, जिसका उपयोग रंग में डुबाकर कागज़ पर छाप बनाने के लिए किया जा सके, उदाहरण के लिए— कंघा, सुतली या रबर बैंड से लिपटे हुए ब्लॉक, पुराने लकड़ी के खिलौने आदि। प्रत्येक बच्चे को उपयोग किए जा चुके कागज़ या अख़बार दें और फिर वे उपरोक्त वस्तुओं को पेंट में डुबाकर और उन कागज़ों पर चिपका सकते हैं ताकि उनकी आँखों और हाथों के बीच समन्वय स्थापित हो।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे अँगूठे से छापकर अथवा हाथ से छापकर इसे बना सकते हैं और अपनी रचनात्मकता का उपयोग घोंघा, मेंढक, मोर, जैसी किसी भी वस्तु की परिकल्पना और चित्र बनाने के लिए कर सकते हैं।

5–6 वर्ष	बच्चे भिन्न वस्तुएँ जैसे सब्ज़ियाँ, ब्लॉक आदि से कागज़ पर प्रिंट बना सकते हैं। वे इससे रैपिंग पेपर या कागज़ का थैला (पेपर बैग) बना सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे बिल्ली, चूहे, मछली आदि के चित्र अँगूठे या हाथ से छपाई करके भी बना सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	आँखों-हाथों के बीच समन्वय, भावनाओं को व्यक्त करना, स्थानिक बोध और रचनात्मकता, सकारात्मक रूप से समझना और प्रतिक्रिया देना, देख-रेख और आनंद प्रदर्शित करना, छाँटना, विविध प्रकार की सामग्री के साथ खेलना और जानना।
अवलोकन बिंदु	बच्चा विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करता है और अपने डिजाइन, आकारों, स्मृति, अवलोकन, आश्चर्य, संप्रेषण को छापकर अपनी रचनात्मकता को दर्शाता है।

गतिविधि 6
कागज़ मोड़ना

आवश्यक सामग्री	कागज़, रुमाल
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को अपने रुमाल या कागज़ को एक या दो बार मोड़ने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को रुमाल या कागज़ से अलग-अलग चीजें बनाना सिखाया जा सकता है, जैसे– झोपड़ी, नाव, टोपी आदि, जिन्हें थोड़ा-बहुत मोड़कर बनाया जा सकता है।
4–5 वर्ष	बच्चों को अपने रुमाल को एक या दो बार विभिन्न आकारों में मोड़ने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को रंगीन कागज़ दें। बच्चे अपनी पसंद का कुछ भी बना सकते हैं, जैसे–फूल, नाव, पक्षी, हवाई जहाज़ आदि।
5–6 वर्ष	बच्चों को फूल, नाव, पक्षी, हवाई जहाज़ आदि बनाने के लिए जटिल रूप से कागज़ को मोड़ना सिखाया जा सकता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को कागज़ प्रदान करें और उन्हें कागज़ की नाव बनाने के लिए कहें और इसे एक कोरे कागज़ पर चिपका कर उसके नीचे पानी जैसा रंग भरने को कहें।
अन्य दक्षताओं को संबोधित करना	त्रि-आयामी (तीन आयामों) वस्तुओं को समझना और तार्किक सोच, केंद्रीयता और एकाग्रता, कल्पना एवं रचनात्मकता, आँख और हाथों के बीच समन्वय और सहयोग।
अवलोकन बिंदु	बच्चा आँखों और हाथों के बीच समन्वय स्थापित करते हुए कागज़ या रुमाल को मोड़ता है। बच्चा सही क्रम में निर्देशों का पालन करता है। अपने साथियों की मदद करता है और उसकी स्मरण शक्ति का विकास होता है।

गतिविधि 7
आओ फीते बाँधना सीखें

आवश्यक सामग्री	बटन, कमीज, फीते वाले जूते
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बालवाटिका में बटन वाली कुछ पुरानी शर्ट रखें या बच्चों को अपने घर से बटन वाली शर्ट लाने को कहें और उन्हें बटन लगाना और खोलना सिखाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को गुल्लक बनाने और उसमें सिक्के डालने को कहें।
4–5 वर्ष	बच्चों से कहें कि वे घर पर ही अपनी कमीज के बटन खुद लगाना सीखें।
5–6 वर्ष	• बच्चों से उनकी गुड़िया या पुरानी कमीज के बटन लगाने को कहें। • बच्चों को प्रेरित करें कि वे अपने जूते के फीते खुद बाँधें और फिर अपने पुराने जूतों की जोड़ी के साथ इसका अभ्यास करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	हाथ-आँख में समन्वय, सटीकता और एकाग्रता, समन्वय, स्मृति, ध्यान, अवलोकन, जिज्ञासा, विभिन्न वस्तुओं के साथ खेलना।
अवलोकन बिंदु	बच्चा अपने हाथ की ताकत, हाथों-आँखों के बीच समन्वय का उपयोग करके बटन को एक छोटी और सटीक जगह में लगाता है, भावनाओं को समझता है और संभालता है।

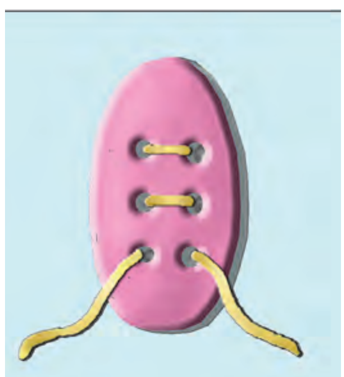

3.4: सामान ले जाने, चलने और दौड़ने में सशक्त होना और स्थिरता दर्शाना

गतिविधि 1
आओ चलें

आवश्यक सामग्री	चॉक, टेप, ढपली या ढोल
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	जमीन पर चौड़ी समानांतर रेखाएँ खींचें। बच्चों को इन समानांतर रेखाओं के बीच चलने दें। बच्चों के लिए चलने पर दिशा-निर्देश प्रदान करें, जैसे-छोटे कदम उठाएँ, बड़े कदम उठाएँ, धीमे या तेज चलें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक चौड़ा टेप चिपका दें या चॉक से एक सीधी रेखा खींच दें और बच्चों को एक सीधी रेखा में चलने को कहें। बच्चों को बाहर खेलने या शौचालय आदि के लिए जाते समय सीधी रेखा में चलने को कहा जा सकता है।
4–5 वर्ष	मैदान पर चॉक से विभिन्न बड़ी-बड़ी आकृतियाँ बनाएँ, जैसे– आयत, त्रिकोण, वृत्त आदि। बच्चों को इन खींची गई आकृतियों की रेखाओं के साथ-साथ चलने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को हाथ पकड़ कर घेरा बनाने, त्रिकोण या चौकोर आकार में खड़े होने को कहें।
5–6 वर्ष	बच्चों को ढोल या ढपली की थाप पर चलवाएँ। बच्चों के चलने की गति और चाल को नियंत्रित करने के लिए उन्हें रचनात्मक गतिविधियों को करने हेतु प्रोत्साहित करें, उदाहरण के लिए— बच्चों को ढोल या ढपली की विभिन्न थापों के अनुसार चलने की गति को अचानक 'तेज' से 'धीमे' और 'धीमे' से 'तेज' में बदलने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को गाना गाने दें और थाप के अनुसार चलने दें, जैसे– हम आगे, आगे आते हैं; हम पीछे, पीछे जाते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	एकाग्रता, निर्देशों का पालन, समन्वय और शरीर की ताकत, संतुलन, लचीलापन, आनंद, मौखिक निर्देशों को समझते हैं।
अवलोकन बिंदु	बच्चे सीधे रास्ते पर चलते हैं, अपनी शक्ति का उपयोग करने की इच्छा प्रदर्शन और निर्देशों का पालन करते हैं, सहजता से दिशा और गति बदलते हैं, आयु-उपयुक्त शारीरिक गतिविधियों में इच्छा और भागीदारी प्रदर्शित करते हैं।

गतिविधि 2
आओ दौड़े

आवश्यक सामग्री	रुमाल, गेंद, सीटी
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	एक गेंद फेंकें और बच्चों को दौड़कर गेंद लाने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	आपस में गेंद पकड़ने का खेल खेलें।
4–5 वर्ष	*कोकला छपकी* जैसा खेल खेलें। बच्चों को घेरे में बैठने दें। एक बच्चा हाथ में कपड़ा लेकर घेरे के बाहर दौड़ता है। वह कपड़े को किसी भी बच्चे के पीछे रख सकता है, जिस बच्चे के पीछे कपड़ा रखा जाए उसे वह कपड़ा उठाना होगा और उस बच्चे को पकड़ने की कोशिश करनी होगी, जो उसके दौड़ने से पहले कपड़ा डालता है और अपनी जगह पर बैठ जाता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को एक लाइन में खड़ा करें। सीटी बजाएँ और उन सभी को थोड़ी दूरी दौड़ने और आनंद के लिए कहें। आप बच्चों के साथ दौड़ भी सकते हैं।
5–6 वर्ष	तीन टाँगों वाली दौड़ का आयोजन करें। बच्चों के बीच जोड़ियाँ बनाएँ। प्रत्येक जोड़ी में एक बच्चे के बाएँ पैर को दूसरे बच्चे के दाएँ पैर से बाँध दें। उन्हें दौड़ने और दौड़ पूरी करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को बर्फ-पानी का खेल खेलने दें, जैसे– एक बच्चा दौड़कर दूसरे बच्चों को छूने की कोशिश करेगा। यदि बच्चा दूसरे बच्चे को छुएगा तो वह 'बर्फ' हो जाएगा और यदि अन्य बच्चे 'बर्फ' बने बच्चे को छू लेंगे तो वह पानी बन जाएगा।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	दूरी का अनुमान लगाना, एकाग्रता, निर्देशों का पालन, समन्वय और शरीर की ताकत का अनुमान, देख-रेख एवं आनंद प्रदर्शित करना, मौखिक निर्देश, ध्यान, संप्रेषण, शब्दावली का विकास करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चा सहजता से चल रहा है और शरीर की गतिविधियों में तारतम्यता के साथ समन्वय स्थापित कर रहा है, बच्चे का शरीर स्वस्थ एवं लचीला बनता है, बच्चे के लिए उपयुक्त शब्दावली का विकास किया जाता है।

गतिविधि 3
कूदना

आवश्यक सामग्री	रस्सी, चाक, ढपली
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को एक मंडली में खड़े होने दें, गाना गाएँ और क्रियाएँ करें, जैसे– Walk... walk... walk... Jump... jump… jump... Run... run... run... Hop... hop... hop...
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को एक घेरा बनाने के लिए कहें और एक बच्चे को केंद्र में आने के लिए कहें और खरगोश की तरह अपने सिर पर हाथ रखकर खरगोश के कानों को संकेत करते हुए जमीन पर बैठने के लिए कहें। बच्चों को गाना गाने दें— Little rabbit, why do you sleep? Little rabbit, why don't you jump? Rabbit jump, rabbit jump, rabbit jump. जब बच्चे 'खरगोश कूदो' कहते हैं तो जो बच्चा केंद्र में होगा उसे और खरगोश की तरह कूदकर एक छोर से दूसरे छोर तक जाना चाहिए।
4–5 वर्ष	गोला बनाएँ और बच्चों को उस पर खड़ा करें। यदि शिक्षक 'अंदर' कहता है, तो बच्चों को घेरे में आगे की ओर कूदना होगा और यदि शिक्षक 'बाहर' कहता है, तो बच्चों को घेरे से बाहर, पीछे की ओर कूदना होगा।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को घेरे में खड़े होने दें। संख्या पुकारें और उन्हें अपने ही स्थान पर कई बार कूदने दें।
5–6 वर्ष	दो बच्चों से कूदने की रस्सी को जमीन से थोड़ा ऊपर पकड़ने को कहें। दूसरे बच्चों से एक-एक करके इस पर से कूदने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	जमीन पर अक्षरों या संख्याओं के साथ गोले बनाएँ और संख्या या अक्षर को ऊँचे स्वर में बोलें और बच्चों को अक्षर या संख्या पर कूदने के लिए बारी-बारी से आने दें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	दूरी का अनुमान, एकाग्रता, निर्देशों का पालन, समन्वय और शरीर की ताकत, अंकों की पहचान और उनका उपयोग करना, अक्षरों को पहचानना।
अवलोकन बिंदु	बच्चा अपनी जगह से आगे और पीछे तथा एक छोटे-से अवरोधक के ऊपर आराम से कूदता या फुदकता है जिससे स्वस्थ एवं लचीले शरीर का विकास, संतुलन, समन्वय और विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में लचीलापन आता है।

गतिविधि 4
चढ़ना

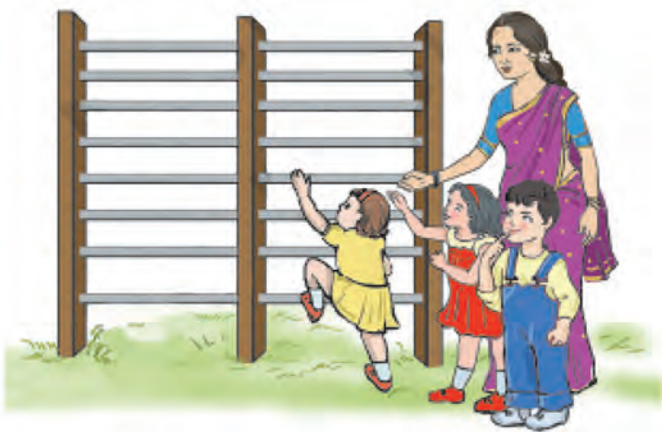

आवश्यक सामग्री	एक छोटा मज़बूत डब्बा, स्टूल या चौकी, रस्सी
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	सीढ़ियों वाली किसी भी जगह का उपयोग करें और बच्चों को ऊपर चढ़ने और नीचे आने के लिए कहें। यदि सीढ़ियाँ नहीं हैं तो भ्रमण आदि के दौरान यदि मौका मिले तो उन्हें अपनी निगरानी में किसी जगह सीढ़ियाँ चढ़ने-उतरने का अवसर दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को किसी ऐसे पार्क में ले जाएँ, जहाँ झूले पर चढ़ने और नीचे सरकने के लिए फिसलन पट्टी हों या फिर कक्षा में दीवार के पास एक छोटा मज़बूत डिब्बा रखें और उस पर चादर मोड़कर डालें और उन्हें उस पर चढ़ने और बैठने को कहें।
4–5 वर्ष	बच्चों को सीढ़ियों का प्रयोग करने दें और अपनी निगरानी में ऊपर चढ़ने और नीचे उतरने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को ऊपर चढ़ने और नीचे उतरने के लिए छोटे और मज़बूत स्टूल, चौकी, लकड़ी के पटरे, पटरियों और पीढ़े का उपयोग करने के लिए दें।
5–6 वर्ष	बच्चों को प्राकृतिक भ्रमण पर ले जाएँ, जहाँ वे ऊँची-नीची चट्टानों और पेड़ों पर चढ़ने-उतरने की गतिविधि कर सकें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	रस्सी की सीढ़ी बनाएँ और उसे पेड़ पर लटकाएँ। बच्चों को अपनी देख-रेख में इसका प्रयोग करने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	स्थानिक बोध और दिशा ज्ञान, हाथों और पैरों के बीच समन्वय और फुर्ती, कार्य करते समय सावधानी के प्रति सजगता, संतुलन, समन्वय, इच्छा और आयु-उपयुक्त शारीरिक गतिविधियों में भागीदारी, गिनती, अंकों का उपयोग।
अवलोकन बिंदु	बच्चा सहज शारीरिक क्रियाओं के साथ सीढ़ियाँ चढ़ता है। बच्चे अपने साथियों पर भरोसा दिखाते हैं, उनके शरीर का स्वस्थ और लचीलेपन के साथ विकास होता है।

मनोमय कोष
(सामाजिक-भावात्मक एवं नैतिक विकास)

यह सोचने, अनुभूति करने और अभिव्यक्त करने की शक्ति है। यह समझने, अनुभव करने, अभिव्यक्त करने और भावनाओं को प्रबंधित करने तथा दूसरों के साथ सार्थक संबंध विकसित करने वाली अत्यानुशासनिक प्रक्रिया है। साथ-ही-साथ, आत्म-अनुशासन और एकाग्रता मनोमय कोष के विकास का भाग है।

मनोमय कोष से संबंधित पाठ्यचर्या लक्ष्य

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 4: बच्चों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करना

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 5: बच्चों में उत्पादक कार्य तथा सेवाओं के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 6: बच्चों में अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना

मनोमय कोष

सामाजिक-भावनात्मक एवं नैतिक विकास

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 4: बच्चों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करना

- 'स्वयं' के प्रति जागरूकता
- सकारात्मक आत्म-संकल्पना का विकास
- स्व-नियमन
- निम्नलिखित का विकास
  - समाज समर्थक व्यवहार, जैसे कि देखभाल, साझा करना, सहयोग, करुणा और दूसरों की भावनाओं और अधिकारों के लिए सम्मान;
  - सुरक्षा और विश्वास की भावना;
  - किसी के व्यवहार को नियंत्रित करने की क्षमता;
  - सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीके से अपनी भावनाओं को पहचानने और नियंत्रित करने की क्षमता;
  - स्वतंत्रता और नेतृत्व

4.1: 'स्वयं' को व्यक्ति के रूप में पहचानना शुरू करना, जो परिवार तथा समुदाय का हिस्सा है

गतिविधि 1
मेरा परिवार

आवश्यक सामग्री	परिवार की फोटो, कागज़, रंग, टैग्स या डोरियाँ, चार्ट पेपर्स
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चे को उसके परिवार के सदस्यों, जैसे– पिता, माता तथा अन्य सदस्यों के नामों के बारे में बात करने के लिए कहें। बच्चों को उनकी अभिरुचियाँ, पसंद-नापसंद, वे क्या चाहते हैं अथवा क्या नहीं चाहते हैं, इन सबके बारे में बात करने दें। कक्षा के हर बच्चे का नामकार्ड बनाएँ। प्रत्येक कार्ड पर कुछ आकृति (डिजाइन) बनाएँ, जिससे कि बच्चा संबंध स्थापित कर सके। यह बच्चे के पहचान पत्र की तरह है तथा इसका उपयोग उपस्थिति दर्ज करने तथा खेल गतिविधियों के लिए किया जा सकता है।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	कहानी सुनाने के सत्र आयोजित करें, जिसमें कहानी में एक ऐसे चरित्र का वर्णन हो, जिससे बच्चे जुड़ सकें।
4–5 वर्ष	• बच्चों से कहें कि वे अपने परिवार के फोटो को चार्ट पेपर पर चिपकाएँ तथा अन्य बच्चों से फोटो में मौजूद लोगों से अपने संबंध के बारे में बात करें। • बच्चों को उनके परिवार का वंश वृक्ष (फैमिली ट्री) बनाने के लिए कहें तथा उस पर परिवार के सदस्यों के नाम तथा फोटो लगाने के लिए कहें। उन्हें उनके घर के विषय में बात करने के अवसर भी दें। • यदि किसी बच्चे के पास परिवार का फोटो नहीं है तब वह सामान्य रूप से चित्र बनाकर अपने परिवार के सदस्यों के नाम आदि बता सकता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को परिवार के सदस्यों के फोटो लाने के लिए कहें तथा बच्चों को एक एल्बम बनाने में मदद करें।
5–6 वर्ष	• बच्चों को रिश्तेदारों तथा पालतू पशुओं के साथ वंश वृक्ष (फैमिली ट्री) का विस्तृत रेखांकन करने के लिए कहें। वे अपने परिवार के सदस्यों की भूमिका, उनकी पसंद तथा नापसंद आदि के बारे में बता सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• परिवार से संबंधित रोलप्ले तथा कविता आदि।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	• सामग्री और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग का अभ्यास, प्रतीकों और प्रतिनि-धित्व (रिप्रेजेंटेशन) से दृश्य स्मृति विकसित करना, जिससे वह पालतू पशुओं की देखभाल में शामिल होता है, समझता है, प्रदर्शित करता है।
अवलोकन बिंदु	• बच्चे, जो सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। • बच्चे, जो निष्क्रिय बैठे हैं। • बच्चे, जो केवल शिक्षकों के साथ बात कर रहे हैं। • बच्चे, जो काम जैसे रेखांकन अथवा चिपकाने का काम कर रहे हैं, लेकिन बात नहीं कर रहे हैं।

गतिविधि 2
आओ इसे दोहराएँ

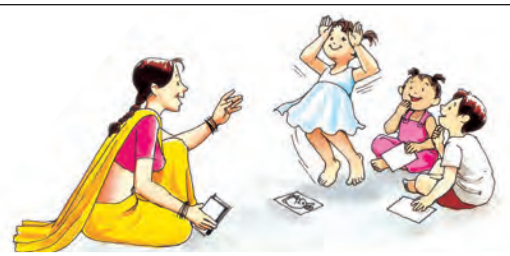

आवश्यक सामग्री	पोशाक सामग्री, पात्रों हेतु सहायक उपकरण, जैसे– चश्मा, अखबार, रसोई सेट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• गुड्डे-गुड़ियों से खेलने के स्थान पर बच्चे अपने परिवार के सदस्यों की तरह अभिनय और उनकी तरह बात करने का प्रयास करें। • पिता, माता, भाई, बहन या परिवार के किसी अन्य के रोलप्ले आयोजित करें।

4–5 वर्ष	डॉल कॉर्नर, वह स्थान जहाँ पर बच्चे गुड्डे-गुड़ियों से खेलते हैं, वहीं बच्चे मुक्त खेल के दौरान रोलप्ले करें और अपने परिवार के सदस्यों के बात-चीत के तरीके, उनकी भाषा, जिस तरह से वे घर पर बात करते हैं, उसकी नकल करने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को देखने के लिए कमरे में एक लंबा दर्पण उपलब्ध कराएँ, जिसमें वे स्वयं को देख सकें और उन्हें यह अवसर दें कि वे जो देख रहे हैं उस पर चर्चा कर सकें। • परिवार पर कहानियाँ, गीत अथवा कविता, एक चार्ट पेपर पर परिवार के सदस्यों की तस्वीरें चिपकाएँ और इसे दीवार पर टाँगने के लिए फ्रेम करें। • बच्चों को एक दूसरे के वंश वृक्ष की अदला-बदली करने के लिए कहें। वे अपने सहपाठियों के परिवार को देखने और समझने की कोशिश करते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संवेदी संकल्पनाओं और शारीरिक गतिविधियों के बीच समन्वय प्रदर्शन, परिवार में स्वयं को पहचानना, आराम से बात-चीत और सकारात्मक प्रतिक्रिया
अवलोकन बिंदु	जो बच्चे सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं, वे बिना झिझक अपनी प्रतिभा दिखाते हैं, वे अपने परिवार के बारे में बात करने में सहजता दिखाते हैं और जो बच्चे शांत हैं, उनका भी अवलोकन करते हैं। बच्चों को सहजता के साथ बोलने के लिए और अपने विचारों को साझा करने के लिए प्रेरित करें।

गतिविधि 3
परिवार पर कला गतिविधि

आवश्यक सामग्री	कागज़, रंगीन पेंसिलें, लोगों के कट-आउट, पेंट, चिपकाने की सामग्री, रंगीन क्ले
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• परिवार से संबंधित अँगुलियों के खेल तथा क्रियात्मक गीतों का उपयोग करें। • त्रिकोण, वर्ग के आकार वाले कट-आउट्स दें। बच्चों को घर बनाने के लिए कहें। • उन्हें घर का चित्र बनाने एवं उसके सामने परिवार को प्रदर्शित करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	कक्षा के डिस्प्ले बोर्ड पर सभी बच्चों के परिवारों के चित्र को प्रदर्शित किया जा सकता है और बच्चे अपने दोस्तों के परिवारों का अवलोकन कर सकते हैं। उन्हें इस बात का अवलोकन करने के लिए कह सकते हैं, जैसे– उनकी कक्षा में राखी पढ़ती है उसके परिवार में उसकी एक छोटी बहन भी है इत्यादि।
4–5 वर्ष	बच्चों को अपने परिवार के सदस्यों का चित्र बनाने और उसमें रंग भरने के लिए कहें। उन्हें यह चित्र घर ले जाकर अपने परिवार के सदस्यों को दिखाने के लिए कहें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों द्वारा रंग भरे गए चित्रों को प्रदर्शित करें और उन्हें एक-दूसरे के चित्र को देखने के लिए कहें, तथा मुक्त वार्तालाप के समय का उपयोग एक-दूसरे के परिवार के विषय में, उनकी भूमिकाओं, पसंद अथवा नापसंद आदि के विषय में बात करने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	बच्चों को क्ले (मिट्टी) अथवा कार्डबोर्ड का उपयोग करके मानव आकृतियों का निर्माण करने तथा उन आकृतियों पर परिवार के सदस्यों के नाम की पर्ची लगाने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को अपने परिवार के सदस्यों का चित्र बनाने तथा उनके नाम लिखने को कहें। • बच्चों को फोटो फ्रेम बनाने तथा उसमें अपने परिवार का चित्र प्रदर्शित करने को कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	दृश्य स्मृतियों एवं प्रतीकों का पुन: प्रस्तुतीकरण, सक्रिय रूप से बात-चीत तथा प्रतिक्रिया, दूसरों के प्रति देख-रेख की भावना का प्रदर्शन, परिवार में स्वयं की पहचान, समन्वय और लचीलापन
अवलोकन बिंदु	कौन-से बच्चे सक्रिय रूप से हिस्सा ले रहे हैं, परिवार की संकल्पना समझ रहे हैं, किन में परिवारों के बीच की समानताओं और बदलावों को दर्ज कर पाने की क्षमता है, विभिन्न तरह के परिवारों के प्रति सम्मान प्रदर्शन, जैसे कि ऐसा परिवार, जिनके पास पालतू पशु हों; कोई परिवार, जिसमें दादा-दादी अथवा नाना-नानी हों; परिवार जिसमें बच्चे के भाई/बहन न हों।

4.2: विभिन्न भावनाओं को पहचानना और उन्हें नियंत्रित करने के प्रयास करना

गतिविधि 1

भावनाओं की पहचान

आवश्यक सामग्री	चित्र कार्ड्स, मुखौटे, भावनाएँ प्रदर्शित करते चेहरों के छोटे चित्र, छोटी टोकरी
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को विभिन्न भावनाओं के चित्र कार्ड दिखाएँ; उन्हें उन कार्ड्स में व्यक्त भावनाओं की पहचान करने को कहें। उन्हें उसके अनुसार अभिनय करने तथा अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने को कहें।
4–5 वर्ष	• बच्चों के साथ संरचित बात-चीत करें, कहानी सुनाएँ और नाटकीकरण संबंधी गतिविधियाँ करें और उनसे चर्चा करें कि हमें दूसरों विशेष रूप से बुजुर्ग, दिव्यांग और जरूरतमंद व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए। • कोई गीत गाएँ यदि आप खुश हैं और आप जानते हैं तो अपने हाथों से ताली बजाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को सोचने दें और उन्हें पूर्ण वाक्यों में उत्तर देने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— 'यदि मैं खुश हूँ तो मैं--------।', 'यदि मैं दुखी हूँ तो मैं---------।'

5–6 वर्ष	बच्चों के एक छोटे समूह का घेरा बनाएँ। चेहरे पर अलग-अलग भावनाओं वाले चेहरे के चित्र, जैसे– खुश, उदास, क्रोधित, मौन, वाह, आहा, आदि जैसे शब्दों के साथ, एक छोटी टोकरी में चित्र रखकर बच्चों के बीच ले जाएँ और उन्हें यह एक-दूसरे को आगे देने के लिए कहें एवं संगीत बजाएँ। जब संगीत रुक जाए, तब जिस बच्चे के हाथों में छोटी टोकरी है, उसे एक तस्वीर चुनने को कहें और देखें कि उस चित्र में किस भावना को प्रदर्शित किया गया है। उस भावना को क्रियाओं के माध्यम से चेहरे के भावों के द्वारा व्यक्त करें। दूसरे बच्चों को भावना का अनुमान लगाने दें, इस बारे में चर्चा करें कि क्या यह एक अच्छी भावना है या बुरी भावना है। फिर बच्चे को बुरे भावों की तस्वीर बाहर निकालने के लिए कहें। एक छोटी टोकरी में अच्छी भावना वाली तस्वीर रखी जा सकती है। अंत में सभी अच्छी भावनाओं की तस्वीरों को छोटी टोकरी में रखा जाता है। बच्चों को समझाएँ कि हमें अच्छी बातों को सीखना चाहिए और उसे महत्व देना चाहिए। हमें अपनी भावनाओं का प्रबंधन करना सीखना चाहिए।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	खुश चेहरे, उदास चेहरे आदि का चित्रांकन। विभिन्न भावनाओं का चित्रांकन, रोलप्ले, गीत, कहानी सुनाना आदि किया जा सकता है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	किसी विशेष भावना को समझना; किसी विशेष अनुभूति को नाम देना; दूसरे क्या महसूस कर रहे हैं, यह महसूस करना; बात-चीत करना और प्रतिक्रिया करना; दूसरों के लिए परवाह आदि का प्रदर्शन।
अवलोकन बिंदु	कौन-से बच्चे सक्रिय रूप से हिस्सा ले रहे हैं, पहल कर रहे हैं। बच्चों की किसी की भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता और दूसरों की भावनाओं को सही ढंग से समझने की क्षमता। किन भावनाओं को पहचानना सरल था, कौन-सी भावनाओं को नाम देना कठिन था।

गतिविधि 2
भावनात्मक अभिव्यक्ति पर कहानी

आवश्यक सामग्री	वीडियोज, कहानी कार्ड्स, चित्र कार्ड्स, चित्र चार्ट्स
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	भावनाओं के महत्त्व को बताने के लिए एक कहानी सुनाएँ। बच्चों को उस भावना की पहचान कर उसे दोहराने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	कहानी के किसी पात्र विशेष का चयन करें तथा एक बच्चे से पूछें कि कहानी विशेष में शेर ने कैसा महसूस किया, चूहे ने कैसा महसूस किया।

4–5 वर्ष	भावनाओं के महत्त्व को बताने के लिए एक कहानी सुनाएँ। कहानी को सुनते हुए बच्चे कहानी में शामिल भावनाओं पर चित्र बनाते हैं। कहानियाँ, कठपुतली का खेल तथा नाटक भी मूल्यों के विकास में सहायता प्रदान करते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को उन भावनाओं को प्रदर्शित करने के लिए कहें, जिनका वर्णन कहानी में किया गया है; उदाहरण के लिए— कहानी में बच्चे खुश थे, क्योंकि वे बागीचे में खेल सकते थे। आप यदि खुश महसूस करते हैं तो क्या करेंगे; उदाहरण के लिए— बच्चे कह सकते हैं कि वे कूदेंगे, नाचेंगे, ताली बजाएँगे आदि।
5–6 वर्ष	कहानी शुरू करें और बच्चों को कहानी में भावनाओं पर बल देते हुए कहानी पूरी करने के लिए कहें, जिसका सुखद अंत हो। बच्चों को चित्र बनाकर, भावनाओं को व्यक्त करके और अभिनय करके कहानी को पूरा करने के लिए कहें। बच्चे को अन्य बच्चों से पहले व्यक्तिगत रूप से प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करें; उदाहरण के लिए— कहानी या कविता सुनाना। यह बच्चों में आत्मविश्वास विकसित करता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	भावनाओं पर बल देते हुए विभिन्न कहानियों के रोलप्ले संचालित करें, भावनाओं को दोहराएँ, कहानी पूरी करें; उदाहरण के लिए— खरगोश और कछुए की कहानी में दौड़ हारने के बाद खरगोश को कैसा लगा होगा? खरगोश क्या कर सकता है?
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा कौशल, सामाजिक-भावनात्मक कौशल, शारीरिक और गत्यात्मक कौशल, संज्ञानात्मक कौशल। समझने के लिए सुनना, कहानियों की सराहना करना, मौखिक निर्देशों को समझना, अपनी आवाज के साथ खोजबीन करना और खेलना, कारण और प्रभाव संबंधों को समझना, भिन्न भावनाओं को पहचानना।
अवलोकन बिंदु	कौन-से बच्चे सक्रिय रूप से हिस्सा ले रहे हैं, पहल कर रहे हैं, भावनाओं की पहचान कर रहे हैं, भावनाओं को शब्दों से व्यक्त कर रहे हैं, कल्पना करने की क्षमता दिखाते हैं और दूसरों की भावनाओं को समझते हैं, अपनी भावनाओं की व्याख्या सामाजिक रूप से स्वीकृत तरीके से करते हैं।

गतिविधि 3

कठपुतली के खेल के माध्यम से भावनात्मक अभिव्यक्ति पर कहानी

आवश्यक सामग्री	कठपुतलियाँ, स्क्रीन, मंच
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	कठपुतली के नाटक अथवा खेल का आयोजन करें और बच्चों को उसका आनंद लेने के लिए कहें। अंत में बच्चों को कहानी में प्रदर्शित की गई भावनाओं की पहचान करने के लिए कहें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	अनुकरणीय कहानी— एक बार एक चूज़ा, जो आस-पास के परिवेश को देख रहा था, अपने भाई-बहनों और माँ से अलग होकर खो गया। तब घूमते-घूमते उसका सामना एक कुत्ते से हुआ। कुत्ते ने उस पर गुस्से से नज़र डाली और भौंकने लगा। चूज़ा बहुत डर गया। कुत्ता चूज़े का पीछा करने लगा, क्योंकि वह भागने की कोशिश कर रहा था। चूज़ा बहुत डरा हुआ था। तभी गाँव के एक व्यक्ति ने यह देखा और एक छड़ी उठाकर कुत्ते पर चिल्लाया और उसे भगा दिया। चूज़ा अब सुरक्षित था और तेजी से वह अपनी माँ की ओर भागा। मुर्गी माँ ने चूज़े को सावधान किया कि वह बिना बताए माँ या समूह को न छोड़े। चूज़ा अब खुश था, क्योंकि वह अब सुरक्षित था। कहानी में व्यक्त भावनाएँ— भय, क्रोध, खुशी, राहत, दया।
4–5 वर्ष	एक कहानी सुनाएँ, बच्चों को कहानी संबंधी अभिनय के लिए, भावनाओं की पहचान और अभिव्यक्ति के लिए अँगुली वाली या डंडी वाली कठपुतली दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	इस गतिविधि में दो बच्चे जोड़े में काम कर सकते हैं। बच्चे कठपुलियों का इस्तेमाल कर कहानी के विभिन्न पात्र निभा सकते हैं।
5–6 वर्ष	बच्चों के छोटे समूह बनाएँ। बच्चों को डंडी वाली कठपुतली तैयार करने के लिए सामग्री दें और फिर कहानी पर अभिनय करने और भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	रोलप्ले, मिमिक्री (दूसरों की आवाज़ का अनुकरण करना), गतिविधि गीत, कहानी सुनाना जैसी गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सामग्री का सुरक्षित उपयोग करना, सटीकता प्रदर्शन, समन्वय में संतुलन, जीवन के सभी रूपों के साथ काम करने में आनंद का अनुभव, कारण और प्रभाव संबंध के प्रति, कहानियों को सुनना, समझना और प्रशंसा करना, बात-चीत करना और प्रतिक्रिया देना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे, जो सक्रिय रूप से हिस्सा लेते और पहल करते हैं, सामजिक-भावनात्मक एवं भाषा संबंधी अभिव्यक्ति का प्रदर्शन करते हैं, अपनी जरूरतों और एहसासों की पहचान कर सकते हैं, सामान्य भावनाओं (डर, खुशी, उदासी) की पहचान कर सकते हैं।

4.3: अन्य बच्चों तथा वयस्कों के साथ सहजतापूर्वक बात-चीत करना

गतिविधि 1

खिलौने साझा करना और उनसे खेलना

आवश्यक सामग्री	खिलौने, ब्लॉक्स, रसोई (किचन) सेट, डॉक्टर सेट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**

3–4 वर्ष	रसोई के खेल, गुड्डे-गुड़ियों के खेल, ब्लॉक्स के खेल आदि के लिए कोने निर्धारित करें। बच्चों को एक-दूसरे के साथ अपने खिलौने साझा करने के लिए कहें तथा अपने चुने हुए हिस्से में खेलने के लिए कहें, मुक्त वार्तालाप तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति करने के लिए कहें। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए खेल का अवलोकन करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बाहर रेत पर खेलना, बच्चे रेत पर खेलते हुए बात-चीत कर सकते हैं।
4–5 वर्ष	अन्य शिक्षकों अथवा देखभाल करने वालों के साथ बाहर (आउटडोर) जाने की गतिविधियाँ, प्रकृति की सैर (प्राकृतिक चीजों को देखने के लिए भ्रमण) आयोजित करें, जिसमें बच्चों द्वारा संवाद शुरू करने को सुगम बनाएँ और यह सुनिश्चित करें कि बड़े लोग भी वार्तालाप करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	रसोई के खेल, गुड्डे-गुड़ियों के खेल, ब्लॉक्स के खेल आदि के लिए कोने निर्धारित करें। बच्चों के साथ उनकी गतिविधि क्षेत्रों में बात-चीत करें। बच्चों को अपने चुने हुए कोने में एक-दूसरे के साथ अपने खिलौने साझा करने तथा खेलने के लिए कहें। उन्हें मुक्त वार्तालाप करने तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति करने के लिए कहें। स्कूल के अन्य वयस्कों को भी बच्चों के खेलने के दौरान उनसे बात-चीत करने के लिए कहें। बच्चों को दूसरों के अधिकारों का सम्मान करने के लिए प्रेरित करें। गुस्सा, असहजता जैसी भावनाओं को नियंत्रित करने के बारे में चर्चा करें।
5–6 वर्ष	रसोई के खेल, गुड्डे-गुड़ियों के खेल, ब्लॉक्स के खेल आदि के लिए कोने निर्धारित करें। बच्चों को अपने चुने हुए कोने में एक-दूसरे के साथ अपने खिलौने साझा करने तथा खेलने के लिए कहें। उन्हें मुक्त वार्तालाप करने तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति करने के लिए कहें। बच्चों को साथ मिलकर छोटी कहानियाँ अथवा विषय-वस्तु बनाने और उन विषय-वस्तु पर साथ मिलकर खेलने हेतु, अलग-अलग भूमिकाओं की पहचान करने हेतु और उन भूमिकाओं को निभाने के लिए मार्गदर्शन करें। अभिव्यक्त की गई भावनाओं तथा अच्छी या बुरी भावनाओं पर चर्चा करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	पोशाक के साथ रोलप्ले संचालित करें। विविध व्यवस्था तैयार करें, जैसे– सड़क या गली जिस पर पुलिस तथा सिग्नल मौजूद हों, किराना दुकान, डॉक्टर का क्लीनिक, सब्जी की दुकान आदि।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सामग्री का सुरक्षित उपयोग करना, सटीकता प्रदर्शित करना, हाथों से काम करने में नियंत्रण दिखाना, सहजता के साथ बात-चीत करना, सकारात्मक प्रतिक्रिया देना, मौखिक निर्देशों को समझना, अपनी आवाज़ से जुड़े प्रयोग करना और उसका उपयोग करना, मिल-जुल कर काम करना।
अवलोकन बिंदु	समूह में काम करना, बच्चों की सहभागिता एवं पहल का अवलोकन, बच्चों के भाषात्मक कौशल, भावनात्मक अभिव्यक्तियाँ, खेल में परिकल्पना, बारी-बारी से काम करने की क्षमता, खेल के दौरान अन्य बच्चों के साथ सहयोग।

गतिविधि 2
अन्ताक्षरी (शब्द खेल)

आवश्यक सामग्री	बच्चे गोल घेरा बना कर बैठें
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को कमरे में रखे किसी सामान का नाम लेने के लिए कहें। भाषा के उपयोग के मामले में आज़ादी दें; यह सुनिश्चित करें कि सभी बच्चे गतिविधियों में भाग ले रहे हैं। बच्चों को उपलब्ध वस्तुओं के बारे में बात करने के लिए कहें तथा वस्तु के बारे में एक शब्द कहने के लिए बोलें, उदाहरण के लिए— गेंद के लिए गोल, लाल, बड़ा, उछाल आदि। उन्हें गतिविधि के दौरान एक-दूसरे के साथ बात-चीत करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे कक्षा-कक्ष या घर से किसी विशेष प्रयोजन के लिए प्रयोग किए जाने वाली वस्तुएँ एकत्र कर सकते हैं; उदाहरण के लिए— बच्चे ऐसी वस्तुएँ एकत्र कर सकते हैं, जिसका उपयोग वे रंगने या खेलने के लिए करते हैं और उसका नाम बता सकते हैं, जैसे– गेंद, गुड़िया, किताब, बर्तन, फूल, कपड़े आदि।
4–5 वर्ष	बच्चों को शब्द अंताक्षरी खेलने के लिए कहें, जिसमें वे बोले गए शब्द के अंतिम अक्षर लेकर उस ध्वनि वाले नए शब्द बोल सकते हैं। इस क्रमिक गतिविधि में यह अवश्य सुनिश्चित करें कि सभी बच्चे गतिविधि में हिस्सा लें और ऐसी किसी भी भाषा का उपयोग कर सकें, जिसमें वे सहज महसूस करते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	उपरोक्त गतिविधि जोड़े में की जा सकती है। यह देखें कि कौन-सा जोड़ा सबसे अधिक शब्दों के बारे में सोच सकता है।
5–6 वर्ष	बच्चों को अधिक सरल और जटिल शब्दों के साथ शब्द अंताक्षरी खेलने के लिए कहें। उन्हें शिक्षक तथा अन्य बच्चों के साथ शब्दों के अर्थ पर चर्चा करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों के साथ छोटे दल अथवा समूह बनाकर नए शब्दों के साथ क्रियात्मक गीत, शब्द अंताक्षरी कराए जा सकते हैं। नए शब्दों के साथ कहानियाँ बनाना
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	मौखिक निर्देशों को समझता है, शब्द की अंतिम ध्वनि को पहचानना, पानी, संगीत आदि से जुड़ी बातों की खोज करना और खेलना, मिल-जुल कर काम करना, सहजता से बात-चीत करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे परिचित तथा कम परिचित वयस्कों के साथ किस प्रकार बात-चीत करते हैं, अन्य बच्चों के साथ कैसे सहजतापूर्वक खेलते हैं, खेल में कैसे शामिल होते और नियमों को कैसे शामिल करते हैं, कैसे नए शब्द बनाते हैं, किस तरह ध्यान देते हैं तथा रुचि दिखाते हैं।

गतिविधि 3
गोल घेरा बनाएँ और चर्चा करें

आवश्यक सामग्री	चित्र कार्ड्स, गुड्डे-गुड़िया, खिलौने
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	सामग्री का उपयोग करते हुए एक घेरे में बैठकर चर्चा करने के दौरान मुक्त वार्तालाप और संवाद को सुगम बनाएँ। सभी बच्चों को दिखाई गई सामग्री के बारे में अपने विचारों पर बात करने, उसे अभिव्यक्त करने के लिए कहें। उन्हें बात-चीत को अपने परिवार के अपने अनुभवों से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	त्यौहारों तथा मौसमी एवं सामाजिक उत्सवों जैसे कि बैसाखी, दीपावली आदि से जुड़े मुद्दों पर मुक्त वार्तालाप के लिए कहें।
4–5 वर्ष	खिलौनों को केंद्र में रखें। बच्चों को उनके चारों ओर बैठने तथा एक खिलौना चुनकर उसके बारे में बात करने के लिए कहें। इस बात-चीत को व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़ने के लिए कहें। सभी बच्चों को भागीदारी करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे खिलौनों का उपयोग करके स्थानीय त्यौहारों का उत्सव मना सकते हैं।
5–6 वर्ष	बच्चों को कोई विषय दें और उन्हें दी गई सामग्री में से कुछ चुनने के लिए कहें। उन्हें एक समूह में बैठने के लिए कहें तथा प्रत्येक बच्चे को उसके चुने हुए खिलौने के बारे में बात करने के लिए कहें और यह बताने के लिए कहें कि यह उनके द्वारा चुने गए विषय से किस प्रकार से जुड़ा हुआ है। किसी वस्तु को अन्य वस्तु के विकल्प के रूप में प्रयोग लिए जाने की अनुमति दें, जैसे कि किसी ब्लॉक का पुलिसकर्मी के फोन के रूप में प्रयोग करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	घेरे में समूह चर्चा के लिए विभिन्न विषयों का चयन किया जा सकता है, जैसे– कि पशु, समुदाय के सहयोगी, मिट्टी, पानी आदि।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	उपयुक्त शब्द भंडार विकसित करना, सहजता से बात-चीत करना, मौखिक निर्देशों को समझना, मिल-जुलकर काम करना, नवाचार एवं कल्पनाशीलता के साथ काम करना।
अवलोकन बिंदु	शब्द भंडार विकास, उनकी भाषा, सामाजिक संवाद, कक्षा-कक्ष गतिविधियों में सहजता, दूसरों के साथ खेलने में सहजता, मदद माँगना, साथियों अथवा समान आयु समूह के साथ होने से आनंदित होना।

4.4: अन्य बच्चों के साथ सहयोग प्रदर्शित करना

गतिविधि 1
आओ खेलें

आवश्यक सामग्री	बाहर तथा अंदर खुली जगहें
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को एक गोल घेरा बनाने के लिए कहें और उन्हें हाथों को फैलाकर केंद्र की ओर बढ़ने के लिए कहें। प्रत्येक बच्चा अपने दोनों हाथों से अलग-अलग बच्चे का एक हाथ अच्छी तरह से पकड़े। इससे बच्चे एक-दूसरे के साथ आसानी से जुड़ जाते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे साथ मिलकर उछल सकते हैं, उल्टी दिशा में चल सकते हैं, बिना एक-दूसरे से टकराए और अपना ध्यान रखते हुए फर्श पर लुढ़क सकते हैं।
4–5 वर्ष	3–4 वर्ष के बच्चों के लिए भी सुझाई गई गतिविधि करें। खेल के बारे में चर्चा करें। बच्चों को दूसरे बच्चों के हाथ पकड़ने संबंधी अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए कहें। पारस्परिक संबंधों के बारे में मुक्त रूप से बात की जा सकती है। उन्हें अपने अनुभवों के आधार पर पारस्परिक संबंधों के बारे में बात करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चे जोड़े में हाथ थाम सकते हैं और दोनों पैरों को साथ उठाते हुए उछल सकते हैं। वे एक-दूसरे का हाथ थामकर किसी गीत पर नाच सकते हैं, जैसे– आओ चलो मिलकर नाचें, नाचें, नाचें,.. आदि। • बच्चों से किसी एक भारी कुर्सी अथवा मेज को अकेले खिसकाने के लिए कहा जा सकता है। उसके बाद एक या दो बच्चों के साथ मिलकर इसे करें। उनसे यह अवलोकन करने के लिए कहा जा सकता है कि दोनों स्थिति में यह कब सरलता से हो रहा है, जब अकेले किया गया या जब मिलकर काम किया गया।
5–6 वर्ष	• 3–4 वर्ष तथा 4–5 वर्ष के बच्चों के लिए सुझाई गई गतिविधि करें। बच्चों द्वारा गतिविधि के बारे में विस्तृत चर्चा की जाती है। उन्हें सहयोग और एकता के बारे में चर्चा करने के लिए कहें जो शक्ति प्रदान करती है। • एक-दूसरे का साक्षात्कार करना, वे एक-दूसरे से उनका नाम, उनके माता-पिता का नाम, उनके भाई-बहन की आयु आदि के बारे में पूछ सकते हैं। • रिले दौड़ आयोजित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	'एकता में शक्ति है' विषय पर कहानियाँ सुनाई जा सकती हैं। आउटडोर समूह खेल, प्रकृति अवलोकन हेतु भ्रमण, छोटे समूहों में क्रियात्मक गीत, रोल प्ले किए जा सकते हैं।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संवेदी संकल्पनाओं और शारीरिक गति के बीच समन्वय प्रदर्शित करना, संतुलन व समन्वय की शक्ति प्रदर्शित करना तथा कारण और प्रभाव के संबंधों को समझने के प्रति रुचि प्रदर्शित करना।
अवलोकन बिंदु	उन बच्चों की सहभागिता जो भागीदारी के मामले में थोड़े से शर्मीले हैं, जो आसानी से एक-दूसरे का हाथ पकड़ने के लिए तैयार नहीं होते, बच्चे जो अन्य बच्चों का बहुत ध्यान रखते हैं और उनके हाथ पकड़ने के दौरान विचारशील होते हैं। शब्दों के साथ अभिव्यक्ति, एक-दूसरे की स्वीकार्यता, जोड़े में काम करने के दौरान जैसे कि किसी के द्वारा हाथ को कसकर पकड़ लेना जैसी असुविधा को सहन करना, धैर्य का प्रदर्शन करना। ऐसे बच्चों के बारे में एक टिप्पणी तैयार करें, जो दादागिरी करते हैं या धमकाते हैं अथवा वे बच्चे जो शर्मीले हैं और उन्हें उनके व्यवहार को परिवर्तित करने में सहायता दें।

गतिविधि 2
कोलाज बनाएँ

आवश्यक सामग्री	चार्ट पेपर, विभिन्न प्रकार की कोलाज़ सामग्री, गोंद, कैंची
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	प्रत्येक बच्चे को भिन्न प्रकार की बनावट वाली चिपकाने योग्य सामग्री दें जैसे कि कागज़, कपड़ा, पत्तियाँ, पंखुड़ियाँ, घास, लकड़ी का बुरादा, भूसी आदि। एक बड़ा सा चार्ट पेपर दें और एक चार्ट पेपर के चारों ओर चार बच्चों को बैठा दें तथा उन्हें चित्रांकन और चिपकाने की गतिविधि करने दें। उन्हें अपनी गतिविधि का समन्वय करने में मदद करें, जिससे कि सारी सामग्री चार्ट पेपर पर चिपका दी जाए।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	स्टैम्पिंग— बच्चे विभिन्न पत्तियों, स्पंज की आकृतियों का उपयोग कर सकते हैं तथा इन्हें रंगो में डुबोकर कागज़ पर छापें, फर्श पर साधारण पानी के छापे बनाए जा सकते हैं।
4-5 वर्ष	बच्चों को भिन्न प्रकार की बनावट वाली चिपकाने योग्य सामग्री दें, जैसे कि कागज़, कपड़ा, पत्तियाँ, पंखुड़ियाँ, घास, लकड़ी का बुरादा, भूसी आदि। एक बड़ा सा चार्ट पेपर दें और एक चार्ट पेपर के चारों ओर चार बच्चों को बैठा दें तथा उन्हें चिपकाने की गतिविधि करने दें। यहाँ बच्चों को एक विषयवस्तु दें, जैसे कि सामग्री को विभिन्न आकृतियों वृत्त, चतुर्भुज, त्रिभुज आदि में चिपकाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	विभिन्न आकृतियों का उपयोग करते हुए कागज़ पर स्टैम्पिंग गतिविधि

5–6 वर्ष	बच्चों को कोलाज गतिविधि के लिए एक विषय-वस्तु विकसित करने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— एक बगीचे का चित्र तैयार करना। उनसे कोलाज के लिए सामग्री एकत्र करने के लिए तथा कागज़ और कपड़े को विभिन्न आकारों में काटने के लिए कहें। उनसे चार के समूह में बैठकर चार्ट पेपर पर कोलाज सामग्री की सहायता से एक-दूसरे से समन्वय एवं चर्चा करते हुए एक बगीचा तैयार करने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	आंतरिक खेल गतिविधियाँ, जिसमें बच्चों को एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हुए सामग्री तथा विचार साझा करने की अवश्यकता हो।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संवेदी संकल्पनाओं और शारीरिक गति के बीच समन्वय प्रदर्शित करना, संतुलन, समन्वय तथा लचीलापन, काम करने में सटीकता एवं नियंत्रण प्रदर्शित करना तथा मिल-जुल कर काम करना, विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के बारे में छानबीन करना और उनसे खेलना।
अवलोकन बिंदु	दूसरों के साथ मिलकर योजना बनाने में बच्चों की दक्षता (उदाहरण के लिए— क्या, क्यों, कैसे, कब), बच्चों के विचारों को साझा करना, सहयोगात्मक व्यवहार, दूसरों के विचारों को शामिल करने के लिए इच्छा रखना।

गतिविधि 3
जन्मदिन का उत्सव
(त्यौहारों का उत्सव)

आवश्यक सामग्री	रंगीन कागज़, डोरियाँ, गुब्बारे, गोंद, कैंची, चार्ट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	प्रत्येक बच्चे का जन्मदिन मनाएँ। हर महीने में एक दिन जन्मदिन मनाने के लिए व्यवस्था रखें। बच्चों के साथ मिलकर कक्षा-कक्ष को सजाएँ, कला या शिल्प के लिए उपयोग होने वाले कागज़ अथवा पुराने अखबार से, क्रेयोंस का उपयोग कर तथा वॉटर कलर का उपयोग कर बधाई कार्ड तैयार करें या छोटे उपहार बनाएँ। सामग्री उपलब्ध कराएँ तथा उन्हें सजावट करने में सहायता दें। उन्हें सरल काम करने के लिए कहें, जैसे कि चीजों को पकड़ना, उन्हें दूसरों को देना, छोटे समूहों में बैठना, बधाई कार्ड तैयार करना या ऐसे ही अन्य कार्य। जन्मदिन का उत्सव कैसे मनाया जा रहा है यह देखने और अन्य बच्चों के साथ जन्मदिन का बधाई गीत गाने का अवसर दें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	विद्यालय या घर में त्यौहारों के मनाए जाने में बच्चों की सहभागिता; उदाहरण के लिए— दीपावली के लिए दीयों की रंगाई करना या ऐसे अन्य कार्य।
4–5 वर्ष	बच्चों को कक्षा-कक्ष की सजावट में, कागज़ काट कर सजानें में, गुब्बारे फुलाने में तथा फर्नीचर व्यवस्थित करने में एक-दूसरे की मदद करने के लिए कहें। उन्हें चित्रों या पेंटिंग की मदद से बधाई कार्ड (ग्रीटिंग कार्ड्स) तैयार करने के लिए कहें। बच्चों को एक-दूसरे को तथा उन बच्चों को अभिवादन करने के लिए कहें, जिनका जन्मदिन हो। बच्चों को मिलकर गीत गाने तथा अपने दोस्तों का जन्मदिन मनाने के लिए कहें, क्योंकि इससे बच्चों के बीच एकजुटता का भाव आता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	विद्यालय या घर में त्यौहारों के मनाए जाने में बच्चों की सहभागिता; मौसमी फसल की कटाई पर आनंदित होना और स्थानीय रूप से उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों, पत्तियों, फूलों आदि का उपयोग कर उसका उत्सव मनाना।
5–6 वर्ष	सहपाठियों का जन्मदिन मनाने को सुगम बनाने के लिए काम करने के अवसर दें। बच्चों को स्कूल में उपलब्ध संसाधनों की मदद से कक्षा-कक्ष को स्वयं से सजाने के लिए तथा
	बच्चों को जन्मदिन वाली टोपी, कार्ड्स, गुलदस्ता आदि बनाने के लिए कहें। उन्हें गीत गाने, नाचने, दोस्ती और साझेपन का आनंद लेने दें। जब बच्चे आपस में सहयोग करते हुए गतिविधियाँ करते हैं तो कैंची का उपयोग करने के लिए सुरक्षा संबंधी सुझाव दें और नजर रखें। साथ ही इस पर भी चर्चा करें कि हम जरूरतमंदों की सहायता कर, पौधारोपण कर, दूसरों की मदद कर अलग तरीके से जन्मदिन का उत्सव मना सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	अन्य त्यौहारों के उत्सव मनाए जा सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संवेदी संकल्पनाओं और शारीरिक गति के बीच समन्वय प्रदर्शित करना, संतुलन व समन्वय की शक्ति प्रदर्शित करना तथा कारणों एवं प्रभावों के संबंधों को समझने के प्रति इच्छा होने का प्रदर्शन करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे, जो सक्रिय रूप से भागीदारी तथा पहल करते हैं, बच्चों का सहयोगात्मक व्यवहार, बोलने संबंधी कौशल, गाने और नाचने में सहभागिता।

4.5: कक्षा-कक्ष और विद्यालय में सामाजिक मानदंडों को समझना और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देना

गतिविधि 1

आइए राष्ट्रीय त्यौहार मनाएँ

आवश्यक सामग्री	राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय ध्वज के रंग वाले गुब्बारे, कागज़ कटआउट, गोंद, कैंचियाँ, धागे
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को उपयुक्त पोशाक पहनकर राष्ट्रीय त्यौहार में भाग लेने के लिए कहें, राष्ट्रगान के सम्मान में सावधान की मुद्रा में खड़े होने के लिए कहें, जब राष्ट्रगान गाया जाए तब उसे ध्यानपूर्वक सुनने तथा ध्वज को सैल्यूट करने के लिए कहें। • उन्हें एक-दूसरे को तथा अपने से बड़ों को अपनी मातृभाषा में 'नमस्ते' करते हुए अभिवादन करने के लिए प्रेरित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	सामग्री उपलब्ध कराते हुए बच्चों को राष्ट्रीय ध्वज बनाने में सहायता प्रदान करें।
4–5 वर्ष	बच्चों को ध्वज में रंग भरने में सहायता करें। बच्चों को राष्ट्रगान गाना सिखाएँ। उन्हें इस विशेष दिवस पर एक-दूसरे का अभिवादन करने के लिए प्रेरित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को केसरिया, सफेद और हरे गुब्बारे फुलाने दें और उन्हें बाँधने, उड़ाने तथा पकड़ने में सहायता दें।
5–6 वर्ष	• बच्चों को कक्षा-कक्ष में स्वयं से फुलाए गए गुब्बारों तथा झंडे के रंगों के अनुरूप सामग्री से झंडे के रंगों में सजाने के लिए एक-दूसरे का सहयोग करने के लिए कहें। • उन्हें स्वतंत्रता सेनानियों की तरह से कपड़े पहनकर स्वयं उनके डायलॉग बोलते हुए परिचय देने के लिए कहें। उन्हें सावधान की मुद्रा में खड़े होने के लिए कहें, देशभक्ति से जुड़े गानों पर नाचने के लिए कहें। उन्हें इस दिन के महत्त्व के बारे में बताएँ। साथ ही उन्हें देश एवं देश के पहाड़ों, नदियों, लोगों के बारे में बात करने के लिए प्रेरित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	अन्य महत्वपूर्ण समारोह मनाना; भाषा दिवस, पर्यावरण दिवस, बाल दिवस आदि।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	राष्ट्र के प्रति सकारात्मक रवैया, भिन्न परंपराओं एवं त्यौहारों को मनाने के तरीकों को स्वीकार करना तथा उनका सम्मान करना, विभिन्न तरीकों से स्वयं को अभिव्यक्त करना, सौंदर्य बोध होना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे जो रचनात्मक विचारों को शब्दों में अभिव्यक्त करते हैं, बच्चे जो बोलने में अधिक रुचि नहीं रखते, लेकिन कला के माध्यम से अभिव्यक्त करने में रुचि रखते हैं। हर त्यौहार के विषय में बच्चों की समझ के बारे में टिप्पणी लिखना, अपने कार्य को पूरा करने की जिम्मेदारी लेना है, सरल नियमों का पालन करना, गतिविधियों में आनंद लेना, अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करना है, गतिविधि में भाग लेना आदि।

गतिविधि 2
गतिवधि क्षेत्र में खेल

आवश्यक सामग्री	कक्षा-कक्ष में सामग्रियों के साथ व्यवस्थित किए गए विभिन्न क्षेत्र, जैसे कि गुड्डे-गुड़ियों से खेलने का क्षेत्र, ब्लॉक खेल का क्षेत्र, चित्र पठन क्षेत्र, पुस्तक पठन क्षेत्र आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को वह क्षेत्र चुनने दें, जिसमें वे खेलना चाहते हैं। उन्हें अपने खेल क्षेत्र में बने रहने के लिए तथा आपस में धीमी आवाज़ में बात-चीत करने के लिए सरल निर्देश दें, जिससे कि दूसरों को बाधा न पहुँचे। उन्हें खेल सामग्री साझा करने के लिए प्रेरित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	समूह या जोड़े में खेल, जैसे कि पोशम पा भई पोशम पा...।
4–5 वर्ष	बच्चों को वह क्षेत्र चुनने दें, जिसमें वे खेलना चाहते हैं। बच्चों को एक विषय-वस्तु के अनुसार खेलने दें, जिससे कि सहयोगात्मक खेल संभव हो पाए। उन्हें एक खेल के दौरान दूसरों के विचारों का सम्मान करना सीखना चाहिए।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	समूह में खेल, जैसे कि घोड़ा है जमालशाही, पीछे देखे मार खायी ....।
5–6 वर्ष	बच्चों को खुद से अपने लिए गतिविधि का क्षेत्र चुनने दें, उद्देश्य उपयुक्त सामग्री लाने दें, गतिविधि के शुरू होने से पहले अपने दोस्तों के साथ चर्चा करने दें, धीमी आवाज़ में एक-दूसरे से बात करने दें, सहयोगपूर्ण तरीके से मतभेद सुलझाने दें तथा काम और खिलौने साझा करते हुए मिलकर खेलने के लिए कहें। गतिविधि के बाद ध्यानपूर्वक खिलौनों को अलग कर उन्हें उनके निर्धारित स्थान पर रखने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	इस गतिविधि को रेत में किया जा सकता है, जैसे कि बगीचा बनाना, चिड़ियाघर बनाना आदि। यह गतिविधि पानी वाले स्थान पर भी की जा सकती है, जहाँ सफाई करने, पानी देने जैसी गतिविधियाँ की जा सकती हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	कल्पनाशील तरीके से नवाचार तथा कार्य करना, समुदाय के सदस्य के रूप में मौखिक निर्देशों को समझना, गतिविधियों में संतुलन, समन्वय और लचीलापन प्रदर्शित करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की सहभागिता, उनका आनंदित होना, पढ़ने और बात-चीत संबंधी कौशल।

4.6 : दूसरों (जीव-जंतु, पेड़-पौधों) के प्रति दयालुता और मदद करने की भावना प्रदर्शित करना

गतिविधि 1

बागवानी

आवश्यक सामग्री	छोटे पौधे, बच्चों के आकार के अनुरूप छोटे उपकरण, कला संबंधी सामग्री
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को स्कूल के बगीचे में पौधे लगाने दें और पानी देकर, खाद देकर, खरपतवार निकाल कर पौधों का ख्याल रखने के लिए कहें। उन्हें फूलों को न तोड़ने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को स्कूल से एक पौधा घर ले जाने दें, घर पर उसमें पानी देने को कहें और एक सप्ताह के बाद उसे वापस विद्यालय लाने को कहें।
4–5 वर्ष	उन्हें अपने पौधे को कोई नाम देने के लिए कहें, उससे प्रतिदिन बात करने के लिए कहें और दृश्य सामग्री के माध्यम से कक्षा-कक्ष में पौधों के बारे में सीखने, पौधों के विभिन्न भागों के बारे में समझने, और पौधों को पानी तथा खाद दिए जाने के कारणों के बारे में जानने के लिए कहें। उन्हें पशुओं और मनुष्यों के जीवन का समान रूप से सम्मान करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को स्थानीय पेड़ों अथवा पक्षियों से परिचित करवाएँ। उन्हें छोटे पत्थर एवं सीप आदि इकट्ठा करने दें, और अपना मनपसंद रोमांच बक्सा तैयार करने के लिए कहें। उन्हें फूलदान को सजाने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	बच्चों को पौधों के प्रकार, जैसे कि घास, पौधे, पेड़, लताएँ, सतह से चिपककर बढ़ने वाले पौधे आदि के बारे में चर्चा करने के लिए कहें, तथा पौधों के उपयोग के बारे में चर्चा करने के लिए कहें। उन्हें पौधों के चित्र बनाने और उनमें रंग भरने के लिए कहें। बच्चों के द्वारा किए गए कार्य को कक्षा में प्रदर्शित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	रसोई उद्यान (किचन गार्डन) का भ्रमण, तितलियों वाला बाग, पालतू पशुओं पर चर्चा। किसी खेत का भ्रमण, जहाँ वे खेती में काम आने वाले पशुओं के बारे में बात कर सकें, उनकी देखभाल का अवलोकन कर सकें। चिड़ियाघर का भ्रमण, पशुओं की देखभाल के बारे में बात-चीत। स्थानीय क्षेत्र में किसी झील या पहाड़ी अथवा पार्क का भ्रमण।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	प्रकृति के प्रति सकारात्मक रवैया, दूसरों तथा प्रकृति में मौजूद चीजों की देखभाल करने वाला स्वभाव, मौखिक निर्देशों को समझना, हाथों का उपयोग करते हुए धाराप्रवाह बात-चीत करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की भागीदारी, सामाजिक संपर्क, बच्चों द्वारा निर्देशों का अनुसरण, अपने आस-पास के पौधों, पशुओं, प्राकृतिक चीजों के लिए प्यार प्रदर्शित करना।

गतिविधि 2
रेत के खेल की गतिविधि

आवश्यक सामग्री	रेत का गढ्ढा, रेत के गढ्ढे में उपयोग में आने वाले उपकरण, जैसे– फावड़ा, कुदाल, रेक, सिफ्टर, बाल्टी, खिलौना पशु, ब्लॉक आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	रेत के खेल तथा मुक्त खेल गतिविधि, जिनमें रेत से खेलने वाले उपकरण दिए जाते हैं, उनमें 4–5 वर्ष तथा 5–6 वर्ष के बच्चों को 3–4 वर्ष के बच्चों की मदद करने को कहें। बड़े बच्चों को छोटे बच्चों की मदद करने दें और उनसे बात-चीत करने दें, उन्हें उपकरणों का सही से उपयोग करने के लिए निर्देशित करें कि वे कपड़े और जूते गंदे न करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	रेत या पानी का खेल-कीप का उपयोग करते हुए एक बर्तन से दूसरे में रेत या पानी डालना आदि कराया जा सकता है।
4–5 वर्ष	रेत के खेल में, किसी विषय-वस्तु जैसे कि चिड़ियाघर आदि का उपयोग करते हुए 4–5 वर्ष के बच्चों को 5–6 वर्ष के बच्चों के द्वारा मदद करने दें। बड़े बच्चे गतिविधि के समय टब में एक छोटा सा तालाब बनाने में, चिड़ियाघर के पशुओं को रखने में, बाड़ लगाने में, रास्ते बनाने में, तथा मानव आकृतियों को घूमने आने वालों के रूप में रखने में मदद दें। बच्चों को आपस में बात-चीत करने तथा मिल-जुल कर गतिविधि करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	रेत या पानी का खेल-नली का उपयोग करते हुए एक बर्तन से दूसरे में रेत या पानी डालना आदि करवाया जा सकता है।
5–6 वर्ष	5–6 वर्ष के बच्चों की जोड़ी 7–8 वर्ष के बच्चों के साथ बनाएँ, जिससे वे रेत और ब्लॉक्स का उपयोग कर आकृतियाँ बना सकें। बच्चे अपने द्वारा बनाए जाने वाली इमारत पर चर्चा करते हैं और निर्णय लेते हैं, वे एक-दूसरे को सहायता देते हैं और इमारत का निर्माण करते हैं। बड़े बच्चे छोटे बच्चों को दिए गए काम के बारे में समझाते हैं, जिम्मेदारी आपस में बाँटते हैं और दिए गए कार्य को पूरा करने के लिए मिल-जुल कर काम करते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	कला संबंधी गतिविधि, आंतरिक विषय वस्तुएँ, जैसे कि किसी दुकान का संचालन करना, डॉक्टर की क्लीनिक आदि किए जा सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	प्रकृति के प्रति सकारात्मक रवैया, दूसरों तथा प्रकृति में मौजूद चीजों के लिए देखभाल करने वाला होना, मौखिक निर्देशों को समझ पाना, धाराप्रवाह रूप से बात-चीत कर पाना, उपयुक्त उपकरणों का उपयोग कर पाना, दूसरों के लिए देखभाल प्रदर्शित करना, आपस में मिल-जुल कर काम करना, नवाचार करना और कल्पनाशील तरीके से कार्य करना।
अवलोकन बिंदु	सामाजिक कौशल, वह तरीका जिसके साथ बड़े बच्चे छोटे बच्चों को सहयोग प्रदान करते हैं, सहयोगात्मक व्यवहार, देखभाल प्रदर्शित करना, स्मृति का होना।

गतिविधि 3
सहयोग पर कहानी

आवश्यक सामग्री	**चार दोस्तों के सहयोग की अनुकरणीय कहानी** एक हाथी, एक बंदर, एक खरगोश और एक मोर हमेशा जंगल में एक पेड़ के स्वादिष्ट फल को लेकर आपस में लड़ते थे। वे यह कहते थे कि ये फल उनके हैं और दूसरों को उन्हें नहीं खाना चाहिए। एक दिन एक आदमी जंगल के अंदर आया, सारे फल ले गया और पेड़ को भी काट डाला। अब सभी पशु बिना फल के रह गए। तब उन्होंने एक दूसरे के साथ सहयोग करने का फैसला किया। मोर ने बीज ढूँढकर लगाने, खरगोश ने पौधे को सींचने, बंदर पौधे को खाद देने और हाथी पौधे की रक्षा करने के लिए तैयार हो गया। इस सहयोग से उन्हें पेड़ उगाने में मदद मिली और फिर पेड़ में फल आए। यहाँ भी उन्हें फल तोड़ने में सहयोग करना पड़ा। हाथी की पीठ पर बंदर खड़ा हो गया, बंदर की पीठ पर खरगोश खड़ा हो गया और खरगोश की पीठ पर मोर खड़ा हो गया और इस तरह वे फल तोड़ रहे थे और सभी को फल मिल रहे थे। (भूटानी लोककथा) इस कहानी को फ्लैश कार्ड, चार्ट और मॉडल की मदद से सुनाएँ।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	कहानी सुनाएँ और बच्चों को इसका आनंद लेने के लिए कहें। उन्हें दोस्तों के बारे में, एक-दूसरे की मदद करने के बारे में बात करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को घर के कामों में, कक्षा-कक्ष की सरल गतिविधियों में सहयोग करने को कहें, उनसे स्कूल कि सफाई में सहयोग करने को कहें।
4–5 वर्ष	बच्चों को कहानी सुनाएँ, सवाल पूछें तथा जवाब देने के लिए कहें। दोस्ती, सहयोग और आपस में सहयोग के लाभों के बारे में बात करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	विद्यालय में श्रमिकों अथवा समुदाय के सहयोगियों, जैसे– माली के साथ एक दिन बिताने का अवसर दें। माली को निर्देश दें कि वह एक सत्र में आए, जिसमें वह गमले में मिट्टी भरने, पौधों के लिए क्यारी तैयार करने, पौधों को पाइप से पानी देने, खरपतवार निकालने, पौधों की कटाई-छंटाई करने आदि का प्रदर्शन करें।
5–6 वर्ष	बच्चों को कहानी सुनाएँ, कहानी सुनाने दें, रोलप्ले करने दें, जिसमें वे चार पशुओं का अभिनय कर सकें और सहयोग और दोस्ती पर बल दे सकें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	सहयोग के बारे में अन्य कहानियाँ जैसे कि 'कबूतर और शिकारी की कहानी' सुनाई जा सकती है। सहयोग पर गीत तथा अन्य खेल भी कराएँ जा सकते हैं।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	गतिविधियों में शामिल होने कि इच्छा प्रदर्शित करना और हिस्सा लेना, दूसरों की सहायता करना और सकारात्मक प्रतिक्रिया देना।
अवलोकन बिंदु	पात्रों की समझ, बच्चों द्वारा सहयोग की संकल्पना, सवालों का जवाब देना, कहानी सुनाना और उस पर अभिनय करना आदि।

4.7: विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं तथा अन्य बच्चों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझना और उन पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देना

गतिविधि 1

पालतू पशुओं के बारे में अपने दोस्तों की प्राथमिकताओं को जानें

आवश्यक सामग्री	पालतू पशुओं के चित्र, चार्ट्स, कला संबंधी कार्य करने की सामग्री
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	घर पर पालतू पशुओं के होने के संबंध में छोटे समूह में चर्चा। बच्चों को विभिन्न प्रकार के पालतू जीवों के चित्र दिखाएँ, जैसे कि कुत्ता, बिल्ली, मछली, तोता आदि और इन पालतू जीवों के बारे में बात-चीत करें। उनसे यह पूछें कि वे कौन-सा पालतू पशु रखना पसंद करेंगे। बच्चों द्वारा चुने गए विभिन्न पालतू पशुओं को दर्ज कर लें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	पशुओं से जुड़ा कोई भी गीत गाएँ।
4–5 वर्ष	घर पर पालतू पशुओं के होने के संबंध में छोटे समूह में चर्चा। बच्चों को विभिन्न प्रकार के पालतू जीवों के चित्र दिखाएँ— जैसे कि कुत्ता, बिल्ली, मछली, तोता आदि और उनसे पालतू पशु के संबंध में उनकी पसंद पूछें, उन्हें उस पालतू पशु को चुनने के कारण बताने के लिए प्रेरित करें। उन सबके द्वारा चुने गए विभिन्न विकल्पों को बताएँ। बच्चों को अपने पसंद के पालतू पशु का चित्र बनाने और उसमें रंग भरने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक पालतू पशु को एक दिन के लिए स्कूल लाना, जिन बच्चों के पास कोई पालतू पशु-पक्षी नहीं है, वे बारी-बारी से उससे खेल सकते हैं और उसका ध्यान रख सकते हैं।
5–6 वर्ष	बच्चों को तस्वीरों में से या खिलौने वाले खंड के मॉडल्स में से पालतू पशु चुनने दें और फिर उस के बारे में बात करने के लिए कहें। उन्हें इस बात की व्याख्या करने के लिए कहें कि कौन उनका पसंदीदा है और क्यों। उनकी बात-चीत में इन पालतू पशुओं के अन्य गुणों के बारे में बातें जोड़ें। उन्हें अपनी पसंद के बारे में बात करने के लिए कहें। उन्हें अपनी पसंद के पालतू पशु का चित्र बनाने और उसमें रंग भरने के लिए कहें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	रंगों के बारे में विकल्पों के चयन पर, जंगली पशुओं के विषय में, वाहनों आदि के बारे में चर्चा की जा सकती है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	इस क्षेत्र में मिल-जुल कर काम करना, विभिन्न प्रकार के विचारों और भावनाओं को प्रदर्शित करने के लिए नवाचार तथा कल्पनाशीलता के साथ काम करना, धारा प्रवाह बात-चीत करना, पशुओं अथवा पालतू जीवों के बारे में परवाह करना।
अवलोकन बिंदु	पालतू जीवों के लिए बच्चों का प्यार, शब्द भंडार, पशु के छोटे बच्चों को जिस नाम से बुलाया जाता है, उसे जानना, नए विचार व्यक्त करना, सामाजिक अंत:क्रिया, पालतू जानवरों के लिए प्यार, देखभाल करने वाले बच्चे, जानवरों की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी होना।

गतिविधि 2
सब्जियों पर चर्चा

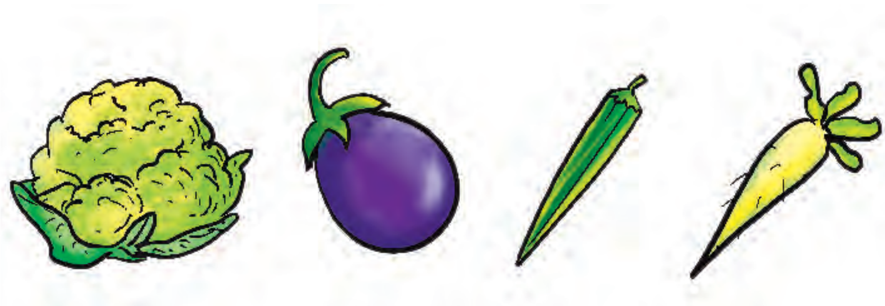

आवश्यक सामग्री	चार्ट मॉडल्स, सब्ज़ियों के चित्र, वास्तविक सब्ज़ियाँ
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	सब्ज़ियों के चित्र दिखाएँ तथा सब्ज़ियों के विषय में बात-चीत करें। उन्हें इस बारे में बात-चीत करने दें कि उनके घर में कौन-सी सब्ज़ी बनती है, कौन-सी सब्ज़ी वे पसंद करते हैं। भिन्न स्वादों को दर्ज करें और सभी बच्चों को चुनी गई वरीयताओं के बारे में बताएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे अपने घर से कोई भी एक स्थानीय सब्ज़ी (सिर्फ एक) लाएँ और उसे कक्षा में दिखाएँ। सब्ज़ी पर उसके नाम कि पर्ची लगाएँ, जिससे कि बच्चे उससे संबंध जोड़ सकें और यह जान सकें कि उसका नाम कैसे लिखा जाता है।
4–5 वर्ष	बच्चे को अपनी पसंदीदा सब्ज़ी का चयन करने और उसके बारे में बात करने दें, उदाहरण के लिए— हम कैसे खाते है? पकाया हुआ या कच्चा? हम इससे क्या बना सकते हैं? विभिन्न स्वादों को दर्ज करें और सभी बच्चों को चुनी गई वरीयताओं के बारे में बताएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को एक सब्ज़ी दिखाएँ। हर बच्चे को उसके बारे में एक वाक्य बोलने दें, उदाहरण के लिए— गाजर दिखाएँ, एक बच्चा यह कहता है कि यह गाजर है, दूसरा बच्चा कहता है कि मुझे गाजर अच्छा लगता है, अगला कह सकता है कि मेरी माँ इसका प्रयोग हलवा बनाने के लिए करती है। इसी तरह से बात-चीत को आगे बढ़ाएँ। अंत में आप एक बच्चे से सामने आकर उस गाजर को हाथ में लेकर उसके बारे में कुछ वाक्य कहने के लिए बोल सकते हैं।

5–6 वर्ष	बच्चों को सब्ज़ियों को पकाने के विभिन्न तरीकों के बारे में चर्चा करने दें, जैसे कि कढ़ी, खिचड़ी, दाल, चटनी, सलाद आदि। सब्जियों का उपयोग कर एक व्यंजन को बनाना। बच्चों से अपनी पसंद और वरीयता को इंगित करने को कहें तथा उसके स्वाद, बनावट आदि पर चर्चा करने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	फलों, मेवों, फूलों, फल की तरह खाए जाने वाले बीज, फूल जिन्हें हम खाते हैं आदि के बारे में बात-चीत की जा सकती है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	पोषक भोजन के बारे में समझ के लिए, विभिन्न गंधों और स्वादों के लिए पसंद का प्रदर्शन करना, सहजता से बात करना, सहयोग करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे जो सक्रिय रूप से सहभागिता कर रहे हैं और पहल कर रहे हैं, उनकी भाषा संबंधी अभिव्यक्ति, शब्द भंडार, प्रश्नों की समझ और उनके उत्तर देना, चर्चा में बारी-बारी से भाग लेना, बच्चे जो इन्द्रियों, बनावट या स्वाद के माध्यम से किसी सब्ज़ी या फल विशेष को पहचानने में बेहतर हैं। जो बच्चे अपरिचित फलों, सब्ज़ियों को परखने के लिए तैयार रहें और उनके बारे में जानकारी एकत्र करें।

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 5: बच्चों में उत्पादक कार्य तथा सेवाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना

5.1: दूसरों की सहायता करने के लिए आयु अनुरूप शारीरिक कार्य के प्रति इच्छा प्रदर्शित करना और उसमें सहभागिता करना

गतिविधि 1
गतिविधि क्षेत्र में मुक्त खेल

आवश्यक सामग्री	आंतरिक खेल अथवा विभिन्न प्रकार की सामग्रियों, जैसे कि ब्लॉक्स, गुड्डे-गुड़िया, देशी खिलौने आदि के साथ गतिविधि क्षेत्र
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• गतिविधि क्षेत्रों, जैसे कि ब्लॉक्स का क्षेत्र, गुड्डे-गुड़ियों वाला क्षेत्र, कला-शिल्प का क्षेत्र, पुस्तक पढ़ने का क्षेत्र आदि में आंतरिक मुक्त अथवा नियोजित खेल आयोजित करें। बच्चों को अपने पसंद के गतिविधि क्षेत्र और गतिविधि सामग्रियों का चयन करने दें। जब वे खेल रहे हों तो उनका अवलोकन करें। • समूह में गतिविधियों के लिए अवसर बनाएँ और ऐसे अवसर दें, जहाँ वे एक-दूसरे की सहायता कर सकें, उदाहरणार्थ— खाली कप या ब्लॉक्स का प्रयोग मीनार या टावर बनाने के लिए किया जा रहा हो, कोई पहेली सुलझाई जा रही हो आदि। • प्रयोग के बाद सामग्री को वापस उसके सही स्थान पर रखने में बच्चों की सहायता करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे घर के सरल कामों में सहयोग करें और उन कामों के बारे में विद्यालय में साझा करें।
4–5 वर्ष	कक्षा में एक ब्लॉक खेल की गतिविधि का आयोजन करें। सभी बच्चों को ब्लॉक्स दें। उनसे छोटे समूहों में एक टावर, इमारत, सड़क, रास्ता आदि बनाने के लिए और उसे प्रदर्शित करने के लिए कहें। उन्हें इसके बारे में बात करने के अवसर भी दें। गतिविधि के पूरा होने के बाद किसी दूसरी गतिविधि में शामिल होने से पहले बच्चों को इन ब्लॉक्स को वापस उनके सही स्थान पर रखने के लिए निर्देशित करें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों से पूछें कि वे घर पर खेल के पूरा हो जाने के बाद खेलने के स्थान को कैसे साफ करते हैं।
5–6 वर्ष	• बच्चों को अपनी पसंद की एक आंतरिक गतिविधि में शामिल होने दें, जिसमें वे भिन्न खेलों या गतिविधि क्षेत्रों, जैसे– कोलाज बनाना, ब्लॉक्स से निर्माण, पानी या हवा या रेत से विज्ञान के प्रयोग, रोलप्ले आदि कर सकें। उन्हें गतिविधि क्षेत्र में किसी तरह की गड़बड़ के बिना किसी भी सामग्री के उपयोग करने, आपस में चर्चा और सहयोग करके अपने खेल के स्थान को व्यवस्थित करने की सामग्री का सावधानीपूर्वक उपयोग करने, बारी-बारी से खेलने और खेल के बाद सामग्री को अलग-अलग कर उसकी सही जगह पर वापस रखना सुनिश्चित करें। • जब भी आवश्यकता हो, घर और विद्यालय में समान तरह के सहयोगात्मक प्रयासों को प्रोत्साहित करें, उदाहरण के लिए— खाने के समय या खेल के समय के दौरान।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• जब भी अवसर मिले, जैसे– खाने के समय, बाहर खेलने के समय में, क्षेत्र भ्रमण के दौरान, आदि उनका उपयोग करें। बच्चों को कमरे को व्यवस्थित करने, सामग्री वितरित करने, खेल अथवा गतिविधि सामग्री, रजिस्टर आदि लाने जैसे काम दें। • बच्चों को एक-दूसरे की मदद करने दें, उदाहरण के लिए— पानी की बोतल अथवा टिफिन खोलने में, जरूरतमंदों, बुजुर्गों, दिव्यांग आदि की देखभाल करने में, पौधों को पानी देने अथवा पशुओं व पक्षियों को खाना खिलाने तथा पक्षियों या गिलहरियों हेतु पानी रखने या मेहमानों को चाय-पानी देने अथवा सामान्य जरूरतों में दादा-दादी या नाना-नानी की देखभाल अथवा घर के कामों में सहयोग द्वारा 'सेवा-भाव' सीखना।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	• सूक्ष्म गत्यात्मक विकास, मूल्य, सकारात्मक अधिगम आदतें, सृजनात्मक तथा सौन्दर्यबोध संबंधी विकास, सामाजिक तथा पारिवारिक संलग्नता आदि।
अवलोकन बिंदु	• खेल तथा गतिविधि अथवा खाना खाने के दौरान, सहयोग करना, साझा करना, देखभाल करना, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, वस्तुओं को उनकी सही जगह पर वापस रखना, जिज्ञासा प्रकट करना, पेड़-पौधों व पशुओं को नुकसान न पहुँचाना आदि मूल्यों पर ध्यान दें।

गतिविधि 2
आओ पेड़-पौधे लगाएँ

आवश्यक सामग्री	गमले, इस्तेमाल किए हुए टिन के डिब्बे अथवा बोतलें, खुरपा अथवा छोटी कुदाल, पानी डालने के लिए मग, रेत (छोटे आकार के उपकरण आदि)
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	गमले में लगे पौधों को कक्षा-कक्ष में रखें। बच्चों को दिखाएँ कि पौधों को पानी किस तरह से दिया जाता है और उन्हें प्रतिदिन सुबह के समय बारी-बारी से पौधों को पानी देने का काम सौंपें। सभी बच्चों को पौधे की वृद्धि पर नजर बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों को बताएँ कि वे पौधों से फूल, पत्तियाँ या टहनियाँ न तोड़ें तथा पौधों को किसी तरह का नुकसान न पहुँचाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे चित्रांकन द्वारा या जोड़े में एक-दूसरे से बात-चीत कर पौधों को पानी देने के अनुभवों को साझा कर सकते हैं।
4–5 वर्ष	हर एक बच्चे को बगीचे में कोई स्थान या कक्षा-कक्ष में एक गमला आबंटित करें। उन्हें भिन्न तरह के पौधे गमले में लगाने में सहायता प्रदान करें। उन्हें यह बताएँ कि दिए गए पौधे की देखभाल करने की, नियमित रूप से उसे पानी देने की पूरी जिम्मेदारी उनकी है। बागबानी में, फूलों वाले पौधों आदि में बच्चों की रुचि जगाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे पौधों की देखभाल के दौरान अपने अवलोकनों को चित्रों के माध्यम से दर्ज करें। बच्चे पौधों की वृद्धि के बारे में एक-दूसरे के बनाए चित्रों को देखें और पौधों की देखभाल के दौरान के अपने अनुभवों को साझा करें।
5–6 वर्ष	बच्चों को कक्षा-कक्ष में एक छोटा (सांकेतिक) बगीचा तैयार करने दें। खाली बोतल, टिन, जार या अंडों के खोल से प्लांट-होल्डर तैयार करने में उनका मार्गदर्शन करें। इसे मिट्टी से भरें और बच्चों को उसमें कोई फूल वाला पौधा लगाने में मदद दें। उन्हें अपने बगीचे को छोटे पत्थरों, पशु-पक्षियों के प्रारूप से सजाने के लिए प्रोत्साहित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को एक पेड़ के चारों ओर गोल घेरा बनाने में मदद करें। घेरे की लकीर को खुरपे या कुदाल से खोदें। घेरे की उस लकीर पर अब विभिन्न प्रकार के फूलों वाले पौधे लगाएँ। उन्हें चिड़ियों के लिए एक घर बनाने और चिड़ियों के लिए पानी रखने के लिए कहें।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल, सृजनात्मकता, पौधों की देखभाल और पोषण, वैज्ञानिक रवैया, आत्मविश्वास, जिम्मेदारी, साझा करना, नियमितता, दृढ़ता, सौंदर्यबोध।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की रुचि, रचनात्मकता, शौक आदि, अंकुरण के बारे में, पौधे की जरूरतों, देखभाल, पौधे के विकास के चरण आदि का ज्ञान, शिक्षक की सहायता करना और कक्षा को व्यवस्थित करना, पौधों और जानवरों के साथ जुड़कर खुशी अभिव्यक्त करना, प्रकृति के साथ जुड़ाव में कोई परेशानी नहीं दिखाना आदि को रिकॉर्ड करें।

गतिविधि 3
खाना बनाना

आवश्यक सामग्री	कटोरियाँ, पानी, मलमल का सूती कपड़ा, चना, मूँग, खीरा, नमक, नींबू, चीनी
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	कक्षा में बच्चों के साथ नींबू पानी तैयार करें। उनके सामने पानी में नींबू निचोड़ें और उसमें चीनी व स्वादानुसार नमक मिला दें। उनसे भी उसे मिलाने के लिए कहें। इसे उन सभी को परोसें और उन्हें इसे तैयार करने की प्रक्रिया, स्वाद, घोली गई सामग्री की मात्रा आदि के बारे में बात करने के लिए कहें। बच्चों से नींबू पानी पीने के बाद अपना गिलास धोने और उन्हें बताए गए स्थान पर रखने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे आलू छीलने, मटर या अन्य किसी मौसमी सब्ज़ी छीलने जैसी सरल प्रक्रियाओं में शामिल हो सकते हैं।
4–5 वर्ष	• कक्षा में कुछ फल लाएँ और बच्चों को फलों को धोने और कपड़े से पोंछने को कहें। उनके सामने फलों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें और मिलाकर फ्रूट सलाद या चाट तैयार करने के लिए दें। फ्रूट सलाद बच्चों को परोसें और उनके साथ खाएँ। फल के स्वाद, महक, रंग आदि के बारे में बात भी करें। उन्हें याद दिलाने में मदद करने के लिए प्रश्न पूछें, उदाहरण के लिए— कौन-कौन से फलों का इस्तेमाल किया गया था? मैंने पहले क्या किया और क्यों? आदि। गतिविधि के बाद, बच्चों को जगह को साफ करने, कूड़ेदान में कचरा डालने और कक्षा-कक्ष को व्यवस्थित करने में मदद करने के लिए कहें। • बच्चों को कक्षा में आपकी सहायता से नींबू पानी तैयार करने दें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे अंकुरित बीज मिलाकर उसमें नमक डालते हैं, नींबू निचोड़ कर 'स्प्राउट या अंकुरित अनाज की चाट' तैयार कर सकते हैं। वे एक या दो दिन तक मूँग या चना भिगो सकते हैं और अंकुरण करने की प्रक्रिया सीख सकते हैं।
5–6 वर्ष	• बच्चों को कहें एक बर्तन में थोड़ी मात्रा में काला चना या मूँग के बीज रखें और उसमें थोड़ा पानी डालकर उसे एक दिन के लिए अलग रखने के लिए कहें। अगले दिन वे उससे पानी निकालकर बीजों को वैसे ही बर्तन में रहने दें।
5–6 वर्ष	• बच्चों के सामने ही उन बीजों को पतले मलमल के सूती कपड़े में लपेटकर एक या दो दिन के लिए अलग रख दें। बच्चों से कहें कि जब भी यह सूखने लगे तब वे इस पर थोड़ा सा पानी छिड़क दें। वे देखेंगे कि बीजों में सफेद सा कुछ निकल रहा है। उन्हें बताएँ कि इसे अंकुर कहते हैं। अंकुरित बीजों को धो लें और उन्हें एक कटोरे में रखें। उसमें बारीक कटे खीरे के टुकड़े, नींबू का रस और नमक डालें और उन सबको अच्छे से मिलाएँ। बच्चों से अंकुरित बीजों से सलाद या चाट बनाने और नींबू निचोड़ने जैसे कामों में मदद करने के लिए कहें। उन्हें यह खाने के लिए दें और उनके स्वाद व फायदे पर चर्चा करें। उनसे अपने प्लेट और चम्मच को धोने और जिस जगह गतिविधि की गई है, उसे साफ करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को अपने माता-पिता से ऐसे सरल व्यंजन विधि सीखने के लिए कहें, जिसमें आग जलाने की आवश्यकता न हो और फिर इसे कक्षा में साझा करने के लिए कहें। उनकी माताओं के साथ विद्यालय में बिना आग जलाए खाना बनाने के सत्र को आयोजित करें। स्वास्थ्य भोजन मेला आयोजित करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल, सृजनात्मकता, भाषा, संख्या संबंधी ज्ञान, क्रमिकता, स्वास्थ्य व साफ-सफाई आदि। सब्जियों अथवा फलों तथा अंकुरित बीजों को उनके स्वाद, गंध, बनावट से पहचानने की क्षमता व हर तरह के स्वाद के प्रति रुचि का विकास।
अवलोकन बिंदु	बच्चों को भोजन बनाने में, साफ-सफाई में, स्वास्थ्यवर्धक भोजन करने में, भोजन बर्बाद नहीं करने में, घर पर तथा विद्यालय में उपयुक्त काम करने में रुचि लेने में, बच्चों के अवलोकन कौशल आदि का अवलोकन करें।

लक्ष्य

6

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 6: बच्चों में अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना

6.1: सभी जीवों से जुड़ना, देखभाल करना और आनंदित होना

गतिविधि 1
प्रकृति की सैर

आवश्यक सामग्री	पेयजल, भोजन, प्राथमिक चिकित्सा किट, परिवहन सुविधा
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को कक्षा एवं विद्यालय से बाहर बगीचे में ले जाएँ और आस-पास के पक्षियों, पौधों, पेड़ों और जानवरों को देखने और उनके बारे में बात करने के अवसर प्रदान करें। उनके द्वारा देखी जाने वाली वस्तुओं की आकृति, आकार और रंगों पर उनका ध्यान आकर्षित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों के साथ पेड़ के नीचे बैठकर भोजन करें। उन्हें पक्षियों और जानवरों के खाने की आदतों के बारे में चर्चा कर संवेदनशील बनाएँ। उन्हें पक्षी को खाना खिलाने वाला (बर्ड फीडर) बनाने के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हें बनाकर अपने स्कूल या घरों में लगाएँ।
	प्रकृति की सैर के दौरान बच्चों को पेड़ों के आस-पास खेलने दें। उन्हें अपने सामान और अपने दोस्तों और शिक्षकों के सामानों की देखभाल करने के लिए कहकर उनमें जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में भी मदद करें; पौधों की क्यारियों में पानी डालकर बच्चों को उनकी पानी की बोतलें खाली करने के लिए कहें।
	खाने और खेलने के बाद सभी कचरे को कूड़ेदान में डालकर जगह को साफ करें।

4–5 वर्ष	प्रकृति की सैर, खेत या चिड़ियाघर ले जाने की योजना बनाएँ। बच्चों को ले जाने से पहले जगह के बारे में कुछ मूलभूत जानकारी दें। इस दौरान, उन्हें सामान्य रूप से अवलोकन करने, आनंद लेने और बात करने दें एवं प्रश्न पूछें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को समझाएँ कि वे फूल और पत्ते न तोड़ें, जानवरों को तंग न करें या किसी भी तरह से उनके रहने की जगह में बाधा न डालें।
	बच्चों को पालतू जानवरों की देखभाल करने, उनके साथ खेलने-खिलाने और सैर पर ले जाने के अपने अनुभव साझा करने दें।
	पेड़ों के महत्व पर ध्यान आकर्षित करें जैसे कि वे हमारी मदद कैसे करते हैं?
5–6 वर्ष	प्रकृति की सैर का आयोजन करें। सैर पर जाने के दौरान, बच्चों को अवलोकन करने तथा बात करने, प्रशंसा करने, प्रश्न पूछने के लिए कहें और उनकी जिज्ञासा को शांत करें। पत्तियों, फूलों, पेड़ों, पत्थरों, चट्टानों आदि जैसी भिन्न वस्तुओं की विभिन्न आकृति, आकार और रंगों पर ध्यान आकर्षित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों से पत्थर, गिरी हुई पत्तियाँ, टहनियाँ, फूल जैसी वस्तुएँ एकत्र कर कक्षा में लाने को कहें।
	वस्तुओं के बारे में बात करने, कोलाज बनाने और कक्षा में आनंद व्यक्त करने का अवसर प्रदान करें।
	बच्चों को प्राकृतिक वस्तुएँ जो तैरती और डूबती हों आदि के प्रयोगों में शामिल करें।
	घर में पौधों की देखभाल, उन्हें नियमित रूप से पानी देना और जैविक खाद का उपयोग कर पौधों को पोषक तत्व देने की बात करें।
	बालवाटिका परिसर में ही लघु उद्यान की व्यवस्था करें और बच्चों से बात करें, प्रश्नों को पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।
	बच्चों को फार्महाउस या चिड़ियाघर अथवा बगीचे का चित्र या चार्ट अथवा वीडियो दिखाएँ और कक्षा में खुलकर बात-चीत करने दें। बच्चों का ध्यान अलग-अलग जानवरों की ओर आकर्षित करें कि वे क्या कर रहे हैं, उनकी आवाज़, आकार, रंग आदि कैसे हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सामाजिक परिवेश में निर्देशों का पालन, आनंद प्रकृति से जुड़ाव के साथ प्राकृतिक संसाधनों के प्रति जिम्मेदार और सचेत रहना, सावधानीपूर्वक देखभाल, संवेदनशीलता, सहानुभूति, प्रकृति से प्रेम, जिज्ञासा आदि विज्ञानमय कोष के कुछ लक्षण हैं।
अवलोकन बिंदु	• उन्होंने जो देखा उसके बारे में बात कर रहे हैं, • प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं, • सवाल पूछ रहे हैं, • शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं, • आपस में बात-चीत कर रहे हैं • शिक्षक के निर्देशों का पालन कर रहे हैं,

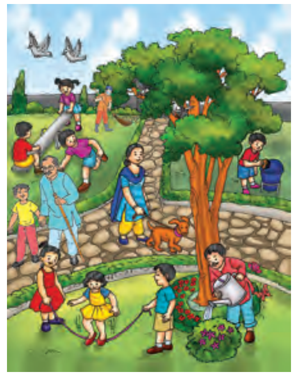

गतिविधि 2
बाहर एक दिन

आवश्यक सामग्री	घूमने जाने के लिए आवश्यक सामान जैसे कि पानी की बोतल, ताजा बना स्नैक्स, प्राथमिक चिकित्सा किट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को पास के गाँव में ले जाएँ और गाँव में कुछ घंटे बिताएँ। किसानों की दैनिक गतिविधियों को देखने और अवलोकन करने का अवसर प्रदान करें। जानवरों, प्रकृति और लोगों का भी अवलोकन करें। यदि बच्चे ग्रामीण क्षेत्र से हैं, तो उन्हें शहर के जीवन से अवगत कराने के लिए नजदीकी कस्बे अथवा शहर में ले जाया जा सकता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	स्थानीय नर्सरियों, बड़े-बड़े पेड़ों वाले पुराने बागानों, पास के वन क्षेत्र में जाएँ, वहाँ पर मिलने वाले कीड़ों से परिचित कराएँ आदि।
4–5 वर्ष	बच्चों को एक गाँव में ले जाएँ और उन्हें समुदाय के साथ बात-चीत करने दें, अपने अनुभव साझा करें और अपने अनुभवों से सीखें। यदि बच्चे ग्रामीण क्षेत्र से हैं, तो उन्हें पास के शहर में ले जाया जा सकता है और अस्पताल अथवा उद्योग आदि जैसे किसी संस्थान के अधिकारियों से बात-चीत की जा सकती है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	स्थानीय कारीगरों, जैसे– लकड़ी का काम करने वाले, मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कुम्हार आदि से मिलें।
5–6 वर्ष	बच्चों को एक गाँव में ले जाएँ और उन्हें एक किसान की दैनिक गतिविधियों में भाग लेने दें, उनके सामाजिक जीवन का पता लगाने और अनुभव करने दें। यदि बच्चे ग्रामीण क्षेत्र से हैं, तो उन्हें शहर के किसी नजदीकी लघु उद्योग में ले जाया जा सकता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	स्थानीय कारीगरों के पास जाएँ और कुम्हार के साथ मिट्टी की खोज जैसी गतिविधियों में भाग लेते हुए एक दिन बिताएँ।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	अपरिचित लोगों की बातों को सुनना और समझना, पूर्व में अनदेखी सामाजिक व्यवस्था में निर्देशों का पालन करना, यात्राओं के दौरान अपरिचित लोगों के साथ संवाद करना।
अवलोकन बिंदु	उन बच्चों पर ध्यान दें, जो अपरिचित लोगों से बात-चीत करते हैं, जो सवाल पूछने में पहल करते हैं और वे बच्चे जो मूक दर्शक बने रहते हैं। बच्चों की ध्यान की अवधि, प्राकृतिक वस्तुओं के लिए उनकी चाह जैसे कि खेत, उद्यान, पशु फार्म और प्रकृति से जुड़े काम करना जैसे मिट्टी का काम आदि।

गतिविधि 3
प्रकृति दिवस

आवश्यक सामग्री	प्रकृति के अनुकूल सजावट के लिए सामग्री, स्थानीय फल
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	विद्यालय में प्रकृति दिवस का आयोजन करें। उस दिन बच्चों को अपने आस-पास अथवा स्थानीय क्षेत्रों में उपलब्ध फल लाने और एक साथ खाने को कहें। बच्चों को गीत गाने को कहें; चित्र बनाने और परिवार के साथ अपना काम साझा करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	विभिन्न कक्षाओं के बच्चों को उन फलों को प्रदर्शित करने दें, जो वे स्कूल में लाए हैं और सभी बच्चों को इस छोटी प्रदर्शनी को देखने के लिए कहें। उन फलों के बारे में जानने के लिए कहें, जिन्हें उन्होंने पहले नहीं देखा होगा या नहीं जानते होंगे।
4–5 वर्ष	विद्यालय द्वारा आयोजित प्रकृति दिवस में बच्चों को भाग लेने दें। वे वृक्षारोपण में भाग लें और समुदाय के सदस्यों को स्कूल में आमंत्रित कर पौधों को उपहार में दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे, घर या विद्यालय में एक छोटा-सा पौधा लगा सकते हैं।
5–6 वर्ष	बच्चों को विद्यालय द्वारा आयोजित प्रकृति दिवस में भाग लेने दें। वे एक पौधा घर ले जाएँ व उसकी देखभाल करें। उन्हें समय के साथ पौधे में होने वाले बदलावों को देखने दें और कक्षा में अपने अनुभव साझा करने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चे सुखाई गई वनस्पतियों का संग्रह (हर्बेरियम) तैयार कर सकते हैं • बच्चे पौधे के विकास से संबंधित चित्र बना सकते हैं— पहला सप्ताह जब उन्होंने इसे लगाया और बाद में जब यह बड़ा हुआ और एक तस्वीर भी ले सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सभी को पौधे दिखाना, उनकी देखभाल करना, पौधे की जिम्मेदारी लेना, विभिन्न फलों और पौधों के नाम सीखना, एक-दूसरे के काम की सराहना करना, एक पौधे को बढ़ते हुए देखने का अवलोकन कौशल।
अवलोकन बिंदु	नियमित रूप से काम करने वाले बच्चों पर ध्यान दें, उनकी निरंतरता, वस्तुओं को संभालने, फलों एवं पौधों के नए नाम सीखने की उत्सुकता, जिज्ञासा देखें और उन बच्चों को देखें, जो आसानी से ऐसी गतिविधियों में तल्लीन नहीं होते हैं।

गतिविधि 4

मछली अथवा मुर्गी अथवा केंचुए की देखभाल करना

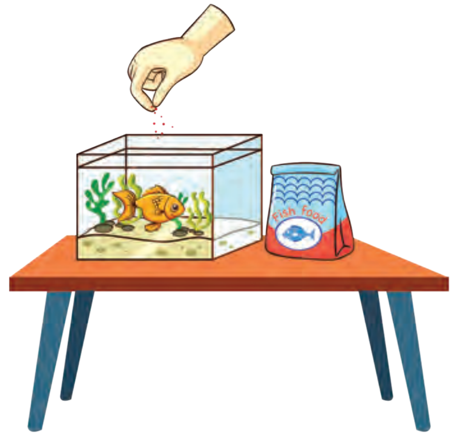

आवश्यक सामग्री	फिश पॉट अथवा छोटे बगीचे, पानी के तालाब, आस-पास के कीड़े
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	कक्षा में फिशपॉट रखें और बच्चों को मछलियों का अवलोकन करने हेतु समय दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे स्कूल के आस-पास स्थानीय रूप से पाए जाने वाले कीड़ों एवं पक्षियों को देख सकते हैं।
4–5 वर्ष	स्कूल में पालतू जानवरों के रूप में चूज़ों या खरगोशों को रखें। इन चूज़ों या खरगोशों के साथ समय बिताने, उन्हें खिलाने, उनके साथ खेलने का समय दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में बारी-बारी से चूज़ों या खरगोशों के रहने की जगह की सफाई में शामिल करें।
5–6 वर्ष	बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में बारी-बारी से स्कूल में मछलियों अथवा चूज़ों अथवा खरगोशों की देखभाल करने, पानी बदलने में मदद करने, जगह को साफ रखने, खिलाने आदि काम करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	विद्यालय में बच्चों को रोज़ाना अवलोकन कर मछली अथवा चूज़ों अथवा खरगोश द्वारा की जाने वाली गतिविधियों की तस्वीरें बनाने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	अपनी बारी लेना, जिम्मेदार होना, देखभाल करना, जानवरों एवं पक्षियों के व्यवहार के बारे में जानकारी सीखना, अवलोकन का कौशल, ध्यान देना।
अवलोकन बिंदु	गतिविधियों को करने में बच्चों की नियमितता, उनका अवलोकन कौशल, देखभाल करने वाला रवैया। उन बच्चों पर ध्यान दें, जो जानवरों को संभालना पसंद करते हैं और जो आसानी से संभाल नहीं पाते हैं।

गतिविधि 5
उन सहपाठियों तथा शिक्षकों से मिलना जिनके पास पालतू पशु हैं

आवश्यक सामग्री	छोटी यात्रा करने हेतु आवश्यक सामान जैसे पानी की बोतल, नमकीन आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को एक सहपाठी के पास जाने दें, जिसके घर में पालतू पशु हैं, वे पालतू पशु को अवलोकन करें और उसके साथ समय बिताएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	उपरोक्त गतिविधि छोटे समूहों या जोड़ियों में भी की जा सकती है।
4–5 वर्ष	• जिन बच्चों के पास पालतू पशु हैं, उन्हें ऐसे घर में जाने दें, जहाँ कोई दूसरा पालतू पशु है। • जिन लोगों के घर में कोई पालतू पशु नहीं है, वे ऐसे परिवार में जाते हैं, जहाँ पालतू पशु है और वे पालतू जानवरों का अवलोकन करते हैं और उनके साथ समय बिताते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को उनके द्वारा देखे गए पालतू पशु का चित्र बनाने दें।
5–6 वर्ष	• जिन बच्चों के पास पालतू पशु है, उन्हें ऐसे परिवार में जाने दें, जिसके पास पालतू पशु नहीं है और अनुभव करें कि पालतू पशु के बिना कैसा लगता है। • जिन बच्चों के पास पालतू पशु नहीं है, उन्हें ऐसे परिवार में जाने दें, जिनके पास पालतू पशु हैं।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	प्रत्येक बच्चा पालतू पशु के साथ या उसके बिना अपने अनुभव की तस्वीरें बनाता है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	नई व्यवस्था अथवा नए परिवार में बात-चीत करना सीखना, अवलोकन कौशल, याद रखना एवं स्मृति से चित्र बनाना, घर पर मित्रों का आदर सत्कार करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चे, जो नई व्यवस्था में बात-चीत करने की पहल कर रहे हैं, जो बच्चे आदर सत्कार की भावना दर्शा रहे हैं; चित्रों के माध्यम से बच्चों के भावों पर ध्यान दें।

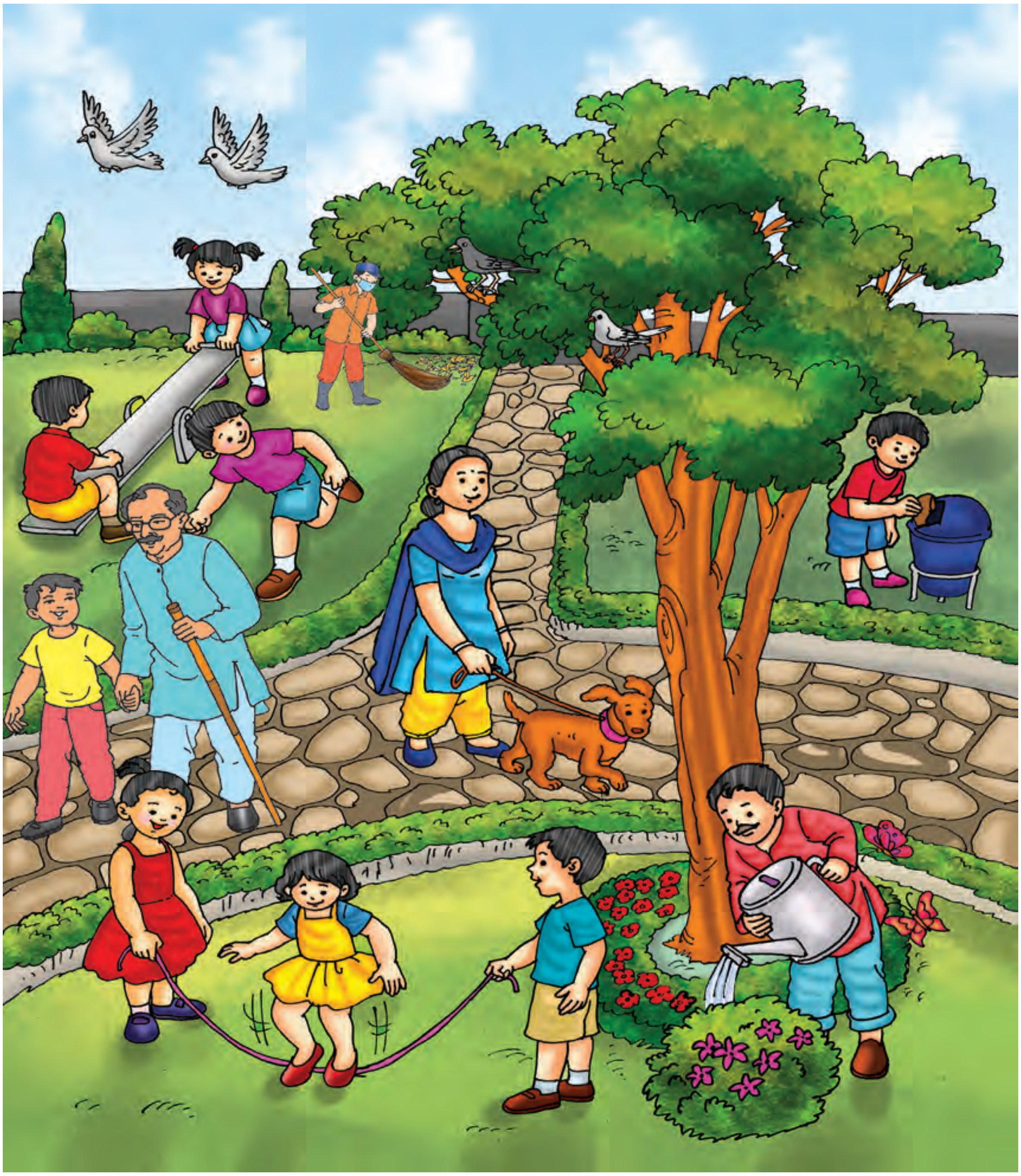

विज्ञानमय कोष
(संज्ञानात्मक विकास)

विज्ञानमय कोष ज्ञान व बुद्धि के विकास से बनता है। तार्किक शक्ति, विश्लेषण, संश्लेषण, सारांश, निष्कर्ष, स्मृति और भाषा संबंधी और गणित संबंधी क्षमताएँ विज्ञानमय कोष से संबंधित हैं। अत: विज्ञानमय कोश के विकास हेतु गणना, समझने और विश्लेषण करने की गतिविधियों को प्रदान करने की आवश्यकता होती है।

* साक्षरता और संख्यात्मक कौशल, गणितीय कौशल और पर्यावरण के प्रति जागरूकता और वैज्ञानिक सोच का विकास किस तरह किया जाए, इसका विवरण अनुलग्नक VI में दिया गया है।

विज्ञानमय कोष से संबंधित पाठ्यचर्या लक्ष्य

पाठ्यचर्या लक्ष्य–7: अवलोकन तथा तार्किक सोच के साथ अपने आस-पास की समझ बनाना

पाठ्यचर्या लक्ष्य–8: बच्चों में गणितीय समझ को विकसित करना और उनमें मात्रा, आकार और मापन से जुड़ी अवधारणाओं द्वारा दैनिक गतिविधियों की समझ बनाना

पाठ्यचर्या लक्ष्य–9: बच्चों में दैनिक अंत: क्रियाओं हेतु दो भाषाओं में प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करना

पाठ्यचर्या लक्ष्य–10: बच्चों में प्रथम भाषा पढ़ने-लिखने में प्रवाह विकसित करना

पाठ्यचर्या लक्ष्य–11: बच्चों का द्वितीय भाषा में पढ़ना-लिखना आरंभ करना

विज्ञानमय कोष

संज्ञानात्मक विकास

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 1: अवलोकन तथा तार्किक सोच के साथ अपने आस-पास की समझ बनाना

7.1: विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के वर्गीकरण तथा उनके मध्य संबंधों का अवलोकन करके समझना

गतिविधि 1

मेरे आस-पास पशु एवं पक्षी

आवश्यक सामग्री	पशु-पक्षियों, कीटों तथा खाद्य सामग्रियों के चित्र कार्ड; पत्ते, पत्थर, कंचे, तीलियों, फूलों को छाँटने के लिए छोटी टोकरियाँ या डिब्बे या ट्रे; विभिन्न पशु-पक्षियों, पौधों, फूलों आदि की चित्र पहेलियाँ
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• चित्र वाले कार्डों का क्रम बदलें और बच्चों के छोटे समूह बनाकर उन्हें दें तथा उन्हें पशु एवं पक्षियों से संबंधित चित्र कार्ड अलग-अलग समूहों, जैसे कि अलग-अलग डिब्बों या टोकरियों आदि में रखने के लिए कहें। • पशुओं का उनके भोजन से मिलान करें; उदाहरण के लिए— खरगोश का गाजर के साथ, बंदर का केले के साथ आदि। बच्चों को बात करने के लिए कहें कि उन्होंने कैसे उनको समूहों में विभाजित किया और क्यों? • पशु-पक्षियों का अवलोकन के लिए पास के खेत या खेल के मैदान या पार्क अथवा बागीचे में जाने की योजना बनाएँ। • बच्चों को उनके आस-पास के पशु-पक्षी, जैसे– भैंस, बकरी, कुत्ते, बिल्ली, चूहे, गाय, खरगोश, गौरैया, कौवे, मुर्गियाँ आदि देखने के भरपूर अवसर प्रदान करें। बच्चों को अपने आस-पास पशु-पक्षियों की उपस्थिति का आनंद लेने दें।

टिप्पणी— गतिविधियों और अनुभवों को बच्चों की उम्र और विकासात्मक स्तर के आधार पर प्रस्तुत किया जा सकता है। गतिविधियों का चयन करें या स्थानीय संदर्भ में और बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार अपनी गतिविधियाँ बनाएँ।

4–5 वर्ष	• मुक्त वार्तालाप— बच्चों ने घर से स्कूल के रास्ते में जिसका भी अवलोकन किया है, उसके बारे में बात करने के लिए कहें, जैसे– पशु, पक्षी, बस, कार, चलने वाले लोग, आवाज़ें, रंग आदि। • बच्चों से आस-पास के पशुओं के बारे में बात करें और उनकी समझने में मदद करें कि वे पशुओं के प्रति दयालु कैसे हो सकते हैं, उदाहरण के लिए— पानी, भोजन, आश्रय आदि देकर। • उन्हें अपने आस-पास देखे हुए पशु-पक्षियों के अतिरिक्त अन्य विभिन्न पशु-पक्षियों की पहचान करने और उनके बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे– शेर, बंदर आदि। • खेत या चिड़ियाघर का भ्रमण करें। उन्हें खेत के पशुओं के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करें, उदाहरण के लिए— खेत के पशु हमारी मदद कैसे करते हैं, चिड़ियाघर में रहने वाले पशुओं के बारे में चर्चा आदि करें। • निर्देशित बात-चीत— वापस आने के बाद आप बात-चीत पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं कि सभी पशु अपने मतभेदों के बावजूद कैसे एक साथ रहते हैं। पालतू और अन्य पशुओं में क्या अंतर है? बीमार पड़ने पर पालतू पशु के लिए हम क्या करते हैं? यदि पशु-पक्षी न हों तो क्या हो?
5–6 वर्ष 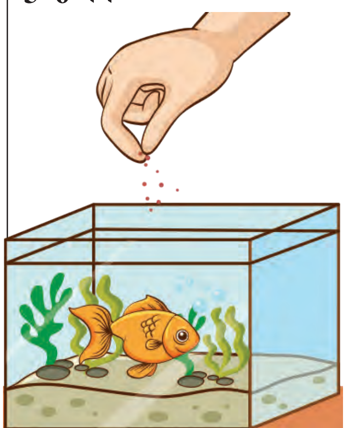	• बच्चों को यह देखने के लिए कहें कि पशुओं और पक्षियों की देखभाल करने वाले लोग उनको भोजन कैसे खिला रहे हैं। इससे उन्हें पशुओं और पक्षियों को अपने भोजन के साथ जोड़ने और यह सीखने में मदद मिलेगी कि सभी जीवों को देखभाल की आवश्यकता होती है। • गोल घेरे में चर्चा का समय— पशु-पक्षियों, पौधों और अपने आस-पास के लोगों पर बात-चीत की योजना बनाएँ। बच्चों को ऐसी बात-चीत में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए कहें। • उन्हें हमारे आस-पास के पशु-पक्षियों, पौधों, लोगों के बारे में और वे हमारे दैनिक जीवन में कैसे सहायक हैं, इसके बारे में प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। • बच्चों को चित्रों, मौखिक रूप से, रोलप्ले, नाटक आदि के माध्यम से अपने अनुभव साझा करने के लिए कहें। • बच्चों को पशु-पक्षियों, पौधों, आदि से संबंधित चित्र पहेली प्रदान करें और उन्हें इसे हल करने हेतु कहें। बच्चों की क्षमता के आधार पर, आप क्रियाकलाप के स्तर को बढ़ा या घटा सकते हैं, अर्थात पहेली के टुकड़ों की संख्या दो टुकड़ों से शुरू करके तीन या चार टुकड़ों तक बढ़ा सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों के अनुकूल आवर्धक लेंस या दूरबीन का उपयोग किया जा सकता है और साथ में विभिन्न कीड़ों और पक्षियों और उनके घरों, उदाहरण के लिए— चींटियों की बाँबी, पक्षियों के घोंसलों आदि को अवलोकन के लिए साथ ले जा सकते हैं। • बच्चों को पशुओं की तस्वीरें लेने में मदद करें या किसी भी पशु की तस्वीर चार्ट से काटें (बाल अनुकूल कैंची का उपयोग करके) और प्रत्येक को दो, तीन या चार हिस्सों में काट लें।

	• बच्चों को अलग-अलग हिस्सों को एक साथ रखने और कृतियों को देखने और इसके बारे में बात करने की स्वतंत्रता दें। • बच्चों को देखभाल करने वालों से बात करने के लिए कहें यदि उनके लिए पशुओं को छूना और खिलाने में मदद करना ठीक है। बच्चों को देखभालकर्ता और वयस्कों की देख-रेख में ही ऐसा करने के लिए कहें। • बच्चों को उनके द्वारा निकाली गई आवाज़ों से पशु-पक्षियों की पहचान करने को कहें। • स्पर्श चित्रों, मॉडलों, बच्चों की अपनी ड्राइंग आदि का उपयोग करके बच्चों की आँखों के स्तर पर कक्षा-कक्ष में प्रदर्शित करें। • बच्चों को समूहों में विभाजित करें और उन्हें उन लोगों की सूची बनाने को कहें, जो हमारी सहायता करते हैं। (हमारे समुदाय के सहायकों पर एक चार्ट बनाया जा सकता है।) • पशु-पक्षियों पर कविताएँ गाएँ। • पशु-पक्षियों से संबंधित खेल, 'चिड़िया उड़' खेलें। (अन्य खेलों हेतु अनुलग्नक III देखें।)
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	• भाषा कौशल, भावनात्मक कौशल, जैसे– पशुओं और पक्षियों के प्रति समानुभूति, सामाजिक संबंधों की समझ, पर्यावरण का संरक्षण।
अवलोकन बिंदु	• ध्यान दें कि सभी बच्चे भाग लेते हैं और अपनी इंद्रियों का उपयोग करके आस-पास के वातावरण का पता लगाने में सक्षम होते हैं। • पशुओं और पक्षियों की निकटता में बच्चों की भावनाओं (खुशी, डर, समानुभूति आदि) का अवलोकन करें। • अवलोकन करें कि बच्चे खुले प्रश्नों में कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, जैसे कि क्या होगा यदि हमारे आस-पास कोई पेड़ न हो। • अवलोकन करें कि बच्चे पौधों या पशुओं की देखभाल कैसे करते हैं, वे किस शब्दावली का प्रयोग करते हैं, बच्चे अपने खेल या रचनात्मक गतिविधियों में प्राकृतिक सामग्री या संसाधनों का उपयोग कैसे करते हैं।

गतिविधि 2
सब्ज़ियाँ और फल

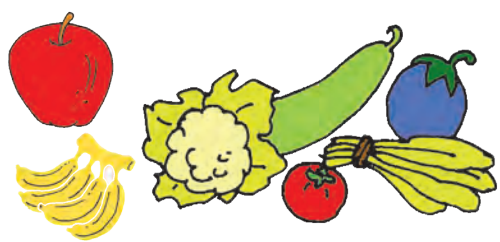

आवश्यक सामग्री	सब्ज़ियों, फलों का चित्र चार्ट, गिरे हुए बीजों का संग्रह, पत्ते, टहनियाँ, पेड़ की छाल, मिट्टी से बने फल और सब्ज़ियाँ, संगत चित्र पहेली
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• सब्ज़ियों और फलों के चित्र-कार्ड बनाएँ। कार्डों को आपस में मिलाएँ और उन्हें बच्चों को फलों और सब्ज़ियों के चित्रों के अलग-अलग समूह में व्यवस्थित करने के लिए कहें। (यह गतिविधि भी गतिविधि 1 के समान है।)

4–5 वर्ष फ फ स स स स फ स स	• फलों की सलाद या चाट— बच्चों को फल और सब्ज़ियाँ धोने के लिए कहें। उन्हें बच्चों के सामने काटें। बच्चों को उन्हें देखने के लिए कहें, उन्हें छूने के लिए कहें और उनका स्वाद चखने के लिए कहें। • अलग-अलग सब्ज़ियों और फलों के जोड़े में चित्र कार्ड बनाएँ और उन्हें आपस में मिलाएँ। बच्चों से इनका मिलान करने और जोड़ों को एक साथ रखने को कहें। • दृश्य विभेदन कार्ड या पट्टियाँ— तीन से चार सब्ज़ियों और एक फल या किसी अन्य वस्तु के चित्रों वाला एक कार्ड या पट्टी बनाएँ। बच्चों से समूह से अलग की पहचान करने के लिए कहें। इसका विपरीत भी किया जा सकता है। • वर्गीकरण— बच्चे इन कार्डों के साथ एक खेल भी खेल सकते हैं। एक समय में चार बच्चे खेल सकते हैं। प्रत्येक बच्चे को मध्य में एक कार्ड रखने को कहें। यदि कोई बच्चा उसी श्रेणी का कार्ड रखता है, उदाहरण के लिए— सब्ज़ी के कार्ड के ऊपर एक सब्ज़ी का कार्ड, तो उसे ढेर सारे कार्ड मिलते हैं। कार्ड के खेल में कई बदलाव संभव हैं, जिनसे बच्चों को वर्गीकरण सीखने में मदद मिलेगी।
5–6 वर्ष	• बच्चों को पास की सब्ज़ी की दुकान या खेत या सब्ज़ी बाज़ार में ले जाएँ। उन्हें विभिन्न सब्ज़ियों की बनावट और आकार को देखने, अवलोकन करने और पहचानने के लिए कहें। उन्हें स्पर्श संवेदन से भी महसूस करने के लिए कहें। • कठपुतलियों के साथ खेलें— विभिन्न फलों और सब्ज़ियों की छड़ी वाली कठपुतलियाँ बनाएँ। कठपुतली खेल के माध्यम से बच्चों को विभिन्न फल और सब्ज़ियाँ खाने के महत्व, खाने से पहले उन्हें धोने के महत्व आदि के बारे में बताएँ। (कठपुतली बनाने के लिए अनुलग्नक II देखें।) • पहेलियों को हल करना— इन्हें विभिन्न सब्ज़ियों और फलों के लिए बनाया जा सकता है। बच्चों को इन्हें हल करने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— मैं लाल रंग का हूँ, मुझे कच्चा खाया जाता है, मुझे पकाया भी जा सकता है। क्या आप मेरा नाम बता सकते हैं? (टमाटर); खाने में खट्टा होता हूँ, पीले रंग का होता हूँ। बताओ मेरा नाम क्या है? (नींबू)
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• अल्पाहार के समय, बच्चों को इस बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करें कि वे क्या खा रहे हैं, उसका स्वाद आदि, और क्या यह फल है या सब्ज़ी। • विभिन्न फलों और सब्ज़ियों की चित्र पहेलियाँ बनाएँ। • यदि संभव हो, तो बालवाटिका केंद्र में किचन गार्डन की योजना बनाई जा सकती है और बच्चों को बुवाई और पानी देने की गतिविधियों और पौधों की देखभाल में शामिल किया जा सकता है। • बालवाटिका केंद्रों में जहाँ अल्पाहार दिया जाता है, वहाँ बच्चों को शामिल करके अल्पाहार जैसे सलाद, फल चाट, अंकुरित मूँग दाल की चाट, नींबू पानी आदि बनाने का काम किया जा सकता है।

	• बच्चों को उबले हुए आलू, फल छीलने, नींबू निचोड़ने, नमक या चीनी मिलाना, परोसना आदि में भाग लेने के लिए कहें। साथ-साथ ही फलों और सब्ज़ियों के बारे में बात-चीत की जा सकती है, उदाहरण के लिए— उनका आकार, रंग, स्वाद, वे कैसे उगाए जाते हैं आदि, और फल सलाद जैसे अल्पाहार तैयार करने की प्रक्रिया के बारे में। बच्चों को बात-चीत में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें । • हवा, पानी एवं पौधों के अंकुरण आदि अपने हाथों से करके देखने के सरल व्यावहारिक अनुभव आयोजित किए जा सकते हैं। • रेत और पानी के खेल क्षेत्र की जगह की व्यवस्था करें। • बालवाटिका बगीचा— बच्चों के लिए बगीचे की जगह बनाएँ और उनसे वहाँ वे बीज बोने के लिए कहें, जहाँ वे बीजों को बढ़ते हुए देख सकें, आदि। इस उद्यान क्षेत्र को बड़ा होना आवश्यक नहीं है। शिक्षक, किसी कचरे के बड़े डिब्बे या पैकिंग सामग्री या कुछ गमलों और मिट्टी से इसका आरंभ कर सकते हैं। • कक्षा में या किसी भी शिक्षण स्थल में खोज क्षेत्र या विज्ञान क्षेत्र बनाया जा सकता है, जहाँ बच्चे फलों और सब्ज़ियों की गतिविधियों के द्वारा तैरने-डूबने जैसे सरल प्रयोगों का अन्वेषण करें। • बच्चों को मिट्टी के टीले बनाने के लिए कहें। • फलों और सब्ज़ियों से शब्द या चित्र पहेलियाँ बनाएँ। चित्र पहेली बनाना सरलता से पहचाने जाने वाली किसी एक वस्तु का चित्र ले लें। (कम से कम 3×3 या उससे बड़ा) चार्ट पेपर या गत्ते पर चिपका लें। कैंची से इसके चार टुकड़े कर लें। अब बच्चों को उसे पुन: जोड़कर चित्र बनाने को कहें। इसी प्रकार सरल से कठिन की ओर चलते हुए काटे हुए टुकड़ों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। • बच्चों की उम्र और क्षमता के आधार पर, आप पहेली के टुकड़ों की संख्या दो टुकड़ों से शुरू करके घटा या बढ़ा सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	• भाषा कौशल, भावनात्मक कौशल, सामाजिक संबंधों की समझ, पर्यावरण जागरूकता, स्वस्थ आदतों का विकास।
अवलोकन बिंदु	• सक्रिय रूप से भाग लेने वाले बच्चों, उनकी भाषा प्रतिभा, शारीरिक क्रियाएँ, बात-चीत में सहजता आदि का अवलोकन और पहचान करें। • बच्चों के रोलप्ले के दौरान दुकानदार के साथ या बालवाटिका में आने वाले लोगों के साथ किस तरह की बात-चीत होती है, इसका अवलोकन करें। • कौन-सी सब्ज़ियाँ अथवा फल साल भर उपलब्ध रहते हैं? कौन से फल विभिन्न ऋतुओं (सर्दी, गर्मी और बरसात) में उपलब्ध होते हैं? बच्चों के द्वारा ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रयोग की गई शब्दावली का अवलोकन करें।

गतिविधि 3
पौधों का जीवन

आवश्यक सामग्री	बीज, पौधे, विभिन्न तरह के फूल, फलों आदि के चित्र चार्ट, टहनियाँ, पत्तियाँ
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• गोल घेरे में चर्चा— बच्चों से मुक्त और संरचित बात-चीत के माध्यम से बगीचे के बारे में बात करें। • आस-पास के पौधों, पेड़ों, पत्तियों, फूलों आदि के बारे में बात करें। उन्हें बात-चीत में शामिल होने को कहें।
4–5 वर्ष	• प्रकृति की सैर के दौरान, बच्चों को विभिन्न प्रकार के पौधे व उनके विभिन्न भागों को देखने के लिए प्रोत्साहित करें। • उन्हें पौधों पर मौसम के प्रभाव का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें सूखी पत्तियाँ और हरी पत्तियाँ इकट्ठा करने के लिए कहें। ऋतुओं की बात करें, पत्ते कब सूखते हैं और नए हरे पत्ते कब आते हैं, इसकी बात करें।
5–6 वर्ष	• पास के बगीचे में जाएँ— बच्चों को प्रकृति की सैर पर ले जाएँ और उन्हें जो कुछ भी चाहिए उसे इकट्ठा करने के लिए कहें। फिर बच्चों को कक्षा में वापस लाएँ और उनके द्वारा एकत्रित सामग्री का उपयोग कक्षा में एक छोटा बगीचा बनाने हेतु करें। बच्चों को पत्ते, मिट्टी, पत्थर, पंख, टहनियाँ आदि चीजें एकत्र करने हेतु प्रोत्साहित करें। • प्राकृतिक संग्रह से वस्तुओं की छँटाई— पत्ते, फूल, पंखुड़ियाँ, बीज आदि, जो बच्चे प्रकृति की सैर के दौरान एकत्रित करते हैं, उन्हें कक्षा में लाया जा सकता है और छँटाई, मिलान और वर्गीकरण गतिविधियों के लिए उपयोग किया जा सकता है। • कोलाज या आर्टवर्क— छोटे पेड़, तालाब, मछलियाँ, पक्षी, तितलियाँ आदि बनाने के लिए कागज़ का उपयोग करें। बच्चों को कोलाज या पार्क या बगीचे का मॉडल बनाने में मदद करें। इससे बच्चों को पर्यावरण को देखने और समझने के साथ-साथ उनके आस-पास की सुंदरता की सराहना करने में मदद मिलेगी। • बच्चों को बीजों के अंकुरण और इसके विकास को देखने के लिए प्रोत्साहित करें। • सजीव और निर्जीव वस्तुओं का परिचय दें; जीने के लिए क्या चाहिए। निर्जीव वस्तुओं से उनकी तुलना करें। • सजीव-निर्जीव वस्तुओं के लिए फ्लैश कार्ड बनाएँ और बच्चों से कार्डों को दो श्रेणियों में छाँटने के लिए कहें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	रचनात्मक गतिविधियाँ— बच्चों को पेड़ों, फूलों आदि के चित्रों को विभिन्न रंगों से भरने को कहें, जिससे वे इनमें अंतर करना सीखें और रचनात्मकता का विकास हो सके। • यदि संभव हो, तो प्रत्येक बच्चे को एक छोटा पुराना (रद्दी या बिना लागत का) टिन या बर्तन लाने को कहें, उसमें मिट्टी भर दें और उसमें एक बीज बो दें, उदाहरणार्थ— राजमा का बीज। यदि प्रत्येक बच्चे से नहीं हो सके, तो इसे छोटे समूहों में किया जा सकता है। प्रत्येक समूह को नियमित रूप से पानी दें और इसे ऐसे स्थान पर रखें, जहाँ इसे पर्याप्त प्रकाश और हवा मिले। • एक बर्तन को अलमारी के अंदर या एक बंद, कम हवादार जगह में और दूसरे को पर्याप्त धूप के साथ खुले में रखकर एक साधारण प्रयोग किया जा सकता है। बच्चों को दोनों पौधों की वृद्धि में अंतर देखने को कहें। • दिन और रात के बारे में बात करें, अंतर पर चर्चा करें। • गर्मी, सर्दी, बरसात जैसे मौसमों के बारे में बात करें; बच्चों को इस आधार पर अंतर करने के लिए कहें कि हम क्या पहनते हैं, क्या उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए— बारिश में छाता, आदि। • एक पात्र में कुछ बीज बोएँ और दूसरे पात्र में कंकड़ डालें। इन सजीव और निर्जीव चीजों के बीच 4–5 दिनों के बाद अंतर देखें। बच्चे जो कुछ देखते हैं उसे व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें। • पौधों के विकास के विभिन्न चरणों को दिखाते हुए अनुक्रमिक विचार वाले कार्डों का एक सेट बनाएँ। उन्हें मिला दें और सही क्रम में व्यवस्थित करने के लिए बच्चों को दें। • बच्चों के साथ पौधों के जीवन से संबंधित कविताएँ और गीत गाएँ। • बच्चों को पौधों के जीवन से संबंधित कहानियाँ, कविताएँ और गीत सुनाएँ। कविता या तुकबंदी के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं— **बागों में हैं फूल खिले** बागों में हैं फूल खिले, देखो कितने फूल खिले तितली रानी आओ-आओ तितली रानी आओ-आओ रंग दिखाने आओ, रंग दिखाकर जाओ बागों में हैं फूल खिले, देखो कितने फूल खिले गुन-गुन भँवरा आया सुन-सुन भँवरा आया बागों में हैं फूल खिले, देखो कितने फूल खिले कोयल रानी आओ-आओ कोयल रानी आओ-आओ मीठा अपना गीत सुनाओ, कू...कू...कू...कू... बागों में हैं फूल खिले, देखो कितने फूल खिले ओ खरगोश आओ-आओ, ओ खरगोश आओ-आओ उछल-उछल कर आओ, उछल-उछल कर जाओ

	बागों में हैं फूल खिले, देखो कितने फूल खिले मोर-राजा तुम भी आओ, मोर-राजा आओ-आओ झूम-झूम कर नाचो गाओ, छम-छम करके पैर उठाओ बागों में हैं फूल खिले, देखो कितने फूल खिले **चना किसने बोया रे?** "चना किसने बोया? किसने बोया, किसने बोया रे, चना मैंने बोया, मैंने बोया, मैंने बोया रे। चना कैसे बोया? कैसे बोया? कैसे बोया रे, चना ऐसे बोया, ऐसे बोया, ऐसे बोया रे। चना कैसे सींचा? कैसे सींचा, कैसे सींचा रे। चना ऐसे सींचा, ऐसे सींचा, ऐसे सींचा रे। चना कैसे बढ़ा? कैसे बढ़ा? कैसे बढ़ा रे। चना ऐसे बढ़ा, ऐसे बढ़ा, ऐसे बढ़ा रे। चना कैसे काटा? कैसे काटा? कैसे काटा रे। चना ऐसे काटा, ऐसे काटा, ऐसे काटा रे। चना कैसे खाया? कैसे खाया? कैसे खाया रे। चना ऐसे खाया, ऐसे खाया, ऐसे खाया रे। चना कैसे नाचा? कैसे नाचा? कैसे नाचा रे। चना ऐसे नाचा, ऐसे नाचा, ऐसे नाचा रे।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा कौशल, सामाजिक संबंधों की समझ, शारीरिक-क्रियात्मक विकास, भावनात्मक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	देखें कि बच्चे स्कूल के बगीचे और पौधों की देखभाल कैसे करते हैं, बच्चे पहेलियों को कैसे हल करते हैं, बच्चे किस तरह की शब्दावली विकसित करते हैं, बच्चे कैसे सजीव और निर्जीव वस्तुओं का वर्णन करते हैं आदि।

गतिविधि 4
यातायात के साधन

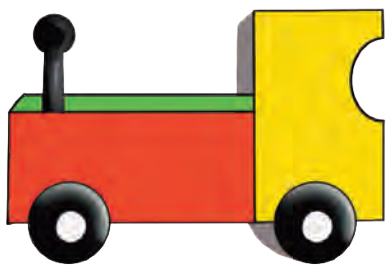

आवश्यक सामग्री	यातायात के साधन के चित्र, खेल-खिलौने
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**

3–4 वर्ष	• बच्चों को भ्रमण पर ले जाने या यहाँ तक कि बालवाटिका जाने के रास्ते में भी प्रतिदिन अलग-अलग वाहनों या यातायात के साधनों का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मुक्त और संरचित बात-चीत के माध्यम से उन्हें अपनी टिप्पणियों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। • बच्चों के साथ यातायात के साधन के विभिन्न साधन दर्शाती तस्वीरों के द्वारा भाषा के विकास के लिए चित्र पठन गतिविधि का आयोजन किया जा सकता है। • रोलप्ले या नाटकीकरण या यातायात के साधन की ध्वनि वाले खेल बच्चों के साथ खेले जा सकते हैं, उदाहरण के लिए— जब शिक्षक कोई यातायात संबंधी कविता या गीत गा रहे हों तो बच्चों को गोल घेरे में दौड़ने के लिए कहें। छुक-छुक करती आती रेल दूर शहर पहुँचाती रेल सीटी खूब बजाती रेल स्टेशन पर रुक जाती रेल • बच्चों को अपने हाथों को हिलाने के लिए कहें और जब वे चलें तो हवाई जहाज़ की ध्वनि निकालें। इसी प्रकार, अन्य वाहनों का नाम लिया जा सकता है। • यातायात के साधन के चित्र के साथ दो-तीन अन्य वस्तुओं के चित्र दे सकते हैं। फिर बच्चों से यातायात के साधन के चित्रों को पहचानने के लिए कहें। • यातायात के साधन के विभिन्न साधनों के चित्र कार्ड जोड़ियों में बनाकर ऊपर-नीचे किए जा सकते हैं। बच्चों को उनका मिलान करने के लिए कहें और जोड़े बनाने के लिए कहें।
4–6 वर्ष	• वायु, भूमि और जल को दर्शाते हुए तीन खंडों में विभाजित एक चार्ट बनाएँ। इसे उपयुक्त रंग दें। यातायात के साधन के विभिन्न साधनों के कट-आउट बनाएँ। बच्चों को इन्हें हवाई यातायात के साधन, भूमि यातायात के साधन और जल यातायात के साधन के संदर्भ में उचित स्थान पर रखने के लिए कहें। • बच्चों के साथ गोल घेरे में खेल खेलें। एक बच्चा मध्य में आकर 'मामाजी' की भूमिका निभाए। मामाजी कहेंगे "बच्चो, बच्चो, तुम कहाँ जाना चाहते हो?" बच्चे कुछ भी कह सकते हैं, उदाहरण के लिए— पिकनिक, चिड़ियाघर, या मुंबई, दिल्ली आदि। फिर मामाजी कहेंगे "बच्चो, बच्चो कैसे जाओगे?" बच्चों को यात्रा की जाने वाली दूरी के संदर्भ में उपयुक्त यातायात के साधन साधनों का उल्लेख करना होगा। फिर बच्चे एक गोले में घूमेंगे और उल्लिखित यातायात के साधन के लिए उपयुक्त हाव-भाव दिखाएँगे और ध्वनियाँ निकालेंगे। • समय धारणा का कार्ड, उदाहरण के लिए— साइकिल पर एक लड़का और स्कूटर पर एक अन्य लड़के को दिखाते हुए तैयार किए जा सकते हैं। एक छोटी-सी कहानी बनाएँ, उदाहरण के लिए— बच्चों को अपनी दादी के घर जाना पड़ता है। कौन-सा बच्चा जल्दी पहुँचेगा ? बच्चों को न्याय करने और उत्तर देने के लिए कहें।

	• निम्नलिखित कविता बच्चों को ट्रैफिक नियमों और ट्रैफिक लाइट के उपयोग को समझने में सहायता करेंगी। लाल बत्ती, लाल बत्ती, तुम क्या कहती हो? मैं कहती हूँ रुको, रुको, रुको हरी बत्ती, हरी बत्ती, तुम क्या कहती हो? मैं कहती हूँ जाओ, जाओ, जाओ पीली बत्ती, पीली बत्ती तुम क्या कहती हो? मैं कहती हूँ प्रतीक्षा, प्रतीक्षा, प्रतीक्षा।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा कौशल, सामाजिक कौशल की समझ, शारीरिक और क्रियात्मक विकास, रचनात्मक और सौंदर्य विकास
अवलोकन बिंदु	सक्रिय रूप से भाग लेने वाले बच्चों को देखें और पहचानें; वे बच्चे, जो दूसरों के साथ सहयोग करते हैं, अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं, चीज़ों को याद करते हैं, निर्देशों का पालन करते हैं आदि।

7.2: सरल कारण और प्रभाव के संबंधों का अवलोकन करके समझना तथा परिकल्पना बनाकर व्याख्या करना

गतिविधि 1
एक गीत गाएँ

आवश्यक सामग्री	चित्र कार्ड, विभिन्न प्रकार के कागज़, बच्चों के अनुकूल कैंची, संबंध कार्ड (ताला-चाबी आदि), चित्र पहेली
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• एक बड़े आकार के चित्र को दो से तीन बड़े भागों में काटकर सरल चित्र पहेली बनाएँ। बच्चों को एक तस्वीर बनाने के लिए इन्हें एक साथ रखने का प्रोत्साहन दें। • उन्हें एक साधारण भूल-भुलैया को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करें।
4–5 वर्ष	• टुकड़ों की संख्या बढ़ाकर अधिक जटिलता वाली चित्र पहेली बनाएँ। उन्हें अधिक जटिलता वाली भूल-भुलैया को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करें। (यह गतिविधि वर्कशीट और फर्श पर बनी भूल-भुलैया पर हो सकती है।)

5–6 वर्ष	• बच्चों द्वारा हल करने के लिए सरल से जटिल भूल-भुलैया बनाएँ। • बच्चों को तीन से चार और चार से पाँच साल के आयु वर्ग की पहेलियों की तुलना में अधिक जटिल पहेली को हल करने का अवसर दें। • उन्हें संबंध-कार्ड (कप-प्लेट, ताला-चाबी आदि) दें और उनका मिलान करने को कहें। • उन्हें अधिक जटिलता के साथ भूल-भुलैया को पूरा करने में शामिल करें। (यह वर्कशीट पर दिया जा सकता है या फर्श पर भूल-भुलैया बना सकता है।)

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को कुछ समस्या-समाधान गतिविधियों में संलग्न करें, उदाहरण के लिए— सरल प्रश्नों का उत्तर देना, जैसे कि बारिश होने पर क्या होगा?
	• संबंध– बच्चों को कार्डों का एक सेट दें, जिसमें कुछ ऐसी वस्तुएँ हों, जिनसे बच्चे परिचित हों और अन्य में संबंधित वस्तुएँ हों, उदाहरण के लिए— ताला और चाबी, शर्ट और शॉर्ट्स, कंघी और रिबन इत्यादि। उन्हें संबंधित कार्ड खोजने के लिए प्रोत्साहित करें।
	• कारण और प्रभाव— बच्चों से सरल प्रश्न पूछें, जैसे—
	  ▪ यदि आप गेंद को ज़ोर से मारते हैं तो क्या होगा?
	  ▪ जब आप पंखा चालू करते हैं तो कागज़ क्यों उड़ जाता है?
	  ▪ यदि आप अपने बालों को साफ नहीं रखेंगे तो क्या होगा? इत्यादि।
	• 3–4 साल के बच्चों के लिए समस्या-समाधान गतिविधियों के समान करें, लेकिन बढ़ी हुई जटिलता के साथ। बच्चों के सामने सरल समस्याएँ रखें, जैसे– ऐसी कौन सी चीज़ें हैं, जो आप सोच सकते हैं कि हो सकती हैं—
	  ▪ छिला हुआ
	  ▪ कटा हुआ
	  ▪ निचोड़ा हुआ
	  ▪ डाला गया
	  ▪ पिघला हुआ
	  ▪ घुला (चीनी, नमक) आदि।
	• बच्चों के समक्ष समस्याएँ प्रस्तुत करने और समस्याएँ हल करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए दिन-प्रतिदिन की परिस्थितियों का उपयोग करें।
	  ▪ यदि आप अलमारी के ऊपर एक खिलौना रखना चाहते हैं तो आप क्या करेंगे?
	  ▪ यदि आप स्कूल आते समय आपके जूते टूट जाते हैं तो आप क्या करेंगे?

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	बच्चे भाषा कौशल, सामाजिक संबंधों की समझ, संज्ञानात्मक कौशल, रचनात्मकता, सटीकता और अपने हाथों और अँगुलियों का समन्वय अर्थात् एक साथ काम करने में नियंत्रण विकसित करते हैं।
अवलोकन बिंदु	अवलोकन करें कि बच्चे मुक्त प्रश्नों का उत्तर कैसे देते हैं, जैसे– आप ऐसा क्यों सोचते हैं...?, आप कैसे जानते हैं...?, आपको क्या लगता है कि ऐसा क्यों हुआ?, आगे क्या होगा?, यह कैसे हुआ?

गतिविधि 2

हवा के साथ मौज मस्ती

आवश्यक सामग्री	हवाई जहाज़, फिरकी, पतंग आदि बनाने के लिए कागज़ या पुराने अखबार)
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को अपने हाथों से हवा फूँकने दें और हवा को महसूस करने के लिए कहें। • बच्चों को आकाश में उड़ते पक्षियों को देखने के लिए कहें। • बच्चों को पुराने समाचार पत्रों से साधारण कागज़ का हवाई जहाज़ बनाने में शामिल करें और उन्हें इसके साथ खेलने के लिए कहें और इसे हवा में उड़ाने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	• बच्चों को टेबल पर कागज़ रखने के लिए कहें और पंखे का स्विच ऑन कर दें। उन्हें देखने के लिए कहें कि कागज़ों का क्या होता है। उनसे सवाल पूछें, जैसे कि क्या हुआ? किस वजह से कागज़ उड़े? • बच्चों को आकाश में उड़ते पक्षियों को देखने के लिए कहें और उन्हें 'क्या उड़ता है' और 'क्या नहीं उड़ता है' के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करें। • उन्हें सरल पतंग बनाने में संलग्न करें और उन्हें पतंग उड़ाते देखें; उनसे पूछें— पतंग क्यों उड़ती है? • बच्चों को स्ट्रॉ से कागज़ के टुकड़ों को फूँक मारने को कहें।
5–6 वर्ष	• पिछली गतिविधियों को दोहराएँ और बच्चों को हवा के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करें। • बच्चों को स्ट्रॉ का उपयोग करके कागज़ पर गीले पेंट या रंग की बूँदों को फूँकने दें और हवा से फूँकते हुए डिजाइन बनाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को फिरकी बनाने के लिए कहें और उससे खेलने के लिए कहें; बच्चों को सहज रूप से हवा के महत्व के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करें। • वायु प्रदूषण, इसे नियंत्रित करने और कम करने के लिए हम क्या कर सकते हैं, के बारे में बात करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा कौशल, भावात्मक कौशल, संज्ञानात्मक कौशल जैसे समस्या समाधान, पर्यावरण संरक्षण आदि।
अवलोकन बिंदु	देखें कि बच्चे कागज़ के हवाई जहाज़, पतंग और फिरकी के साथ कैसे खेलते हैं और इसके साथ खेलते समय वे किस शब्दावली का उपयोग करते हैं; 'वायु' की संकल्पना पर उनका पूर्व ज्ञान क्या है इत्यादि।

गतिविधि 3
पानी के साथ मौज मस्ती

आवश्यक सामग्री	टब, पानी, मग, पानी से खेलने की वस्तुएँ, पानी के खिलौने, मापने के कप, विभिन्न आकार और आकृति के कंटेनर, कीप, स्ट्रॉ, ड्रॉपर
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• दिन की शुरुआत पानी के सामान्य उपयोगों पर मुक्त बात-चीत के साथ करें। मुक्त बातचीत के बाद पानी से संबंधित संरचित बात-चीत की ओर बढ़ें। पानी से संबंधित गाने और कविताएँ गाएँ। • बच्चों को एक छोटे समूह में पानी के साथ खेलने (पानी के खिलौने, पत्ते, कंकड़, पंख आदि जैसी प्राकृतिक वस्तुओं के साथ एक बड़े पानी के टब का उपयोग करके) के लिए कहें। • बच्चों को पानी के रंगों का उपयोग करके बड़े ब्रश से पेंट करने के लिए कहें। • बच्चों को गुड़ियों को नहलाने के लिए कहें और उसका आनंद लें, और उनके साथ व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में बात करें। • बच्चों को पानी के बुलबुले उड़ाने का आनंद लेने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	• बच्चों को पानी में वॉटर कलर मिलाने के लिए कहें और उनके द्वारा बनाए गए नए रंगों को देखें और उनके द्वारा बनाई गई चीज़ों के बारे में बात करें। • बच्चों को पानी में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ डालने के लिए कहें और देखें कि क्या डूबता है और क्या तैरता है, आदि। • बच्चों के लिए की जाने वाली गतिविधियों का आयोजन करें, उदाहरण के लिए— पौधों को पानी देना, पानी का खेल, मिट्टी का काम आदि। • बच्चों को कागज़ की नाव बनाने और उससे खेलने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	• उपरोक्त गतिविधियों को दोहराएँ। • बच्चों से चीज़ों को पानी में मिलाने के लिए कहें और उनसे यह पता लगाने के लिए कहें कि क्या घुलता है और क्या नहीं। • साबुन और पानी मिलाएँ, बच्चों को इससे बुलबुले बनाने के लिए कहें। उन्हें बुलबुले फोड़ने के लिए कहें और उन्हें सादे कागज़ पर बुलबुले उड़ाते समय उनके आकार का अवलोकन करने के लिए कहें; बच्चों को बुलबुले गिरने पर उन्हें पकड़ने के लिए कागज़ का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें। • उनसे पूछें— जब बुलबुले कागज़ पर गिरते हैं तो क्या होता है?

	• बच्चों को वयस्कों की देख-रेख में गर्म और ठंडे पानी का अनुभव करने हेतु कहें। • उन्हें पानी के साथ विभिन्न गतिविधियों का अनुभव करने के लिए कहें और कला और रचनात्मकता के लिए बहुत सारे अवसर प्रदान करें। • दिखाएँ कि पानी बर्फ में कैसे परिवर्तित हो जाता है और बर्फ पिघलकर पानी में कैसे बदल जाती है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को कागज़ मोड़कर नाव बनाने (ओरिगैमी) के विभिन्न तरीकों से अवगत कराएँ और उन्हें पानी के टब में नाव चलाने का आनंद लेने के लिए कहें; उन्हें कार्यपत्रक (वर्कशीट) पर लगाने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	• संज्ञानात्मक कौशल, समस्या-समाधान कौशल, ग्रहणबोधात्मक कौशल, ऐसी आदत विकसित करें, जो उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित रखे, संवेदी ग्रहणबोध में तीक्ष्णता, प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति सकारात्मक संबंध।
अवलोकन बिंदु	• देखें कि बच्चे पानी के साथ कैसे प्रयोग करते हैं, तैरने, डूबने आदि से संबंधित शब्दावली का उपयोग करते हैं। • अवलोकन करें कि वे मुक्त प्रश्नों का उत्तर कैसे देते हैं— जब आपने वस्तु को पानी में रखा तो क्या हुआ? आपको क्या लगता है ऐसा क्यों हुआ?

7.3: दैनिक जीवन में सीखने के लिए उपयुक्त उपकरणों और प्रौद्योगिकी का उपयोग करना

गतिविधि

प्रौद्योगिकी के साथ मौज मस्ती

आवश्यक सामग्री	रेडियो, आयु-उपयुक्त ऑडियो-वीडियो गेम, ई-स्टोरीज, कंप्यूटर, सेल फोन, वॉकी-टॉकी जैसे तकनीकी उपकरणों हेतु खेल-खिलौने के उपकरण; गुड़िया और नाटकीय क्षेत्र के लिए खेल सहायक उपकरण, जैसे– रेफ्रिजरेटर, इंडक्शन कुकटॉप, मिक्सर-ग्राइंडर आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों के साथ उनके घरों के तकनीकी उपकरणों, जैसे– टीवी, स्मार्ट फोन, रेडियो, लैपटॉप, कंप्यूटर, रिमोट कंट्रोल आदि के बारे में चर्चा करें। उनसे संबंधित उनके अनुभव साझा करने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	• विभिन्न तकनीकी उपकरणों पर चर्चा करने के लिए उन कार्डों का उपयोग करें, जिनमें उपकरणों की तस्वीरें या डमी हैं। साथ ही, बच्चों से विभिन्न तकनीकी उपकरणों के बारे में अपने अनुभव साझा करने के लिए कहें और बताएँ कि वे हमारे जीवन को आसान बनाने में कैसे मदद करते हैं।

5–6 वर्ष	• बच्चों के साथ चर्चा करें कि आपदा प्रबंधन स्थितियों जैसे कि कोविड-19 की स्थिति के दौरान उन्होंने किन तकनीकी उपकरणों का सबसे अधिक उपयोग किया है। रेडियो, टीवी, शैक्षिक चैनलों और डिस्कवरी चैनल, पीएम ई-विद्या कार्यक्रम आदि जैसे कार्यक्रमों के बारे में भी बात करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• कक्षा को छोटे समूहों में विभाजित करें और उन्हें चित्र कार्ड या डमी के माध्यम से एक तकनीकी उपकरण प्रदान करें। प्रत्येक समूह से उस उपकरण के उपयोग और महत्व पर चर्चा करने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— जिस समूह ने टीवी को अपना टूल बनाया है, वह टीवी के बारे में संक्षेप में बात करेगा। समूह के सभी सदस्य कम से कम एक वाक्य बोलेंगे। • विभिन्न उपकरणों के फायदे और नुकसान के बारे में बताएँ और चर्चा करें कि उनका उचित उपयोग कैसे किया जाए। • एक गत्ते का टीवी बनाएँ, जिसमें स्क्रीन खुली हो ताकि बच्चे अपना चेहरा अंदर कर सकें और बच्चों को चुटकुले, तुकबंदी या कहानी आदि प्रस्तुत करने या साझा करने के लिए कहें। • कक्षा में विविधता को ध्यान में रखते हुए सभी गतिविधियाँ करें। • कार्ड का उपयोग करें, जिसमें कंप्यूटर, सेल फोन, थर्मामीटर, प्रिंटर, वजन मशीन, स्टेथोस्कोप इत्यादि जैसे विभिन्न तकनीकी उपकरणों की तसवीरें हों, और बच्चों को उन्हें पहचानने और नाम देने के लिए कहें और बताएँ कि उन्होंने इन्हें कहाँ देखा है। • बच्चों के जोड़े बनाएँ और उन्हें दो पेपर कप और धागा दें। अब उन्हें पेपर कप स्ट्रिंग फोन बनाने के लिए प्रदर्शित करें यानी प्रत्येक कप के आधार के बीच में एक छेद करें। फिर दोनों कपों में धागे को बाँध दें। अब बच्चों को एक कप का उपयोग माइक्रोफोन के रूप में और दूसरे को सुनने के लिए करने के लिए कहें। • बच्चों को कागज़, गत्ता, फर्श आदि पर चित्र बनाने और पेंट करने के लिए पेंसिल, क्रेयॉन, ब्रश, छड़ी, स्ट्रॉ आदि प्रदान करें ताकि इन उपकरणों का उपयोग करने में उनका कौशल विकसित हो सके।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा कौशल, सामाजिक संबंधों की समझ, सामग्री और सरल उपकरणों के सुरक्षित उपयोग के अभ्यास, सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं।
अवलोकन बिंदु	अवलोकन करें कि बच्चे इन तकनीकी उपकरणों का उपयोग कैसे करते हैं और उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली शब्दावली का पता कैसे लगाते हैं।

लक्ष्य
8

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 8: बच्चों में गणितीय समझ विकसित करना, उनमें मात्रा, आकार एवं मापन द्वारा दैनिक गतिविधियों की समझ बनाना

8.1: एक से अधिक गुणों के आधार पर वस्तुओं को समूहों तथा उप-समूहों में वर्गीकृत करना

गतिविधि
छाँटना

आवश्यक सामग्री	गणित अधिगम सामग्री अथवा किट, छाँटने के लिए प्राकृतिक सामग्री; जैसे– बीज, पत्ते, फूल, कंकड़, पंख, कपड़े के टुकड़े, आकृतियों के कट-आउट, रंगीन वस्तुएँ या खिलौने, बटन, ब्लॉक, छोटी टोकरियाँ अथवा बक्से।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	दो-तीन रंगों के बटन आपस में मिलाकर बच्चे को दें और बच्चे को रंगों के आधार पर उनका वर्गीकरण करने दीजिए। यह गतिविधि विभिन्न आकार के बटनों के साथ भी की जा सकती है और बच्चे उन्हें आकार के अनुसार भी छाँट सकते हैं।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ 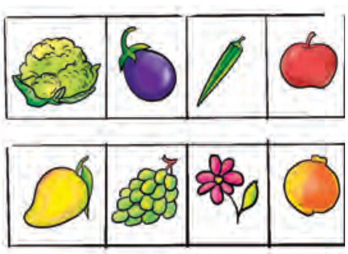	• बच्चों को वस्तुओं के कोई दो सेट दें, उदाहरण के लिए— आपस में मिले हुए पत्ते और कंकड़। बच्चों को उन्हें दो विभिन्न समूहों में छाँटने दें। • भूमि पर रहने वाले और जलीय जंतुओं के चित्रों वाले फ्लैशकार्ड दिखाएँ। बच्चों को फ्लैशकार्डों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत करने के लिए कहें। • किन्हीं चार वस्तुओं के चित्र वाली पट्टियाँ बनाइए। तीन वस्तुएँ एक प्रकार की हों, उदाहरण के लिए— सब्ज़ियाँ और चौथी वस्तु पहली तीन वस्तुओं से अलग कोई फल हो सकती है। बच्चों को यह पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करें कि इनमें से कौन-सी वस्तु अलग है। • बच्चों को घेरे में बिठाएँ। बच्चों के साथ 'चिड़िया उड़' जैसा खेल खेला जा सकता है, जहाँ एक बच्चा पक्षियों या जानवरों के नाम बोलता है और जब एक पक्षी का नाम बोला जाता है तो अन्य बच्चों को हवा में अँगुली उठानी होती है और किसी जानवर का नाम बोलते समय अँगुली को नीचे तल पर ही रखा जाता है। इस तरह वे जानवरों और पक्षियों को वर्गीकृत करते हैं।
4–5 वर्ष	• प्रकृति की सैर या किसी खेत या चिड़ियाघर यात्रा की योजना बनाएँ और यात्रा से पहले जगह के बारे में बच्चों को कुछ बुनियादी जानकारी उपलब्ध कराएँ। यात्रा के दौरान बच्चों को सामान्य रूप से अवलोकन करने दें, आनंद लेने और बात करने दें। बच्चों से यात्रा के बारे में प्रश्न पूछें। • विभिन्न प्रकार की वस्तुओं पर भी वर्गीकरण कार्ड बनाए जा सकते हैं जिन्हें उनके कार्य या उपयोग के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है, उदाहरण के लिए— कलम, पेंसिल, चॉक, चाकू, ब्लेड, कैंची, ब्रश, डस्टर आदि। इन्हें एक साथ मिलाकर बच्चों को वर्गीकृत करने के लिए दिया जा सकता है। • बच्चों को घेरे में बैठने दें। दो बार ताली और एक बार अँगुलियों से चुटकी बजाने जैसी क्रिया से प्रारंभ करें और कहें— 'जल्दी करो और मुझे गोल चीज़ों के नाम बताओ।' • बच्चों को घेरे में बैठने दें। मछलियों, पक्षियों और जानवरों के फ्लैशकार्ड दिखाएँ। उन्हें विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत करने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— पानी में रहने वाले, पेड़ पर रहने वाले और ज़मीन पर रहने वाले आदि। • 2 कप, 2 चम्मच, 2 प्लेट और 2 कटोरी जैसी 8 वस्तुएँ लीजिए और उन्हें मिलाकर एक साथ रख दीजिए। बच्चों से वस्तुओं को पहचानने और उन्हें एक साथ जोड़े में रखने को कहें। • छोटे टिन या डिब्बे लें और उन्हें आवाज़ करने वाले डिब्बे बनाने के लिए उनमें रेत, कंकड़, अनाज, कंचे आदि भर दें। अलग-अलग ध्वनि करने वाले बक्से बनाएँ। बच्चों को इनकी पहचान या सबसे कम से सबसे तेज़ ध्वनि वाले डिब्बे के रूप में करने दें।

5–6 वर्ष 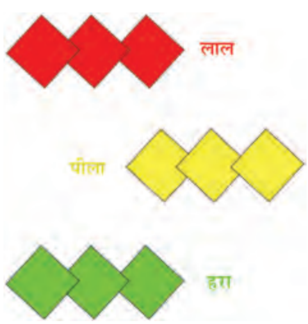 	• दो से अधिक संकल्पनाओं को शामिल करते हुए वर्गीकरण हेतु कार्ड बनाएँ, उदाहरण के लिए— कार्ड में तीन आकार, तीन रंग और तीन माप शामिल हो सकते हैं। बच्चों को अपनी इच्छानुसार किसी भी तरह से वर्गीकृत करने दें। • नौ कार्डों का एक सेट बनाएँ। नौ में से प्रत्येक कार्ड पर एक जोकर बनाएँ। पहले सेट में जोकर की तीन टोपियाँ लाल रंग की, दूसरे सेट में जोकर की तीन टोपीयाँ पीले रंग की तथा तीसरे सेट में जोकर की तीन टोपीयाँ हरे रंग की बनाएँ। इसी तरह अब जोकर की टोपियों के त्रिभुज, वर्ग और वृत्त जैसे आकार के अलग-अलग कार्ड बनाएँ। फिर गतिविधि शुरू करें। जोकर के सभी कार्डों को मिलाकर बच्चों को टोपी के रंग या आकार के आधार आदि पर जोकर का वर्गीकरण करने के लिए कहें। • बच्चों को घेरे में बैठने दें। किसी एक रंग, जैसे 'लाल' का चयन करें और लाल रंग के कपड़े पहने सभी बच्चों को केंद्र में लाएँ। फिर बच्चों को अवलोकन करने, सोचने और कारण बताने के लिए कहें कि इन बच्चों को एक साथ केंद्र में क्यों बुलाया है। • फर्श या चार्ट पेपर पर एक लंबी और एक छोटी दो रेखाएँ बनाएँ। बच्चों को अंतर करने और लंबी अथवा छोटी लाइन की पहचान करने के लिए कहें। • बच्चों के साथ एक खेल खेलें, जैसे किसी भी संकल्पना, उदाहरणार्थ— आकार, सब्जी, क्रॉकरी, जंगली जानवर आदि के अनुसार उपयोग करके वर्गीकृत करें। • बच्चों के साथ आकृतियों का एक खेल खेलें। उन्हें एक घेरे में बैठने दो। 'जल्दी करो' कहकर खेल शुरू करें, गोल-वर्गाकार चीज़ों के नाम बताएँ आदि। इसे एक लय में भी कहा जा सकता है। उसी लय में बच्चा उत्तर देता है, अर्थात एक वस्तु का नाम जो उस विशेष आकार (नींबू या स्लेट) की हो। • रंग, आकार और माप के आधार पर छँटाई के लिए बिल्डिंग ब्लॉक्स, रंगीन मोतियों (बड़े आकार) आदि का उपयोग करें। बच्चे अपने परिवेश में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ ढूँढ़ सकते हैं और उन्हें वजन के अनुसार क्रमबद्ध करें। इसी प्रकार, उन्हें फलों, जानवरों या सब्ज़ियों के चित्रों को अलग-अलग टोकरियों या डिब्बों में छाँटने के लिए प्रोत्साहित करें। • बच्चों को ज़मीन पर गिरे हुए फूल लाने के लिए कहा जा सकता है। अब बोलें 'यदि तुम एक गुलाबी फूल लाए हो तो अपना हाथ उठाओ।' उदाहरण के लिए— गुलाबी रंग के लिए 5 बच्चे हाथ उठाते हैं, तो हम बोर्ड पर गुलाबी के आगे 5 लिखें। इसी तरह पीले के आगे 2, लाल के आगे 1 लिखें आदि। इसी प्रकार बच्चों के पसंदीदा त्यौहार या खेल आदि लिखने के लिए एक टैली चार्ट बनाया जा सकता है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संख्या पूर्व संकल्पना का विकास, सृजनात्मकता और सौंदर्य विकास, सामाजिक-भावात्मक विकास, ध्यान, जिज्ञासा, तार्किक सोच एवं भाषा विकास, वर्गीकरण, पैटर्न की पहचान, सामग्री का सुरक्षित उपयोग।
अवलोकन बिंदु	वर्गीकरण की क्षमता, तार्किक सोच, सामाजिक संपर्क, भाषा विकास, सृजनात्मकता, मिलकर एक साथ काम करना, अपनी बारी लेना।

गतिविधि 2
बाहर एक दिन

आवश्यक सामग्री	यात्रा के लिए पानी की बोतल, स्नैक्स, प्राथमिक चिकित्सा किट एवं अन्य सामान
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	किन्हीं भी दो संकल्पनाओं को शामिल करते हुए वर्गीकरण कार्ड बनाएँ, उदाहरण के लिए— कार्ड में तीन आकार और तीन रंग शामिल हो सकते हैं। बच्चे को अपने मन से किसी भी तरह से वर्गीकृत करने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	स्थानीय नर्सरी का भ्रमण, विशाल पुराने वृक्ष, अपने आस-पास के जंगल क्षेत्र, कीड़े आदि का अवलोकन।
4–5 वर्ष	बच्चों को एक गाँव में ले जाएँ और उन्हें समुदाय के साथ बात-चीत करने दें, उनसे अनुभव साझा करें और उनके अनुभवों से सीखें। यदि बच्चे ग्रामीण परिवेश से हैं, तो उन्हें पास के शहर में ले जाया जा सकता है और किसी भी संस्था के अधिकारियों जैसे कि अस्पताल अथवा उद्योग आदि के साथ बात-चीत करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	स्थानीय कारीगरों, जैसे– बढ़ई, कुम्हार आदि के कार्यों के अवलोकन हेतु भ्रमण।
5–6 वर्ष	बच्चों को गाँव ले जाएँ और उन्हें एक किसान की दैनिक की गतिविधियों में हिस्सा लेने दें। साथ ही उनके सामाजिक जीवन पर बात-चीत करने और अनुभव साझा करने के लिए कहें। यदि बच्चे ग्रामीण क्षेत्र से हैं तो उन्हें शहर में किसी भी जगह, जैसे पास के लघु उद्योग के अवलोकन हेतु ले जाया जा सकता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	स्थानीय कारीगरों के पास जाएँ और उनकी एक दिन की गतिविधियों में भागीदारी करें, जैसे कुम्हार के साथ मिट्टी के काम का अवलोकन करना।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	अपरिचित लोगों की बातें सुनना और समझना, अज्ञात सामाजिक व्यवस्था में निर्देशों का पालन करना, यात्राओं के दौरान अपरिचित लोगों के साथ संप्रेषण करना, दृश्य स्मृतियों का संप्रेषण करना, वस्तुओं को समूहों में वर्गीकृत करना।
अवलोकन बिंदु	ऐसे बच्चों का अवलोकन करें, जो अपरिचित लोगों के साथ बात-चीत करते हैं, जो सवाल पूछने में पहल करते हैं और जो शांत रहकर अवलोकन करते हैं। बच्चों की ध्यान अवधि, प्राकृतिक व्यवस्था में उनकी पसंद, जैसे– फार्म सेटअप, गार्डन, पशु फार्म और प्रकृति के साथ काम करना, जैसे मिट्टी से काम करना आदि।

8.2: अपने परिवेश में, आकार और संख्याओं के सरल पैटर्न को पहचान कर उसे आगे बढ़ाना

गतिविधि
पैटर्न बनाना

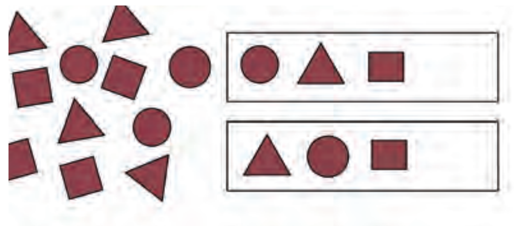

आवश्यक सामग्री	गणित अधिगम सामग्री अथवा किट, प्राकृतिक सामग्री, जैसे– बीज, पत्ते, फूल, कंकड़, पंख आदि, कपड़े के टुकड़े, आकृतियों के कट-आउट, रंगीन वस्तुएँ या खिलौने, बटन, ब्लॉक, पासा, कुजनेअर की छड़ें, जियोबोर्ड और रबर बैंड, खेलने वाली मुद्रा, तराजू, गिनती की किताबें, संख्या पूर्व संकल्पना संबंधी किताबें, ताले और चाबियाँ आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	कुछ लाल और पीले ब्लॉक लें। एक लाल ब्लॉक और दो पीले ब्लॉक से शुरू करते हुए एक पैटर्न बनाएँ। इसी प्रकार दोहराएँ और बच्चों से इसे जारी रखने के लिए कहें। उन्हें कोई एक ब्लॉक दिखाएँ और उनसे पूछें कि पैटर्न का विस्तार करने के लिए इसे कहाँ रखना है। बच्चों को पैटर्न का नियम पहचानने और बताने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	गतिविधि के लिए रंगीन मोती और एक धागा लें। एक बच्चे को पाँच हरे, पाँच लाल, पाँच नीले और पाँच पीले मनके और एक धागा दें। बच्चे को मोतियों से कोई एक पैटर्न में बनाने के लिए कहें, जैसे– हरा, लाल, नीला, और पीला और फिर अनुक्रम दोहराएँ। बच्चे से विभिन्न पैटर्न में मोती के रंग पूछें।
4–5 वर्ष	पहली बार संकल्पना का परिचय देते समय आसान पैटर्न बनवाएँ। बच्चों को दो रंगों के कागज़ की शीट दें और उन्हें कागज़ की शीट से रंगीन पट्टियाँ बनाने एवं उन्हें एक पैटर्न में रखने के लिए कहें। कागज़ की शीट से रंगीन पट्टियाँ बनाने में संकल्पना की समझ के विकास के साथ-साथ बच्चों के गतिशीलता कौशल भी विकसित होंगे।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को अलग-अलग पैटर्न में ताली बजाने दें। • कोई ऐसा खेल खेलें, जिसमें बच्चे आपके द्वारा प्रदर्शित शरीर के अंगों के संचालन से बने पैटर्न का पालन करें। उसके बाद बच्चे पैटर्न जारी रख सकते हैं और अपने स्वयं से कुछ बनाने का प्रयास कर सकते हैं। यहाँ दो उदाहरण हैं— (क) ताली बजाओ, चुटकी बजाओ, घूमो और दोहराओ। (ख) कूदो, सिर हिलाओ और अपने हाथ हवा में ऊपर करो। इसके लिए बहुत समन्वय और एकाग्रता की आवश्यकता होती है और इससे बच्चों को विभिन्न पैटर्न सीखने एवं अनुभव करने में मदद मिलेगी।

5–6 वर्ष	एक वर्गीकरण की गतिविधि आयोजित करें और बच्चे से सॉफ्ट टॉयज़ को एक समूह में रखने के लिए कहें। दूसरे समूह में ऐसे पहियों वाले खिलौने और इसी तरह अन्य गुणों के आधार पर समूह बनवाएँ। इससे बच्चों में चीज़ों में अलग-अलग गुण खोजने एवं पैटर्न खोजने की क्षमता विकसित होगी।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• सब्ज़ियों से आकार छापना— एक कागज़ पर पैटर्न छापने के लिए कमल की डंडी और भिंडी के शीर्ष भाग को काटें। पूरी भिंडी बर्बाद न करें, केवल इसका सिरा काट कर छपाई के लिए प्रयोग करें, उदाहरण के लिए— बच्चों को भिंडी के लिए लाल रंग और कमल की डंडी के लिए हरे रंग का उपयोग करने दें। अब उन्हें सब्ज़ियों के कट आउट्स का उपयोग करके पैटर्न बनाने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे– लाल रंग के 2 छापे, हरा रंग का 1 छापा, फिर से लाल रंग के 2 छापे और आगे भी इसी तरह। बच्चे को इस तथ्य से परिचित कराएँ कि पैटर्न को दोनों बढ़ाया जा सकता है। छापे की संख्या को कम या ज़्यादा करके गतिविधि को बढ़ाया जा सकता है, उदाहरण के लिए— लाल रंग के 4 छापे, हरे रंग के 3 छापे आदि। • बच्चों को 4 से 5 बच्चों के छोटे समूह में बैठा दें और उन्हें विभिन्न वस्तुओं, जैसे– पत्ते, कंकड़, फूल, पंखुड़ियाँ, माचिस की तीली, टहनियाँ आदि दें। प्रत्येक समूह को दी गई वस्तुओं से कोई एक पैटर्न बनाने के लिए कहें। बच्चों को वही वस्तुएँ दें और उन्हें क्रम पूरा करने के लिए कहें। • एक खेल खेलें, जिसमें सभी बच्चे एक गोले में बैठें। एक बच्चा यह कहते हुए शुरू करता है, 'मैं बाज़ार गया और मैंने एक प्याज खरीदा।' अगला बच्चा कहता है, 'मैं बाज़ार गया और मैंने एक प्याज़ और एक आलू खरीदा' तीसरा बच्चा उपरोक्त पंक्ति को दोहराता है और किसी दूसरी वस्तु को अपने आप जोड़ता है। यह खेल स्मृति और अनुक्रमिक सोच पर आधारित होता है। बच्चे एक समय में पाँच से सात वस्तुओं के बारे में याद कर सकते हैं। • अपने परिवेश में पैटर्न का अवलोकन एवं इंगित करना सुनिश्चित करें। उन्हें दुकान के बैनरों, कपड़ों पर, बाहर पगडंडी पर, घर के दरवाज़ों पर और तरह-तरह के पत्तों पर पैटर्न ढूँढ़ने के लिए कहें। आप भी बच्चों को पैटर्न खोजने के लिए भ्रमण पर ले जा सकते हैं और बच्चों को उनके आस-पास से पैटर्न खोजने की चुनौती दे सकते हैं • बाहर जाएँ और कुछ प्राकृतिक सामग्री इकट्ठा करें। यह सूखी टहनियाँ, फूल और पत्तियाँ आदि हो सकते हैं। एक साधारण पैटर्न बनाना शुरू करें, जैसे– पत्ती-फूल-पत्ती-फूल और बच्चों को इस पैटर्न को पहचानने और नियम का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों को पैटर्न का पालन करने एवं नियम को उसी क्रम में दोहराने दें या अपना एक अलग पैटर्न बनाने दें। • विभिन्न कार्यों को करने में शामिल चरणों के क्रम पर बच्चों के साथ चर्चा करें, उदाहरण के लिए— कपड़े धोना, भोजन तैयार करना आदि। उन्हें यह बताने के लिए प्रोत्साहित करें कि अगला कदम क्या होना चाहिए।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा विकास, सामाजिक कौशल, सौंदर्य और सृजनात्मक विकास, मांसपेशियों का सूक्ष्म समन्वय, संगीत की समझ, ध्यान एवं स्मृति, अवलोकन, नवाचार आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों के बीच पैटर्न के विविधि प्रकारों की पहचान, समूहों में काम करने की क्षमता, शब्दावली, सृजनात्मकता और सौंदर्य विकास, सहयोग, भागीदारी और आनंद का अवलोकन करें।

8.3: बीस तक गिनती गिनना

गतिविधि

गिनती सीखना

*बालवाटिका के लिए एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 में 20 तक की गिनती निर्धारित की गई है।

आवश्यक सामग्री	संख्या आधारित कविताओं अथवा गीत का संग्रह, संबंधित कहानियाँ, गिनती और तुलना के लिए प्राकृतिक सामग्री, गिनती के लिए डॉट कार्ड, डॉट डोमिनोज, दृश्य वर्गीकरण कार्ड आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–5 वर्ष (बच्चे की समझ के स्तर के अनुसार गतिविधियों की कठिनाई के स्तर बढ़ाए जा सकते हैं।)	• बच्चों से उनके आस-पास की विभिन्न वस्तुओं के बारे में चर्चा करें, जो संख्या में केवल एक, दो, तीन हैं, जैसे– सूर्य, नाक, कान, रिक्शा के पहिए आदि। कक्षा में संख्या पर आधारित कविताएँ या कहानियाँ सुनाएँ। बच्चे को क्रियाओं के साथ उन्हें दोहराने के लिए कहें।
	• बच्चे को 3–4 पत्ते एक पंक्ति में व्यवस्थित करके दें। उन्हें कुछ कंकड़ दें और उनसे पूछें कि क्या कंकड़ पत्तों पर रखने के लिए पूरे हैं? बच्चा जानने के लिए प्रत्येक पत्ते के साथ एक कंकड़ रखेगा। इससे बच्चे को तुलना करने, मिलान करने, 'एक-से-एक' मिलान करने में मदद मिलेगी। इस गतिविधि के लिए बच्चे मोती, छड़ी, बटन या स्थानीय रूप से उपलब्ध किसी अन्य सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। • नाश्ते के दौरान, बच्चों को (बारी-बारी से) एक थाली, चम्मच आदि बाँटने को कहें। • कुछ कार्ड बनाएँ, जिनमें प्रत्येक पर अलग-अलग संख्या में डॉट बने हों। बच्चे से प्रत्येक डॉट पर एक मनका लगाने के लिए कहें। • एक-दूसरे से अलग चार पक्षियों के चित्रों वाली एक पट्टी बनाएँ। मिलान के लिए चार कार्ड बनाएँ। प्रत्येक चित्र के ऊपर बच्चे को संबंधित कार्ड रखने के लिए कहें।

<table>
<tr><td></td><td>

• बच्चों को एक बड़े घेरे में बैठने के लिए कहें। एक बच्चे से गिनती शुरू करें 'एक', दूसरा बच्चा 'दो' के साथ जारी रहता है, अगला बच्चा बोलेगा 'तीन'। शिक्षक किसी भी संख्या को निर्धारित कर सकता है जैसे कि जिसे 3 मिला है वह 'तीन' के बजाय कहेगा 'चुप'। अगला वाला फिर 'एक' से शुरू करेगा। शिक्षक प्रत्येक बारी में संख्या बदल सकते हैं।

</td></tr>
<tr><td>

कम/ज्यादा

</td><td>

बच्चों को एक मंडली में खड़े होकर गाना गाने दें। घूमते एवं गाते हुए उन्हें अँगुलियाँ दिखाने को कहें। कहे अनुसार क्रियाओं को करने के लिए कहें। बाँहों को उड़ते हुए तोते की तरह फैलाएँ। कविता अथवा गीत गाएँ—

हरी नीम की डाल पर
हरी नीम की डाल पर तीन तोते थे
तीनों सोते थे
एक पटाखा फूटा,
जैसे गुब्बारा कोई फूटा
डर गए तीनों तोते,
हरी नीम की डाल से
उड़ गए तीनों तोते,
पहला तोता फुर्र
दूसरा तोता फुर्र-फुर्र
तीसरा तोता फुर्र-फुर्र-फुर्र

One Potato, Two Potatoes
One potato, two potatoes,
Three potatoes, four potatoes
Five potatoes, six potatoes,
Seven potatoes, more.
Eight potatoes, nine potatoes,
Ten potatoes then…

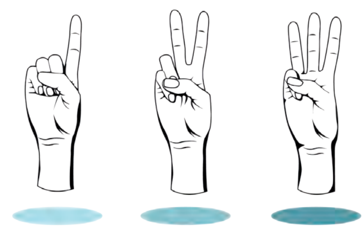

इसी तरह आगे भी आलुओं को गिनते जाएँ।

</td></tr>
<tr><td>

5–6 वर्ष

</td><td>

• कार्डबोर्ड से कार्ड के तीन सेट बनाएँ जैसे—
  - पहला सेट— अलग-अलग कार्डों पर 1 से 10 तक की संख्या के प्रतीक।
  - दूसरा सेट— अलग-अलग कार्डों पर संख्या के अनुरूप डॉट्स।
  - तीसरा सेट— अलग-अलग कार्डों पर संख्या के अनुरूप वस्तुओं के चित्र।

</td></tr>
</table>

	कार्डों को बच्चों में बाँट दें और उन्हें एक घेरे में दौड़ने दें। एक समय पर एक संख्या बोलें। जिन बच्चों के पास वह संख्या कार्ड, संख्या के अनुरूप डॉट कार्ड तथा संख्या के अनुरूप चित्र कार्ड हैं, वे बच्चे घेरे के अंदर आ जाएँगे, उदाहरण के लिए— यदि शिक्षक कहता है 'दो', यानी बच्चा जिसके पास प्रतीक 2 वाला कार्ड है, दूसरा बच्चा जिसके कार्ड में दो बिंदु हैं और तीसरा बच्चा जिसके कार्ड पर दो का चित्र है, तीनों बच्चे घेरे के अंदर आएँगे।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	तीन कार्डबोर्ड बॉक्स लें, उनमें प्रत्येक बॉक्स में अलग-अलग छोटी-छोटी वस्तुएँ रखें। बच्चों को बॉक्स में वस्तुओं को महसूस करने और गिनने के लिए कहें। केवल एक से तीन वस्तुओं से शुरुआत करें। जैसे-जैसे बच्चों के गिनने के कौशल में सुधार होता है वैसे ही वस्तुओं की संख्या बढ़ाएँ।
कम/ज्यादा	• 10 कार्ड बनाएँ, जिन पर 1–10 अंक हों। ये कार्ड बच्चों को दें और उन्हें एक घेरे में चलने के लिए कहें। ताली बजाना शुरू करें, जब आप ताली बजाते हैं, बच्चे घेरे में चलते हैं। जैसे ही आप ताली बजाना बंद करते हैं तब बच्चों को एक लाइन बनानी होती है, जिस बच्चे के कार्ड पर 1 है वह सबसे आगे रहता है उसके बाद कार्ड नंबर 2 वाला बच्चा और इसी तरह आगे। अध्यापक बच्चों को किसी भी संख्या से शुरू करते हुए एक पंक्ति बनाने के लिए भी कह सकते हैं।
गिनती वाली कविताएँ 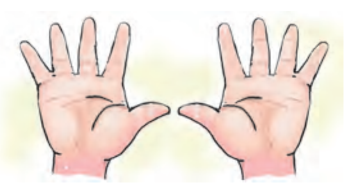	• **क्रियाओं के साथ कविता पाठ करें।** जब भी 'क्रिया बदलें' कहा जाए, तब कविता में हाथों को घुमाकर दिखाएँ जैसे कि वर्णन किया गया है— ***Ten in the Bed*** *There were ten in the bed* *and the little one said,* *"Roll over! Roll over!"* *So they all rolled over (Hold up ten fingers) (Roll hand over hand) –* *And one fell out.* *There were nine in the bed...* *There were eight in the bed...*

	There were seven in the bed... *There were six in the bed...* *There were five in the bed...* *There were four in the bed...* *There were three in the bed...* *There were two in the bed...* *There was one in the bed* *And the little one said,* *'Good Night!''.*
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा कौशल, सामाजिक कौशल, संख्यात्मक कौशल, तार्किक सोच, चकित होना, योजनाएँ, ध्यान केंद्रित करना, नवाचार करना, अन्वेषण करना और खेलना।
अवलोकन बिंदु	गिनती की क्षमता, और गति तथा सटीकता, समूह गतिविधियों में सामाजिक कौशलों, निर्देशों का पालन करने की क्षमता का अवलोकन करें।

8.4: बच्चों द्वारा 10 तक की संख्याओं को बढ़ते और घटते क्रम में व्यवस्थित करना

गतिविधि

आइए तुलना करें

*बालवाटिका के लिए एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 में 20 तक की गिनती निर्धारित की गई है।

आवश्यक सामग्री	संख्या कार्ड, संख्या कविता, संख्या कहानी, संख्या खेल,वस्तुओं की तुलना करने और व्यवस्थित करने के लिए (आयाम-आकार, लंबाई और वजन के लिए), जियो-बोर्ड और रबर बैंड, खेल मुद्रा, साधारण तुला, गिनती वाली पुस्तकें, संख्या-पूर्व संकल्पना की पुस्तकें, ताले और चाबियाँ आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों से उनके आस-पास की विभिन्न वस्तुओं के बारे में चर्चा करें, जो कि संख्या में केवल एक, दो, तीन हैं, जैसे– सूर्य, नाक, कान रिक्शे के पहिए आदि। कक्षा में संख्या पर आधारित कविताएँ या कहानियाँ सुनाएँ। बच्चों को उन्हें क्रियाओं के साथ दोहराने के लिए कहें। • बड़ा-छोटा (आकार)— बच्चों को हाथ पकड़कर एक गोला बनाने के लिए कहें। फिर कहें, 'आइए हम एक छोटा गोला बनाएँ। आइए हम एक बड़ा घेरा बनाएँ।' बच्चे एक बड़ा घेरा बनाने के लिए अपने हाथ फैलाएँगे। बच्चे गतिविधि का आनंद लेंगे तथा 'बड़ा' और 'छोटा' का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करेंगे।

	• पेड़ की ऊँचाई देखना एक गतिविधि हो सकती है, बड़ा पेड़ या छोटा पेड़, बच्चे, बड़ा लड़का या छोटा लड़का जैसी शब्दावली का उपयोग करते हैं। • अधिक-कम (मात्रा)— छोटी वस्तुओं की दो ढेरियाँ बनाएँ, जैसे– कंकड़, बटन, मोती, बीज आदि। वस्तुओं की मात्रा दोनों ढेरों में विशिष्ट रूप से भिन्न होने चाहिए। बच्चों को अधिक या कम वस्तुओं वाले ढेर की पहचान करने दें। बच्चों को गणितीय शब्दावली का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे– इस टोकरी में अधिक फल हैं और इस टोकरी में कम फल हैं आदि। • भारी-हल्का— दो वस्तुओं को हाथ में पकड़ें और तुलना करें कि कौन-सी वस्तु भारी है और कौन-सी हल्की। बच्चों को भारी और हल्की शब्दावली का प्रयोग करने को कहें।
4–5 वर्ष	• बड़ा-छोटा— बच्चों को वस्तुओं को तीन स्तरों तक क्रम में व्यवस्थित करने दें और उन्हें नाम दें। • अधिक-कम (मात्रा)— छोटी वस्तुओं, जैसे– कंकड़, बटन, मोती, बीज, आदि की दो ढेरियाँ बनाएँ। वस्तुओं की संख्या में दोनों ढेर विशिष्ट रूप से भिन्न होने चाहिए। बच्चों को अधिक या कम वस्तुओं वाले ढेर, टोकरियों, समूहों की पहचान करने दें और शब्दावली— 'अधिक या कम' का उपयोग करने के लिए कहें और बाद में उन्हें कम-से-कम तीन या चार स्तर तक सबसे कम से सबसे ज़्यादा के रूप में क्रमबद्ध करने को कहें। सबसे ज़्यादा से सबसे कम की व्यवस्था करते समय, बच्चों को गणितीय शब्दावली का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए— इस थाली में लड्डू ज़्यादा हैं, इस थाली में लड्डू दूसरी थाली से कम हैं, इस थाली में लड्डू सबसे कम हैं आदि। • भारी-हल्का— दो वस्तुओं को हाथ में पकड़ें और तुलना करें कि कौन-सी भारी है और कौन-सी हल्की तथा 'भारी' और 'हल्की' शब्दावली का प्रयोग करें। एक और वस्तु जोड़ें और फिर उन्हें भार के अनुरूप तीन स्तर तक क्रमबद्ध करने को कहें तथा क्रम को गणितीय शब्दावली— 'यह सबसे भारी है, यह इससे हल्का है और यह सबसे हल्का है' का उपयोग करके वर्णन करें। प्रत्येक पूर्व-गणितीय संकल्पना के लिए तीन से चार कार्ड शामिल हो सकते हैं, जो उस विशिष्ट संकल्पना में चार स्तरों के उन्नयन को दर्शाता है।
5–6 वर्ष 	• बड़ा-छोटा (आकार)— बच्चों को वस्तुओं को आकार के अनुरूप क्रम से लगाने दें और उन्हें नाम देने के लिए कहें। • लंबी-छोटी (लंबाई)— बच्चों को वस्तुओं को लंबाई के अनुरूप क्रम में रखने दें और उन्हें लंबा, उससे लंबा, सबसे लंबा या छोटा, उससे छोटा, सबसे छोटा नामांकित करें। • अधिक-कम (मात्रा)— बच्चों को प्रकृति की सैर पर ले जाएँ और कंकड़, टहनियाँ, रैपर और पंख जैसी कुछ चीज़ें इकट्ठा करने को कहें। एक सफेद या ब्लैकबोर्ड पर प्रत्येक चीज़ की गिनती करने के लिए हर नाम के सामने मिलान चिह्न बनाएँ। अब बच्चों से किसी वस्तु का अनुमान लगाने को कहें कि किस वस्तु को सबसे ज़्यादा

	जमा किया गया है? कौन-सी वस्तु सबसे कम एकत्र की गई है। कौन-सी वस्तु संख्या में पंखों से अधिक है, परंतु कंकड़ों से कम है? कौन-सी दो वस्तुओं को एक साथ रखने पर संख्या दस से अधिक होगी? • भारी-हल्का— दो वस्तुओं को हाथ में पकड़ें और तुलना करें कि कौन-सी भारी है और कौन-सी हल्की, और 'भारी' एवं 'हल्की' शब्दावली का प्रयोग करें। एक और वस्तु जोड़ें और उन्हें तीन स्तर तक भार के अनुरूप क्रम में क्रमबद्ध करें। गणितीय शब्दावली का उपयोग करके वर्णन करें– 'यह ब्लॉक सबसे भारी है, यह ब्लॉक इस ब्लॉक से हल्का है और यह ब्लॉक सबसे हल्का ब्लॉक है।'
मिलती-जुलती गतिविधियाँ 	• अलग-अलग वस्तुओं को अपने हाथ में पकड़कर वजन की तुलना करने का अभ्यास करें। वस्तुओं के भार की सीधी तुलना करें। • गैर-मानक इकाइयों का उपयोग करके मापें। • वास्तविक जीवन की समस्या समाधान गतिविधियों का प्रयास करें। • प्रत्येक पूर्व-गणितीय संकल्पना के लिए पाँच कार्ड शामिल हो सकते हैं, जो उस विशिष्ट संकल्पना के उन्नयन के पाँच स्तरों को दर्शाता है। बच्चों को गणितीय शब्दावली का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। • माप की शब्दावली विकसित करने में बच्चों की मदद करें और उससे लंबा, छोटा, चौड़ा, भारी और हल्का जैसे शब्दों का प्रयोग करते हुए तुलना करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	पूर्व-गणितीय संकल्पनाएँ, भाव, अवलोकन, वर्गीकरण, प्रयोग, अन्वेषण, भाषा विकास, तार्किक सोच, अनुमान आदि।
अवलोकन बिंदु	• चर्चा करें कि चीज़ों को कैसे मापा जाता है। • मुक्त प्रश्न पूछें जैसे– 'आप कैसे जानते हैं?', 'क्या आप मुझे उसके बारे में और अधिक बता सकते हैं?', 'हम वस्तुओं को मापने के लिए क्या उपयोग कर सकते हैं?' • बच्चों को मापने में व्यस्त रखें, 'जिन गेंदों से हम खेलते हैं क्या हम उनका आकार माप सकते हैं?', 'हम किस तरह से दो गुड़ियों की ऊँचाई की तुलना कर सकते हैं?'

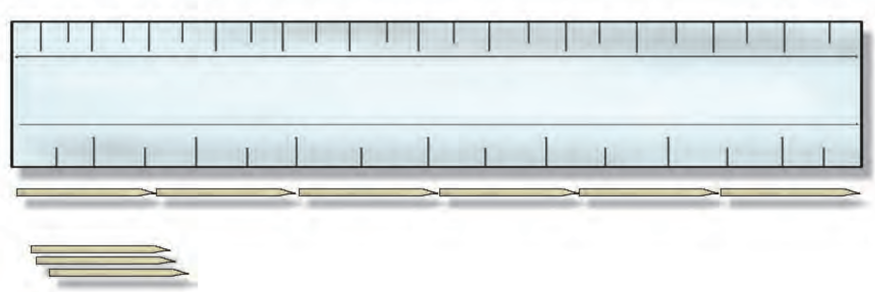

8.5: दशमलव मान प्रणाली को समझते हुए 20 तक की संख्याओं को बताने के लिए अंकों की पहचान और उपयोग करना

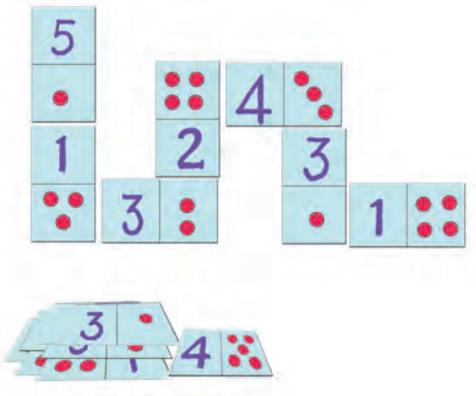

गतिविधि

संख्यांक सीखें

(9 तक की संख्याओं की तुलना करना)

आवश्यक सामग्री	संख्या कार्ड, संख्या वर्कशीट, संख्या डोमिनोज, संख्या कैलेंडर, गिनने की वस्तुएँ, संख्याएँ लिखने के लिए लेखन उपकरण, संख्या खेल (इनडोर और आउटडोर दोनों), जियोबोर्ड और रबर बैंड, खेल मुद्रा, साधारण तुला, गिनती की पुस्तकें, संख्या-पूर्व संकल्पना की पुस्तकें, ताले और चाबियाँ आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–5 वर्ष 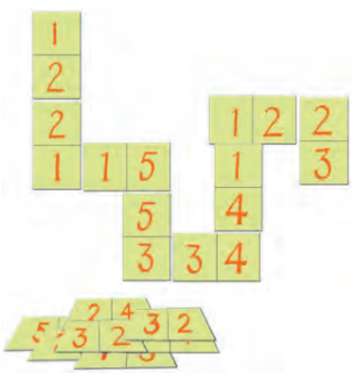	• इस आयु वर्ग के लिए कोई औपचारिक लेखन का सुझाव नहीं दिया गया है। • 'बोलो भाई कितने' (बताओ कितने?)— शिक्षक बच्चों को एक बड़े घेरे में खड़ा करता है। (वे चारों ओर घेरे में धीरे-धीरे चल सकते हैं।) शिक्षक बोलते हैं, ''बोलो भाई कितने'' बच्चे कहते हैं, ''आप बोलो जितने''। तब शिक्षक एक संख्या बोलता है, मान लीजिए 4 बच्चे, अब 4 बच्चों का एक समूह बनाते हैं। जो समूह नहीं बना सके, मिलकर कोई कविता गाएँ या कोई भी अपनी पसंद की क्रिया करें। शिक्षक द्वारा हर बार अलग संख्या बोलकर प्रक्रिया को दोहराया जा सकता है। • जैसा कि पहले सुझाव दिया गया है संख्या पर आधारित कविता गाएँ और अधिक संख्या में संख्या कविताएँ एकत्र करें। • गोल घेरे चर्चा (सर्किल टाइम) के दौरान संख्या कैलेंडर का प्रयोग करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे जानवरों या पक्षियों के पैरों की संख्या बता सकते हैं, जिन्हें उन्होंने देखा है। उदाहरण के लिए— **पशु-पक्षी** **पैरों की संख्या** कबूतर 2 मेंढक 4 बच्चों से पूछें, यदि एक कबूतर के दो पैर होते हैं, तो दो कबूतरों के कितने पैर होते हैं? बच्चों को कीड़ों, दूसरे अन्य पक्षियों आदि के बारे में बताने के लिए प्रोत्साहित करते रहें।

<table>
<tr><th>5–6 वर्ष</th><th>गतिविधि का संचालन कैसे करें?</th></tr>
<tr><td>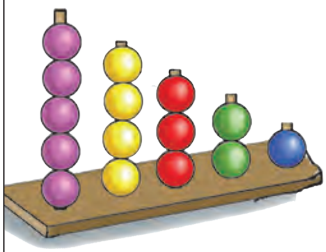</td><td>

- कुछ तार अथवा धागे और कुछ मनके लें। बच्चों को समूहों में बिठाएँ और उनमें से प्रत्येक को एक तार या धागा और कुछ मोती दें। उन्हें माला पिरोने के लिए कहें। अब एक यादृच्छिक संख्या बोले, जैसे 5 और बच्चों को बोली गई संख्या के अनुसार मोतियों की संख्या मिलान करने के लिए मोतियों को निकालना या जोड़ना पड़ता है।
- बच्चों को कक्षा में अपने आस-पास अवलोकन करने के लिए कहें और दी गई तालिका को पूरा करने के लिए कहें।
- उदाहरण के लिए— वस्तुओं की संख्या लिखें—

<table>
<tr><th>वस्तुओं का नाम</th><th>वस्तुओं की संख्या</th></tr>
<tr><td>गेंद</td><td>2</td></tr>
<tr><td>मेज</td><td></td></tr>
<tr><td>कुर्सियाँ</td><td></td></tr>
</table>

- संख्याओं के अनुसार कूदने जैसा कोई खेल खेलें।
- संख्या पहचान से संबंधित खेल खेलें।
- बच्चों को संख्याओं को छाँटने दें जैसे सभी '2' एक साथ।
- संख्या की कहानियाँ बनाएँ।
- बच्चों से संख्या पहचानने और दिखाई गई संख्या के अनुसार ठोस वस्तुएँ, जैसे– कंकड़, मोती आदि रखने को कहें।

</td></tr>
<tr><td>अन्य संवर्धित दक्षताएँ</td><td>

- संवेदी धारणा में वृद्धि, दृश्य स्मृति, हाथों और अँगुलियों के साथ काम करने में सटीकता और नियंत्रण, सहयोग, समझ, काम करने की इच्छा आदि का विकास।

</td></tr>
<tr><td>अवलोकन बिंदु</td><td>

- देखें कि बच्चे 9 तक की संख्या की संकल्पना को कैसे समझते हैं, देखें कि क्या वे संख्या के साथ ठोस वस्तुओं की सही संख्या का मिलान कर सकते हैं।
- गणित की भाषा का उचित प्रयोग करते हैं।

</td></tr>
</table>

8.6: विभिन्न तरीकों से 2-अंकीय संख्याओं का समूहन एवं पुनर्समूहन कर जोड़ना और घटाना

गतिविधि

संख्याओं से खेल

आवश्यक सामग्री	गिनती के लिए अधिगम सामग्री, खिलौने और जोड़ने एवं गिनने के लिए अन्य सामग्री
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को गतिविधि क्षेत्रों विशेष रूप से छोटे समूहों में खेलने के अवसर दें और उन्हें खेल सामग्री साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें। उनके द्वारा उपयोग की जा रही गणितीय शब्दावली का अवलोकन करें, उदाहरण के लिए— 'कृपया मुझे एक और ब्लॉक दें, मेरे पास केवल दो हैं।', 'आप मेरी ओर से एक पीला ब्लॉक लें, मेरे पास दो पीले ब्लॉक हैं...।' बच्चों के खेल से ये अवलोकन बच्चों की प्रगति को जानने तथा जोड़ना और घटाना सीखने (उनके खेल सेट अप में) के साथ उसी समय शिक्षक की योजनाओं और अभ्यासों को संशोधित करने में सहायक होंगे।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• इस संकल्पना के लिए भोजन के समय का उपयोग करें। • सरल संख्या-आधारित कहानियों और कविताओं का उपयोग करें, उदाहरण के लिए— कविता गाएँ। *One little monkey jumping on the bed,* *One more monkey joined and* *Now there are two monkeys* *jumping on the bed.* (कविता को जोड़ते रहें और बच्चों को क्रिया के दौरान संगीत और अभिनय गतिविधि करने दें।)
4–6 वर्ष	• गोल घेरे में चर्चा और खेल गतिविधियाँ जहाँ शिक्षक फलों आदि जैसी वस्तुओं का उपयोग करके सरल प्रश्न करता है और पूछता है 'मेरे पास 2 केले हैं और सरला के पास 3 केले हैं।' यदि हम सभी एक साथ एक टोकरी में रखते हैं, और गिनते हैं, बताओ कि टोकरी में कितने केले हैं?'

	• दुकानों के साथ एक बाज़ार जैसा क्षेत्र स्थापित करें और बच्चों को 'बाज़ार' खेलने दें और अवलोकन करें और सुनें कि बच्चे विशेष रूप से जोड़ने, घटाने या गिनने और पैसे के उपयोग के लिए किस शब्दावली का उपयोग करते हैं। सरल घटाव पर गाने गाएँ, जैसे– *Five little ducks went out to play* *Over the hills and far away* *Mamma duck called quack-quack-quack* *Four little ducks came back- back- back.* (बच्चों के साथ गाना गाते समय संख्या कम करते रहें, बच्चों को इसे अभिनय के रूप में करने को कहें और बोले गए शब्दों को दोहराने को कहें।)
मिलती-जुलती गतिविधियाँ 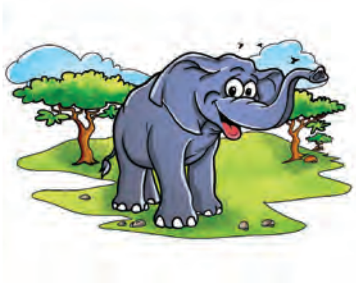	• संख्या कहानियों पर अभिनय। • अभिनय अथवा क्रियाओं के साथ कविताएँ गाएँ, जैसे– **One Elephant** *One elephant comes out to play* *Over the hills and far away* *He had such tremendous fun* *He called for another elephant to come.* *Two elephants come out to play* *Over the hills and far away* *They had such tremendous fun* *They called for another elephant to come.* *Three elephants come out to play* *Over the hills and far away* *They had such tremendous fun* *They called for another elephant to come.* *Four elephants come out to play* *Over the hills and far away* *They had such tremendous fun* *They called for another elephant to come.* *Five elephants come out to play* *Over the hills and far away* *They had such tremendous fun* *They called for another elephant to come.* (बच्चों को पाँच के समूह में बाँट दें। कविता गाएँ और उन्हें हाथी की तरह झूमने दें और अभिनय करने दें।)

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	• भाषा कौशल, समाजीकरण, टीम भावना, निर्देशों का पालन, स्वस्थ और लचीला शरीर विकसित करना, पर्याप्त शब्दों का उपयोग करना, समझना, सहयोगात्मक रूप से कार्य करना।
अवलोकन बिंदु	• बच्चे को वस्तुओं के समूह को गिनने के लिए कहें। • चित्र वाली पुस्तक पढ़ते समय, बच्चे से चित्रों में विभिन्न वस्तुओं को गिनने को कहें। • क्या बच्चा अंक 1, 2, 3, 4 और 5 (अर्थात दो गेंदों के लिए 2) को पहचानता है? • छोटी संख्याओं को जोड़ और घटा सकते हैं अर्थात एक जोड़ एक बराबर होता है दो।

8.7: गुणन को बार-बार जोड़ के रूप में और भाग को समान विभाजन के रूप में पहचानना

गतिविधि
गिनती और जोड़

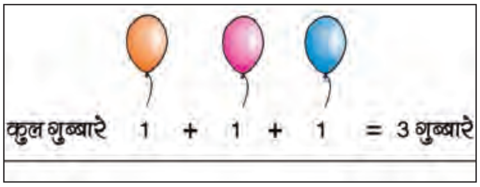

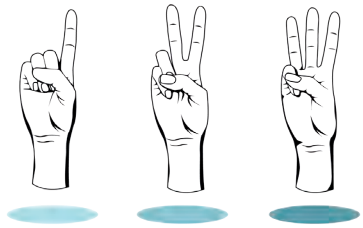

आवश्यक सामग्री	गिनने के लिए वस्तुएँ, क्रेयॉन, फल, मिठाइयाँ आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष 	**सरल जोड़ पर आधारित कविता गाएँ :** **(यह बुनियादी अवस्था के सभी आयु समूहों के साथ किया जा सकता है।)** **Number March** *One child marches around the circle* *March, March, March* *One child marches around the circle* *Now let's have two.* *Two children march around the circle,* *March, March, March* *Two children march around the circle* *Now let's have three.* *Three children march around the circle,* *March, March, March* *Three children march around the circle* *Now let's have four.* *Four children march around the circle,* *March, March, March* *Four children march around the circle* *Now let's have five.* *(keep on adding the number and verse)*

	किसान अपने खेत में काम कर रहा है। किसान अपने खेत में काम कर रहा है। किसान ने अपनी पत्नी को बुलाया दोनों मिलकर खेत में काम कर रहे हैं। किसान अपने खेत में काम कर रहा है किसान ने अपने बेटे को बुलाया तीनों मिलकर खेत में काम कर रहे हैं। किसान अपने खेत में काम कर रहा है। किसान ने अपनी बहु को बुलाया चारों मिलकर खेत में काम कर रहे हैं। (संख्याओं को जोड़ते रहें और छंद जोड़ते रहें, उदाहरण के लिए— घरेलू पशु 'गाय' को परिवार के पाँचवें सदस्य के रूप में जोड़ें और सभी पाँच खेत में काम कर रहे हैं… और इसी तरह आगे जोड़ते जाएँ।
	• बच्चों को एक बाल्टी दें और उसमें दो लाल गेंदें और दो पीली गेंदें डालें। फिर दूसरों से गेंदों की संख्या गिनने के लिए कहें और जोर से पूछें 'कितनी गेंदे'? • फल दिवस के लिए समुदाय की मदद से फलों की व्यवस्था करें; फल दिवस पर कक्षा में बच्चे बारी-बारी से सभी बच्चों को केला या संतरा बाँटते हैं। • कोलाज बनाते समय बच्चों को आपस में रंगों को समान रूप से बाँटने दें। • बच्चों को दोस्तों में मिठाई बराबर-बराबर बाँटने दें। • प्रश्न पूछें जैसे 'यदि दो केले हैं और दो सेब हैं, गिनकर बताओ कि कुल कितने फल हैं?'
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	आप बच्चों को रद्दी कागज़ों या अखबारों को मोड़कर पहले कागज़ की गेंदें बनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं और फिर इसमें धागा बाँधकर एक गेंद तैयार करें। अब उछालने, पकड़ने और फेंकने के लिए DIY बॉल्स तैयार हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	समाजीकरण, भाषा कौशल, सीखने की सकारात्मक आदतें, ध्यान, समझना, रुचि दिखाना, पर्याप्त शब्द जानना, परवाह और खुशी दिखाना, स्वस्थ और लचीला शरीर विकसित करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की सक्रिय भागीदारी, गिनती की सटीकता और निर्देशों का पालन करना आदि।

8.8: बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और अवलोकन योग्य गुणों को पहचानना

गतिविधि 1

ज्यामितीय आकृतियों का वर्गीकरण और स्थिति की संकल्पना, स्थानिक संबंध

आवश्यक सामग्री	चॉक, डस्टर, डंडियाँ, मोती, पत्थर
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष 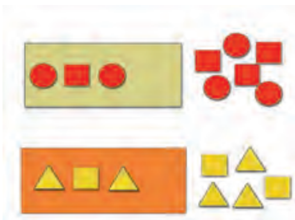	• बच्चों को चॉक और डस्टर, जन्मदिन की टोपी या एक गिलास आदि जैसी दो अलग-अलग वस्तुएँ दें और उन्हें इन वस्तुओं के बीच अंतर और समानताओं के बारे में बोलने के लिए कहें। • अपनी कक्षा को कुछ समूहों में विभाजित करें और प्रत्येक समूह को एक विशेष आकार प्रदान करें और फिर समूह को उस विशेष आकार जैसी समान वस्तु खोजने के लिए कहें। • बच्चों को विभिन्न आकारों की विभिन्न वस्तुएँ, जैसे– छड़ी, माला, पत्थर, क्रेयॉन, कार्डबोर्ड बॉक्स दें। एक छड़ी बॉक्स के ऊपर रखें, एक मनका बॉक्स के अंदर रखें, दाईं ओर कौन-सी वस्तु रखी है, छोटे डिब्बे को बड़े के अंदर रख दें आदि, जैसे शब्दों का प्रयोग कर बच्चों का मार्गदर्शन करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मक गतिक कौशल, दिशा की समझ, सामाजिक अंतर्क्रिया आदि, धाराप्रवाह बात-चीत करना, स्वतंत्र रूप से काम करना, सामग्री की विविधता के साथ अन्वेषण करना और साथ खेलना आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की ज्यामितीय आकृतियों की समझ, सटीकता से उनकी पहचान करना, निर्देशों का पालन करना आदि।

गतिविधि 2
स्थानिक समझ गतिविधियाँ

आवश्यक सामग्री	स्थानिक समझ पर आधारित कहानियाँ, संगीत और अभिनय गतिविधियाँ
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों से यह पूछें कि ये जानवर उनके घर के अंदर मिलेंगे या घर के बाहर या फिर जंगल में। शिक्षक कुछ जानवरों के नाम भी बता सकते हैं, उदाहरण— शिक्षक कहेंगे शेर, अब बच्चे जवाब देंगे– घर के बाहर या जंगल में।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक बच्चे को एक कुर्सी पर बैठने के लिए कहें। फिर दो बच्चों को एक साथ उसी कुर्सी पर बैठने के लिए कहें। फिर तीन बच्चों के साथ प्रयास करें। जो हुआ उस पर चर्चा करें, क्या इन तीनों को एक ही कुर्सी पर समायोजित करना आसान था? क्यों या क्यों नहीं?
4–5 वर्ष	स्थानिक शब्दों का प्रयोग करें और बच्चों को विभिन्न वस्तुओं के चित्र बनाने को कहें, जैसे– पेज के ठीक मध्य में पेड़ पर बैठा हुआ एक पक्षी और पेड़ के नीचे एक घर बनाएँ। (इसके अलावा शिक्षक बड़े-छोटे, लंबे-छोटे जैसे शब्दों का प्रयोग भी कर सकते हैं।)
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों से इस तरह के प्रश्न पूछें, "आपके सबसे नजदीक कौन बैठा है?" "आपसे सबसे दूर कौन बैठा है?" आपके लंच बॉक्स के अंदर क्या है, नाम बताएँ; बॉक्स के अंदर एक मोती डालें; अपनी गर्दन से ऊपर शरीर के दो अंगों के नाम बताएँ; अपनी गर्दन से नीचे के शरीर के एक अंग का नाम बताएँ। • दो बच्चों को कम ऊँचाई पर एक रस्सी पकड़ने दें और दूसरे बच्चों को एक-एक करके उस रस्सी के नीचे रेंगने को कहें और वापस आने को कहें। बच्चों को खाली जगहों में रेंगने जैसी सरल गतिविधियों का आनंद लेने दें, उदाहरणार्थ— मेज के नीचे बेंच के नीचे, आदि। अधिक और कम जगह की संकल्पना इसी प्रकार स्पष्ट होगी।
5–6 वर्ष	• विभिन्न आकृतियों या चित्रों की रूपरेखा बनाइए और बच्चों को चित्रों को क्रेयॉन से रँगने के लिए कहें। उन्हें दी गई रूपरेखा के भीतर रंगने के लिए प्रोत्साहित करें। रंग भरने के दौरान 'अंदर' और 'बाहर' जैसे शब्दों पर बल दें। • बच्चों को अलग-अलग दिशाओं में मुँह करके एक पंक्ति में खड़े होने के लिए कहें। एक दिशा दाएँ या बाएँ कहें और बच्चों को उस दिशा में कूदने के लिए कहें। चूँकि हर कोई यादृच्छिक (Randomly) रूप से अलग-अलग दिशाओं में मुँह करके एक पंक्ति में खड़ा है, इसलिए सभी के पास कूदने के लिए सापेक्ष दिशाएँ होंगी।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	शिक्षक, अलग-अलग स्थितियों पर समान वस्तुओं वाले चित्र कार्ड बना सकते हैं जैसे एक पेड़ पर पक्षी है, जबकि दूसरा पक्षी पेड़ के नीचे बैठा है। शिक्षक स्थितियों में अंतर पूछ सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	स्थूल और सूक्ष्म गत्यामक कौशल, दिशा की समझ, सामाजिक अंत:क्रिया, सीखने की सकारात्मक आदतें, विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं का संप्रेषण और सराहना करना, कल्पनाशील रूप से काम करना, समझना आदि।
अवलोकन बिंदु	दिशा का बोध जिसे बच्चे समझ गए हैं, गत्यात्मक कौशल, सामाजिक मेल-जोल, आनंद आदि।

8.9: तत्काल परिवेश में वस्तुओं की लंबाई, भार और आयतन का सरल माप जानना

गतिविधि 1

संख्या-पूर्व संकल्पनाएँ सीखना

आवश्यक सामग्री	विभिन्न प्रकार की गेंद, कंकड़, पत्ते, रेत, पेपर कप, पेंसिल, तराजू, रूमाल आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	भारी-हल्का— बच्चों को तरह-तरह की वस्तुएँ दें, उदाहरण के लिए— टेनिस की गेंदें, रुई के गोले, कंकड़, पत्ते आदि और उनमें कौन सा भारी या हल्का है, पहचानने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को प्रकृति भ्रमण पर ले जाएँ और उनसे इस तरह के सवाल पूछें कौन सा पेड़ मोटा है और कौन सा पतला है? इस तरह आप– पेड़ों को बड़े और छोटे समूह में वर्गीकृत करने के लिए पूछें, क्या आप ऐसा कोई पेड़ ढूँढ़ सकते हैं जो मुझसे छोटा हो? इससे उन्हें वर्गीकरण हेतु भाषा के उपयोग करने का अवसर मिलता है। उनमें एक अवलोकन योग्य विशेषता के आधार पर वस्तुओं के वर्गीकरण करने की क्षमता का विकास होगा।
4–5 वर्ष	भारी-हल्का— बच्चों को दो अलग-अलग वजन वाली वस्तुओं को पकड़ने के लिए दें, उदाहरण के लिए— वे एक हाथ में एक छोटी-सी टहनी पकड़ सकते हैं और दूसरे में एक पत्थर तथा उनके वजन की तुलना करें। उनके सीखने के बारे में जानने के लिए सरल प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• रेत का खेल— बच्चों को अलग-अलग आकार के कंटेनर दें। एक कंटेनर को रेत से भरें और रेत को दूसरे कंटेनरों में खाली करने के लिए बच्चे को कहें। इसी तरह की गतिविधि को पानी या कंकड़ से किया जा सकता है। विभिन्न आकार के कंटेनरों में रेत के कम और अधिक मात्रा के बारे में चर्चा करें।

	• तैरना-डूबना— वस्तुएँ, जैसे– कंकड़, बोतलें, कप, पेपर, पेंसिल, स्केल, रूमाल आदि और पानी की बाल्टी या गिलास एकत्र करें और बच्चों के साथ प्रयोग करें कि कौन-सी वस्तुएँ तैरेंगी या डूबेंगी। शिक्षक प्रयोग करने से पहले बच्चों से वस्तुओं का तैरने या डूबने के संदर्भ में अनुमान लगाने को कह सकते हैं। शिक्षक, शिक्षार्थियों से यह भी पूछ सकते हैं कि वस्तुएँ क्यों तैरेंगी या डूबेंगी।
	• सरल तुला का उपयोग करके कक्षा में बाज़ार बनाया जा सकता है। बच्चे बेची जाने वाली वस्तुओं को तौलने की भूमिका निभा सकते हैं। वे मुद्रा कार्ड का उपयोग भी कर सकते हैं और एक दुकानदार और ग्राहक के बीच लेन-देन दिखा सकते हैं.
5–6 वर्ष	भारी-हल्का— बच्चों को ऐसी अलग-अलग वस्तुएँ जो भारी और हल्की हों, से प्रयोग करने दें, उदाहरण के लिए— पहले बच्चों को एक छोटी खाली बाल्टी उठाने के लिए दें। फिर उन्हें बाल्टी में कुछ पानी, रेत या कंकड़ आदि भरने दें और बच्चों को इसे फिर से उठाने दें। बच्चों की भारी और हल्के की संकल्पना को अपने शब्दों में समझाने में सहायता करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बाज़ार से संबंधित उपरोक्त गतिविधि को इस आयु वर्ग के साथ भी आयोजित किया जा सकता है। • अलग-अलग लंबाई की वस्तुएँ, जैसे– पेंसिल, किताब, पेन, बॉक्स, और बगीचे में गिरी हुई पत्तियाँ, टहनियाँ आदि एकत्र करें। बच्चों को बालिश्त से मापने को कहें। अब निम्नलिखित प्रश्न पूछें— • सबसे लंबी वस्तु का नाम बताएँ; • सबसे छोटी वस्तु का नाम बताएँ; • पूछें कि क्या किसी वस्तु की लंबाई समान है? यदि हाँ, तो उनका नाम बताएँ; • क्या कोई ऐसी वस्तु है जो एक अँगुली से अधिक लंबी हो; • गिनें कि आपने बगीचे से कितने अलग-अलग प्रकार की वस्तुएँ एकत्र की हैं ? 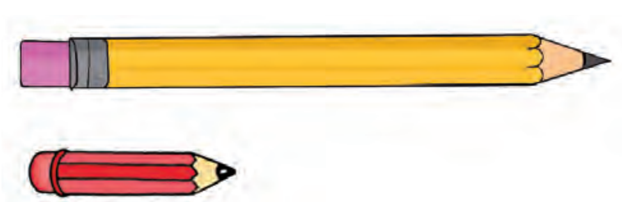
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	मौखिक अभिव्यक्ति, अवलोकन क्षमता, वर्गीकरण कौशल, प्रयोग, अन्वेषण, पैटर्न की पहचान, आदि, समझना, जानना और पर्याप्त शब्दों का प्रयोग करना, सहयोगी रूप से काम करना।
अवलोकन बिंदु	विभिन्न संकल्पनाओं को पहचानने तथा उन्हें समझाने में सटीकता का अवलोकन करें।

8.10: मिनटों, घंटों, दिन, सप्ताह और महीने में समय का सरल मापन करना

गतिविधि

समय, दिन, सप्ताह, माह को समझना

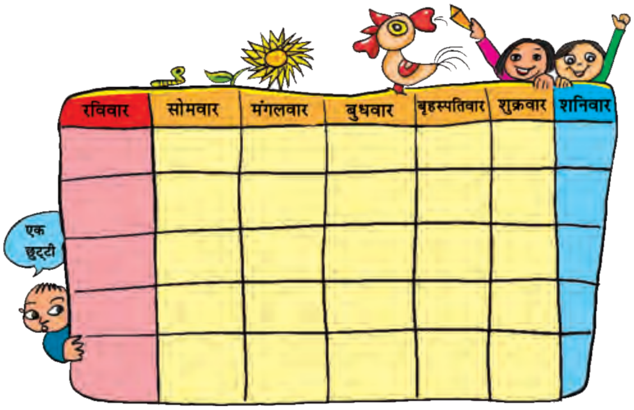

आवश्यक सामग्री	किसी विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं है।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों से उनकी दिनचर्या के बारे में पूछें कि वे स्कूल आने से पहले क्या करते हैं और घर वापस जाने के बाद सोने से पहले तक वे क्या करते हैं आदि। बात करते समय, 'पहले' और 'बाद में' जैसी संकल्पनाओं को शामिल करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों से कहें कि वे दिन के अलग-अलग समय पर जैसे सुबह, शाम, रात में जो कुछ भी करते हैं, उसका अभिनय करें। • बच्चों से अपने अनुभव साझा करने के लिए कहें, जैसे कि उन्होंने कल क्या किया; उन्होंने कल रात के खाने में क्या खाया; आज कक्षा में क्या बनाना चाहते हैं; कल कौन-सा खेल खेलना चाहते हैं।
4–5 वर्ष	बच्चे की दिनचर्या में अलग-अलग गतिविधियों को दर्शाने वाले चित्र वाले कार्ड बनाएँ, उदाहरण के लिए— उठना, दाँत साफ करना, नाश्ता करना, खेलना, स्कूल आना, सोने जाना आदि। कार्डों को मिलाएँ और बच्चे को उन्हें एक उचित क्रम में व्यवस्थित करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• तुलनीय स्थितियों में पूछें, उदाहरण के लिए— एक चित्र बनाना और एक पेंसिल को छीलना। बच्चों से पूछें "कौन-सा काम समाप्त होने में अधिक समय लगेगा।" इसी तरह चित्रों का इस्तेमाल कर के पूछें, एक बच्चा साइकिल से और दूसरा बच्चा पैदल यात्रा कर रहा है तो दोनों में से कौन पहले पहुँचेगा? • इसी प्रकार पानी का पूरा दबाव दिखाते हुए नल के नीचे बाल्टी का चित्र बनाएँ और दूसरे चित्र में कम दबाव दिखाएँ। कौन-सी बाल्टी पहले भरेगी? एक और उदाहरण—

<table>
<tr>
<td>
</td>
<td>एक चित्र एक लंबी मोमबत्ती दिखाता है और दूसरा एक छोटी मोमबत्ती दिखाता है, कौन-सी मोमबत्ती पहले बुझेगी?
• बच्चों के साथ बीते दिन, छुट्टी, विशेष अवसर या त्यौहार पर की गई गतिविधियों पर चर्चा करें।
• बच्चों को सभी के साथ एक कहानी साझा करने के लिए कहें। कहानी के क्रम के बारे में आगे चर्चा हो सकती है।
• एक डिस्प्ले बोर्ड डिजाइन करें जहाँ तारीख, महीना और मौसम चित्रित किया जाएँ।
• 'सर्कल टाइम' के दौरान, डिस्प्ले बोर्ड की ओर इशारा करें और सप्ताह के दिन के बारे में बात करें और बच्चों को दिन की पहचान करने दें, उदाहरण के लिए— उन्हें पूछें “आज कौन सा दिन है?”</td>
</tr>
<tr>
<td>5–6 वर्ष
</td>
<td>• तीन से चार घटनाओं वाली कहानी सुनाएँ तथा कहानी पूरी होने के बाद कहानी के अंत में बच्चों से कहानी में घटनाओं के घटित होने के क्रम से संबंधित प्रश्न पूछें, उदाहरण के लिए— उसके बाद क्या हुआ, पहले क्या हुआ आदि।
• बच्चों को कार्डबोर्ड से बनी एक घड़ी दें और इसके उपयोग से परिचित होने दें ।
• बच्चों को दिन की विभिन्न घटनाओं को दर्शाने वाली चित्र पुस्तक बनाने को कहें ।
• बच्चों को मिलकर घड़ी बनाने का काम करने दें।
• शिक्षक घड़ी में समय देखने का संक्षिप्त तरीका बताएँगे।
• बच्चों को उनके द्वारा बनाई गई घड़ी से कोई खेल खेलने को कहें। एक बच्चा घड़ी की सुइयों को समायोजित कर सकता है और दूसरा बच्चा बता सकता है कि घड़ी क्या समय दिखा रही है।
• कैलेंडर का उपयोग करके बच्चों से तारीख, महीने और मौसम के बारे में बात करें, उदाहरण के लिए— उनसे पूछे “आज कौन-सा दिन है?”, “कल कौन-सा दिन होगा?” और इसी तरह कुछ अन्य प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं। बच्चों को खेल गतिविधियों के माध्यम से दिन, महीना और मौसम पहचानने दें, उन्हें मौसम का अवलोकन करने के लिए खिड़की के पास या बाहर ले जाएँ।
• बच्चों का ध्यान उस महीने में उनके जन्मदिन या त्यौहारों की ओर आकर्षित करें। यदि किसी बच्चे का जन्मदिन है, तो कक्षा के अन्य बच्चों को उस बच्चे के लिए शुभकामना संदेश देने के लिए कहें।.</td>
</tr>
<tr>
<td>अन्य संवर्धित दक्षताएँ</td>
<td>अनुक्रमण में कौशल, अभिव्यक्ति क्षमता, अवलोकन क्षमता, वर्गीकरण, कहानी सुनाने का कौशल आदि, धाराप्रवाह बात-चीत करना, सरल समस्याएँ हल करना, मौखिक निर्देशों को समझना।</td>
</tr>
<tr>
<td>अवलोकन बिंदु</td>
<td>बच्चों का अवलोकन करें कि क्या उनमें समय, सृजनात्मक और सौंदर्य कौशल, कल्पना, हाथों-आँखों का समन्वय करने की कुछ समझ विकसित हुई है।</td>
</tr>
</table>

8.11: सरल लेन-देन में 100 रुपये तक का उपयोग करना

गतिविधि

मुद्रा की पहचान; सिक्के और नोट, मुद्रा का उपयोग

आवश्यक सामग्री	खेल मुद्रा– सिक्के और नोट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	अलग-अलग मूल्य के सिक्के, नोट लाएँ। सर्कल टाइम के दौरान, सभी बच्चों को मुद्रा देखने दें और इसके बारे में बात-चीत करें, उदाहरण के लिए— हमें धन क्यों चाहिए ? बच्चों को बात करने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों से सिक्कों को एक पतले कागज़ के नीचे रखने को कहें और क्रेयॉन या पेंसिल को कागज़ के ऊपर से रगड़ने को कहें।
4–5 वर्ष	बच्चे रद्दी सामग्री से वस्तुएँ बना सकते हैं और उन्हें रोलप्ले के दौरान बेचने के लिए उनकी कीमत निर्धारित कर सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• रोलप्ले से बच्चे को वास्तविकता का बोध होता है, इसलिए शिक्षक कक्षा के अंदर बाज़ार की समझ पैदा कर सकते हैं और बच्चों को दुकानदार और ग्राहक बनने के लिए कह सकते हैं। शुरुआत में वस्तुओं का मूल्य केवल 1 से 5 अंक हो सकते हैं। लेन-देन के लिए कागज़ या कार्ड के गोल कट-आउट का इस्तेमाल करें। • बच्चे मिलकर चिपकाने वाले कागज़ की छोटी पट्टी का उपयोग करके वस्तुओं पर मूल्य के साथ लेबल लगा सकते हैं। • बच्चों को मूल्य के साथ खिलौनों की सूची बनाने दें तथा उन्हें प्रदर्शित करने दें।
5–6 वर्ष	• दोपहर के भोजन के समय कक्षा को खिलौनों की दुकान में बदल दें। बच्चे खेल मुद्रा वाले सिक्के और नोट के बदले में सूची से अपना पसंदीदा खिलौना खरीदने का अभिनय कर सकते हैं।

	• विद्यालय में बाल मेले का आयोजन करें। बच्चों को नींबू पानी, अंकुरित चाट या फ्रूट चाट आदि खरीदने दें और उसका आनंद लेने दें। उन्हें छोटी रकम, मान लीजिए ₹50 सँभालने के लिए दें। बारी-बारी से मूल्य बदलकर बच्चों से नोट एवं सिक्कों में लेन-देन कराएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को सिक्कों से पैटर्न बनाने को कहें, उदाहरण के लिए, हैड, टेल , हैड, टेल , हैड, टेल आदि। • बच्चों को सिक्कों के साथ हैड और टेल का खेल खेलने दें। उन्हें गिनकर यह बताने के लिए कहें कि कितनी बार हैड या टेल मिला। • ₹1, 2, 5 और ₹10 के कुछ सिक्के लीजिए और उन्हें प्लेट में रख दें और फिर बच्चों को चुंबक दें तथा उन्हें ₹1 के सभी सिक्के चुंबक की सहायता से उठाने के लिए कहें। इसी प्रकार आगे भी अन्य मूल्य के सिक्कों के साथ गतिविधि करें। बच्चे चुंबक के साथ खेलना बहुत पसंद करते हैं। • बच्चों को पैसे इकट्ठा करने के लिए खाली पड़े डिब्बे या बोतलों की सहायता से गुल्लक बनाने के लिए कहा जा सकता है। बच्चों को ज़रूरतमंद लोगों की सहायता करना सिखाएँ। उनसे पूछें कि वे उस पैसे का क्या करेंगे?
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सामाजिक मेल जोल, भाषा कौशल, संप्रेषण, संगीत बनाना, रोलप्ले, नृत्य और अभिनय करना, पर्याप्त शब्दों को जानना और उपयोग करना, धाराप्रवाह बात-चीत करना।
अवलोकन बिंदु	• सामान के बदले में मुद्रा की संकल्पना को समझना, सिक्कों और नोटों की संकल्पना। • अवलोकन करें कि नाटकीय खेल क्षेत्र में बच्चे खेल मुद्रा का उपयोग कैसे कर रहे हैं। • क्या बच्चे भारतीय मुद्रा की पहचान करते हैं? • बचत की संकल्पना करें।

8.12: मात्रा, आकार, स्थान और माप से संबंधित संकल्पनाओं और प्रक्रियाओं को समझकर और व्यक्त करने हेतु पर्याप्त और उपयुक्त शब्दावली विकसित करना

गतिविधि 1
संख्या कविताएँ

आवश्यक सामग्री	संबंधित संख्या कविताओं का संग्रह।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को संख्या कविता सही क्रम में गाने को कहें, उदाहरण के लिए— *"Two little hands to clap-clap,* *Two little legs go tap-tap-tap,* *Two little eyes that open wide* *One little head goes side to side".*
कम-ज्यादा 	• रेत का खेल और पानी का खेल भी अधिक-कम, पूरा-खाली आदि की संकल्पनाएँ विकसित करते हैं। जैसे-जैसे बच्चे अलग-अलग पानी और रेत के कंटेनर भरते हैं और उन्हें खाली करते हैं, वैसे-वैसे ही अधिक-कम, पूरा-खाली आदि की संकल्पनाओं का विकास होता रहता है। • अधिक-कम— दो कटोरे लें और पहले वाले में 4 मोती रखें तथा दूसरे वाले में 5 मोती रखें। बच्चे को पता लगाने दें कि किस कटोरे में कम मोती हैं। • यह गतिविधि अन्य वस्तुओं के साथ आयोजित की जा सकती है। • अधिक-कम— छोटी वस्तुएँ, जैसे– कंकड़, बटन, मोती, बीज आदि के दो ढेर बना लें। दोनों ढेरों में वस्तुओं की मात्रा अलग-अलग होनी चाहिए। अधिक या कम वस्तुओं वाला ढेर बच्चों को पहचानने दें।
संख्या वाली कविताएँ 	• संख्या वाली कविता गाएँ और बच्चों को अभिनय करने के लिए प्रोत्साहित करें। *"Rabbits , Rabbits one-two -three* *Will you come and play with me?* *Camels, Camels four -five -six,* *Why do you have a hump like this?* *Monkeys, Monkeys seven, eight, nine* *Will you teach me how to climb* *When I have counted to ten* *The elephant says* *Now start again."*

सरल गणितीय समस्याएँ	• इस तरह के प्रश्न पूछें "मान लीजिए कि तीन बच्चे एक गेंद से खेल रहे हैं और एक बच्चा खेल छोड़कर थोड़ी देर के लिए बैठ जाता है, अब कितने बच्चे गेंद से खेल रहे हैं?" • बच्चों को गोले में बैठाएँ। एक बच्चा खेल शुरू करता है। बच्चा कहता है, "मैं बाज़ार गया और मैंने एक सेब खरीदा।" अगला बच्चा कहता है, "मैं बाज़ार गया और मैंने एक सेब और एक केला खरीदा।" तीसरा बच्चा कहता है, "मैं बाज़ार गया और मैंने एक सेब, एक केला और एक आम खरीदा।" इसी प्रकार से खेल जारी रहता है।
5–6 वर्ष	ऊपर वर्णित खेलों के अलावा, "पहाड़ों पर आग रन-रन-रन" जैसे खेल खेलें, जो सभी गणितीय संकल्पनाओं, जैसे– संख्याएँ, आकार, जोड़े आदि के बारे में खेला जा सकता है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संगीत और अभिनय कौशल, सामाजिक मेल जोल, भाषा कौशल, संकल्पना विकास, अपनी आवाज़, शरीर, स्थान में खेलना या अन्वेषण तथा नवाचार करना और सहयोगात्मक रूप से काम करना, ध्वन्यात्मक जागरूकता।
अवलोकन बिंदु	अवलोकन करें कि बच्चे मात्राओं के साथ कैसे काम करते हैं, समूहों या मात्रा की तुलना में वे किस तरह की शब्दावली का उपयोग करते हैं, जैसे प्रश्न पूछें, क्या आपने इन दो समूहों के बारे में ध्यान दिया? इन समूहों में क्या समानताएँ और क्या असमानताएँ हैं?

गतिविधि 2
आकृति डोमिनोज के साथ खेल

आवश्यक सामग्री	आकृति डोमिनोज, आकृति कट आउट, क्रेयॉन, पेपर
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• प्रत्येक बच्चे को एक कार्ड डोमिनोज दें। आकृति डोमिनोज में से एक रंग वाली आकृति का प्रयोग कर घेरे के बीच एक डोमिनोज रखें। वह बच्चा जिसके पास घेरे के बीच में रखे कार्ड जैसा कार्ड है आगे आकर उसे रख देगा। एक के बाद एक बाकी बच्चे उसी तरीके से अपने कार्डों का मिलान करके एक पैटर्न बना लेंगे। • बच्चों को 2–3 टुकड़ों की आकृति पहेलियाँ दें और उन्हें पहेलियों को पूरा करने के लिए प्रेरित करें। • ब्लॉक बिल्डिंग क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की आकृति के ब्लॉक रखे जा सकते हैं, जहाँ बच्चों को विभिन्न आकृति और उनके साथ वस्तुओं का निर्माण अनुभव करने और खेलने का मौका मिलता है। • बच्चों को किसी भी आकृति के ब्लॉक को पेंट में डुबाने दें और उसे कागज़ पर छापने को कहें। आकृतियों को पहचानें।

4–5 वर्ष	• आकृति खोजें— विद्यालय, आँगनवाड़ी या बालवाटिका के आस-पास भ्रमण की व्यवस्था करें और बच्चों को आकृति खोजने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे बच्चों के अवलोकन कौशल विकसित होंगे और साथ ही वे अपने आस-पास की आकृतियों से अवगत हो पाएँगे। • आकृति ब्लॉक से प्रिंट करना— बच्चों को आकृति ब्लॉक को रंग में डुबाकर कागज़ पर छापने को कहें और बच्चों को एक कोलाज बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। • जियोबोर्ड आकृतियाँ— बच्चों को जियोबोर्ड पर एक रबर बैंड का उपयोग करके विभिन्न आकृतियाँ बनाने दें और उनके द्वारा बनाई गई आकृतियों को नाम दें।
5–6 वर्ष	• बच्चों को विभिन्न प्रकार की आकृतियों की भिन्न वस्तुओं का उपयोग करके एक कोलाज बनाने को कहें। • विद्यालय या आँगनवाड़ी के आस-पास भ्रमण की व्यवस्था करें और आकृतियाँ खोजने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे बच्चों के अवलोकन कौशल के विकास और साथ ही उन्हें आकृतियों के बारे में जागरूक करने में मदद मिलेगी। • बच्चों को कुछ आकृतियों में स्वास्थ्यकर भोजन तैयार करने दें, जैसे– त्रिकोण सैंडविच, गोल ढक्कन का उपयोग करके रोटियों को काटकर पूरी बनाना आदि।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• एक अपूर्ण आकृति को पूर्ण आकार में आरेखित करना। • फ़र्श पर खींची गई अलग-अलग आकृतियों पर कूदना। • आकार के अनुसार वस्तुएँ छाँटना। • आकृतियों के कटआउट का उपयोग करके पैटर्न बनाना और बढ़ाना। • बच्चों को अपने परिवेश बालवाटिका एवं उससे अलग, दोनों जगह में आकृतियों के अवलोकन के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों को अन्वेषण हेतु कोई संकेत दें, उदाहरण के लिए— घर जाते समय उन चीज़ों की खोज करें अथवा पता लगाएँ जो गोल आकार में दिखाई देती हैं। इससे जब बच्चे तुलना करने में संलग्न होते हैं तब बच्चों को गणितीय शब्दावली विकसित करने में सहायता मिलती है। वे शब्दों को समझते हैं और उनका उपयोग करते हैं, "यह वही है ..." और "यह अलग है ..." और इसी तरह आगे जोड़ते जाएँ। • बाद में, आप इसमें प्रौद्योगिकी शामिल कर सकते हैं (घर पर वयस्कों के सहयोग से) और उस आकृति का चित्र लेने के लिए कह सकते हैं, जिसे वे देखते हैं। साथ ही हो सके तो उनका प्रिंट ले और उन्हें स्कूल और घर पर छँटाई का खेल खेलने के लिए कहें। ऐसी बुनियादी गणितीय गतिविधियों में माता-पिता को शामिल करें। • बच्चे से आकृतियों को महसूस कर, उन्हें पहचानने और नाम बताने के लिए कहें। कार्डबोर्ड से बनी आकृतियों (वृत्त, त्रिकोण और वर्ग) को थैले में अपने पास रखें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	समस्या-समाधान, महत्वपूर्ण चिंतन कौशल, सीखने की सकारात्मक आदतें, सहयोगी रूप से काम करना, नवाचार और कल्पनाशील रूप से काम करना, अन्वेषण, विभिन्न सामग्रियों के साथ खेलना।

अवलोकन बिंदु	• बच्चों की भागीदारी, विभिन्न आकृतियों के साथ जुड़ाव, अवलोकन करें कि बच्चें विभिन्न आकारों का उपयोग करके पैटर्न को कैसे बढ़ाते हैं; क्या बच्चे बुनियादी आकृतियों को सही पहचानते और नाम देते हैं, मिश्रित आकार के ब्लॉक या कट आउट द्वारा बनाई गई आकृतियों के बारे में प्रश्न पूछें, उदाहरण के लिए— आपको क्यों लगता है कि यह एक...हो सकता है? क्या वहाँ कोई आकृति का उपयोग किया जा सकता था? आप कौन-सी आकृति का उपयोग करना पसंद करते हैं? • कितने त्रिभुज अथवा वृत्त अथवा वर्ग अथवा आयत हैं? आपने यह आकृति पहले कहाँ देखी है? क्या आप घर पर भी कुछ इस तरह आकार खोज सकते हैं?

गतिविधि 3
स्थानिक संकल्पना (स्थानिक संबंध)

आवश्यक सामग्री	चित्र कार्ड एवं मूर्त सामग्री
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों के साथ सर्कल गेम खेलें। • बच्चों के साथ गीत गाएँ और गीत के अनुसार उन्हें अभिनय करने को कहें, जैसे – Let us go in-in-in Let us go out-out-out Let us now turn around. • स्वतंत्र बात-चीत, कहानी कहने और नाटकीयता स्थानिक अवधारणाओं की समझ विकसित करने और संबंधित शब्दावली विकसित करने में सहायक होती हैं, उदाहरण के लिए— शेर कुएँ में गिर गया आदि।
4–6 वर्ष 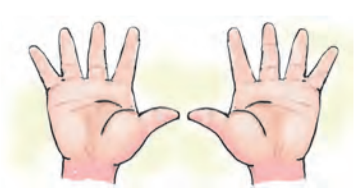	उपयुक्त क्रियाओं के साथ कविता पाठ से स्थानीय समझ एवं स्थिति की संकल्पना विकसित करने में मदद मिलती है, उदाहरण के लिए— *Put your right hand in* *Put your right hand out* *And shake it all about* *Do the boogie woogie* *and turn yourself around* *that's what it's all about!*

	• बच्चों को मेज के नीचे रेंगने जैसी सरल गतिविधियों का आनंद लेने दें आदि। • बच्चों को सरल निर्देश दें, उदाहरण के लिए— "चित्र पुस्तक यहाँ लाओ", "पुस्तक को मेज पर रखो", "सिक्का गिलास के अंदर रखो", आदि। • विभिन्न स्थितियों में रखी वस्तुओं को दर्शाने वाले चित्र कार्ड बनाएँ, उदाहरण के लिए— पेड़ के ऊपर, पेड़ के नीचे, मेज पर, 'मेज के नीचे' और बच्चों को इनका विभिन्न स्थितियों के अनुसार वर्गीकरण करने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• अवलोकन हेतु बाहरी स्थानों पर घूमने जाएँ और स्थिति एवं दिशाओं जैसे ऊपर, नीचे, आदि को समझें। • तरह-तरह के आउटडोर खेल और अभिनय वाले गाने, संगीत और अभिनय गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है, जहाँ बच्चों को मुड़ना, पलटना, आगे, पीछे करने का अनुभव करने और शब्दों को प्रयोग करने के अवसर मिलते हैं। • बच्चों को पुराने कार्टन बॉक्स, पैकेजिंग बक्से या खाली कंटेनर का उपयोग करके संरचनाएँ बनाने दें। • स्थानिक संकल्पनाओं को समझने के लिए बच्चों से बात करते समय उनकी मदद करने के लिए स्थिति संबंधी शब्दों का प्रयोग करें, उदाहरण के लिए— "आपको मेज के नीचे खिलौना बॉक्स मिलेगा।" • लुका-छिपी का खेल खेलें, जहाँ बच्चे सामान्यत: स्थानीय शब्दों का उपयोग करते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	पैटर्न बनाना, समस्या समाधान, विवेचनात्मक चिंतन कौशल आदि संवेदी धारणाओं में कुशाग्रता, दृश्य स्मृति, हाथ तथा आँखों का समन्वय विकसित करना, धाराप्रवाह बात-चीत करना।
अवलोकन बिंदु	स्थानिक संकल्पनाओं की समझ, बच्चों की भागीदारी, विभिन्न स्थितियों के लिए प्रयुक्त सही शब्दावली का ज्ञान, निर्देशों का पालन करना।

गतिविधि 4
मापन

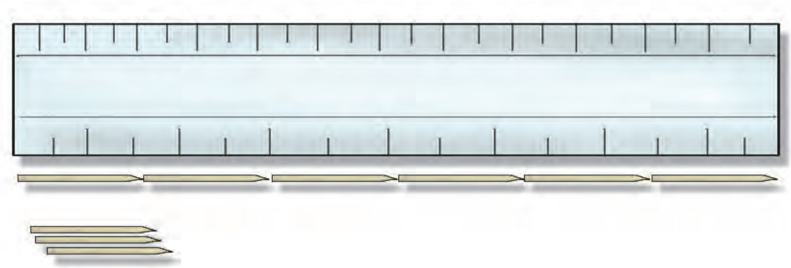

आवश्यक सामग्री	माप हेतु वस्तुएँ, खिलौने, गणित अधिगम सामग्री अथवा किट, ब्लॉक, रिबन, सुतली
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• कक्षा में उपलब्ध विभिन्न खिलौनों अथवा वस्तुओं के माप की तुलना करके शुरुआत करें।

	• गैर-मानक मापन के लिए ब्लॉकों का उपयोग करें। • बच्चों को कक्षा को मापने के लिए कदमों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें। (जब वे ऐसा कर रहे हों तो एक कविता गाएँ या संगीत बजाएँ; बच्चों को अपने शरीर को संतुलित और समन्वयित करने में सहायता मिलेगी।)
4–6 वर्ष 	• बच्चों को बालिश्त का उपयोग करके कक्षा में एक बड़ा ब्लॉक या मेज नापने दें। • बच्चों को कदमों का उपयोग करके कक्षा को मापने दें। • बच्चों को रिबन या सुतली का उपयोग करके एक-दूसरे की ऊँचाई मापने को कहें। एक बच्चे को दीवार के सहारे खड़ा होने दें और दूसरा बच्चा उस बच्चे की लंबाई नापेगा। उनकी ऊँचाई की तुलना करने में उनकी सहायता करें। • बच्चों को वस्तुओं की लंबाई, ऊँचाई, और माप के अनुसार व्यस्थित करने दें, उदाहरण के लिए— बड़ा- उससे बड़ा-सबसे बड़ा आदि। • कक्षा में वजन तौलने की मशीन रखें और बच्चों को स्वयं अपना वजन तौलने दें। • बच्चों को बाज़ार घुमाने ले जाएँ और यह अवलोकन करने के लिए उनको प्रेरित करें कि फलों या सब्ज़ियों को कैसे तौला और बेचा जाता है। उन्हें तौलने वाली मशीन का उपयोग करने दें और पता लगाने दें कि कौन-सी वस्तु भारी है और कौन-सी हल्की है। बच्चों को वस्तुओं को तौलने से पहले उनका 'भार' वजन का अनुमान लगाने के लिए भी प्रोत्साहित किया जा सकता है। • खेलने के लिए बाहर जाते समय बच्चों को उनकी लंबाई के क्रम में पंक्तिबद्ध होने दें। इससे उन्हें ऊँचे और छोटे की संकल्पना को समझने में मदद मिलेगी। • बच्चों को पत्तियों को उनके माप के अनुसार व्यवस्थित करने को कहें। • बच्चों को लंबी रस्सी की तुलना छोटी रस्सी से करने को कहें। • बच्चों को वस्तुओं की तुलना करने दें, उदाहरण के लिए— एक बड़ी बिल्ली और एक छोटी बिल्ली, एक मोटी बिल्ली और एक पतली बिल्ली आदि। • बच्चों को सरल प्रयोगों और अनुभवों के माध्यम से ऐसी चीज़ें अवलोकन करने और खोजने दें, जो भारी या हल्की हों।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को सूखे स्पंज और गीले स्पंज का वजन तौलने के लिए प्रेरित करें और अंतर का अवलोकन करने को कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संकल्पना निर्माण, भाषा कौशल, सामाजिक मेल-जोल, वस्तुओं और संबंधों की विभिन्न श्रेणियों का अवलोकन करना और समझना, देखभाल और खुशी, सार्थक बात-चीत, ध्यान दिखाना।
अवलोकन बिंदु	आस-पास की चीज़ों के बारे में उनकी जिज्ञासा का अवलोकन करें।

8.13: मात्रा, आकार, स्थान और माप से संबंधित सरल गणितीय समस्याओं को निर्मित करना

(8.12 **के अंतर्गत दी गई गतिविधियों का पालन करें, क्योंकि** 8.13 **में दी गई संकल्पनाएँ** 8.12 **में दी गई संकल्पनाओं के समान हैं।**)

पाठ्यचर्या लक्ष्य–9: बच्चों में दैनिक अंत: क्रियाओं हेतु दो भाषाओं में प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करना

9.1: सामान्य गीत और कविता सुनना एवं प्रशंसा करना

गतिविधि 1
आओ कविता गाएँ

आवश्यक सामग्री	विभिन्न छड़ी कठपुतलियाँ, हाथ की कठपुतलियाँ, खिलौने, जैसे– गेंदें, वाद्य यंत्र, गीत-संग्रह, चित्र पुस्तकें
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• कक्षा में कविता पाठ आयोजित करें। भाषा 1 और भाषा 2 में प्रचलित कविताओं को पढ़ने के लिए हाव-भाव, सहायक सामग्री एवं कठपुतलियों का उपयोग करें। उदाहरण के लिए— 'एक मोटा हाथी झूम के चला ....' कविता पाठ करते समय क्रियाओं का उपयोग करें। बच्चों को सुनने, प्रतिक्रिया देने एवं आपके साथ गाने के लिए प्रोत्साहित करें। घर एवं आस-पास के परिवेश में नियमित रूप से सुनी जाने वाली कविताओं का उपयोग करें। • अक्षरमाला पर गीत सुनाएँ।
4–5 वर्ष	• कक्षा में कविता पाठ आयोजित करें। सामग्री तैयार रखें। बच्चे को उसकी पसंद की कोई सामग्री (प्रॉप) चुनने को कहें। अपने क्षेत्र से प्रचलित कविताएँ गाएँ एवं सुनिश्चित करें कि सभी बच्चे इसे ध्यानपूर्वक सुनें। • अब उन्हें उस सामग्री से संबंधित कोई भी कविता या गीत सिखाएँ, उदाहरण के लिए— छाता प्रॉप— बच्चे गा सकते हैं 'ये रे ये रे पावसा, तुला देतो पैसा, पैसा झाला खोटा, पाऊस आला मोठा' (मराठी कविता)। बच्चों को दो-दो के समूह में बाँटें और उन्हें कविता के बारे में बात-चीत करने के लिए कहें, जैसे कि हमें वर्षा की आवश्यकता क्यों होती है? हम बारिश के पानी को बर्तन में कैसे इकट्ठा कर सकते हैं आदि। • जैसे ही बच्चे कविता से परिचित हो जाएँ, उन्हें व्यक्तिगत रूप से या समूहों में कविता सुनाने के लिए कहा जा सकता है। • बच्चे अक्षरमाला पर गीत सुना सकते हैं।

5–6 वर्ष	कक्षा में कविता पाठ आयोजित करें। बच्चों को उनकी परिचित कविताओं से एक शब्द दें। बच्चों को उस शब्द पर आधारित कविता हाव-भाव एवं क्रियाओं के साथ गाने के लिए कहें। • उदाहरण के लिए— 'भालू' तो बच्चे भालू पर कविता पाठ कर सकते हैं— 'भालू आया, भालू आया, झूम-झूमकर भालू आया' • बच्चों को अक्षरमाला पर गीत गाने के लिए कहा जा सकता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को एक पंक्ति में चलने के दौरान एवं अधिगम सामग्री को व्यवस्थित करने के दौरान कविता गाने के लिए प्रोत्साहित करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	शब्दावली का विकास, समूह समन्वयन, आत्म-विश्वास का निर्माण, रचनात्मक स्व-अभिव्यक्ति, शब्दावली का विकास
अवलोकन बिंदु	बच्चों का कविता गाते हुए अवलोकन करें। ध्यान दें कि वे कविता को पूर्ण करें, शब्दों का सही उच्चारण करें एवं आवश्यकता के अनुसार उचित क्रियाएँ करें।

गतिविधि 2
आओ गाएँ

आवश्यक सामग्री	प्रॉप्स, कठपुतलियाँ, कविता गायन के लिए प्रासंगिक वस्तुएँ
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों के साथ एक हाव-भाव वाले गीत के लिए गोल आकार में बैठें। शिक्षक एक गीत से परिचित करवाएँ। (हाथ से खाना खाते हैं, हाथ से लिखते हैं, हाथ से बहुत सारे काम करते हैं ...) शिक्षक से अंत:क्रिया के दौरान बच्चे सुनते हैं, ध्यान देते हैं एवं प्रश्न पूछते हैं। • अंत में कविता फिर से गाएँ एवं बच्चों को कविता गाने में भाग लेने के लिए कहें एवं कविता से संबंधित क्रियाओं का आनंद लेने दें।
4–5 वर्ष	• कविताओं के माध्यम से संकल्पना की समझ विकसित करें, जिससे उन्हें कविता को सुनने और समझने के लिए प्रोत्साहन पाने एवं संकल्पना के निर्माण में भी मदद मिलेगी, उदाहरण के लिए— समुदाय के सहायकों, जैसे– पुलिस, डॉक्टर, शिक्षक आदि पर कविताएँ। किसी एक सामुदायिक सहायक पर कविता गाएँ। सुनिश्चित करें कि बच्चे ध्यानपूर्वक सुनें एवं हमारे सामुदायिक सहायकों के महत्व को समझें।

5–6 वर्ष	• एक बार संकल्पना की समझ विकसित कर दी गई, तो संकल्पना की समझ को बेहतर तरीके से समझाने के लिए एक कविता गाएँ, उदाहरण के लिए— पशुओं की संकल्पना सीखने के बाद शिक्षक, बच्चों में बेहतर समझ बनाने के लिए समान विषय-वस्तु पर एक संगत कविता गाने को कह सकते हैं। • बच्चों को कविता दोहराने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें पशुओं से संबंधित प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को कक्षा में सिखाए गए विषय (थीम) से संबंधित और ज्यादा कविताएँ सुनने को कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	ध्यानपूर्वक सुनना, शब्दावली संवर्धन, आनंद के लिए सुनना, रचनात्मक सोच का प्रदर्शन, पर्यावरण जागरूकता का प्रदर्शन।
अवलोकन बिंदु	• बच्चे को कविता सुनाने को कहें एवं उनके समझ के स्तर को परखें। • हाव-भाव के साथ कविता सुनाते, गुनगुनाते हुए, कविता का आनंद लेते हुए बच्चों का अवलोकन करें।

गतिविधि 3
कविता का अनुमान

आवश्यक सामग्री	प्रॉप्स, कठपुतलियाँ, विभिन्न कविताओं के लिए चित्र
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष 	• शिक्षक, बच्चों को पशु पक्षियों की आवाज़ निकालने के लिए कह सकते हैं। यहाँ तक कि शिक्षक, बच्चों से परिचित पशु-पक्षियों और वाहनों की आवाज़ की नकल कर प्रदर्शन कर सकते हैं। • बच्चे, शिक्षक द्वारा एवं अन्य बच्चों द्वारा निकाली गई आवाज़ों को ध्यान से सुनें और सुनने के बाद ध्वनि के अंतर को पहचानें। • बच्चों को आवाज़ें निकालने दें एवं शिक्षक आवाज़ों को पहचानें, जब शिक्षक आवाज़ें निकालें, तो बच्चे आवाज़ों को पहचानें। • बच्चों के लिए सुनने की गतिविधि—शिक्षक अक्षरमाला का उच्चारण करें, बच्चे इस का अनुसरण कर सकते हैं। • वाद्ययंत्रों, जैसे– ढपली, ढोलक आदि का उपयोग करके ताल के साथ कविताएँ गाएँ। ताली बजाकर, ड्रम, घंटी, बीज, रसोई के बर्तन, चम्मच बजाकर भी ताल बनाई जा सकती है।

4–5 वर्ष	• बच्चों को दो से तीन छोटे समूहों में व्यवस्थित करें। बच्चों को किसी परिचित तुकबंदी का चित्र या प्रॉप दिखाएँ, जिसे बच्चे जानते हों। बच्चों को चित्र दिखाकर कविता का अनुमान लगाने दें एवं समूह में गाना गाने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— यदि छाता दिखाया जाता है, तो बच्चे छाते से संबंधित कविता को सोच सकते हैं व अनुमान लगा सकते हैं, जो वे पहले ही सीख चुके हैं। • बच्चों को अनेक साथियों द्वारा सरल वाद्ययंत्रों पर बनाई गई ताल पर कविता गाने के लिए कहें। वे ताली बजा सकते हैं, ढपली या ड्रम बजा सकते हैं, चम्मच या प्लेट का उपयोग कर सकते हैं।
5–6 वर्ष	• बच्चों को उनकी आँखें बंद करके बैठने दें एवं संस्कृत श्लोक का जाप करने दें, जैसे– 'मातृ देवो भव:, पितृ देवो भव:, आचार्य देवो भव:'। • उन्हें अक्षरमाला से संबंधित कविताएँ गाने के लिए कहें। • बच्चों को विशेष तरीके से ध्वनि निर्मित करने के लिए कहें, उदाहरण के लिए– शिक्षक 3 बार ताली बजाते हैं, तो बच्चे ताल को सुनते हैं एवं समान लय में ला-ला-ला या मा-मा-मा गाते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• शिक्षक, बच्चों की परिचित कविता को आधी-अधूरी गा सकते हैं और बच्चों को उसे पूरा करने के लिए कह सकते हैं। • बच्चे के आस-पास के प्राकृतिक परिवेश में कविता के बारे में अंदाजा लगाने हेतु विभिन्न व्यवस्थाओं का उपयोग करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	शब्दावली संवर्धन, विचार-कौशल, ध्यान देना, बात-चीत, रचनात्मकता, शारीरिक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चे सरल श्लोक दोहराते हैं, श्लोक की ओर ध्यान लगाते हैं एवं कविता या श्लोक के बारे में बात-चीत करते हैं।

9.2: सरल गीत एवं कविताएँ लिखना

गतिविधि 1

आओ गाएँ

आवश्यक सामग्री	प्रॉप्स एवं कठपुतलियाँ, पेंसिल, कविता की किताब
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को एक गोले में बैठने के लिए कहें। एक कविता पाठ शुरू करें, जो मजेदार हो और बच्चे इसे दोहराएँ, उदाहरण के लिए— कहें 'pick up, pick up pencil, pick up, pick up pen..' फिर बच्चों को कविता में नए शब्द 'pick up ball, and pick up book...' जोड़कर इसे बढ़ाने को कहें। एक बच्चा इसे बढ़ाकर कह सकता है। • एक खेल खेलें— उदाहरण के लिए स्वर ध्वनियों के साथ बारहखड़ी का उच्चारण करें। क का कि की कु कू के कै को कौ.... ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ...... ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ....
4–5 वर्ष	• बच्चों के साथ एक गीत गाएँ एवं उन्हें तुकांत शब्द बनाने को कहें। चाहें वे सार्थक हों या निरर्थक। उन्हें स्वयं से अपनी कविता बनाने दें एवं उन्हें तुकांत शब्द ढूँढने के लिए कहें। आप भी एक कविता चुन सकते हैं, जहाँ उन्हें दैनिक जीवन से जुड़े जैसे स्वास्थ्य या सफाई से संबंधित विचार निर्मित करने हों। आपके सहयोग एवं निर्देशन में बच्चे एक गीत बना सकते हैं जैसे कि— *सुन-सुन सुन भाई कानों से सुन* *देख देख देख भाई अपनी आँखों से देख* *सूँघ सूँघ अपनी नाक से सूँघ* • स्वर ध्वनियों के साथ व्यंजन मिलाने का एक खेल खेलें— क का कि की कु कू के कै को कौ.... ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ...... ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ....
5–6 वर्ष	• बच्चों को दो से तीन के समूहों में व्यवस्थित करें। उन्हें शब्दों की पुनरावृत्ति वाली व कविता हाव-भाव व मुद्राओं के साथ गाने के लिए कहें। • उन्हें अपने आप ही कुछ बदलाव के साथ कविताएँ बनाने के लिए कहें। • एक खेल खेलें— बच्चों को स्वर ध्वनियों के साथ व्यंजन मिलाने के लिए कहें। क का कि की कु कू के कै को कौ.... ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ...... ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ....

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	पुनरावृत्ति के साथ विभिन्न कविताओं का उपयोग करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	ध्वनि एवं ध्वनि स्वरूपों में अंतर करते हैं, विभिन्न भावनाएँ पहचानते हैं, सहज रूप से अंत:क्रिया करते हैं, सरल गीत बनाते हैं, प्रभावी रूप से शब्दों को जानते एवं उपयोग करते हैं, ध्वन्यात्मक जागरूकता विकसित होती है, स्वस्थ व लचीला शरीर विकसित होता है, अन्य बच्चों एवं बड़ों के साथ अंत:क्रिया करते हैं।
अवलोकन बिंदु	• बच्चों का उनके द्वारा बनाई गई कविताओं के आधार पर अवलोकन करें। • बच्चे जानी-पहचानी कविताओं से तुकांत शब्दों को पहचानते हैं, नए तुकांत शब्द बनाते हैं एवं कविता का आनंद लेते हैं।

गतिविधि 2
तुकांत शब्द

आवश्यक सामग्री	कविता की पुस्तक, कविता का चार्ट, कविता से संबंधित प्रॉप्स
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• शिक्षक तुकांत शब्दों वाली कविताएँ सुनाते हैं। • बच्चे कविता सुनने का आनंद लेते हैं, एवं शिक्षक के साथ गाकर सहभागिता करते हैं : स्वच्छ बाल, स्वच्छ आँखें, स्वच्छ दाँत, स्वच्छ मुँह, स्वच्छ नाक, स्वच्छ कान, स्वच्छ हाथ, स्वच्छ पैर • बच्चे कविता को आगे बढ़ाने के लिए शरीर के अन्य अंगों के नाम जोड़ सकते हैं।
4–5 वर्ष	• तुकांत शब्दों वाली कविताएँ गाएँ। • बच्चे कविता में तुकांत शब्दों के समूह पहचानते हैं। बच्चे, शिक्षक के साथ कविता गाते हैं एवं सहभागी बनते हैं। काला मोटा भालू आता झूम-झूमकर नाच दिखाता शहद जहाँ भी है वह पाता झट-से उसको चट कर जाता • तुकांत शब्दों से एक कविता बनाएँ— वन,जन, तन,मन,धन चढ़, बढ़, पढ़ लाल बाल ताल

5–6 वर्ष	शब्द खेल— एक शब्द बोलें। बच्चों को उस शब्द से मेल खाते विभिन्न तुकांत शब्द पहचानने दें, फिर बच्चे उन तुकांत शब्दों से एक कविता बनाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	समान तुकांत वाली वस्तुओं के नाम संग्रह करें या चित्र बनाएँ एवं जोड़े बनाएँ, उदाहरण के लिए— दुलारा-तारा, दल-बल आदि।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	तार्किक सोच की दक्षता, शब्दावली संवर्धन, लघु कविताएँ बनाना, नए तुकांत शब्द बनाना, ध्वनि एवं ध्वन्यात्मक पैटर्न में अंतर करना, अन्य बच्चों के साथ सहजातापूर्वक अंत:क्रिया करना, समझना एवं सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देना।
अवलोकन बिंदु	• बच्चों को नए तुकांत शब्द बनाने में उनके योगदान के आधार पर अवलोकन एवं आकलन करें। • बच्चे कविता में तुकांत शब्द पहचानने में सक्षम हैं; कविता में नए तुकांत शब्द बनाने में सक्षम हैं।

गतिविधि 3
अक्षरों का खेल

आवश्यक सामग्री	संदूक या डिब्बा, भिन्न बनावट वाले अक्षर
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	एक बॉक्स में वस्तुओं के चित्र रखें। बच्चों को एक बार में एक चित्र बाहर निकालने दें और इसका नाम व इसके नाम की शुरुआती ध्वनि बताने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	• एक बॉक्स में भिन्न बनावट वाले अक्षर रखें। बच्चे को एक बार में एक अक्षर बाहर निकालने दें एवं इसका नाम, इसका उच्चारण और इस अक्षर से एक शब्द बनाने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— अक्षर का नाम 'ब', उच्चारण 'ब', शब्द बस। • खेल - बच्चों को दिए हुए शब्दों के तुकांत शब्द बनाने को कहें।
5–6 वर्ष	स्मृति का खेल खेलें। बच्चों को एक गोले में बैठने दें एवं बीच में समान तुकांत वाली कम-से-कम तीन वस्तुएँ रखें, उदाहरण के लिए— गाल, बाल, माल या आलू, भालू, बालू या ककड़ी, लकड़ी, मकड़ी। वस्तुओं को एक कपड़े से ढँक दें। सबको अपनी आँखें बंद करने के लिए कहें। ढँकी हुई वस्तुओं में से एक वस्तु बाहर निकालें। फिर बच्चों को उनकी आँखें खोलने के लिए कहें एवं जो वस्तुएँ गायब हैं, उनका अनुमान लगाने को कहें। चूँकि वस्तुएँ समान तुकांत वाली हैं, अत: बच्चों को गायब वस्तुओं का अनुमान लगाना आसान होता है। फिर आपके सहयोग से बच्चों को 4 पंक्तियों की छोटी कविता बनाने में सहायता करें।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	ध्यान, एकाग्रता, ध्वनि व ध्वन्यात्मक पैटर्न में अंतर करना, विभिन्न भावनाएँ पहचानना, आसानी से अंत:क्रिया, सरल गीत बनाना, शब्दों को जानना व प्रभावी उपयोग, ध्वन्यात्मक जागरूकता का विकास, चुस्त व लचीला शरीर, अन्य बच्चों व बड़ों से अंत:क्रिया आदि।
अवलोकन बिंदु	• बच्चों की स्पर्श संवेदी कौशलों का अवलोकन, अवलोकन कौशल, स्मृति कौशल, मौखिक रूप से ध्वनि व शब्दों के सृजन का कौशल। • बच्चे शारीरिक हाव-भाव से प्रतिक्रिया देने में समर्थ है।

9.3: सार्थक और धाराप्रवाह बात-चीत करना

गतिविधि 1

बात-चीत का समय

आवश्यक सामग्री	विषय से संबंधित सामग्री, जैसे– गुड्डे-गुड़िया, खिलौने, कठपुतलियाँ, विभिन्न सामुदायिक सहायकों के खिलौने या प्रतिरूप
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों के साथ बात-चीत के सत्र आयोजित करें। विषय 'मेरा पसंदीदा खिलौना' हो सकता है। बच्चे को उसका पसंदीदा खिलौना चुनने दें या घर से लाने दें एवं कक्षा में इसके बारे में बात करें। उन्हें माइक्रोफोन से (यदि संभव हों) उसका नाम एवं उसके बारे में, जैसे– आकार, रंग, अन्य आदि या 2 वाक्यों में बताने के लिए प्रोत्साहित करें।
4–5 वर्ष	बच्चों के साथ बात-चीत का एक सत्र आयोजित करें। विषय 'सामुदायिक सहायकों द्वारा उपयोग होने वाले उपकरण' हो सकता है। हर बच्चे को एक उपकरण चुनने को प्रोत्साहित करें। उन्हें माइक्रोफोन का उपयोग कर उपकरण का नाम बताने, उस उपकरण का उपयोग करने वाले सामुदायिक सहायक का नाम बताने एवं उस उपकरण के उपयोग को पहले देख चुके हैं, तो अपने अनुभव बताने के लिए प्रोत्साहित करें, उदाहरण के लिए— यदि उन्होंने डॉक्टर को देखा होगा, तो समान उपकरण को देख चुके होंगे।
5–6 वर्ष	बच्चों के साथ दो-दो के समूह में चर्चा के सत्र आयोजित करें। विषय 'मैंने अपनी छुट्टियाँ कैसे बिताई'। हर बच्चे को आकर अपनी छुट्टियों की पंसदीदा गतिविधि के बारे में बताने दें। उन्हें उस गतिविधि का नाम बताने, उसके बारे में चर्चा करने व वह उनकी पसंदीदा गतिविधि क्यों थी, इसके बारे में माइक्रोफोन का उपयोग कर बताने को प्रोत्साहित करें। हर बच्चे को अपने अनुभव कम से कम 4–5 वाक्यों में बताना चाहिए। वे उसके बारे मे अपने चित्र या यादगार वस्तुएँ भी ला सकते हैं।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• शिक्षक, उन वस्तुओं या उनके अनुभवों के बारे में प्रश्न पूछ सकते हैं। • बच्चों को उनके पसंदीदा खिलौने या उपकरण अपने दोस्तों के साथ बदलने एवं उसके बारे में बात-चीत करने को प्रोत्साहित करें। • बच्चों को एक चित्र दिखाएँ एवं उन्हें उसके बारे में बात-चीत करने दें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	बच्चों को मंच के डर से उबरने के लिए तैयार करना, सार्वजनिक रूप से बोलने का कौशल, अपने आस-पास दोस्तों व बड़ों से वार्तालाप, शब्दावली संवर्धन, आत्मविश्वास का विकास, सार्थक वार्तालाप करना, विभिन्न भावनाएँ पहचानना एवं उन्हें नियंत्रित करने का प्रयास करना, सहज अंत:क्रिया अन्य लोगों से सकारात्मक प्रतिक्रिया, सुनना व प्रशंसा करना, शब्दावली को जानना व उपयोग करना (सामुदायिक सहायकों से संबंधित), विभिन्न तरीकों से बात रखना।
अवलोकन बिंदु	बच्चों को स्वतंत्र रूप से खेलते हुए सामूहिक गतिविधियों के समय अपने दोस्तों से बात करते हुए अवलोकन करें। ध्यान दें जो बच्चे भाषा में धाराप्रवाह बोलते हैं, जो बच्चे शर्मीले हैं, बात करने में झिझकते हैं, यदि वे मौखिक रूप से अभिव्यक्ति में असमर्थ हों, तो उन्हें चित्र या क्रियाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।

गतिविधि 2
मैं स्वयं

आवश्यक सामग्री	कठपुतलियाँ, विभिन्न भावनाओं को प्रदर्शित करती या इमोजीस की छड़ी कठपुतलियाँ
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	'मैं स्वयं' विषय पर एक सत्र संचालित करें। बच्चों को एक-एक करके आने व अपने बारे में अपने दोस्तों को परिचित कराने के लिए अपना पूरा नाम, अपनी पसंद व नापसंद, वे खुद से कौन–सी गतिविधियाँ कर सकते हैं, के बारे में बताने के लिए प्रोत्साहित करें।
4–5 वर्ष	'मैं स्वयं' विषय पर एक सत्र संचालित करें। उन्हें एक-एक करके आने व अपना पूरा नाम बताकर दोस्तों से परिचित करवाने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों को उनकी भावनाएँ और उनके कारण को व्यक्त करने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— बच्चा कह सकता है— मैं आज बहुत खुश हूँ, क्योंकि मुझे लंच बॉक्स में मेरा पसंदीदा खाना मिला है या मैं शाम को नानी के घर जाऊँगा।
5–6 वर्ष	बच्चे अपने बारे में विस्तार से बताने के लिए अपने शौक, पसंद-नापसंद, उम्र, परिवार, विद्यालय आदि के बारे में बता सकते हैं।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• उन्हें बात करने के लिए एक निश्चित विषय देकर उस पर बात-चीत करें। • काना फूसी करने का खेल खेलें। • बच्चों को उनका खुद का चित्र बनाने को कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	विभिन्न भावनाएँ पहचानना, सहज अंत:क्रिया करना, सरल गीत बनाना, शब्दों को जानना व प्रभावी उपयोग, ध्वन्यात्मक जागरूकता का विकास, चुस्त व लचीले शरीर का विकास, अन्य बच्चों व बड़ों से अंत:क्रिया।
अवलोकन बिंदु	• बच्चे को बोलते हुए एवं सामूहिक गतिविधियाँ करते हुए अवलोकन करें • उनके आत्मविश्वास का स्तर, नियमित बात-चीत में शब्दावली और स्वयं को व्यक्त करते समय आत्मविश्वास का अवलोकन करें।

गतिविधि 3
भूमिका निर्वहन (रोलप्ले)

आवश्यक सामग्री	रसोई सेट, गुड़िया का घर, सुपरमार्केट सेटअप, ड्रेसिंग टेबल, सामुदायिक सहायकों की कठपुतलियाँ या कपड़े, सामुदायिक सहायकों के उपयोग होने वाले उपकरण, गुड्डे-गुड़ियाँ आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–5 वर्ष	एक भूमिका निर्वाह गतिविधि संचालित करें। विभिन्न सेटअप, जैसे– रसोई, गुड़िया का घर, भवन के ब्लॉक और अन्य खेलने से संबंधित सामग्री गतिविधि क्षेत्र में रखें बच्चों को छोटे समूहों में इस तरह के सेटअप में खेलने के लिए प्रोत्साहित करें, उन्हें विभिन्न चरित्र निभाने एवं सेटअप के अनुसार कोई स्थिति जो भी सुन या अनुभव कर चुके हैं, उसका अभिनय करने के लिए प्रोत्साहित करें।
5–6 वर्ष	बच्चों को एक गोले में बैठने को कहें और उन्हें आँखें बंद करके अपना पिछला दिन उन्होंने कैसे बिताया यह सोचने के लिए कहे, उन्हें कुछ मिनटों तक सोचने दें, फिर कुछ प्रश्न पूछें जैसे कि— • आप कब जागे थे? • आपने विद्यालय आने से पहले क्या सीखा था? • आपने विद्यालय आने के रास्ते में क्या देखा था? • आप कल कैसा महसूस कर रहे थे? • क्या आप अपनी कल की दिनचर्या से कोई खास बात बताना चाहेंगे? • आपने अपने दोस्तों के साथ कौन-सा खेल खेला?

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• विभिन्न समूहों में खेले जाने वाले खेल, शब्द खेल, पिक्शनरी खेलें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	विभिन्न भावनाएँ पहचानना, सहज अंतःक्रिया, सरल गीतों का निर्माण, शब्दों को जानना एवं प्रभावी उपयोग, चुस्त व लचीले शरीर का विकास, अन्य बच्चों व बड़ों के साथ अंतःक्रिया स्वयं को, परिवार व समुदाय से व्यक्तिगत संबंध के रूप में पहचानना, सहभागिता की इच्छा रखना आदि।
अवलोकन बिंदु	• बच्चों को स्वतंत्र रूप से खेलते हुए या बाहर खेलते हुए या उनके दोस्तों के साथ बात-चीत करते हुए सामूहिक गतिविधियाँ करते हुए अवलोकन करें। • उन्हें अपने अनुभव, अपने दोस्तों या परिवार के सदस्यों के बारे में बताते समय अवलोकन करें।

9.4: जटिल कार्य हेतु मौखिक निर्देश समझना एवं दूसरों को उसके स्पष्ट मौखिक निर्देश देना

गतिविधि 1
खेल 'शिवाजी बोले'

आवश्यक सामग्री	4 कहानी कार्ड्स
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	खेल 'शिवाजी बोले' खेलें। इस खेल में शिक्षक को कहना होगा शिवाजी बोले अपने हाथ हवा में ऊपर उठाओ। 'शिवाजी बोले' सुनकर बच्चे शिक्षक द्वारा दिए गए निर्देश का पालन करेंगे। यदि कोई वाक्य 'शिवाजी बोले' के बिना कहा गया है तो बच्चे शांत रहेंगे एवं कोई क्रिया नहीं करेंगे।
4–5 वर्ष	• ऊपर बताया गया खेल चार-पाँच वर्ष के बच्चों के साथ भी खेलें। • कहानी कहने वाले कार्ड की मदद से बच्चों को एक कहानी सुनाएँ। कहानी खत्म होने के बाद बच्चों को कहानी के कार्ड क्रम में रखने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	• 'शिवाजी बोले' खेल खेलें। बच्चों के लिए इसे मजेदार बनाएँ। • सर्किल समय— बच्चों को गोले में बैठने के लिए कहें और एक बच्चा अपने बगल में बैठे बच्चे के कान में एक जानकारी धीरे से कहेगा। यह बच्चा इसी जानकारी को अपने आगे के बच्चे के कान में कहेगा एवं यह इसी तरह आगे बढ़ता रहेगा। आखिरी बच्चे को सुनी गई जानकारी जोर से बोलकर सुनानी होगी। पहला बच्चा बताएगा कि यह जानकारी उसके द्वारा बोली गई जानकारी के समान है या नहीं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	शिक्षक, बच्चों को गीत एवं कविताएँ सुना सकते हैं एवं उन्हें हाव-भाव के साथ अभिनय करने को कह सकते हैं।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	ध्वनि एवं ध्वनि पैटर्न में अंतर करना, सहज अंतःक्रिया, सामंजस्य का व्यवहार दिखाना, मिल-जुल कर कार्य करने की इच्छा रखना, संप्रेषित करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चों का खेल के दौरान अवलोकन करें और ध्यान दें कि सभी बच्चे निर्देशों को समझकर उनका पालन करते है। देखें कि बच्चे एक ही समय में एक से अधिक निर्देशों का पालन कर सकते हैं या एक के बाद एक निर्देश का पालन करते हैं।

गतिविधि 2
निर्देशों का पालन

आवश्यक सामग्री	किसी सामग्री की आवश्यकता नहीं
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	दो सरल निर्देशों के साथ कार्य करने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— अपने सिर को थपथपाएँ एवं चुटकियाँ बजाएँ और बच्चों को यह अनुसरण करने के लिए कहें। बच्चों को निर्देश सुनकर अनुकरण करने के लिए प्रोत्साहित करें।
4–5 वर्ष	कई निर्देशों के साथ कार्य करने को कहें एवं बच्चों को निर्देशों को सीखने व अनुसरण करने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— पैरों के अँगूठे को छुएँ, खरगोश की तरह उछलें। 5 तक गिनें। बच्चों के लिए गतिविधि को मज़ेदार बनाएँ।
5–6 वर्ष	इस तरह से बच्चों को कई निर्देश के साथ दोहराए बिना कार्य करने को कहें एवं देखें कि बच्चे निर्देशों का पालन करके कार्य पूरा करें, उदाहरण के लिए— हँसो, किसी एक रंग का नाम बताओ, अपनी नाक को छुओ, गेंद को किक मारो। बच्चों को उनके साथियों को स्पष्ट निर्देश देकर मदद करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बदलाव की एक गतिविधि जैसे कि 'पैराशूट खेल' आयोजित करें। विभिन्न निर्देश देकर खेल खेलें, उदाहरण के लिए— पैराशूट को ऊपर ले जाएँ। पैराशूट को नीचे ले जाएँ, पैराशूट को पकड़ कर बैठ जाएँ। • गतिविधि क्षेत्र में गतिविधियाँ पूरी करने के बाद कक्षा को सुव्यवस्थित करते समय 3–4 निर्देश दें एवं देखें कि बच्चे उनका पालन करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	शारीरिक गत्यात्मक विकास, सामाजिक विकास, शब्दावली संवर्धन, समझकर अनुकरण के चरण, ध्वनि एवं ध्वनि पैटर्न में अंतर करना, विभिन्न भावनाओं की पहचान, सुगमता से शब्दों का ज्ञान और प्रभावी उपयोग, चुस्त और लचीले शरीर का विकास, अन्य बच्चों तथा बड़ों के साथ अंतःक्रिया।
अवलोकन बिंदु	खेल के दौरान बच्चों का अवलोकन करें एवं ध्यान दें कि सभी बच्चे निर्देश को समझें, अनुकरण करें।

गतिविधि 3
बिल्डिंग ब्लॉक्स

आवश्यक सामग्री	ब्लॉक्स एवं निर्देश पुस्तिका
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष	• गतिविधि की शुरुआत बच्चों को पहले से निर्मित एक सरल संरचना दिखाकर करें। बच्चों को समूहों में बाँट दें एवं ब्लॉक्स से बना एक मॉडल (सरल एवं उम्र के अनुरूप) दें।
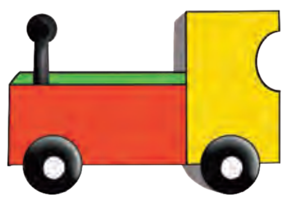	• उन्हें उसी मॉडल के समान दूसरा मॉडल बनाने को कहें। बच्चे अपने-आप ब्लॉक्स (गुटके) का उपयोग करते हुए समान मॉडल बना सकते हैं या संरचना बना सकते हैं। साथ ही बच्चे ब्लॉक्स के द्वारा संरचना, जैसे– टॉवर, सड़क आदि समूह गतिविधि के रूप में बना सकते हैं एवं इसके बारे में बात-चीत कर सकते हैं। • उन्हें एक खेल दिखाने के लिए ब्लॉक्स का उपयोग करने को भी प्रोत्साहित किया जा सकता है, उदाहरणार्थ— वे ब्लॉक्स का उपयोग एक सेलफोन के रूप में कर सकते हैं। • बच्चे ब्लॉक्स के उपयोग से ब्लॉक प्रिंटिंग कर सकते हैं। • वे ब्लॉक्स को पेपर पर रखकर उनका खाका (आउटलाइन) खींच सकते हैं। • वे ब्लॉक्स का उपयोग मापने के लिए कर सकते हैं, उदाहरणार्थ— किसकी लंबाई अधिक हैं? • वे ब्लॉक्स के साथ गिनती कर सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सूक्ष्म एवं स्थूल गत्यात्मक विकास, शब्दावली संवर्धन, स्पष्ट मौखिक निर्देश समझना एवं देना, सामाजिक मेल-जोल करना, ध्वनि व ध्वनि पैटर्न्स की अंत:क्रिया, सरल गीत बनाना, शब्दों को जानना एवं प्रभावी उपयोग, ध्वन्यात्मक जागरूकता का विकास, चुस्त व लचीले शरीर का विकास, अन्य बच्चों व बड़ों के साथ अंत:क्रिया। गतिविधियों में संतुलन, सामंजस्य व लचीलेपन का प्रदर्शन; विभिन्न विचारों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया, अपने साथियों की मदद करना।
अवलोकन बिंदु	खेल के दौरान बच्चों का अवलोकन करें एवं ध्यान दें कि सभी बच्चे निर्देशों को समझकर उनका पालन करते हैं।

9.5: सुनी एवं पढ़ी गई कहानियों को समझ कर पात्रों, कथानक एवं रचनाकार क्या कहना चाहते हैं, इसके प्रति समझ दर्शाना

गतिविधि 1
कहानी पठन

आवश्यक सामग्री	कहानियों की पुस्तकें, कठपुतलियाँ, प्रोजेक्टर या स्क्रीन
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष	बच्चों के साथ पढ़ने का एक सत्र आयोजित करें। पंचतंत्र, जातक कथाओं आदि से बच्चों की आयु के अनुसार 3–4 मिनट, 6–7 मिनट, 10 मिनट की कहानियाँ सुनाएँ। इसके लिए किसी भी माध्यम जैसे कहानियों की पुस्तकें, प्रोजेक्टर्स, चित्रों की पुस्तकें और डिजिटल माध्यम का उपयोग किया जा सकता है। यह स्वतंत्र रूप से खेलने या भाषा–समय या संकल्पना विकास के समय किया जा सकता है। बच्चों को ध्यानपूर्वक कहानी सुनने के लिए प्रोत्साहित करें। कहानी के अंत में बच्चों से कहानी में आए चरित्रों के नाम पूछें। कहानी का शीर्षक पढ़ें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	शिक्षक, बच्चों से कहानी के प्लॉट, चरित्रों या कहानी सुनने में उपयोग हुए प्रॉप्स के बारे में प्रश्न पूछ सकते हैं। कहानी के किसी अन्य अंत के बारे में चर्चा करें एवं बच्चे उसके बारे में क्या सोचते या महसूस करते हैं, यह पूछें। बच्चों को विभिन्न शीर्षकों पर सचित्र कहानी की पुस्तकें देखने के लिए कहा जा सकता है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संप्रेषण, शब्दावली संवर्धन, आत्मविश्वास का विकास, भावनाओं की समझ व प्रशंसा, विभिन्न भावनाओं की पहचान, सहज अंत:क्रिया, सहयोग का प्रदर्शन, सकारात्मक प्रतिक्रिया, अपनी आवाज़ की पड़ताल करना और अपनी आवाज़ के साथ खेलना।
अवलोकन बिंदु	पढ़ते समय या कहानी के समय बच्चों का अवलोकन करें। पता लगाएँ जो बच्चे सुनने में सचेत (एकाग्र) नहीं हैं एवं जो बच्चे पूरी तरह से तल्लीन हैं। साथ ही अवलोकन करें कि कौन कहानी का उल्लेख कर सकता हैं और कौन कहानी के पात्रों या चरित्रों के साथ जुड़ाव महसूस करता है।

गतिविधि 2
कहानी का अनुक्रमण

आवश्यक सामग्री	विभिन्न कहानियों के चित्र कार्ड्स, वाक्य लिखे चित्र कार्ड्स, बिना चित्रों के केवल शब्दों में कहानी के घटनाक्रम वाले कार्ड्स (5 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए)
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	कहानी के समय या गोले में बैठने के समय एक सत्र आयोजित करें। चित्र कार्ड्स का एक सेट हर बच्चे को दें एवं उन्हें कहानी के अनुसार कार्ड्स को क्रम में लगाने के लिए कहें। उन्हें चित्र कार्ड्स के द्वारा कहानी के पात्रों को पहचानने के लिए भी कह सकते हैं।
4–5 वर्ष	कहानी के समय या गोले में बैठने के समय एक सत्र आयोजित करें। हर बच्चे को वाक्य लिखे हुए चित्र कार्ड्स का सेट दें, और उन्हें कहानी के अनुसार कार्ड्स को क्रम में लगाने के लिए कहें। आप उन्हें चित्र कार्ड्स के द्वारा कहानी के पात्रों को पहचानने के लिए भी कह सकते हैं एवं कथानक को पहचानने व उसके बारे में उनके दोस्तों से बात करने के लिए भी कह सकते हैं। कहानी के किसी अन्य अंत के बारे में बात करें।
5–6 वर्ष	कहानी के समय या गोले में बैठने के समय एक सत्र आयोजित करें। सभी बच्चों को बिना चित्रों वाले कहानी कार्ड्स का सेट दें और कहानी के अनुसार कार्ड्स को क्रम में जमाने के लिए कहें। आप उन्हें कार्ड्स के माध्यम से कहानी के पात्रों को पहचानने, कथानक को पहचानने एवं कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहते हैं, अर्थात कहानी का अर्थ या शिक्षा जो हमने कहानी से सीखा, के बारे में कह सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	अपने आस-पास साथियों या बड़ों से संप्रेषण, शब्दावली संवर्धन, आत्मविश्वास का विकास, भाषा का विकास, क्रमानुसार सोच, ध्वनि व ध्वनि पैटर्न्स में अंतर करना, विभिन्न भावनाओं को पहचानना, सहज अंत:क्रिया, सरल गीतों का निर्माण, शब्दों को जानना व प्रभावी उपयोग, ध्वन्यात्मक जागरूकता का विकास, चुस्त व लचीले शरीर का विकास, अन्य बच्चों और बड़ों के साथ आपसी मेल-जोल।
अवलोकन बिंदु	बच्चों का पढ़ते समय या कहानी के समय अवलोकन करें। देखें कि क्या वे कहानी के घटनाक्रमों का उम्मीद से अलग क्रम बनाने की कोशिश करते हैं या कहानी के कार्ड्स की अलग व्यवस्था या क्रम बनाते हैं या बच्चे जो कहानी के सही घटनाक्रम को समझने में असमर्थ हैं। उनके लिए शिक्षक को अलग विधियों से कोशिश करनी चाहिए, जैसे एक छोटी व सरल कहानी, कहानी के कार्ड्स की जगह प्रॉप्स के साथ एवं आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ सुनाना या एक रोलप्ले या कठपुतली का खेल आयोजित करना आदि।

गतिविधि 3

कहानी का सप्ताह

आवश्यक सामग्री	विभिन्न प्रकार की कठपुतलियाँ, कहानी एवं कहानी से संबंधित पृष्ठभूमि के दृश्यों के अनुसार छड़ी कठपुतलियाँ, दस्ताने (ग्लव) कठपुतलियाँ, अँगुली में पहनने वाली कठपुतलियाँ। हर सप्ताह एक भिन्न विषय की कहानी के साथ उस कहानी से संबंधित दृश्यों या प्रॉप्स को दर्शाते हुए कक्षा को व्यवस्थित करें।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	नई कहानियाँ सुनाने के लिए सप्ताह में एक दिन की योजना बनाएँ। अन्य दिनों में अन्य परिचित कहानियाँ सुनाई जा सकती हैं। इसे स्वतंत्र रूप से खेलने के समय के दौरान, गोले में बैठने के दौरान या एक संकल्पना बनाते समय सुनाई जा सकती है। किसी कहानी से संबंधित दृश्य दर्शाते हुए कक्षा को व्यवस्थित करें और बच्चों से कहें कि वे अनुमान लगाएँ कि कौन-सी कहानी सुनाई जाने वाली है।
4–5 वर्ष	ऊपर बताए अनुसार स्वतंत्र रूप से खेलने या गोले में बैठने के दौरान एक कहानी सुनाने की गतिविधि आयोजित करें। कहानी से संबंधित दृश्यों एवं प्रॉप्स को देखकर बच्चों से उस दिन के कहानी के विषय का पता लगाने को कहें। उन्हें कहानी, उसके पात्रों एवं कथाक्रम को पहचानने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	ऊपर बताए अनुसार स्वतंत्र रूप से खेलने के दौरान, गोले में बैठने के दौरान या संकल्पना के निर्माण के दौरान एक कहानी की गतिविधि आयोजित करें। दर्शाए गए चित्रों व प्रॉप्स को देखकर बच्चों से उस दिन कहानी के विषय को पहचानने के लिए कहें। उन्हें कहानी, कहानी के पात्रों, कहानी के कथाक्रम एवं लेखक कहानी के माध्यम से जो कहना चाहते हैं अर्थात कहानी का अर्थ या शिक्षा के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों से कहानी या उसके कथानक, पात्रों या कहानी सुनाते समय उपयोग हुए प्रॉप्स के बारे में प्रश्न पूछें। कहानी के किसी अन्य अंत के बारे में बात करें एवं बच्चों से वे इसके बारे में क्या सोचते या महसूस करते हैं, यह पूछें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	अपने आस-पास साथियों या बड़ों से संप्रेषण, शब्दावली संवर्धन, आत्मविश्वास का निर्माण, ध्वनि व ध्वनि पैटर्न्स में अंतर करना, विभिन्न भावनाओं की पहचान करना, सहज अंत:क्रिया, सरल गीतों का निर्माण, शब्दों का ज्ञान एवं प्रभावी उपयोग, ध्वन्यात्मक जागरूकता का विकास, चुस्त व लचीले शरीर का विकास, अन्य बच्चों व बड़ों से मेल-जोल, हाथों से कार्य करते समय इसके सटीक होने व नियंत्रण का प्रदर्शन।
अवलोकन बिंदु	बच्चों का कहानी के समय के दौरान अवलोकन करें। जो बच्चे ध्यान देते हैं, जो ध्यान नहीं देते हैं, जो सही क्रम में कहानी को दोबारा सुना सकते हैं एवं जिन बच्चों को कहानी को समझने के लिए अतिरिक्त मदद की आवश्यकता है; उनकी पहचान करें।

9.6: स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ लघु कहानियाँ सुनाना

गतिविधि 1
आओ कहानी का आनंद लें

आवश्यक सामग्री	कहानी की बड़ी पुस्तकें, कहानी की छोटी सचित्र पुस्तकें, सब्जियाँ, फ्लेश कार्ड्स
आयु वर्ग	**गतिविधि कैसे संचालित की जाए ?**
3-4 वर्ष	कहानी का बॉक्स– बच्चों को एक गोले में बैठाएँ। शिक्षक कुछ वस्तुओं के साथ एक बॉक्स रख सकते हैं। वे इसे आकर्षक बनाने हेतु सजा सकते हैं। सुनिश्चित करें कि उन वस्तुओं पर कहानियाँ बनाई-सुनाई जा सकें। वस्तुएँ बच्चों की परिचित वस्तुएँ हों, जैसे– खिलौने की बिल्ली, गुड़िया, बैग, पेन्सिल। इन वस्तुओं को बॉक्स में छुपाकर रखें। बच्चे को बॉक्स से एक वस्तु बाहर निकाल कर उस पर अपनी भाषा में कहानी सुनाने को कहें।
4-5 वर्ष	• बच्चों को एक गोले में बैठाएँ एवं उन्हें एक कहानी सुनाएँ। उन्हें कहानी में आगे क्या होगा, यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करें। • यह बच्चों में कहानी की समझ का अच्छा संकेत हैं। एक बार बच्चे कहानी से परिचित हो जाएँ, तो उन्हें पात्रों को पहचानने के लिए कहें। • इसी तरह से कुछ कहानियाँ सुनाएँ। बच्चों को एक कहानी का घटनाक्रम सुनाएँ व उन्हें कहानी का नाम अथवा शीर्षक बताने के लिए प्रोत्साहित करें। • बच्चों से कहानी से संबंधित सरल व अप्रत्यक्ष प्रश्न पूछें, जैसे– 'भूखी इल्ली' (Hungry caterpillar) आदि। सोमवार व शुक्रवार को भूखी इल्ली कौन–से फल खाती थी? इल्ली कितनी सब्जियाँ खाती थी? इल्ली कितने फल खाती थी?
5-6 वर्ष	• शिक्षक, बच्चों से जटिल एवं अप्रत्यक्ष प्रश्न पूछ सकते हैं, जैसे, कहानी 'भूखी इल्ली' (Hungry caterpillar) में इल्ली तितली में कैसे बदली? • कहानी के कार्ड्स दिखाकर बच्चों को एक कहानी सुनाएँ। कहानी के कार्ड्स को मिला दें एवं बच्चों से उन कार्ड्स को सही क्रम में रखकर अपने शब्दों में कहानी सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	कहानी के सप्ताह का आयोजन— प्रतिदिन अलग–अलग कहानियों के पोस्टर्स व प्रॉप्स दर्शाएँ। बच्चों को कहानी एवं उसके पात्रों का अनुमान लगाने दें, कहानी से संबंधित गतिविधियाँ करने दें, उनके परिवार के सदस्यों के सामने कहानी सुनाने के लिए कहानी के प्रॉप्स घर ले जाने दें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	साथियों से संप्रेषण, सहकर्मी विकास, शब्दावली संवर्धन, ध्वनि व ध्वनि पैटर्न्स के बीच अंतर करना, विभिन्न भावनाओं की पहचान, सहज अंत:क्रिया, सरल गीतों का निर्माण, शब्दों को जानना व प्रभावी उपयोग, ध्वन्यात्मक जागरूकता का विकास, चुस्त व लचीले शरीर का विकास, अन्य बच्चों व बड़ों के साथ अंत:क्रिया।
अवलोकन बिंदु	भाषा बोलने का तरीका, उच्चारण की शुद्धता, आत्मविश्वास, बच्चों के शाब्दिक व चेहरे की अभिव्यक्ति का अवलोकन करें।

गतिविधि 2
प्रॉप्स का उपयोग कर कहानी सुनाना

आवश्यक सामग्री	कहानी के प्रॉप्स जैसे कहानी के फ्लैशकार्ड्स, हाथ की कठपुतलियाँ
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को समूहों में बाँट दें। प्रत्येक समूह को कहानी के फ्लैशकार्ड्स बाँट दें। प्रत्येक समूह को फ्लैशकार्ड्स का उपयोग कर सरल शब्दों में कहानी सुनानी है, उदाहरण के लिए— तीन छोटे सूअरों की कहानी।
4–5 वर्ष	बच्चों को समूहों या जोड़े में बाँटें। हर समूह या जोड़े को चित्र का एक कार्ड बाँटें। हर समूह या जोड़े को दिए गए कार्ड के अनुसार कहानी सुनानी होगी, उदाहरण के लिए— एक कुत्ते का उसके बच्चे के साथ चित्र।
5-6 वर्ष	• कक्षा को 4–5 बच्चों के समूहों में बाँट दें। हर समूह सोचेगा एवं एक परिचित कहानी को एक भिन्न अंत के साथ सुनाएगा। • कक्षा को समूहों में बाँट दें और प्रत्येक समूह को एक परिचित कहानी का अभिनय करने को कहें। कौन बच्चा किस पात्र का अभिनय करेगा एवं वे कैसे कहानी को स्पष्ट व मजेदार तरीके से अभिनय करेंगे, बच्चों को इसका निर्णय बच्चों को खुद ही लेने दें। वे कहानी से संबंधित प्रॉप्स भी बना सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	भूमिका निभाना— पात्रों की भूमिका निभाना एवं स्वर सामंजस्य व उचित विराम के साथ कहानी सुनाना।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सरल पैटर्न्स की पहचान, धाराप्रवाह, बात-चीत, छोटी कहानियाँ सुनाना, चित्रों को पढ़ना और समझना, नवाचारी व कल्पनाशील कार्य करना, दूसरों की प्रतिक्रिया की प्रशंसा करना।
अवलोकन बिंदु	बच्चों का अवलोकन करें एवं ध्यान दें कि बच्चे प्रॉप्स का उपयोग कर कहानी सुनाते हैं या नहीं सुनाते हैं।

गतिविधि 3
कहानी पूरी करें

आवश्यक सामग्री	मॉडल्स, खिलौने, कहानी की पुस्तकें, संदर्भ के लिए स्थानीय सामग्री
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• एक परिचित कहानी सुनाएँ एवं बच्चों से कहें कि वे कहानी का आखिरी भाग सोचकर बताएँ एवं कहानी पूरी करने के लिए कहें। • कक्षा में एक कहानी सुनाएँ। एक बास्केट लेकर उसमें कहानी से संबंधित प्रॉप्स, मॉडल्स या खिलौने भरें। बच्चों को इन वस्तुओं या पात्रों के बारे में बात करने एवं कहानी के संदर्भ में इनका वर्णन करने के लिए प्रोत्साहित करें। इस गतिविधि से कहानी के बारे में उनकी समझ में गहराई आएगी।
4–5 वर्ष	एक परिचित कहानी की शुरुआती घटनाएँ सुनाएँ एवं बच्चों से इसे पूरा करने के लिए कहें।
5-6 वर्ष	• बच्चे कहानी का अनुमान लगाएँगे या किसी मौजूदा कहानी का रूपांतरण करेंगे एवं प्रत्येक दृश्य को पृष्ठभूमि के साथ व पात्रों के नाम के साथ, ध्वनि के भिन्न उतार-चढ़ाव के साथ कहानी पूरी करके सुनाएँगे। • बच्चों के लिए विभिन्न वस्तुएँ या खिलौने रखें। बच्चों को इन खिलौनों से संकेत लेते हुए अपनी स्वयं की कहानियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	खाली समय के दौरान या बाहर खेलने के दौरान बच्चों को कहानी बनाने दें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	साथियों के साथ संप्रेषण, शब्दावली संवर्धन, सामाजिक मेल-जोल, क्रमबद्ध सोच, दृश्यात्मक संकेतों का विकास, विभिन्न भावनाओं की पहचान।
अवलोकन बिंदु	• बच्चों का अवलोकन करें एवं ध्यान दें कि बच्चे कहानी को पूरा करें। • प्रयोग की गई शब्दावली एवं समझी गई संकल्पनाओं का अवलोकन करें।

9.7: दिन-प्रतिदिन के प्रभावी संप्रेषण और बात-चीत के लिए पर्याप्त शब्द जानना तथा उपयोग करना एवं मौजूदा शब्दावली का उपयोग कर नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाना

गतिविधि 1
मै कौन हूँ ?

आवश्यक सामग्री	बच्चे अपने घर से कोई भी वस्तु ला सकते हैं।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों के साथ गोले में बैठने का एक सत्र आयोजित करें। बच्चों को कोई एक वस्तु घर से लाने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें एक गोले में बैठने दें। हर बच्चे को उस वस्तु के बारे में अपने दोस्तों से कुछ पंक्तियाँ बोलने का अवसर दें।
4–5 वर्ष	• बच्चों को उनकी आँखें बंद करने के लिए कहें। कोई एक वस्तु लें एवं उसे अपने पीछे छुपा लें। उस वस्तु का वर्णन करें एवं बच्चे को उसका अनुमान लगाने को कहें। कहावतों की तरह वाक्यांशों का प्रयोग करें, जैसा कि 'मैं लंबा हूँ', 'मैं चमकदार हूँ', 'खाने-पीने में मेरा उपयोग होता है, मैं क्या हूँ? (एक चम्मच) • जब तक वे उस वस्तु का अनुमान लगाएँ, तब तक संकेत देते जाएँ। जब बच्चा उस वस्तु का अनुमान लगा लेगा, तो उन्हें इसे अपने शब्दों में वर्णन करने दें।
5–6 वर्ष	• बच्चों को दिए गए शब्दों में से बेमेल या विषम शब्द छाँटने दें, उदाहरण के लिए— सेब, आड़ू, केला, मछली। (मछली बेमेल शब्द है, अन्य फल हैं।) • बच्चों को विभिन्न वस्तुओं, विषयों आदि के बारे में बात करने शब्दावली विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• शिक्षक, बच्चों को बात करने के लिए शब्द या विचार देकर तैयारी कर सकते हैं। • जब बच्चों की प्रकृति की सैर या अध्ययन यात्रा पर ले जाया जाएँ, तो उन्हें उनके परिवेश के अवलोकन के लिए प्रोत्साहित करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	अपने आस-पास साथियों या बड़ों के साथ संप्रेषण, शब्दावली संवर्धन, आत्मविश्वास का विकास, सार्वजनिक रूप से बोलने की दक्षता, अपने आस-पास के परिवेश के लिए जागरूकता, वस्तुओं में चीजों में अंतर करना, सहज अंत:क्रिया, सहयोग करना, सकारात्मक प्रतिक्रिया देना, वस्तुओं को समूह में वर्गीकृत करना, पैटर्न की पहचान करना, मौखिक निर्देश समझाना।
अवलोकन बिंदु	• गोले में बैठने के दौरान, स्वतंत्र रूप से खेलने के दौरान, समूह गतिविधियों के दौरान, बाहर खेलने के दौरान, बात-चीत करते समय बच्चे का अवलोकन करें। • बच्चों के द्वारा उपयोग में लाए गए नए शब्दों और शब्दावली का अवलोकन करें।

गतिविधि 2
चित्र पर चर्चा

आवश्यक सामग्री	एक उद्यान, रेलवे स्टेशन, अस्पताल, बाज़ार आदि का चित्र
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	गोले में बैठाकर उद्यान का चित्र दिखाकर एक सत्र आयोजित करें। बच्चों को बाएँ से दाएँ तक चित्र देखकर उसमें दिखने वाली वस्तुओं, पात्रों के नाम बताने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	गोले में बैठाकर एक सत्र आयोजित करें। बच्चों को एक उद्यान या अन्य विषयों का चित्र दिखाएँ। उन्हें चित्र को बाएँ से दाएँ तरफ़ पूरा देखकर अपने शब्दों में दृश्य का वर्णन करने को कहें, जैसे कि 'एक बेंच पर एक बूढ़ी औरत बैठी है, दो बच्चे गेंद के साथ खेल रहे हैं, एक लड़की और लड़का झूले पर खेल रहे हैं आदि। उन्हें सही शब्दावली का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।
5–6 वर्ष	गोले में बैठाकर एक सत्र आयोजित करें। बच्चों को एक उद्यान या किसी अन्य विषय का चित्र दिखाएँ। उन्हें चित्रों को बाएँ से दाएँ पूरा देखकर चित्र का वर्णन अपने शब्दों में एवं पूर्व में देखी गई समान जगह के अपने अनुभव से जोड़ते हुए वर्णन करने को कहें, उदाहरण के लिए— जब उन्होंने उद्यान देखा था, तो उन्होंने वहाँ क्या-क्या देखा या अनुभव किया? शिक्षक, बच्चों को बोलने के लिए विचार या शब्द देकर तैयार कर सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	अपने आस-पास साथियों या बड़ों के साथ संप्रेषण, शब्दावली संवर्धन, आत्मविश्वास का विकास, सार्वजनिक रूप से बोलने की दक्षता, अवलोकन की दक्षता, अपने परिवेश के लिए जागरूकता।
अवलोकन बिंदु	बच्चों को गोले में बैठने के दौरान, स्वतंत्र रूप से खेलने के दौरान, सामूहिक गतिविधियों के दौरान, बाहर खेलने के दौरान, प्रचलित या नई शब्दावली का उपयोग करते हुए अवलोकन करें।

गतिविधि 3

शब्द खेल

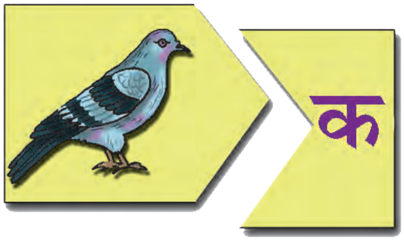

आवश्यक सामग्री	बोर्ड, मार्कर या चॉक, डस्टर झाड़न
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	स्केवेंजर हंट खेल • यह एक सरल शब्द खेल है, जिससे ना केवल शब्दावली निर्माण में मदद मिलेगी, बल्कि यह अवलोकन क्षमता में भी संवर्धन होगा। • कक्षा में कुछ चीजें छुपा दें और बच्चों को इन्हें ढूँढने दें। जब भी कोई चीज मिल जाए, तो बच्चे इसे सभी बच्चों को दिखाएँगे एवं उसका नाम बताकर उसका वर्णन करेंगे। • बोर्ड पर चित्र बनाकर बच्चों के साथ एक शब्द का खेल खेलें। हर बच्चे को चित्र पहचानने के लिए कहें कि यह एक फल, फूल, सब्ज़ी, पशु या पक्षी है। • खट्टी-मीठी चीजों की सामान्य सामग्री या चित्र रखें और बच्चों को उनके नाम बताने के लिए कहें एवं उनसे स्वादवाली चीजों के नाम बताने के लिए कहें जो वे पूर्व में चख चुके हैं।
4–5 वर्ष	क्रॉसवर्ड— छुपे हुए शब्दों के साथ चौकोर ग्रिड बनाएँ। ग्रिड में वे शब्द रखें, जिनसे बच्चे परिचित हों। ग्रिड से जो शब्द ढूँढने हैं, उनकी सूची दें। बच्चों को खाली जगहों पर अक्षर लिखकर सार्थक शब्द बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। वे उस शब्द का उपयोग कर वाक्य बना सकते हैं।
5-6 वर्ष	• बच्चों को एक कोने में बैठने दें। उन्हें एक छोटा दो अक्षर का शब्द दें, जैसे– फल, बच्चों को बदले में एक बार में एक अक्षर बदल कर नया शब्द बनाना होगा। वे ध्यान देंगे कि मूल शब्द से बिल्कुल भिन्न शब्द बनेगा। कुछ शब्दों का कोई अर्थ नहीं होगा। • बच्चों को सार्थक-निरर्थक (हर प्रकार के) शब्दों का अवलोकन करने दें, उदाहरणार्थ— फल, कल, चल, नल और गीला, नीला, पीला आदि। यह सूची बढ़ती जाएगी।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को विभिन्न फलों, फूलों, या सब्ज़ियों के चित्रों के कार्ड्स दें। उनसे दिखाए गए फलों, फूलों या सब्ज़ियों के नाम बताने को कहें। • एक क्रॉसवर्ड पहेली की रचना करें एवं बच्चों को उसे पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	विभिन्न विचारों के साथ अंत:क्रिया, सकारात्मक प्रतिक्रिया, सरल पैटर्न्स की पहचान एवं संवर्धन, सामाजिक-भावात्मक विकास।
अवलोकन बिंदु	बच्चों को गोले में बैठने, स्वतंत्र रूप से खेलने, सामूहिक गतिविधियों एवं बाहर खेलने के दौरान नई शब्दावली अर्जित करते हुए अवलोकन करें।

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 10: बच्चों में प्रथम भाषा को पढ़ने एवं लिखने में प्रवाह विकसित करना

यह गतिविधियाँ इस अनुमान के साथ विकसित की गई है कि बालवाटिका में प्रथम भाषा और निर्देशों की भाषा मातृभाषा या स्थानीय भाषा है।

10.1: ध्वनि संबंधी जागरूकता विकसित करना और स्वनिम (बोले गए शब्द की इकाई) और शब्दांश को शब्दों में मिलाना तथा स्वनिम और शब्दांश को शब्दों में बाँटना

गतिविधि 1

आवाज़ को जानों

आवश्यक सामग्री	कविताओं या गीतों के ऑडियो, वर्कशीट, झुनझुना, चित्रों वाले कार्ड्स
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• प्रकृति की ध्वनियों, जैसे– बारिश, बहती हवा, चहचहाते पक्षी आदि को सुनने का अवसर प्रदान करें। • कविताओं एवं जिंगल्स पर क्रियाएँ दर्शाने के लिए हाथों की अँगुलियों का प्रयोग करें, उदाहरण के लिए— 'मछली जल की रानी है' आदि। • दूसरों को बोलने एवं सुनने का अवसर प्रदान करें।
4–5 वर्ष	• बच्चों को उनके नाम के शुरुआती अक्षर की ध्वनि पहचानने दें, उदाहरण—'पलक', 'प' आदि। • उन्हें गीत एवं कविताएँ सुनाएँ एवं उन्हें तुकांत शब्द पहचानने में मदद करें, उदाहरण के लिए— स्कूल से चला मैं घर, बारिश के पानी से रास्ता गया भर। चली-चली मैं स्कूल को चली, देखो कितनी ठंडी हवा चली। • पशु-पक्षियों आदि से संबंधित कठपुतलियों के खेल का आयोजन करें।

5–6 वर्ष	• बच्चों को स्वतंत्र रूप से बात-चीत करने के लिए प्रोत्साहित करें। • भिन्न-भिन्न अक्षरों से शुरू होने वाली वस्तुओं के चित्रों वाले कार्यपत्रक बनाएँ एवं उन्हें समान ध्वनि से शुरू होने वाली वस्तुओं को समान रंग से रंग भरने के लिए कहें। • वस्तुओं के चित्रों वाले कार्यपत्रक बनाएँ एवं बच्चों को अन्य वस्तुओं के शुरुआती अक्षर लिखने दें। • बच्चों को अनुमान लगाने दें, उदाहरण के लिए— वे 'म' से शुरू होने वाले कितने शब्द सोच सकते हैं। • बच्चों को चित्रों के नाम की शुरुआती ध्वनि पहचानने दें एवं उस अक्षर पर गोला बनाने को कहें। • समान ध्वनि वाले कुछ फ्लैश कार्ड्स (बल, बस्ता, बल्ला, बरगद, बाल आदि) दिखाएँ और उन्हें शुरुआती अक्षर पहचानकर उस अक्षर से शुरू होने वाले अन्य शब्द सोचने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	शारीरिक और गत्यात्मक विकास, सामाजिक-भावात्मक, सकारात्मक अधिगम की आदतें, दिन-प्रतिदिन की अंत:क्रियाओं के लिए शब्दों का ज्ञान, मौखिक निर्देशों की समझ, आकारों एवं ध्वनियों में अंतर करना आदि।
अवलोकन बिंदु	अवलोकन करें कि बच्चे कविताएँ या गीत गाएँ, शब्दाशों का अनुकरण करें एवं उनकी ध्वनियाँ बनाएँ, तुकांत शब्द, प्रारंभिक व अंतिम शब्दांश पहचानें, शब्दांशों को देखें, शब्दांशों को जोड़कर सरल शब्द बनाएँ तथा ध्वनियों को मिलाकर परिचित शब्द बनाएँ।

गतिविधि 2
सम्मिश्रण एवं श्रेणीयन

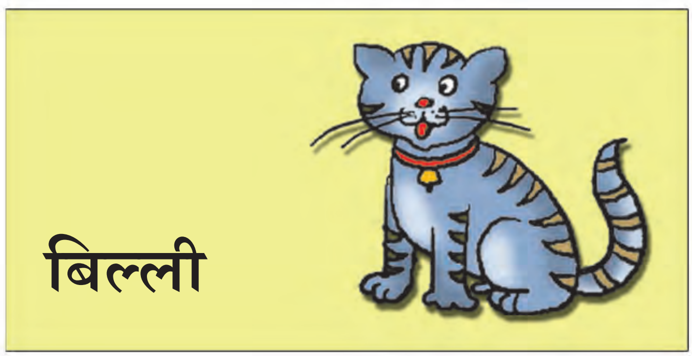

आवश्यक सामग्री	कहानी की पुस्तक, समाचार पत्र, पेंसिल, वर्कशीट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को गोले में बिठाएँ। • एक विशेष लय में आवाज निकालें, जैसे– 'ला ...ला ...ला ...' और फिर बच्चों के साथ इसे आगे बढ़ाएँ और कहें 'मा...मा...मा...'। • बच्चों को अनौपचारिक रूप से विभिन्न शब्दांश सुनने का अवसर दें एवं वहीं से उन्हें शब्द, जैसे– माला, बाजा, राजा, आजा आदि बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

4–5 वर्ष	• बच्चों को एक गोले में बिठाएँ। उन्हें दो बार ताली बजाने एवं दो बार अँगुलियों से चुटकी बजाने को कहें। उन्हें यह अभ्यास दो-तीन बार करके आनंद लेने दें। फिर कोई भी शब्द जैसे 'माला' चुने और उन्हें तुकांत शब्द, जैसे– 'लाला', 'काला' 'भाला' आदि बनाने को कहें। उन्हें उनकी अँगुलियों से चुटकी बजाते समय तुकांत शब्द बनाकर बोलने दें ताकि उनकी आवाज़ सुनी जा सकें। • बच्चों को अक्षरों के कार्ड्स बाँटें। उन्हें एक चित्र दिखाएँ, जैसे कि माला का चित्र। अब बच्चे को अक्षर 'मा' के साथ आगे आने दें, आगे आते समय कक्षा के सभी बच्चों से उस अक्षर को पहचानने व उसकी ध्वनि बनाने को कहें, फिर 'आ' अक्षर के साथ बच्चे आगे आएँ। इसी प्रकार अक्षर 'ल' एवं 'आ' के साथ कोई बच्चा आगे आए। बच्चों को इन अक्षरों को मिलाकर तेज आवाज़ में 'माला' कहने दें' • उन्हें 'फूलों' की तरह अभिनय करने या झूमने को भी कहा जा सकता है। गतिविधि को पूर्ण करने के बाद बच्चों को आगे बताएँ, जैसे कि 'माला' तीन विभिन्न स्वनिमों में बाँटा जा सकता है— म, आ, ल, आ और फिर उन्हें अपनी जगह पर जाने को कहें।
5–6 वर्ष	खजाना खोजें (ट्रेजर हंट) खेल खेलें। अक्षरों को कोनों में छुपा दें। बच्चों को एक चित्र दिखाकर उस चित्र के शुरुआती अक्षर को ढूँढने के लिए कहें। इसी तरह से अन्य चित्र दिखाएँ एवं बच्चों को चित्र के नाम के अक्षर ढूँढने को कहें। इसी तरह से खेल जारी रखें, उदाहरण के लिए— कमल का चित्र दिखाएँ एवं 'क','म','ल' अक्षरों को कमरे के अलग-अलग कोनों में छिपा दें। बच्चों को अक्षर ढूँढ़कर व इकट्ठा कर शब्द बनाने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को एक गोले में खड़ा करें। उन्हें सामान्य रूप से उपयोग होने वाले अक्षर बाँटें। एक चित्र को बीच में रखकर सभी बच्चों से उसे देखने को कहें। ढपली बजाएँ। जब आप ढपली बजाएँ, तो अक्षर पकड़े बच्चे आगे आकर शब्द बनाएँगे, जैसे कि कमल या कलम आदि।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	शारीरिक और गत्यात्मक विकास, सामाजिक भावात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, नए शब्द बनाने के लिए विभिन्न ध्वनियों और अक्षरों की पड़ताल, निर्देशों का पालन, आत्म-सम्मान, स्व-अभिव्यक्ति।
अवलोकन बिंदु	अवलोकन करें कि बच्चे शब्दों के स्वनिम यानी शुरुआती अक्षर या मध्य अक्षर या अंतिम अक्षर पहचान सकें।

10.2: किसी पुस्तक की मूल संरचना अथवा प्रारूप को समझना; छपे हुए शब्दों पर विचार करना और उनकी दिशा समझना तथा विराम चिह्नों को पहचानना

गतिविधि 1
सार्थक प्रिंट

आवश्यक सामग्री	शब्दों के साथ चित्र की पुस्तक, रंगीन पेंसिल्स, चॉक, वर्कशीट, रैपर्स
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• कुछ रैपर्स एकत्र कर कक्षा में दिखाएँ। बच्चों को रैपर्स पहचानने दें। इन रैपर्स में बंद वस्तुओं के बारे में स्वतंत्र रूप से बात-चीत की जा सकती है। • पुस्तक या समाचार पत्र का रख-रखाव करते समय बच्चों को अपनी कार्यविधि को अवलोकित करने का अवसर दें। उनके लिए प्रेरणास्रोत बनें। • उन्हें सचित्र पुस्तकों के रख-रखाव पर ध्यान देने को कहें। • उन्हें पुस्तक पढ़ते समय उनके साथियों को शिक्षक की तरह काम करने दें, उदाहरण के लिए— बच्चे पेज पलटें, प्रिंट पर तर्जनी घुमाएँ और शिक्षक तथा सहायिका को सरल शब्द बोलकर बताएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को उनके माता-पिता या भाई-बहन की तरह व्यवहार करने को कहें, उदाहरण के लिए— उनकी माता समाचार-पत्र कैसे पढ़ती हैं, उनके बड़े भाई-बहन पाठ कैसे पढ़ते या नोटबुक में कैसे लिखते हैं।
4–5 वर्ष	• बच्चों के छोटे समूह बनाएँ और हर समूह को सचित्र पुस्तक दें। बच्चों को पुस्तक में किसी विशेष पशु या पक्षी का चित्र ढूँढने को कहें। इसे कक्षा को दिखाएँ व अन्य बच्चों को ताली बजाने दें। इसी गतिविधि को अन्य चित्रों के लिए जारी रख सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को कहानी की पुस्तक से कहानी सुनाएँ। कहानी सुनाते समय बच्चों से पूछें कि आगे क्या होगा, वे इस बारे में क्या सोचते हैं, उदाहरण के लिए— कौन जीतेगा— खरगोश या कछुआ?
5–6 वर्ष	• प्रश्नवाचक चिह्न के साथ प्लेकार्ड बनाएँ। स्वतंत्र रूप से बात-चीत के साथ उनसे एक रचनात्मक प्रश्न पूछें, जैसा कि 'आप क्या सोचते हैं कि आगे क्या होगा?' • आप प्रश्न या पहेली का समय आयोजित कर सकते हैं एवं साथ ही साथ प्रश्नवाचक चिह्न के साथ प्लेकार्ड का उपयोग कर सकते हैं। बाद में निर्दिष्ट समय के दौरान उन्हें प्रश्नवाचक चिह्न का प्लेकार्ड दिखाकर पूछें कि 'अब राजू क्या करेगा?'

मिलती-जुलती गतिविधियाँ 	• चित्रों वाली कोई कहानी— विराम चिह्न, चेहरे के हाव-भाव एवं स्वर के समुचित उतार-चढ़ाव के साथ सुनाएँ। धीरे-धीरे, वे पूर्ण विराम देना सीख जाएँगे। • कहानी सुनाने के लिए एक कठपुतली शो आयोजित करें। • कक्षा में कहानी की पुस्तकें दिखाएँ, जिनमें मुख्य पृष्ठ पर सामग्री के लिए संकेत हों। बच्चों को मुख्य पृष्ठ दिखाकर कहानी का अनुमान लगाने को कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	रचनात्मक व सौंदर्य विकास, सामाजिक-भावात्मक विकास, क्रमबद्ध सोच, समझ, शब्दावली निर्माण, कहानी का निर्माण, कल्पना, स्व-अभिव्यक्ति।
अवलोकन बिंदु	हर बच्चे के हाव-भाव को पकड़ते हुए, पेज पलटते हुए, अक्षरों पर अँगुलियाँ फेरते हुए, बाएँ से दाएँ व ऊपर से नीचे शब्द पढ़ते हुए पुस्तक के बारे में बताते हुए अवलोकन करें।.

10.3: भाषा की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानना तथा शब्दों को पढ़ने और लिखने में इस ज्ञान का उपयोग करना

गतिविधि 1
अक्षरों की पहचान

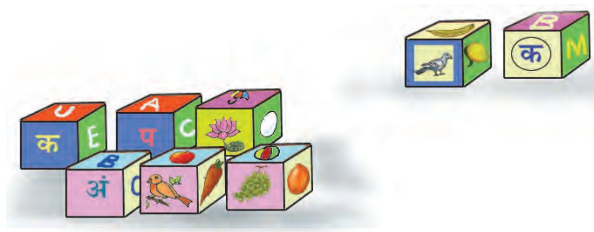

आवश्यक सामग्री	अक्षरों के कार्ड, चित्र, सेंसरी बैग
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को अक्षर-चित्र दें। • उस अक्षर के बारे में एक गीत गाएँ। बच्चों को उस चित्र के साथ ध्वनियों का मिलान करने दें। यदि शिक्षक 'क' कहते हैं, तो बच्चों को एक 'कप' का चित्र उठाना होगा।.
4–5 वर्ष	• अक्षरों के कार्ड बनाएँ। बच्चों को उनके नाम का प्रारंभिक अक्षर पहचानने को कहें। बच्चों से आगे आकर एक गोला बनाने को कहें। जिन बच्चों का नाम समान अक्षर से शुरू होता है, उन्हें साथ मिलकर एक गीत गाने को कहा जा सकता है एवं अन्य सभी बच्चे उस गीत को दोहरा सकते हैं। • बच्चों को किसी कागज पर कोई अक्षर लिखने को कहें। रंग में डूबी अँगुली से या अलग-अलग रंगों के क्रेयॉन से बिंदुओं को जोड़कर इस गतिविधि को रोचक बनाएँ।
5–6 वर्ष	• सैंड पेपर की सहायता से एक सेंसरी पैक बनाएँ, जिसमें सैंड पेपर पर परिचित अक्षर (उभरे हुए) रखे हों, जैसे कि क, म, प आदि। बैग में रखे हुए अक्षरों में से एक अक्षर बोलें। बच्चों से कहें कि वे बैग में हाथ डालकर, अक्षर की बनावट महसूस करके, अनुमान लगाकर बैग से वह अक्षर बाहर निकालकर पूरी कक्षा को दिखाएँ।

	• म्यूजिकल चेयर खेल खेलें। प्रत्येक कुर्सी पर अक्षरों के कार्ड रखें। खेल शुरू करें एवं बच्चे जिस कुर्सी के सामने रुकें, वह अक्षर पहचानने को कहें। • अक्षरों के कार्ड्स बनाकर उन पर यू-पिन लगाएँ। एक चुंबक लेकर मछली पकड़ने का धागा बनाएँ। इस धागे को अक्षरकार्ड के पास लाएँ। अक्षर को उठाएँ। बच्चों को उनके द्वारा उठाए गए अक्षर को पहचानने को कहें • अक्षर के ब्लॉक बनाएँ। बच्चों को अक्षर से शब्द बनाने और बताने के लिए कहें कि यह क्या है। उन्हें क्रेयॉन या चॉक से अक्षर या शब्द लिखने को कहें। • टेबल पर कुछ अक्षरों के कार्ड बनाएँ एवं एक अक्षर बोलें। बच्चों को दौड़कर जाना चाहिए और अक्षर पहचानना चाहिए।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ 	• एक ट्रे में सभी अक्षर रखें। बच्चों को एक छोटा बैग दें, जिसमें रखी चीजें महसूस की जा सकती हैं। एक अक्षर बोलें, बच्चों को इस अक्षर को पहचानकर ट्रे से उठाकर बैग में रखना होगा। • दो तरफा टेप का उपयोग कर अक्षरों के स्टिकर बनाएँ। बच्चों को कुछ चीजों के लेबल लगाने दें, जैसे– फूल, कबूतर, तोता आदि। • अधिक संख्या में अक्षरों के कार्ड्स बनाएँ और कार्ड्स पहचानने को कहें। इन्हीं अक्षरों के साथ अन्य कार्ड बनाएँ। • बच्चों को क्ले या आटे से अक्षर बनाने दें। • टंग ट्विस्टर्स खेलें, जैसे– कच्चा पापड़, पक्का पापड़ आदि। • पहेलियाँ बनाएँ एवं बच्चों को अर्थ सहित शब्द ढूँढने दें। • बच्चों को एक ही अक्षर विभिन्न तरीकों, जैसे– पलटा हुआ, घुमाया हुआ व सही रूप में, दिखाएँ। उन्हें अक्षर का सही रूप पहचानने को कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संकल्पना का निर्माण, सामाजिक दक्षताएँ, स्मृति, शब्दावली निर्माण, खोजी प्रवृत्ति, सृजनात्मक, शारीरिक गत्यात्मक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की अक्षरों को पहचानने, शब्द बनाने की योग्यता एवं दक्षता का अवलोकन करें।

10.4 : कहानियों और अनुच्छेदों को सटीकता और प्रवाह के साथ उपयुक्त विरामों और ध्वनि के उतार-चढ़ावों के साथ पढ़ना

गतिविधि 1

कहानी पठन गतिविधि

आवश्यक सामग्री	सचित्र कहानी की किताब, पेंसिल, वर्कशीट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	एक कहानी सुनाएँ और फिर बच्चों से उसी कहानी को उचित भावनाओं व ध्वनि के उतार-चढ़ाव के साथ अपने शब्दों को सुनने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	तीन-चार बच्चों के समूह बनाएँ। बच्चों को चित्र के कार्ड्स दें एवं बच्चों के प्रत्येक समूह को उन चित्रों से कहानी बनाकर कक्षा के सामने सुनाने को कहें।.
5–6 वर्ष	बच्चों को बड़े चित्रों वाली कहानी की पुस्तिका दें। उन्हें कहानी में जानी-पहचानी चीजों को पहचानने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को शब्दों की एक सूची दें और बच्चे कहानी में उन शब्दों को ढूँढें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सुनने का कौशल, शब्दावली निर्माण, कल्पनाशीलता, निर्देशों का पालन, सामाजिक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	अवलोकन करें कि बच्चे चित्रों को पढ़ने, लघु कहानियाँ पढ़ने और कहानी की किताबों को अपने घर-परिवार के सदस्यों और साथियों आदि के साथ चर्चा करने में रुचि ले रहे हैं अथवा नहीं।

10.5: लघुकथाएँ पढ़ना और उसके पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है इसकी पहचान कर उसका अर्थ समझना

गतिविधि 1

कहानियाँ सुनाना

आवश्यक सामग्री	कहानी की पुस्तक, सचित्र कहानी की पुस्तक, आकलन के लिए चेकलिस्ट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को अपने पास बैठाएँ। उन्हें एक लघु कहानी सुनाएँ। • उन्हें सुनने को कहें एवं मुख्य पात्र पर एक पहेली पूछने को कहें, उदाहरण के लिए– "मैं क्वेक, क्वेक, क्वेक कहता हूँ। कौन हूँ मैं? • उन्हें चित्रों की पुस्तक देखने दें एवं ध्वनि व क्रियाओं से पात्र की पहचान करने दें।
4–5 वर्ष 	• बच्चों को चित्रों के कार्ड एवं शिक्षक द्वारा निर्देशित मिल-जुल कर पढ़ने की गतिविधि में हिस्सा लेने दें एवं उन्हें कहानी पढ़ने पर उनके अनुभवों पर चर्चा करने दें। साथ ही उन्हें विभिन्न चित्रों की पुस्तकें देखने, उनके पात्र व कथानक पहचानने का अवसर प्रदान करें। • उन्हें क्रमबद्ध तरीके से अपने शब्दों में कहानी सुनाने दें। • बच्चों को चित्रों के कार्ड आपस में मिलाकर दें एवं उन्हें कहानी में क्रम के अनुसार लगाने के लिए कहें। • सप्ताह में एक बार कठपुतली का खेल आयोजित करें।
5–6 वर्ष	• बच्चों को निर्देशित पठन सत्रों में हिस्सा लेने दें एवं उनके पढ़े हुए पाठों पर चर्चा करें। • उन्हें दृश्य संकेतों एवं पाठ का उपयोग कर एक पंक्ति की सरल कहानियाँ तेज आवाज़ में पढ़ने दें और कहानी को क्रमबद्ध रूप से एवं विस्तार के साथ फिर से सुनाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को ड्रांइग या कलर करने की अथवा फाड़ने व चिपकाने की गतिविधियों द्वारा कहानी की पुस्तकें बनाने दें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सृजनात्मक व सौंदर्य अनुभूति का विकास; कल्पनाशील; सकारात्मक अधिगम्यता की आदतें; सामाजिक-भावात्मक विकास; सरल कहानी का निर्माण; स्व-अभिव्यक्ति, आत्म-सम्मान आदि।
अवलोकन बिंदु	कक्षा में बच्चों की भागीदारी का अवलोकन करें, यह देखें कि वे कहानी सुनकर उसे अपने शब्दों में फिर से सुना सकें, समूहिक या निर्देशित पठन में भाग लें, अपने शब्दों में उस चित्र का वर्णन करें।

गतिविधि 2
कहानी से परे चर्चा

आवश्यक सामग्री	कहानी की पुस्तकें, कुछ दैनिक उपयोगी वस्तुएँ, पशु-पक्षियों के चित्रों की शीट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को कहानी की (मुख्यत: चित्रमय) पुस्तकें दें। बच्चों को कहानी की किताबों से उनकी मनपसंद वस्तुओं या चित्रों को पहचानकर वास्तविक जीवन से जोड़ने दें। • उन्हें चित्रों को ध्यानपूर्वक देखने, अपनी स्वयं की कहानी बनाने एवं पात्रों को वैकल्पिक नाम देने के लिए प्रोत्साहित करें।
4–5 वर्ष	• बच्चों के लिए एक चित्रमय कहानी पढ़ें और उनके साथ एक स्वतंत्र चर्चा करें। • उनसे पूछें कि उन्हें कौन-सा पात्र सबसे ज्यादा पसंद है और क्यों?
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को एक गोले में बिठाएँ। शिक्षक, एक बच्चे की पीठ पर उसके परिधान (कमीज या पोशाक) पर उसे दिखाए बिना पशु या पक्षी का चित्र पिन से लगाएँ। • उसे गोले का चक्कर लगाने दें, जिससे अन्य बच्चे उस चित्र को देख सकें। • उस बच्चे को अन्य बच्चों से संकेत पूछकर उस चित्र का अनुमान लगाना है, उदाहरण के लिए—'क्या यह एक पशु हैं?' 'क्या इसके बड़े कान हैं?' आदि। • जब उस बच्चे का जवाब सही हो, तो सारे बच्चे ताली बजाएँ।
5–6 वर्ष	• 4–5 वर्ष के आयु वर्ग की गतिविधियाँ जो ऊपर दी गई हैं, इस आयु समूह के लिए भी आयोजित की जा सकती हैं। • पुस्तक एवं वास्तविक जीवन का संबंध सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक, बच्चे को सोचने के लिए कहें। शिक्षक कहानी की शुरुआत पढ़ें, उदाहरण के लिए— 'बंदर और मगरमच्छ' एवं कहें—"यह पुस्तक मुझे उस समय की याद दिलाती है, जब मेरे माता-पिता मुझे चिड़ियाघर ले जाते थे। क्या आप कभी चिड़ियाघर गए हो?" बच्चे भी अपने अनुभव सुनाने लगेंगे।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	शिक्षक, दैनिक जीवन से जुड़ी कुछ वस्तुएँ मेज पर रखें। बच्चे एक-एक करके एक वस्तु उठाएँ और कहानी के किसी पात्र का अभिनय करने के लिए उसे प्रॉप की तरह उपयोग करें, उदाहरण के लिए— छाता। बच्चे छाता लेकर अभिनय करते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	कल्पनाशीलता; वृत्तांत; सृजनशीलता; सामंजस्य; सार्थक बात-चीत करना; शब्दावली निर्माण; स्व-अभिव्यक्ति; सामाजिक विकास एवं सृजनात्मकता आदि।
अवलोकन बिंदु	मुक्त प्रश्नों के लिए बच्चों की प्रतिक्रियाओं, पूर्ण वाक्यों में व्याख्याओं, कल्पनाशीलता, कथन आदि का अवलोकन करें।

10.6: लघु कविताएँ पढ़ना तथा कविता में चयनित शब्दों और कल्पनाशीलता की सराहना करना

गतिविधि 1
कविता सुनाना

आवश्यक सामग्री	कहानी की पुस्तक, वर्कशीट, पेंसिल
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• कविता या छोटे-छोटे गीत गाएँ एवं बच्चों को कविता से शब्द और वाक्यांश दोहराने दें। • आवाज़ के समुचित उतार-चढ़ाव, अभिव्यक्ति एवं तुकांत शब्दों के अभ्यास का अवसर दें।
4–5 वर्ष	• एक कविता या गीत गाएँ। कविता 'Baa baa black sheep' पढ़े एवं बच्चों से 'b' से शुरू होने वाले शब्दों के बारे में कुछ प्रश्न पूछें। • कविता 'मछली जल की रानी है' गाएँ एवं बच्चों को तुकांत शब्द पहचानने को कहें।
5–6 वर्ष	• बच्चों के लिए कविता व पद्य गाएँ। उनके साथ गाकर एवं आनंद लेकर उन्हें गीत याद करने के लिए प्रोत्साहित करें। • उनसे इस कविता से संबंधित प्रश्न पूछें— तुकांत शब्द पहचानने, चित्र बनाने एवं कविता की पुस्तकें संग्रह करने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को हाव-भाव सहित कविता सुनाने को कहें। • कविता सुनाने का कार्यक्रम आयोजित करें एवं बच्चों को कक्षा के सामने कविता सुनाने का अवसर दें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	शब्दावली; सृजनात्मक; भावात्मक विकास; ध्वन्यात्मक जागरूकता; स्व-अभिव्यक्ति; आत्म-सम्मान, सामाजिक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	तुकांत शब्द ढूँढने के लिए बच्चों की प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति, किसी अक्षर के साथ शुरू होने वाले शब्दों की पहचान, आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ कविता गायन में भागीदारी, आवाज़ में उतार-चढ़ाव (वॉइस मॉडुलेशन) आदि।

गतिविधि 2
कविता सुनाना

आवश्यक सामग्री	कविताओं का संग्रह
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	कविता सुनाएँ और फिर बच्चों से कविता दोहराने के लिए कहें एवं हाव-भाव व क्रियाओं के साथ सुनाने के लिए कहें।
4–5 वर्ष	• एक जानी-पहचानी या सुनी हुई कविता सुनाएँ, जैसे कि 'Twinkle Twinkle Little Star उन्हें अभिनय द्वारा 'twinkle' 'Above' जैसे शब्दों के अर्थ समझाएँ। • बच्चों से कहें कि वे आपको संख्या-पूर्व संकल्पनाओं ऊपर-नीचे, अंदर-बाहर आदि के बारे में बताएँ और बात-चीत आगे बढ़ाएँ। Twinkle के समानार्थी कुछ अन्य शब्द बताएँ। • कविता सुनाएँ, जैसे कि 'मछली जल की रानी है' एवं बच्चों से 'जल' शब्द का अर्थ पूछें। बच्चों को 'जल' का अर्थ पानी बताने दें। फिर बच्चों से पूछे कि आप अपनी भाषा में पानी को क्या कहते हो?
5–6 वर्ष	एक परिचित या सुनी हुई कविता सुनाएँ और बच्चों को इसे अपने शब्दों में समझाने को कहें। साथ ही कविता में जो सबसे अधिक पसंद आया, वह बताने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	कविताएँ कई बार पढ़ें। जब भी समय मिले, कविताएँ दोहराएँ या कविता का उपयोग रिक्त स्थान पूर्ति गतिविधि के रुप में करें, बीच में रुककर बच्चों से अगली लाइन बताने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भावात्मक विकास, सृजनात्मक विकास, सामाजिक-भावात्मक विकास, कक्षा में भागीदारी, आत्मसम्मान, स्व-अभिव्यक्ति, संप्रेषण, सार्थक बात-चीत में भाग लेने की योग्यता आदि।
अवलोकन बिंदु	कविता को समुचित उच्चारण, शब्दावली के उपयोग व अभिव्यक्ति के साथ दोहराने के लिए बच्चों की प्रतिक्रियाओं का अवलोकन करें। शब्दों के अर्थ की बच्चों की समझ व अर्थ की व्याख्या, आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ कविता सुनाने, आवाज़ में उतार-चढ़ाव (वॉइस मॉडुलेशन), हाव-भाव व अभिव्यक्ति आदि का अवलोकन करें।

गतिविधि 3
तुकबंदी

आवश्यक सामग्री	कविता की पुस्तक, पेंसिल
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–5 वर्ष	• कविता सुनाएँ एवं बच्चों से कविता में से तुकांत शब्द पहचानने के लिए कहें, उदाहरण के लिए— मकड़ी, लकड़ी और नया शब्द जैसे ककड़ी आदि बनाएँ। • प्रारंभ में उन्हें निरर्थक शब्द बनाने दें, फिर धीरे-धीरे व क्रमश: उन्हें सार्थक शब्दों से परिचित करवाएँ।
4–5 वर्ष	एक कविता सुनाएँ एवं बच्चों को कविता को आगे बढ़ाने दें। जैसे कि मैं तो सो रही थी, मुझे मम्मी ने जगाया..., मैं तो सो रही थी, मुझे पापा ने जगाया... और कविता को आगे बढ़ाने को कहें।
5–6 वर्ष	बच्चों से अपने माता-पिता या बड़े भाई या बहन से कोई छोटी कविता सीखने तथा कविता को आवाज के उतार-चढ़ाव, आवाज़ में उतार-चढ़ाव (वॉइस मॉडुलेशन), हाव-भाव के साथ कक्षा में सुनाने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	कविता सुनाएँ एवं बच्चों से कविता में पात्रों की अभिव्यक्ति की तरह ही अभिव्यक्त करते हुए पात्रों का अभिनय करने को कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सामाजिक-भावनात्मक दक्षताएँ, सृजनात्मकता, संज्ञानात्मक विकास, कल्पनाशीलता, भाषा का विकास, शब्दावली-निर्माण आदि।
अवलोकन बिंदु	तुंकात शब्द पहचानने में, कविता में दृश्यात्मक शब्द पहचानने में, आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ कविता सुनाने, आवाज़ में उतार-चढ़ाव (वॉइस मॉडुलेशन) व अभिव्यक्ति आदि में बच्चों की प्रतिक्रियाओं का अवलोकन करें।

10.7: लघु समाचारों, अनुदेशों एवं व्यंजन बनाने की विधियों तथा प्रचार सामग्री को पढ़ना और अर्थ समझना

गतिविधि 1
चलो खाना बनाएँ

आवश्यक सामग्री	सरल निर्देशों एवं चित्रों के साथ खाना बनाने की विधि पुस्तक, वर्कशीट, भोजन तालिका (मेन्यूकार्ड), सैंडविच बनाने की सामग्री
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को सैंडविच बनाने के 3 चरण दिखाता हुआ चार्ट दिखाएँ। शिक्षक, खाद्य सामग्री का उपयोग चार्ट के निर्देशों का पालन करते हुए विधि का प्रदर्शन कर सकते है एवं उनके साथ उपयोग की गई खाद्य सामग्रियों पर स्वतंत्र चर्चा कर सकते हैं। • बच्चों को घर पर उनके परिवार के सदस्यों की मदद से सैंडविच बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें विधि की सामग्री पहचानने दें एवं क्या करना है, यह बताने दें। बच्चों के साथ चार्ट में दिखाएँ गए चरणों का अनुसरण करें, उदाहरण के लिए— बच्चे सैंडविच बनाने के लिए ब्रेड, मक्खन, जैम, चम्मच, चाकू पहचाने, फिर वह घर पर सैंडविच बनाने के लिए निर्देशों को दोहराएँ।
4–5 वर्ष	• उपरोक्त गतिविधि इस समूह के लिए भी आयोजित की जा सकती है। • रेसिपी बनाने की सामग्री के मिले-जुले चित्र दें। बच्चों को उन सामग्रियों को विधि बनाने के उपयुक्त क्रम को पहचानने दें, उदाहरण के लिए— सैंडविच बनाने के लिए उपयोगी सामग्रियों के मिले-जुले चित्रों में से, बच्चे के उपयोग में आने वाली पहली सामग्री जो कि ब्रेड है, की पहचान करने दें फिर मक्खन व फिलिंग की पहचान करने दें एवं अंतत: ब्रेड के दूसरे टुकड़े की आदि।
5–6 वर्ष	• सैंडविच बनाना। बच्चों को छोटे समूहों में बाँट दें। हर समूह को पढ़ने एवं अनुसरण करने के लिए सरल उत्तरोत्तर निर्देशों का रेसिपी चार्ट दें। • एक समूह से दूसरे समूह की ओर घूमते हुए आप बच्चों से प्रश्न पूछ सकते है, जैसे– 'रेसिपी की आवश्यक सामग्रियाँ कौन-सी हैं?','पहला चरण क्या है?', 'आगे क्या करना है ?' आदि।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे स्वयं और क्या बना सकते हैं? शिक्षक, यह सोचने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित कर सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल, भाषा-विकास, संज्ञानात्मक विकास, मौखिक निर्देशों का अनुसरण, शब्दावली, क्रमबद्ध सोच आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की सहभागिता, समझ का कौशल, क्रमबद्ध सोच आदि का अवलोकन करें।

गतिविधि 2

अक्षरों की पहचान के लिए समाचार-पत्र का उपयोग

आवश्यक सामग्री	समाचार-पत्र, रंगीन पेंसिल, स्वच्छता संबंधी पोस्टर
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को पुराने समाचार पत्र दें। उन्हें चित्रों का अवलोकन करने दें। • बच्चों को छोटे समूहों में बाँट दें एवं हर समूह को समाचार पत्र एवं क्रेयान दें। • बच्चों को चित्रों की रूपरेखा खींचने दें, समाचार पत्र पर क्रेयान रगड़ने दें, पेज पलटने दें, पेपर को एक के बाद एक लगाने दें आदि।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	समाचार पत्र के साथ कागज़ मोड़ने की गतिविधि करें। बच्चों को टोपी, नाव आदि बनाने के बाद उन पर उनका अपना लोगो बनाने को कहें।
4–5 वर्ष	पुराने समाचार पत्र या पत्रिकाएँ बच्चों को दें। उन्हें शीर्षकों में अक्षर पहचानकर उन पर गोला लगाने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को समाचार पत्र में से कोई दृश्य या चित्र दिखाएँ एवं उनसे उस चित्र के बारे में उस चित्र का शीर्षक, उस चित्र से सीख आदि वर्णन करने को कहें।
5–6 वर्ष	• बच्चों को छोटे समूहों में बाँटें। हर समूह को वर्णमाला का एक अक्षर बता दें। • बच्चों को समाचार पत्र से वह अक्षर ढूँढ़ने दें, दिए गए अक्षर से शुरू होने वाले पाँच परिचित और अपरिचित शब्द ढूँढ़ने दें एवं शिक्षक या सहायिका से प्रश्न पूछकर उन शब्दों का अर्थ खोजने दें। • प्रत्येक समूह से एक बच्चे को चुने गए शब्द बताने दें। शिक्षक या सहायिका कक्षा को उन शब्दों का अर्थ बताएँ।.
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	प्रत्येक बच्चे को खेल की गतिविधि के द्वारा समाचार पत्र में ढूँढ़ने को कहें, उदाहरण के लिए— कोई अक्षर, कोई स्थान, कोई खेल, सात अक्षरों वाले शब्द, 'प' से शुरू होने वाले शब्द, मौसम संबंधित चित्र, जैसे– सूर्य, चंद्रमा, बारिश, बिस्कुट या अन्य पदार्थों के विज्ञापन आदि।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सकारात्मक अधिगम की आदतों का विकास, सामाजिक-भावात्मक एवं संज्ञानात्मक विकास, शब्दावली निर्माण, सृजनात्मकता समझ, मौखिक निर्देशों का अनुकरण आदि।
अवलोकन बिंदु	बड़े अक्षरों, संख्याओं व चित्रों को पहचानने में बच्चों की प्रतिक्रिया, बच्चों की समाचार पत्र की विषय-वस्तु की समझ, शब्दावली निर्माण, शब्दों के अर्थ, चित्र के अर्थ की समझ, शीर्षक एवं चित्र की सीख आदि का अवलोकन करें।

10.8 : अपनी समझ और अनुभवों को अभिव्यक्त करने हेतु अनुच्छेद लिखना

गतिविधि 1
त्यौहार मनाना

आवश्यक सामग्री	स्टेशनरी, जैसे– कॉपी, पेन
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	गोले में बैठने के दौरान बच्चों से त्यौहार, जैसे– दीपावली मनाने के बारे में बात करें। बच्चों को किसी संदेश के साथ ग्रीटिंग कार्ड बनाने दें, जैसे कि दीपावली की शुभकामनाएँ, मेरी क्रिसमस आदि।
4–5 वर्ष	• बच्चों को समाचार पत्रों या पत्रिकाओं में त्यौहारों को मनाने के विभिन्न चित्र दिखाएँ। • बच्चों को इन चित्रों के उपयोग से उनकी स्वयं की चित्र पुस्तिका बनाने दें कि वे अपने त्यौहार, जैसे– दीपावली, क्रिसमस, ईद आदि कैसे मनाते हैं।
5–6 वर्ष	बच्चों ने त्यौहार कैसे मनाया, इस पर कुछ सचित्र पंक्तियाँ लिखने के लिए कहें, कक्षा में दिखाने के लिए कहें एवं फिर इसे उनके पोर्टफोलियो में रखें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को छोटे समूहों में बाँट दें एवं उनसे एकता, खुशहाली, पटाखों को चलाने में सावधानियाँ आदि का संदेश देते हुए दीपावली पर एक पोस्टर बनाने को कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सृजनात्मकता; सामाजिक-भावात्मक विकास; विविधता; सांस्कृतिक समावेशन या एकीकरण; भाषा का विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	• सृजनात्मक आर्ट वर्क में बच्चों की भागीदारी; उनके बाँटने, ध्यान देने व सामंजस्य के व्यवहार का अवलोकन करें। • उनके आरेख खींचने, रंग भरने, मौखिक अभिव्यक्ति आदि में सृजनात्मकता का अवलोकन करें।

गतिविधि 2

ड्राइंग का आनंद लें

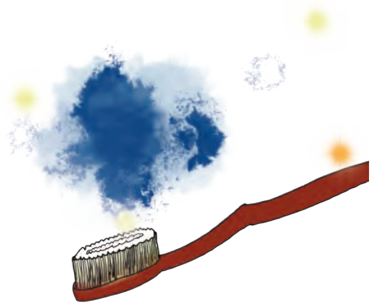

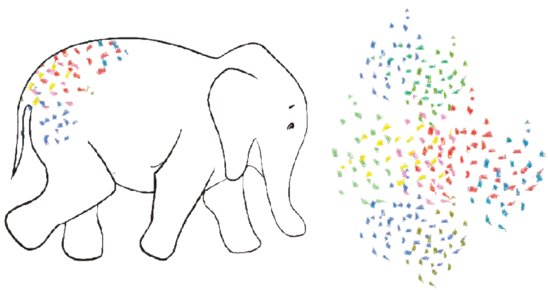

आवश्यक सामग्री	खिलौने, स्टेशनरी
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को खिलौने खेलने को दें। बच्चों को अपने पसंदीदा खिलौनों का चित्र बनाने एवं उसके बारे में बोलने दें।
4–5 वर्ष	आप एक शीर्षक या विषय दे सकते हैं, जैसे कि 'बगीचा' एवं बच्चों को उस विषय पर चित्र बनाकर एक कहानी बनाने दें।
5–6 वर्ष	बच्चों को जन्मदिन के आयोजन की योजना एवं चित्रों सहित एक आमंत्रण पत्र बनाने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों से आपस में चर्चा कर उनके दोस्तों या दादा-दादी के लिए संदेश वाले कार्ड बनाने को कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सृजनात्मकता; सामाजिक-भावात्मक विकास; कल्पनशीलता; कला को अभिव्यक्ति करने की कला आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की सृजनात्मकता, ड्राइंग या उनका नाम सही से लिखना; बच्चों का लेखन कार्य- उचित विराम चिह्नों, जैसे– अल्प विराम का उपयोग, वाक्य की संरचना एवं वाक्य में शब्दावली के प्रयोग का अवलोकन करें।

गतिविधि 3
आओ ग्रीटिंग कार्ड बनाएँ

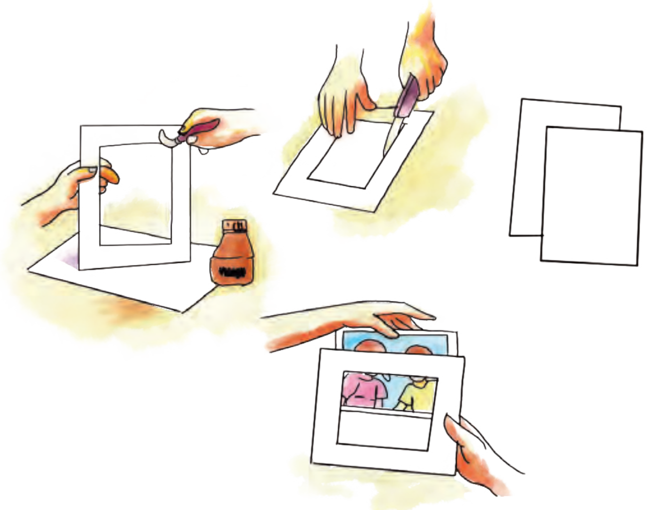

आवश्यक सामग्री	स्टेशनरी, वर्कशीट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों से त्यौहारों या जन्मदिन के आयोजन के लिए ग्रीटिंग कार्ड बनाने को कहें एवं उन्हें संदेश के साथ चित्र बनाने को कहें, जैसे कि 'होली की शुभकामनाएँ' आदि।
4–5 वर्ष	बच्चों को विभिन्न भावनाओं के चित्र बनाने दें एवं किसी एक भावना के बारे में बात करें, उदाहरण के लिए— बच्ची, एक मुस्कुराता हुआ चेहरा चित्रित करके कहे 'मैं खुश हूँ।' 'मैं खुश होती हूँ, जब संगीत सुनती हूँ या नाचती हूँ।'
5–6 वर्ष	• बच्चों को उनकी दिनचर्या, विद्यालय में खेल के समय या उन्होंने सप्ताहांत कैसे बिताया आदि को अपनी डायरी में अभिव्यक्त (शब्दों या चित्रों द्वारा) करने को कहें। • बच्चों को एक पेपर पर लिखकर या चित्र और पेंटिंग के द्वारा उनके 'मन की बात' अभिव्यक्त करने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को विषय, जैसे– त्यौहार आदि चुनने दें एवं विषय से संबंधित सभी गतिविधियाँ, जैसे–सजावट, उपहारों की पैकिंग आदि पर लिखने दें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सृजनात्मकता, सामाजिक-भावात्मक विकास, कला एवं खेल के द्वारा स्व-अभिव्यक्ति, आँख और हाथ का समन्वय, छोटी माँसपेशियों का विकास।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की सृजनात्मकता, वर्कशीट या डायरी में बच्चे द्वारा किया गया कार्य, शब्दावली का विकास, वाक्य संरचना एवं वर्तनी आदि का अवलोकन करें।

10.9: विभिन्न प्रकार की बाल पुस्तकों के चयन में रुचि दिखाना और पढ़ना

गतिविधि 1
पुस्तक पठन

आवश्यक सामग्री	कहानी की पुस्तक, वर्कशीट, पेंसिल
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3-4 वर्ष	• पठन क्षेत्र से कोई एक पुस्तक चुनने का अवसर दें। देखें कि बच्चे सचित्र अपरिचित पुस्तक उठाते हैं। • फिर वह चित्र वाली पुस्तक में रुचि प्रदर्शित करते हैं एवं 'यह कौन है?','उसके चेहरे पर क्या है?' आदि जैसे प्रश्न पूछकर पुस्तक के पृष्ठ पढ़ते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• आप उन्हें एक परिवार के फोटो का एलबम दिखा सकते हैं।
4–5 वर्ष	• बच्चे को पठन क्षेत्र से एक सचित्र कहानी की पुस्तक चुनने को कहें। सुनिश्चित करें कि वे चित्रों की सहायता से पुस्तक पढ़ने का प्रयास करें। • किताब के बारे में साथियों से चर्चा करने, साथियों के साथ-साथ चित्रों को देखने एवं कहानी के बारे में बात करने के अवसर दें; देखें कि बच्चे अपरिचित शब्द, विभिन्न शब्दांशों के अर्थ आदि सीखें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को चित्र चिपकाने व चित्रों की किताब बनाने दें।
5–6 वर्ष	• बच्चों को चित्रों की सहायता से उनकी आयु के अनुरूप पुस्तक पढ़ने एवं पढ़ने के बाद कहानी सुनाने दें। • यह जानने के लिए प्रश्न पूछें कि क्या बच्चे कहानी अच्छी तरह समझ गए हैं। कहानी में उन्हें कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगा और क्यों?
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को उनकी पसंद की पुस्तक चुनने दें एवं कक्षा या घर पर अपना पठन क्षेत्र बनाने दें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सामाजिक-भावात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, अधिगम की सकारात्मक आदतें, कल्पनशीलता, क्रमबद्ध सोच आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की पुस्तक में रुचि का अवलोकन, उसके हाव-भावों, शब्दों व शारीरिक भाषा से बंद अंत वाले प्रश्नों (क्लोज एंडेड प्रश्न) के लिए बच्चे की प्रतिक्रियाओं का अवलोकन करें; कहानी पढ़ने के बाद बच्चे कैसे उसे अच्छी तरह से फिर से सुनाते हैं एवं प्रश्नों के उत्तर देते हैं, इसका अवलोकन करें।

गतिविधि 2
आओ पढ़ने का आनंद लें

आवश्यक सामग्री	कविता की पुस्तक, वर्कशीट, पेंसिल
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• कहानी धीरे-धीरे, आवश्यकतानुसार विरामों के साथ पढ़ें, जिससे बच्चे कहानी के बारे में सोचें। प्रश्न पूछें, जैसे कि "मुझे अचंभा है कि आगे क्या होगा!" या "क्या आप जानते हैं कि लकड़हारा कौन होता है?" या बताएँ "देखो, बंदर अब कहाँ है!" • आप इस तरह के प्रश्न पूछ सकते हैं जैसे कि आगे क्या होगा! या क्या आप जानते हैं कि लकड़हारा कौन होता है? या बताएँ "देखो, बंदर अब कहाँ है!
4–5 वर्ष	• बच्चों को एक सचित्र कहानी की पुस्तक चुनने को कहें। • उन्हें चित्रों के विवरण देखने एवं उनके बारे में बात करने दें। • उन्हें चित्र देखने के बाद जो भी याद हैं, उन वस्तुओं का चित्र बनाने दें।
5–6 वर्ष	• आयु अनुरूप एवं विभिन्न चित्रों वाली किताबें पठन क्षेत्र में रखें। बच्चों को स्वयं किताबें चुनने दें या जो पुस्तकें उन्होंने पढ़ ली है, वे चुनने को कहें। उनसे पूछें "पात्र कौन-कौन हैं?", "कहानी क्या है" एवं बताएँ कि उन्हें यह पुस्तक क्यों पसंद है?
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक खाली डिब्बे (बॉक्स) को पठन बॉक्स बनाएँ एवं उसमें चित्रों और कहानियों की किताबें रखें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक भावात्मक विकास, सकारात्मक अधिगम आदतें आदि।
अवलोकन बिंदु	खुले अंत वाले (ओपन-एन्डेड) प्रश्नों के लिए बच्चे की प्रतिक्रिया, वर्कशीट द्वारा उनके कार्यों का अवलोकन करें।

गतिविधि 3
साथ में पढ़ें

आवश्यक सामग्री	कहानी की किताब, वर्कशीट, पेंसिल और क्रेयॉन
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों के साथ ऊँचे स्वर में पढ़ें। चित्रों की किताब से कहानियों को सच्चे जीवन के अनुभवों से जोड़ें एवं बच्चे जो पहले से ही जानते हैं, उनका उपयोग कर कहानियों का अर्थ निकालने को कहें।।
4–5 वर्ष	• पठन क्षेत्र से एक किताब चुनें। • बच्चों को दो-दो के समूहों में बाँटकर एक साथ पुस्तक देखने एवं जो उन्होंने साथ में देखा, वह एक-दूसरे से साझा करने को कहें। • वे विभिन्न साहित्यिक रूपों, जैसे– कविताएँ, पद्य, कहानियाँ, ब्रोशर आदि को पहचानना शुरू करें एवं एक-दूसरे से अपनी समझ के अनुरूप साझा करें।
5–6 वर्ष	बच्चे को अपनी पसंद की एक पुस्तक चुनने दें। पुस्तक पढ़ने के बाद उनसे पूछें "क्या आपको पुस्तक पसंद आई?", "आपको सबसे ज्यादा अच्छा क्या लगा?", "यदि वह ईमानदार नहीं होता, तो क्या होता?", "क्या होता यदि मगरमच्छ बोल पाता?"
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• चित्रों के अवलोकन, चित्रों की सहायता से एक पंक्ति वाले वाक्य पढ़ने के पर्याप्त अवसर दें। • कक्षा में भरपूर प्रिंट सामग्री रखें। • कक्षा की सभी सामग्रियों पर नाम लिखें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सृजनात्मक व सौंदर्यात्मक विकास, सामाजिक-भावात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, सकारात्मक अधिगम आदतें आदि।
अवलोकन बिंदु	पुस्तक पठन क्षेत्र में बच्चे की भागीदारी, अपने विचार व्यक्त करने के लिए चित्रकारी के उपकरणों (ड्राइंग टूल्स) के उपयोग का अवलोकन करें।

पाठ्यचर्या लक्ष्य–11: बच्चों का द्वितीय भाषा में पढ़ना एवं लिखना आरंभ करना

गतिविधियाँ इस अनुमान के साथ विकसित की गई है कि बालवाटिका में दूसरी भाषा अंग्रेजी हो सकती है।

- सुनने के अवसर
- मौखिक भाषा का विकास
- उद्गामी पठन
- उद्गामी लेखन
- किताबों से लगाव

11.1: ध्वनि संबंधी जागरूकता विकसित करना और स्वनिम या शब्दांश को शब्दों में मिलाना तथा स्वनिम या शब्दांश को शब्दों में अलग करना

गतिविधि

स्वनिम खेल

आवश्यक सामग्री	फ्लैश कार्ड, अक्षरों के कार्ड, अक्षर, कहानियाँ, कंकड़ आदि।
आयु वर्ग	गतिविधि का संचालन कैसे करें?
3–4 वर्ष (ध्वनियों की पहचान) 	• बच्चों को अर्धवृत्त में बिठाएँ। उन्हें परिवेश की ध्वनियों को सुनने का अवसर दें, जैसे– पंखा, कुत्ता व आवागमन के साधनों की आवाज़ आदि तथा उन्होंने जो सुना, उसे बताने के लिए कहें। • बच्चों को ध्वनियों वाली कविताएँ सुनाने दें। • बच्चे के स्वयं के नाम से शुरू करके उन्हें उनके नामों की शुरुआती ध्वनियों को पहचानने में मदद करें। • बच्चों को कविताएँ, गीत आदि सुनने के अवसर प्रदान करें एवं उन्हें गाकर आनंद लेने दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• विभिन्न सामग्रियों के फ्लैश कार्ड बनाएँ, जैसे– फल, सब्ज़ियाँ, आवागमन के साधन आदि। बच्चों को फ्लैश कार्ड दिखाएँ एवं उन्हें उनके नाम बताएँ, जिससे उनकी शब्दावली विकसित हो। • मुद्रण समृद्ध वातावरण बनाएँ। • पठन-क्षेत्र में चित्रों की पुस्तकें देखने के अवसर प्रदान करें। (चित्रों का उपयोग तभी हो, जब वस्तुएँ उपलब्ध न हो या कक्षा में लाना संभव न हो।)

4–5 वर्ष **(शुरुआती ध्वनि की पहचान)** 	• वर्गीकरण का खेल खेलें; उदाहरण के लिए— उन सभी बच्चों को जिनका नाम समान ध्वनि से शुरू होता है, एक ओर आने को कहें। इससे उन्हें एक विशेष ध्वनि को पहचानने में मदद मिलेगी। • बच्चों को कक्षा में एक शुरुआती ध्वनि, जैसे कि 'ब', से शुरू होने वाली वस्तुओं के नाम सोचने दें, वे बत्तख, बस्ता, बल्ला आदि बता सकते हैं। इससे ध्वनि का अंतर एवं शब्दावली दोनों के निर्माण में मदद मिलेगी। • बच्चों को कुछ वस्तुओं के चित्रों के साथ एक वर्कशीट दें, इनमें कुछ चित्र ऐसे हों जिनकी आरंभिक ध्वनि समान हो। बच्चों से उन चित्रों के बारे में बात करने व रंग भरने को कहें। • कोई ध्वनि कहें एवं बच्चों से उस ध्वनि से संबंधित कार्ड उठाने को कहें। बच्चों को ध्वनि व अक्षर के बीच संबंध सीखने दें, जैसे कि, 'ब' की ध्वनि का 'B' से। • कुछ जगहों पर अक्षर चिह्नित किए जा सकते हैं। अक्षर से संबंधित ध्वनि बोलें एवं बच्चों को उस जगह की ओर भागने दें। इसे बच्चों के लिए मज़ेदार बनाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ 	• बच्चों को शब्द सुनाएँ एवं उन्हें वास्तविक वस्तुओं से जोड़ने का अवसर दें। वर्णमाला के अक्षरों का उपयोग कर शब्द बनाएँ। • अक्षरों के सचित्र कार्ड बनाकर उनका उपयोग अधिगम को आनंददायक बनाने हेतु करें। • अक्षरों को मिलाकर शब्दों के फ्लैश कार्ड, जैसे– कमल, फल, नल, माला, ताला बनाएँ। • एक स्वर ध्वनि व एक व्यंजन ध्वनि को मिलाकर फ्लैश कार्ड बनाएँ, जैसे कि क, फ, न, मा, ता आदि एवं बच्चों को शब्द बनाने में मदद करें। • मुद्रण समृद्ध वातावरण बनाएँ। • पठन क्षेत्र में बड़े चित्रों वाली कहानी की पुस्तकें देखने एवं समझने का अवसर दें।
5–6 वर्ष 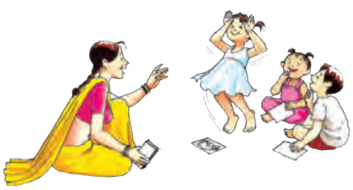	• सरल शब्दों के फ्लैश कार्ड बनाएँ एवं बच्चों को उनसे परिचित करवाएँ, जैसे कि यह,वह, मेरा, तुम्हारा आदि। • बच्चों को तुकांत शब्द बनाने दें, जैसे– जल, नल, माला, ताला आदि। • बच्चों को दोहराकर शब्दों का पुनर्निर्माण करने दें। • बच्चो को पहचानने को कहें कि चित्र में क्या है, फिर उस शब्द को इसकी अवयव ध्वनियों में बाँटने दें, उदाहरण के लिए— कमल— क+म+ल तीन ध्वनियाँ (स्वनिम)। मुद्रण समृद्ध माहौल बनाएँ। • बच्चों को सरल शब्द पहचानने में मदद करें और उन्हें खुद ही पढ़ने दें। सरल कहानियाँ और दंतकथाएँ सुनाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ 	• बच्चों को पठन क्षेत्र में, चित्रों को पढ़ने एवं वर्गीकृत पुस्तक शृंखला आदि के द्वारा बड़ी पुस्तकों को देखने व समझने का अवसर प्रदान करें। • जब भी अवसर मिले, नई बात या नई कविता से परिचय, आरंभ कराने के लिए अवसरों का उपयोग करें, उदाहरण के लिए— खेलने के दौरान, भोजन के दौरान, प्रकृति में घूमने के दौरान आदि। • बच्चों को नए शब्द सीखने और तुकबंदी करने में एक-दूसरे की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अन्य संवर्धित दक्षताएँ	टीम वर्क, टीम के अन्य सदस्यों की मदद करना, नेतृत्व का विकास, मूल्यों का विकास, सकारात्मक अधिगम की आदतें, ध्यान केंद्रित करना, स्मृति, अवलोकन, खोज अथवा पता लगाना, चित्रों के द्वारा पढ़ना व समझना आदि।
अवलोकन बिंदु	अवलोकन करें कि बच्चे पहचानें; एक-दूसरे की मदद करें एवं टीम से जुड़े रहें; समूह कार्यों में बराबरी से भागीदारी करें; सरल निर्देशों व पाठों को समझें आदि।

11.2: वर्णमाला में अधिक बार आने वाले अक्षरों को पहचानना और सरल शब्दों एवं वाक्यों को पढ़ने-लिखने में इसका उपयोग करना

गतिविधि

लिखना मज़ेदार है

आवश्यक सामग्री	कहानी की पुस्तक, समाचार-पत्र, पेंसिल, रूब्रिक, वर्कशीट
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को चित्र में रंग भरने को कहें। • रेत पर अँगुलियों, हाथ या छड़ी से रेखाओं के पैटर्न खींचने (खड़ी, आड़ी, घुमावदार आदि) दें। • पेपर पर कुछ डॉट्स (बिंदु) बनाएँ एवं बच्चों से अँगुलियों (रंग में डुबाकर) या क्रेयॉन्स के उपयोग से उन बिंदुओं को मिलाने को कहें।
4-5 वर्ष	• क्रेयॉन्स और चॉक से लिखने की गतिविधि। • वर्ग, त्रिभुज या वृत्त आदि बनाएँ एवं बच्चों से उन पर चॉक या क्रेयॉन चलाने (ट्रेस करने) को कहें। • वस्तुओं या अक्षरों के बड़े आकार की आउट लाइन बनाएँ और उसमें रंग भरें। • विभिन्न आकारों की अधूरी रूपरेखा दें एवं बच्चों से उन्हें पूरा करने के लिए कहें।
	• बच्चों को क्रेयॉन्स या रंगीन चॉक से रेखाओं का एक पैटर्न (खड़ी, तिरछी, घुमावदार रेखाएँ आदि) खींचने दें। • पेपर पर बिंदुओं की एक शृंखला बनाएँ एवं बच्चों को उन्हें मिलाने को कहें। • पेपर पर बहुत सारे बिंदु बनाएँ और बच्चों को उन्हें जोड़ने के लिए कहें। बच्चे बिंदुओं को जोड़कर कोई भी आकार बना सकते हैं। वर्कशीट की निचली पंक्तियों में उन्हीं आकारों को कॉपी कर सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे इस क्रिया को दोहराते एवं पैटर्न को आगे बढ़ाते हुए नए पैटर्न (उभरती हुई लिखावट विकसित करने के लिए) बनाएँ।

5–6 वर्ष 	• क्रेयॉन को सही तरीके से (तीन अँगुलियों से) पकड़ना सीखने के अवसर प्रदान करें। 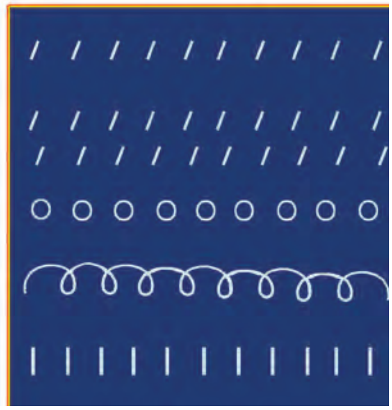 • बच्चों को क्रेयॉन या पेंसिल से उनकी नोटबुक और गतिविधि पुस्तकों में रेखाओं के पैटर्न (खड़ी, तिरछी, घुमावदार रेखा आदि) खींचने दें। • कक्षा के बोर्ड पर आकार जैसे कि त्रिभुज, वर्ग, वृत्त बनाएँ (आँखों तक की ऊँचाई पर) एवं बच्चों से उन आकारों को किसी कागज, या स्लेट पर अथवा नोटबुक में दर्ज करने को कहें। • बच्चों को बार-बार आने वाले अक्षर जैसे कि क, च, ट, त, प आदि की बनावट सीखने दें। • बच्चों को 3 अक्षरों के परिचित शब्द, जैसे– कलम, जहाज, सड़क, आदि सुनने का अवसर दें एवं उन शब्दों को नोटबुक या गतिविधि पुस्तक में लिखने दें। • बच्चों को सरल शब्द (परिचित शब्द) पहचानने दें एवं स्वयं स्वतंत्र रूप से लिखने दें। • बच्चों को चित्रों को देखने दें एवं चित्रों में दिखाई देने वाली वस्तुओं, पशु-पक्षियों, स्थानों के नाम लिखने दें, उदाहरण— पंखा, मेज आदि।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ 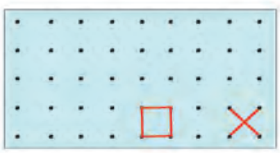	• शिक्षक पेपर पर बिंदु बनाएँ एवं बच्चों को क्रेयॉन्स को उठाए बिना बिंदुओं को मिलाने का खेल खेलने को कहें। • बच्चों को हवा में अनुमानित आकारों एवं अक्षरों की रूपरेखा बनाने दें, जिससे वे हाथ के आवश्यक घुमाव और संचालन से परिचित हो जाएँ। • बच्चों को स्लेट या पेपर पर समांतर रेखाएँ खींचने के लिए कहें एवं उन रेखाओं के बीच विभिन्न पैटर्न बनाने के लिए कहें। • जब भी अवसर मिले, तो बच्चों को अनौपचारिक रूप से लिखने के लिए प्रेरित करें, उदाहरण के लिए— खेलने के दौरान, खाने के दौरान, घूमने के दौरान आदि, ताकि बच्चों को शब्द लिखने में और एक-दूसरे की मदद करने के लिए प्रोत्साहन मिले।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	समूह कार्य, समूह के अन्य सदस्यों की मदद करना, नेतृत्व के गुण, मूल्यों को विकसित करना, सकारात्मक अधिगम की आदतें, लिखने के लिए विभिन्न सामग्रियों व उपकरणों का उपयोग, विचारों की अभिव्यक्ति, सहयोगात्मक रूप से कार्य करना आदि।
अवलोकन बिंदु	अवलोकन करें कि बच्चे शब्दों को स्वनिम से पहचानें, याद रखें व जोड़ें; एक-दूसरे की मदद करें; समूह कार्य में समान रूप से भाग लें; सरल अक्षर और शब्द कम-से-कम गलतियों के साथ उचित तरीके से लिखें; 'क' व 'फ', 'ट' व 'ठ' एवं ब, व आदि के बीच अंतर कर सकें।

आनंदमय कोष

(सृजनात्मक और सौंदर्य अनुभूति संबंधी विकास)

सृजनात्मकता, आनंद (खुशी), निर्भीकता, प्रेम, सौंदर्य, हर्ष की भावना आनंदमय कोष के मूल तत्व हैं। एक बच्चा स्वाभाविक रूप से रचनात्मक, आनंदमय, प्रेम करने वाला और निडर होता है। इन गुणों को बढ़ाने वाली गतिविधियों से आनंदमय कोष का विकास होता है। खेल, रचनात्मक कला कार्य, संगीत, नृत्य, ड्राइंग, रंग, रोल-प्ले अभिनय आदि जैसी गतिविधियाँ आनंदमय कोष के अंतर्गत आती हैं।

आनंदमय कोष से संबंधित पाठ्यचर्या लक्ष्य

पाठ्यचर्या लक्ष्य–12: बच्चों में दृश्य एंव प्रदर्शन कला में क्षमताओं तथा संवेदनाओं का विकास करना तथा अर्थपूर्ण और आनंदपूर्ण तरीकों से कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करना

आनंदमय कोष

रचनात्मकता एवं सौंदर्य विकास

आनंदमय कोष हर्ष एवं प्रसन्नता की स्थिति है, जब बच्चे आनंदमय कोष की सीमा में होते हैं तो वे अपनी गतिविधि में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि वे अपने आस-पास के बारे में भूल जाते हैं। किसी भी प्रकार की रचना और नवीनता जो आनंद पैदा करती है, इस प्रक्षेत्र के अंतर्गत आती है। साथ ही, सौंदर्य बोध केवल देखने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। इसे ध्वनि, संगीत, स्वाद, गंध और स्पर्श के जादू तक विस्तारित किया जाना चाहिए।

पाठ्यचर्या लक्ष्य–12: बच्चों में दृश्य एवं प्रदर्शन कला में क्षमताओं तथा संवेदनाओं का विकास करना, अर्थपूर्ण और आनंदपूर्ण तरीकों तथा कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करना

12.1: भिन्न-भिन्न आकारों में द्वि-आयामी और त्रि-आयामी कलाकृतियाँ बनाने हेतु विभिन्न प्रकार की सामग्री एवं उपकरणों की पड़ताल कर उनसे खेलना

गतिविधि 1

रेखांकन, रंग भरना और पेंट करना

आवश्यक सामग्री	पुराना अखबार, सफेद कागज़, स्लेट, रंगीन चॉक
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को क्रेयॉन और एक पुराना अखबार या कोई अन्य कागज़ दें और उन्हें कागज़ पर लिखने या चित्र बनाने को कहें। • आप उन्हें एक स्लेट दे सकते हैं और उन्हें उस पर रंगीन चॉक से चित्र बनाने को कह सकते हैं। बच्चों को उनकी पसंद के अनुसार पेंट करने के लिए बड़े ब्रश और पेंट दिए जा सकते हैं। • अपने विचारों को बच्चों पर न थोपें, उन्हें वह चित्र बनाने या पेंट करने के लिए कहें, जो उन्हें पसंद है और जिस तरह से वे इसे करना पसंद करते हैं। • उनके छोटे- छोटे प्रयासों की भी सराहना करें।

मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को थोड़ी गीली मिट्टी दें और उन्हें एक छोटी-सी छड़ी या लकड़ी का टुकड़ा दें। वे मिट्टी पर लिख सकते हैं या मिट्टी से खिलौने या आकार या चित्र बना सकते हैं। • कागज़ या ज़मीन पर रंगोली के रूप में बड़े वृत्त, त्रिकोण या वर्ग को बनाया जा सकता है और बच्चों को क्रेयॉन से आकृति के अंदर रंग भरने के लिए कहा जा सकता है। • अलग-अलग सामग्री से बच्चों के साथ एक बड़ी रंगोली बनाएँ।
4–5 वर्ष	• किसी भी आकार या किसी चित्र की रूपरेखा बनाएँ और बच्चों को क्रेयॉन या प्राकृतिक रंगों से रंगने के लिए कहें। • आप बच्चों को कोई जानी-पहचानी विषय-वस्तु दे सकते हैं और उन्हें चित्र बनाने और रंग भरने के लिए कह सकते हैं। मेंहदी के पत्ते, फूल, अन्य पत्ते, बालू, अनाज आदि के लिए प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त रंगों का उपयोग किया जा सकता है। • मुक्तहस्त चित्र बनाने के लिए बच्चों को जल रंगों वाले पेंटिंग ब्रश दें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को कोई विषय-वस्तु, जैसे– बरसात का दिन, धूप का दिन आदि दें और उन्हें चित्र बनाने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	• बच्चों को क्रेयॉन और रंग दें और उन्हें अपने चित्र और पेंटिंग बनाने के लिए स्वतंत्र रूप से इनका उपयोग करने दें। आप रंग भरने के लिए अधिक जटिलता वाले चित्र भी प्रदान कर सकते हैं। • बच्चों को दी गई रूपरेखाओं में रंग भरने के लिए कहें। थीम दी जा सकती है और उन्हें दृश्य बनाने के लिए कहा जा सकता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चे पुराने टूथ ब्रश को जल रंगों में डुबाकर और ब्रश के ब्रिसल्स का उपयोग करके स्प्रे-पेंटिंग कर सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	आँखों तथा हाथों का समन्वय, भावनात्मक विकास, सकारात्मक आत्म-संकल्पना, कल्पना आदि।
अवलोकन बिंदु	किसी बंद जगह में बच्चों के रंग, उनकी ध्यान अवधि, सरल पैटर्न बनाने में रचनात्मकता, उनका कला कार्य, कोलाज, छापे बनाने, शामिल होने, आनंद, सचेतना का निरीक्षण करें।

गतिविधि 2
फाड़ें, काटें और चिपकाएँ

आवश्यक सामग्री	समाचार पत्र, ओरिगेमी पेपर, गोंद, कैंची, पुरानी पत्रिका
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को कुछ रद्दी कागज़ जैसे– पुरानी पत्रिका, समाचार पत्रों के पृष्ठ आदि दें। • कागज़ के बड़े टुकड़े पर किसी पशु या वस्तु की बड़ी रेखाकृति बनाएँ। • इस रेखाकृति पर बच्चों को दिए गए कागज़ के टुकड़ों पर गोंद लगाकर चिपकाने को कहें। रेखाकृति किसी पेड़, झोपड़ी, गेंद, बिल्ली आदि की हो सकती है। बच्चों को एक उपहार बॉक्स को फाड़ने और चिपकाने की गतिविधि से सजाने को कहें।
4–5 वर्ष	• बच्चों को एक कागज़ पर खींचे गए वर्ग या त्रिभुज जैसी सरल आकृतियाँ दें और बच्चों के अनुकूल कैंची का उपयोग करके उन्हें दी गई रेखाकृति के साथ बड़े करीने से कागज़ काटने को कहें। • उन्हें पुराने अखबारों, पत्रिकाओं आदि के पन्ने दें और उन्हें प्रोत्साहित करें कि वे जिस भी डिजाइन को बनाना चाहते हैं, उसमें टुकड़े चिपकाकर स्वयं का कोलाज बनाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को कागज़ के टुकड़े पर कोई भी आकृति बनाने को कहें। इस आकृति पर ग्लू फैलाकर रेत छिड़कने को कहें और उसे सूखने दें। इससे उभरा हुआ डिजाइन बनेगा। • पुराने अखबार या कपड़े पर पत्ते, ब्लॉक, हथेली के निशान आदि वस्तुओं की छाप बनाने के लिए रंग प्रदान करें।
5–6 वर्ष	• बच्चों को पुराने अखबारों, पत्रिकाओं के पन्ने दें और उन्हें प्रोत्साहित करें कि वे जिस भी डिजाइन को बनाना चाहते हैं, उसमें टुकड़ों को चिपकाकर अपना खुद का कोलाज बना लें। उन्हें कपड़े के टुकड़े, रद्दी सामग्री, पत्तियाँ, पंखुड़ियाँ आदि दी जा सकती हैं, जिनका उपयोग वे कोलाज में चिपकाने हेतु कर सकते हैं। • उन्हें कागज़ को छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़ने के लिए कहें, इसके बाद फटे हुए कागज़ को दी गई रूपरेखा के अंदर चिपका दें। रेखाकृति किसी भी वस्तु की हो सकती है। • उन्हें किसी भी डिजाइन में टुकड़ों को चिपकाकर स्वयं का कोलाज बनाने के लिए कहें, जिसे वे बनाना चाहते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	उनकी पसंद की वस्तुएँ बनाने के लिए मिट्टी की सामग्री प्रदान करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सामाजिक-भावानत्मक विकास; आँख-हाथ का समन्वय; ध्यानावधि में वृद्धि; कार्य पर दृढ़ता आदि।
अवलोकन बिंदु	कला सामग्री, उपकरणों और यंत्रों का उपयोग करना सीखता है; नया पैटर्न बनाता है; आँखों-हाथों का समन्वय; आनंद; सचेतन अथवा जागरूक कि वह क्या कर रहे हैं।

गतिविधि 3
कागज़ मोड़ना

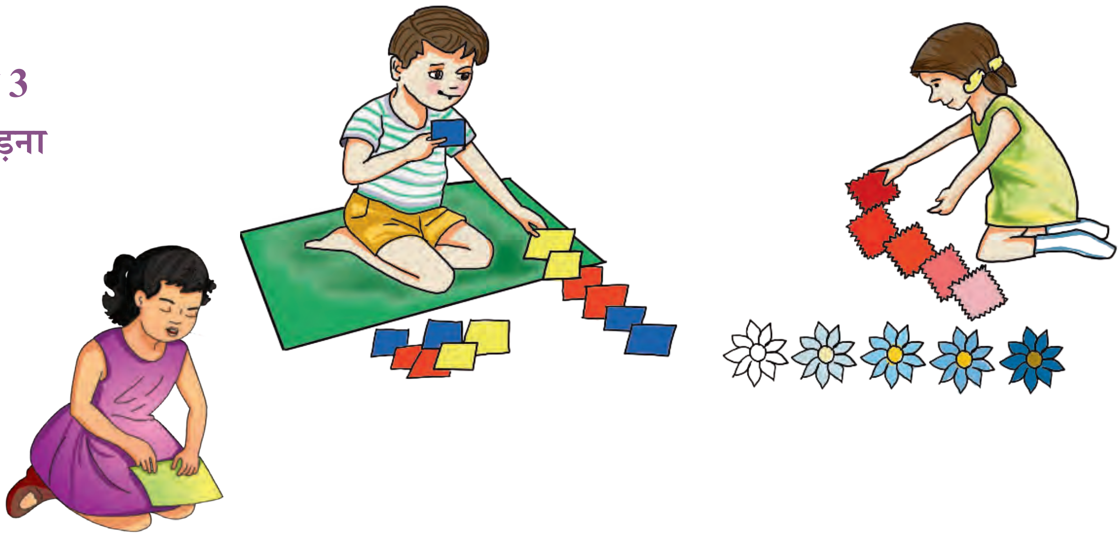

आवश्यक सामग्री	कागज़, चादर, रुमाल, नैपकिन, तौलिया आदि।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों से रुमाल लाने को कहें। उन्हें अलग-अलग आकार में एक या दो बार मोड़कर अपने रुमालों को मोड़ने के लिए कहें। टोपी, नाव आदि बनाने के लिए कागज़ों को मोड़ा भी जा सकता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को कागज़ के एक टुकड़े पर पानी का चित्र बनाने के लिए कहें और ओरिगेमी कागज़ को मोड़कर और फिर उसे पानी के चित्र में चिपकाकर एक कोलाज या दृश्य बनाने के लिए मछली बनाएँ।
4–5 वर्ष	बच्चों को टोपी, चिड़िया, आइसक्रीम आदि जैसी विभिन्न वस्तुएँ बनाना सिखाया जा सकता है, जिनके लिए साधारण कागज़ मोड़ने की आवश्यकता होती है। बेडशीट या बैठने की चटाई को कोनों से जोड़कर मोड़ने का अवसर प्रदान करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक बगीचे का दृश्य बनाएँ और बच्चों को पेपर फोल्डिंग (ओरिगेमी कार्य) का उपयोग करके फूल बनाने के लिए निर्देशित करें, और उन्हें बगीचे के दृश्य को पूरा करने के लिए फूलों को चिपकाने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	बच्चों को रंगीन कागज़ दें। उन्हें नाव, चिड़िया, हवाई जहाज आदि बनाने के लिए कागज़ को अधिक जटिलता के साथ मोड़ना सिखाया जा सकता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों से अपनी पेपर फोल्डिंग कृतियों के उपयोग से विभिन्न दृश्य बनाने को कहें। • बच्चों के काम को उनके पोर्टफोलियो में रखें और उनकी प्रगति देखें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	आँखों-हाथों का समन्वय; बारीक गत्यात्मक कौशल; रचनात्मक और सौंदर्य विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की भागीदारी, रचनात्मकता, आँखों-हाथों का समन्वय; बच्चे तरह-तरह के काल्पनिक दृश्य बनाते हैं, अपने विचारों को साझा करते हैं, स्थानीय संस्कृति का अवलोकन करते हैं, अपनी रचना का आनंद लेते हैं।

गतिविधि 4
मिट्टी (क्ले) का कार्य

आवश्यक सामग्री	लकड़ी के बोर्ड या कार्डबोर्ड, रंग, पेंटिंग ब्रश, टहनियाँ, फूल
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों को आटा या मिट्टी दें। उन्हें मिट्टी को पीटने या थपथपाने के लिए कहें और उन्हें अपनी पसंद का कुछ भी बनाने के लिए कहें, जैसे– विभिन्न आकारों की गेंदें, चपाती आदि।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को मिट्टी दें और उन्हें मिट्टी से रस्सी और गेंद बनाने के लिए कहें और उन्हें धूप में सूखने दें। फिर रंगों से पेंट करें और उनका उपयोग साँप, गाड़ी आदि जैसे खिलौने बनाने में करें।
4–5 वर्ष	• प्रत्येक बच्चे को लकड़ी का बोर्ड या गत्ता दें और दीया, गिलास, कटोरी आदि जैसे साधारण आकार में ढालने के लिए मिट्टी का एक गोला दें। • मोल्ड की गई वस्तुओं को सूखने दें। एक बार सूख जाने पर, मोल्डेड वस्तु को पेंट करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को मिट्टी या मिट्टी से खिलौने बनाने के लिए कहें और उनसे खेलने दें।
5–6 वर्ष	• बच्चों को कुछ रेत, मिट्टी या आटा दें और उनसे अपनी पसंद की वस्तु बनाने के लिए कहें। उन्हें कुछ विचार दें। • बच्चों को अपनी रचना को सजाने के लिए टहनियाँ, फूल, रंग आदि का उपयोग करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को पहिए बनाने दें, उन्हें सुखाएँ और उनमें रंग भरने के लिए कहें और लकड़ी, पहिए और डोरी से गाड़ी बनाने के लिए कहें। • उन्हें इसे खींचने के लिए कहें और नाटक करने के लिए कहें जैसे कि वे अपनी गाड़ी का उपयोग करके वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जा रहे हों।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	बारीक गत्यात्मक कौशल विकास; आँखों-हाथों का समन्वय; भाषा कौशल; सामाजिक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	रचनात्मकता, सटीकता, नियंत्रण, समन्वय, सहयोग, आनंद एवं भावाभिव्यक्ति आदि।

12.2: संगीत, भूमिका निभाना, नृत्य की भाव-भंगिमाएँ बनाने हेतु स्वयं के स्वर, शरीर, स्थान और अन्य वस्तुओं के साथ पड़ताल करना एवं खेलना

गतिविधि 1
गायन

आवश्यक सामग्री	गाने, ऑडियो प्लेयर
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष	बच्चों को गीत सुनने को कहें, शिक्षक के साथ दोहराने दें और फिर स्वयं गाएँ। क्रियाओं और चेहरे के भावों का उपयोग करें। उन्हें शिक्षक की मदद से वाद्ययंत्रों और गायन संगीत का पता लगाने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	परिवर्तनकाल के दौरान एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में सरल संगीत, तुकबंदी करें और बच्चों को आनंद लेने और खुद को अभिव्यक्त करने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	शब्दावली विकास; भाषा कौशल का विकास; सामाजिक-भावनात्मक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	रुचि के साथ गाते हैं, ताल की पड़ताल करते हैं, विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ पैदा करते हैं, मात्रा (तीव्र और मृदु स्वर) की पड़ताल करते हैं, वाद्य और गायन संगीत के बीच अंतर जानते हैं।

गतिविधि 2
बिल्ली और चूहे का खेल

आवश्यक सामग्री	बिल्ली का मुखौटा, चूहा
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष	एक बच्चे को बिल्ली और दूसरे बच्चों को चूहा बनने के लिए कहें। बच्चे के माथे पर मास्क लगाएँ। बिल्ली, चूहे को पकड़ने की कोशिश करेगी। बिल्ली से बचने के लिए सभी बच्चों को इधर-उधर भागना होगा। बच्चे 'चूहा भाग बिल्ली आई' गा सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को हाथ पकड़कर घेरा बनाने को कहें। एक बच्चे को बिल्ली और दूसरे बच्चे को चूहा बनने को कहें। चूहा बने बच्चे को घेरे के अंदर और बिल्ली बने बच्चे को घेरे के बाहर रहने के लिए कहें।

	• बिल्ली को घेरे के अंदर आने की कोशिश करके चूहे को पकड़ने की कोशिश करनी चाहिए, लेकिन अन्य बच्चे, बिल्ली को घेरे में घुसने से रोकेंगे और चूहों को पकड़े जाने से बचाने का प्रयास करेंगे। • बच्चे बारी-बारी से चूहा-बिल्ली बन सकते हैं। उन्हें चूहा-बिल्ली की तरह शरीर के हाव-भाव, अभिव्यक्ति और नाटक करने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	स्थूल गत्यात्मक कौशल; सहयोग; टीम-वर्क; आवाज़ में उतार-चढ़ाव; कल्पना आदि।
अवलोकन बिंदु	टीम भावना, समूह में समायोजन, सहयोग, आनंद और जोश के साथ उनके अनुकरण करने का निरीक्षण करें।

12.3: कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नवाचार और कल्पनाशील रूप से काम करना

गतिविधि 1
आओ नाचें

आवश्यक सामग्री	*ढोलक, ढपली आदि।*
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3-6 वर्ष	• ढोलक या ढपली बजाएँ और ताल का परिचय दें। गति, लय और नोट्स में भिन्नता सुनिश्चित करके, समय अंतराल पर थापों को बढ़ाएँ या घटाएँ। • बच्चों को नाचने या चलने के लिए कहें या थाप के अनुसार काम करने के लिए कहें। एक बच्चे को लीडर बनाएँ। लीडर से कहें कि वह समय-समय पर अपनी ताल बदले, और दूसरे बच्चों को लीडर का अनुसरण करने के लिए निर्देशित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को ध्वनि के अनुसार अलग-अलग शारीरिक ध्वनियाँ, जैसे– पैर पटकने, ताली बजाने, हँसने आदि के लिए कहें या वाद्ययंत्र बजाते समय गाएँ और बच्चों को धुन पर नाचने के लिए कहें। वे जैसे चाहें, खुलकर नाचें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	स्थूल गत्यात्मक कौशल; सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल; भाषा विकास; सामाजिक-भावनात्मक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की भागीदारी, अभिव्यक्ति, उनकी पहल करने, नेतृत्व और भावनाओं को देखें।

गतिविधि 2
नाटकीय खेल

आवश्यक सामग्री	पूर्ण लंबाई का दर्पण, दुपट्टे, टोपी, पर्स, टाई, डॉक्टर सेट, किचन सेट, उपकरण
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष	• नाटकीय खेल क्षेत्र में पूरी लंबाई का दर्पण, दुपट्टा, टोपी, पर्स, टाई, डॉक्टर का सेट, किचन सेट, उपकरण आदि जैसी वस्तुएँ रखें। • बच्चों को डॉक्टर, दुकानदार, शिक्षक आदि बनने के लिए कहें। कुछ निर्देश या संकेत दें, जैसे– 'जंगल में हाथी की तरह चलना', 'बगीचे में उड़ती तितली', 'रोगी को देखता डॉक्टर', 'शिक्षक द्वारा अपनी कक्षा को पढ़ाना' आदि। बच्चों का एक समूह अभिनय करता है और अन्य अनुमान लगाते हैं कि वे कौन हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	रचनात्मकता; मुक्त अभिव्यक्ति; भाषा विकास; सामाजिक-भावनात्मक विकास।
अवलोकन बिंदु	कल्पना, सामाजिक-भावनात्मक विकास, भाषा विकास, कुछ पहचानने योग्य लोगों, पशुओं, पौधों, वस्तुओं आदि की नकल करना आदि।

गतिविधि 3
कार्रवाई का अनुमान लगाना

आवश्यक सामग्री	पेंसिल, रुमाल, कागज़
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष	• कोई वस्तु लें, उदाहरण के लिए– एक पेंसिल, कल्पना करें कि यह कुछ और है। इसके साथ एक क्रिया का अनुकरण करें, जैसे– दाँतों को ब्रश करना। बच्चों को अनुमान लगाने दें कि उन्होंने इसकी क्या कल्पना की है। • फिर कक्षा के किसी भी बच्चे को एक मौका दें, वह पेंसिल से किसी अन्य वस्तु की कल्पना करने वाली किसी अन्य क्रिया का अनुकरण कर सकता है, जैसे कि (घोलना)। • इस प्रकार गतिविधि आगे बढ़ती है और बच्चों को क्रियाओं से कल्पित वस्तु का अनुमान लगाना पड़ता है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	कल्पना; समस्या को सुलझाना; शब्दावली विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	निरीक्षण करें कि बच्चे कैसे अभिनय करते हैं, उनके कार्यों में विवरण दिखाएँ।

12.4: कला के क्षेत्र में सहयोग करना

गतिविधि 1
रंगोली बनाना

आवश्यक सामग्री	फूल की पंखुड़ियाँ, पत्तियाँ, मनके, रंगीन रेत की टहनियाँ
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष	एक छोटे समूह में बच्चों को विभिन्न रंगों के फूलों की पंखुड़ियाँ, पत्तियाँ, रंगीन रेत आदि दें और उन्हें अपनी रंगोली डिजाइन बनाने या शिक्षक द्वारा दिए गए डिजाइन को भरने के लिए प्रोत्साहित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	उन्हें पुराने कपड़े के टुकड़े, मनके और अन्य रद्दी सामग्री, जैसे– बोतल के ढक्कन आदि दिए जा सकते हैं, जिनका उपयोग वे रंगोली की डिजाइन भरने के लिए कर सकते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	सहयोग; भाषा विकास; बौद्धिक विकास; सामाजिक-भावनात्मक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की भागीदारी, सहयोग, बारीक गत्यात्मक कौशल विकास, आँखों और हाथों का समन्वय, शामिल होना और सोच विचार करना आदि।

गतिविधि 2
उत्सव समारोह

आवश्यक सामग्री	मिट्टी, ऊन, टहनियाँ, रंगीन चार्ट पेपर, गोंद, स्टेपलर
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष	स्थानीय, क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संदर्भ के आधार पर स्कूल में सभी त्यौहार मनाएँ। त्यौहार की तैयारी करके बच्चों को त्यौहारों के उत्सव में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को राखी व दिया (दीपक) बनाने के लिए कहें; फाड़कर-चिपकाने की क्रिया से क्रिसमस ट्री बनाएँ और उसे सजाएँ; ईद आदि के अवसर पर दोस्तों के घर जाएँ।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	कल्पना; शब्दावली; सौंदर्य बोध; रचनात्मक अभिव्यक्ति, भाषा विकास; सामाजिक-भावनात्मक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की भागीदारी, रचनात्मकता, विभिन्न त्यौहारों के प्रति जागरूकता, स्वीकृति, सहयोग, एकता का निरीक्षण करें।

12.5 : कला, स्थानीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न रूपों का निर्माण और अनुभव करते हुए विभिन्न प्रतिक्रियाओं का संचार और सराहना करना

गतिविधि
कक्षा-कक्ष में डिस्प्ले बोर्ड बनाना

आवश्यक सामग्री	बुलेटिन बोर्ड, स्टेपलर, पेंसिल, क्रेयॉन, मार्कर, कैंची, चार्ट पेपर, स्केल
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–6 वर्ष	• बच्चों की आँखों के स्तर पर कक्षा-कक्ष में डिस्प्ले बोर्ड बनाएँ। • एक विषय-वस्तु, जैसे– किसी संकल्पना को प्रस्तुत करने, सीखने को सुदृढ़ करने तथा, कक्षा को सजाने हेतु चुनें; बच्चों के साथ चित्र बनाना या कोलाज बनाना; उन रेखाचित्रों और चित्रों को व्यवस्थित करें, जिन्हें आप अपने संग्रह में शामिल करके प्रदर्शित करना चाहते हैं। • बोर्ड की पृष्ठभूमि और सीमा बनाएँ, और चित्रों और शब्दों को चिपकाएँ।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	हवा, पानी, फल, सब्ज़ियाँ आदि जैसी कोई भी विषय-वस्तु लें। डिस्प्ले बनाएँ और जितनी बार संभव हो, विषय-वस्तु के अनुसार डिस्प्ले बदलें। बच्चों को उनके और दूसरों के काम के लिए उनकी प्रशंसा मौखिक रूप से करने के लिए प्रोत्साहित करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा विकास; स्थानिक समझ; सामाजिक-भावनात्मक विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	बच्चों की भागीदारी पर गौर करें। निरीक्षण करें, यदि बच्चा प्रतिक्रियाओं और विचारों को साझा करता है और उनकी सराहना करता है, मौखिक रूप से कलाकृति को अभिव्यक्त करता है, रंगों, सौंदर्य आदि के प्रति संवेदनशील प्रतीत होता है।

सीखने की सकारात्मक आदतों का विकास

सीखने की सकारात्मक आदतों को विकसित करने के लिए दक्षताओं में नियमित उपस्थिति, समयबद्धता, कक्षा की गतिविधियों में भाग लेना और भागीदारी, अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, दूसरों के अधिकारों एवं दृष्टिकोण का सम्मान करना, दूसरों की बात सुनना, नेतृत्व करना, समय पर कार्य को पूरा करना (कार्य पर दृढ़ता), सीखने के लिए सीखना आदि जैसी आदतें शामिल हैं।

सीखने की सकारात्मक आदतें विकसित करने से संबंधित पाठ्यचर्या लक्ष्य

पाठ्यचर्या लक्ष्य–13: औपचारिक शिक्षण वातावरण, जैसे– विद्यालय की कक्षा में सहभागिता हेतु बच्चों में सीखने की अच्छी आदतों का विकास करना।

सीखने की सकारात्मक आदतों का विकास

पाठ्यचर्या लक्ष्य– 13: औपचारिक शिक्षण वातावरण, जैसे– विद्यालय की कक्षा में सहभागिता हेतु बच्चों में सीखने की अच्छी आदतों का विकास करना

13.1: अवधान व सुविचारित प्रक्रिया— विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु योजना बनाना, ध्यान केंद्रित और प्रत्यक्ष गतिविधियों के लिए कौशल प्राप्त करना

गतिविधि 1

अन्वेषण और आनंद

आवश्यक सामग्री	लकड़ी का ब्लॉक, खाली बक्से, रेत, मिट्टी, अँगूठियाँ, रसोई के बर्तन, जैसे– धातु के कटोरे, चम्मच, दर्पण आदि तथा संगीत बजाने या बनाने के उपकरण
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• बच्चों को सामग्री (वस्तुएँ, खिलौने अथवा संगीत वाद्ययंत्र) प्रदान करें और उन्हें दी गई सामग्री से अन्वेषण करने दें और शिक्षकों के न्यूनतम हस्तक्षेप और मार्गदर्शन के साथ उन्हें अपनी पसंद की चीजें बनाने और फिर से बनाने का चयन करने दें। • किताबें रख दें और बच्चों को खुद किताबें तलाशने दें। • उनकी पसंद के खिलौने और वस्तुएँ बनाने के लिए ब्लॉक, खाली बक्से प्रदान करें। • मुक्त रूप से खेलने के लिए मिट्टी प्रदान करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• पढ़ने के क्षेत्र में बच्चों को चित्र पुस्तकों का अवलोकन करने दें। उन्हें चित्रों को देखकर पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें, चित्रों या शब्दों के नीचे अँगुली रखकर उन्हें चित्र बनाने, रँगने और पेंट करने दें। • बच्चे अँगूठियाँ, रिबन, दर्पण, संगीत आदि जैसे सामान का उपयोग करके नृत्य और शारीरिक गतिविधियाँ कर सकते हैं।

4–5 वर्ष	• बच्चों को सामग्री प्रदान करें और उन्हें दी गई सामग्री से अन्वेषण करने के लिए कहें और शिक्षकों के न्यूनतम हस्तक्षेप और मार्गदर्शन के साथ उन्हें अपनी पसंद की चीजें बनाने और फिर से बनाने का चयन करने दें। • बच्चों को गोले में बैठा दें और बीच में कुछ बड़ी तस्वीरों वाली किताबें रखें। उन्हें अपनी पसंद की एक किताब लेने के लिए कहें और किताब में देखें और इशारों से बताएँ कि वे क्या देख रहे हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• ब्लॉक, खाली माचिस की डिब्बी प्रदान करें। बच्चों को उन्हें कागज़ से लपेटने दें, उनसे सोफा, कुर्सी आदि जैसे फर्नीचर बनाने को कहें। • मुक्त रूप से खेलने के लिए मिट्टी प्रदान करें। • बच्चे विभिन्न प्रॉप्स का उपयोग करके संगीत के साथ लयबद्ध नृत्य करना सीख सकते हैं।
5–6 वर्ष	• बच्चों को सामग्री प्रदान करें और उन्हें दी गई सामग्री से अन्वेषण करने दें और शिक्षकों के न्यूनतम हस्तक्षेप और मार्गदर्शन के साथ उन्हें अपनी पसंद की चीजें बनाने और फिर से बनाने का चयन करने दें। • उन्हें स्वतंत्र रूप से कार्य करने दें जैसे चीजें बनाना, प्रयोग करना या पढ़ना आदि।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ 	• कक्षा में एक पूरी लंबाई का दर्पण लगाएँ और बच्चों को स्वयं को दर्पण में देखने दें। कोई संगीत बजाएँ और बच्चों को दर्पण में देखते हुए संगीत पर नृत्य करने दें। • यदि दर्पण उपलब्ध नहीं है, तो बच्चों को मुक्त नृत्य गतिविधियों का आनंद लेने दें। • संगीत की लय के अनुसार नृत्य को और विस्तृत करने के लिए रिबन, स्कार्फ जैसी सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। • विभिन्न प्रकार की चित्र पुस्तकें या ड्राइंग पुस्तकें उपलब्ध कराएँ, जिन्हें बच्चे सरलता से देख और समझ सकें। • बच्चों को कक्षा में सरल कार्यों की जिम्मेदारी लेने के अवसर प्रदान करें, उदाहरण के लिए— उन्हें उसी कक्षा के बच्चों तथा उनसे छोटे बच्चों को लेखन सामग्री, शिल्प सामग्री आदि वितरित करने के लिए कहें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	आत्म-निर्माण में आनंद की अनुभूति; कल्पना शक्ति; शरीर समन्वय; ताल, थाप या संगीत का आनंद लेना; एक सकारात्मक आत्मसंकल्पना का विकास; पहल की भावना; स्वतंत्रता; नेतृत्व और स्वायत्तता आदि।
अवलोकन बिंदु	उन बच्चों का निरीक्षण करें, जो खोज करने के लिए उन्मुक्त हैं। देखें कि वे कैसे चुनाव करते हैं, चुनी हुई सामग्री पर केंद्रित रहते हैं या विभिन्न सामग्रियाँ बदल कर देखते हैं, निराशा अथवा हताशा का प्रबंधन कैसे प्रबंधन करते हैं।

गतिविधि 2
कल्पनाशीलता उद्दीप्तिकरण

आवश्यक सामग्री	आयु-उपयुक्त उद्दीपक प्रश्नों की सूची, जिसे शिक्षक पहले से तैयार करके रख सकते हैं।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	बच्चों से ऐसे प्रश्न पूछें जो उनकी कल्पना को उद्दीप्त कर सकें, उदाहरण के लिए— यदि आपकी कक्षा में एक गिलहरी आ जाएँ तो क्या होगा?
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे ऐसे प्रश्न लेकर आएँ और एक-दूसरे से पूछें।
4–5 वर्ष	बच्चे एक बाल्टी (बाल्टी के विभिन्न उपयोग) की सहायता से विभिन्न चीजों का अभिनय कर सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• उपरोक्त गतिविधि 2 टीमों और समूहों में खेली जानी है। • समूह 1 किसी वस्तु के अलग-अलग उपयोग को क्रियान्वित करता है, जैसे– रुमाल और दूसरी टीम (समूह 2) पहले समूह द्वारा दिखाए गए उपयोग का अनुमान लगा सकती है।
5–6 वर्ष	• पेंट करने या रंगने के लिए एक रेखाचित्र दें; सीमित संख्या में रंग, प्रकृति से अन्य सामग्री, जैसे– पत्ते आदि प्रदान करें और बच्चों को यह पता लगाने दें कि क्या वे अधिक रंग बनाने और चित्र बनाने के विकल्पों के साथ आ सकते हैं। • प्रत्येक बच्चा पूछकर, इधर-उधर घूमकर, रंगों और उपलब्ध सामग्री की तलाश करके अपनी पेंटिंग को पूरा करता है और अन्य बच्चों के साथ रंगों और संसाधनों को साझा भी करता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को थ्रेड पेंटिंग करने दें, पेंट किए गए चित्र को दोस्तों को दिखाने के लिए कहें उन्हें तस्वीर देखने के लिए कहें और जो कुछ वे देखते हैं उसे एक-दूसरे के साथ साझा करने के लिए निर्देशित करें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	अनुकूलन; लचीलापन, कल्पनाशीलता; मौखिक अभिव्यक्ति; संसाधनों का बँटवारा; सहायता प्रदान करना और प्राप्त करना आदि।
अवलोकन बिंदु	उन बच्चों का निरीक्षण करें, जो दी गई सामग्री का उपयोग करने में अनुकूलन क्षमता, लचीलापन, कल्पनाशील, मौखिक रूप से विचारों को व्यक्त करने की क्षमता दिखाते हैं।

गतिविधि 3
आओ खेलें स्टेचू

आवश्यक सामग्री	संगीत के उपकरण
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	संगीत बजाएँ। जब संगीत बज रहा हो तो बच्चों को इधर-उधर जाने के लिए कहें और जब संगीत रुक जाए तो अपने शरीर को हिलाना बंद करने के लिए कहें यदि संगीत बंद होने के बाद भी वे हिलना जारी रखते हैं, तो उन्हें गाना गाने या हाथी या तितली आदि की तरह अभिनय करने के लिए कहा जाता है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	कुछ क्रियाएँ, जैसे– ताली बजाना, क्लिक करना आदि करें। जब आप क्रिया कर रहे हों, तो बच्चों को खेल की शुरुआत में तय किए गए एक विशेष स्वर में ला, ला, ला, ला गाने के लिए कहें। जब आप क्रिया करना बंद करें, तो बच्चों को ला, ला, ला, ला कहना बंद कर देना चाहिए।
4–5 वर्ष	संगीत बजाएँ और बच्चों को इधर-उधर कूदने दें। जब संगीत बंद हो जाता है, तो बच्चों को मूर्तिवत स्थिति यानी स्टेचू की स्थिति लेनी होती है। उन्हें शारीरिक क्रियाएँ रोकने की आवश्यकता होती है न ही हिलने की।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• गतिविधि के पहले 2–3 राउंड के बाद इसे थोड़ा चुनौतीपूर्ण बना दें। • एक बच्चे से दूसरों को हँसाने का प्रयास करने के लिए कहें ताकि मूर्ति की स्थिति में बाधा उत्पन्न हो, जिसकी भौंहें, पलकें या शरीर हिलता है; उसे केंद्र में बुलाया जाएगा और आगे खेल जारी रहेगा।
5–6 वर्ष	• कक्षा में एक बच्चे को संगीत बजाने दें, और अन्य बच्चे तब तक पीछे की ओर चलें जब तक कि संगीत बंद न हो जाए। • जब संगीत बंद हो जाता है, तो वे बच्चे स्टेचू की तरह रुक जाते हैं; और जब संगीत फिर से शुरू होता है, तो बच्चों को तुरंत आगे चलना शुरू कर देना चाहिए।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	उपरोक्त क्रियाकलाप से— 'स्टेचू की तरह स्थिर' स्थिति को नृत्य मुद्रा के साथ बदलें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	श्रवण ध्यान; गत्यात्मक समन्वयन; संवेदी विकास; समाजीकरण आदि।
अवलोकन बिंदु	उन बच्चों का निरीक्षण करें, जो संगीत के प्रति सजग हैं, जो स्टेचू की स्थिति में शांत और स्थिर हैं। उन बच्चों का निरीक्षण करें, जो शांत और स्थिर नहीं हैं और उन्हें स्टेचू की स्थिति में रहने के लिए प्रोत्साहित करें।

13.2: स्मृति और मानसिक लचीलापन— पर्याप्त कार्यशील स्मृति, मानसिक लचीलापन (उचित ध्यान परिवर्तन) एवं आत्मनियंत्रण (आवेगपूर्ण कार्यों या प्रतिक्रियाओं का विरोध करने हेतु) विकसित करना, जिससे उन्हें संरचित वातावरण में सीखने में सहायता मिलेगी

गतिविधि 1
यातायात के नियम

आवश्यक सामग्री	बाउल के साथ पर्चियाँ, टॉय बॉल, ढपली या ड्रम, चॉक
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	• यातायात नियंत्रण— खेल के मैदान में चिह्नित पथ बनाएँ, उदाहरण के लिए— बायाँ मोड़, दायाँ मोड़, लाल बत्ती, हरी बत्ती आदि। यातायात नियमों का पालन करते हुए बच्चों को चलने और विभिन्न वाहनों की सवारी करने का नाटक करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चे बारी-बारी से रुकने और जाने के संकेत, लाल और हरी बत्ती के संकेत आदि दिखाकर कक्षा में यातायात को नियंत्रित कर सकते हैं।
4–5 वर्ष	• बच्चों को खींचे गए घेरे में और उसके चारों ओर स्वतंत्र रूप से दौड़ने दें, कूदने दें या एक विशेष रेखा तक चलने दें और लाल रंग का चिह्न दिखाई देने पर किसी रेखा से आगे न जाने दें। • यदि हरा चिह्न दिखाई दे तो बच्चों को नाचने या गाने के लिए कहें, पीला चिह्न दिखाई देने पर उन्हें क्रियाओं को धीमा कर देना होगा।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को यातायात पुलिसकर्मी की भूमिका निभाने के लिए कहें, उन्हें याद करके स्कूल में की गई गतिविधियों को पुनः करने के लिए कहें।
5–6 वर्ष	एक कटोरी लें और उसमें कुछ मुड़ी हुई पर्चियाँ रखें, जिन पर कुछ कार्य लिखे हों; उदाहरण के लिए— ट्रैफिक लाइट पर तुकबंदी, परिवहन के नाम, 1 से 20 तक की गिनती, अक्षर क्रम में, कुछ फलों के नाम, सब्ज़ियों के नाम आदि। फिर बच्चों को सॉफ्ट टॉय या बॉल दें। ढपली या ड्रम बजाएँ और बच्चों को टॉय या बॉल पास करने के लिए कहें जब तक कि संगीत बंद न हो जाए। जैसे ही ढपली की आवाज़ बंद होती है, हाथ में गेंद लिए हुए बच्चे को चिट उठानी होती है और चिट में बताए अनुसार कार्य करना होता है।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	संज्ञानात्मक कौशल, संवेदी धारणा तथा शब्दावली विकास, गत्यात्मक समन्वय आदि।
अवलोकन बिंदु	उन बच्चों पर ध्यान दें, जो गतिविधि में विशिष्टताओं को नियंत्रित और उनका पालन कर सकते हैं, उन बच्चों की मदद करें, जो गतिविधि को स्थूल उदाहरणों के माध्यम से समझने में सक्षम नहीं हैं।

गतिविधि 2

कोलाज बनाना

आवश्यक सामग्री	बड़ा चार्ट पेपर, ड्राइंग सामग्री, पर्यावरण से उपलब्ध प्राकृतिक चीजें, जैसे– पत्ते, कंकड़, लकड़ियाँ
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	छोटे कंकड़ों-पत्थरों, शैल तथा पत्ते को अलग-अलग इकट्ठा करना और उन्हें कक्षा में लाना।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	प्रदर्शन के लिए प्रकृति से एकत्रित वस्तुओं को व्यवस्थित करने के लिए एक समूह में कार्य करना।
4–5 वर्ष	बच्चे अपने आस-पास आसानी से उपलब्ध सामग्री, जैसे– कंकड़, पत्ते, लकड़ियाँ ढूँढ सकते हैं और अपनी पसंद की कोई भी रचना कर सकते हैं।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चे जोड़ियों में, छोटे समूहों में काम करते हैं। एक मॉडल या कोलाज बनाने के लिए उनके पास जो भी सामग्री हो उसका आदान-प्रदान करें या एकत्रित करें। • एक बच्चा कोई मॉडल बनाना शुरू करे, दूसरा बच्चा उस पर आगे बढ़े। सभी अपनी बारी आने पर समग्र रूप से छोटे समूह में मॉडल या कोलाज को पूरा करते है।
5–6 वर्ष	• एक विषय-वस्तु चुनें और बच्चों के एक छोटे समूह को एक बड़ा चार्ट दें। इन सबको एक बड़ी शीट पर एक साथ रचना करने के लिए कहें। • उनके नाम लिखें और उनके नाम का प्रतिनिधित्व करने वाला एक प्रतीक चिह्न बनाएँ, जैसे कि उनकी पसंद की कोई भी चीज, जैसे– फूल, फल, सूरज, चाँद, तारा आदि।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चा, पहले बच्चे द्वारा बनाई गई ड्रॉइंग या प्रतीक चिह्न को देखता है और उसी ड्राइंग में कुछ और जोड़ता है सभी बच्चे करते हैं। अगला बच्चा दूसरे बच्चे द्वारा बनाई गई ड्रॉइंग को देखता है और उसमें जोड़ता है और इसी तरह सभी बच्चे बातें करते हैं। मूल आरेखन को मिटाए या बदलाव किए बिना उसमें संयोजन कर दिए जाते हैं।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	एक समूह में काम करना; खेलों के नियमों को समझना; एक-दूसरे के साथ बात-चीत, कल्पनाशीलता; संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक मेल-जोल आदि।
अवलोकन बिंदु	उन सभी बच्चों का निरीक्षण करें, जो सहयोगात्मक रूप से काम कर सकते हैं, काम करते समय धैर्यवान हैं और जो बच्चे अपनी बारी का इंतजार नहीं कर सकते या अधीर हैं। बच्चों को धैर्य रखने और अपनी बारी का इंतजार करने में मदद करें।

13.3: अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण— वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का निरीक्षण करना, विस्मित होना और विभिन्न इंद्रियों का उपयोग करके छान-बीन करना, वस्तुओं के साथ प्रयोग करना और प्रश्न पूछना

गतिविधि 1

प्रश्न पूछना

आवश्यक सामग्री	उपलब्ध प्राकृतिक सामग्री, जैसे– पत्ते, लकड़ियाँ, कंकड़ आदि तथा मानव निर्मित सामग्री, जैसे– लेंस, पंख, चुंबक
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	पत्ते और फूल दिखाकर बच्चों से पूछें कि ये हमें कहाँ से मिलते हैं?
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	आस-पास उपलब्ध पेड़ों के पत्ते तथा अन्य भाग,जैसे– फल-फूल तना आदि एकत्र करें।
4–5 वर्ष	एक चित्र या वस्तु दिखाएँ और बच्चों को पहचानने के लिए कहें, उदाहरणार्थ— कंकड़, नीम के पत्ते, गुलाब का फूल आदि।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	एक बच्चे को सामने खड़े होकर नाम पुकारने दें या कक्षा में उपलब्ध किसी वस्तु का चित्र दिखाने के लिए कहें, उदाहरणार्थ— सफेद फूल को कौन शीघ्रता से ढूँढता है।
5–6 वर्ष	• बच्चों को अपने आस-पास की प्राकृतिक चीजों को इकट्ठा करने दें और उनकी विशेषताओं का पता लगाने दें, उदाहरणार्थ— उन्हें दो कंकड़ एक-दूसरे पर रगड़ने दें और देखें कि क्या होता है या एक टूटे हुए पत्ते की गंध महसूस करने के लिए कहें। • बच्चों को एक पत्ता दिखाएँ और उनसे बगीचे में वह पेड़ ढूँढने के लिए कहें, जिस पेड़ का वह पत्ता हो। उन्हें एक फूल दिखाएँ और फूल से संबंधित झाड़ी ढूँढने को कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	बच्चों को विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे– लेंस, पंख, चुंबक आदि प्रदान करें। उन्हें स्वतंत्र रूप से सामग्री का उपयोग करने दें और छान-बीन करने के लिए कहें जब वे खेल रहे हों तो उनसे प्रश्न पूछें। आप क्या सोचते हैं? हम इसका इस्तेमाल कहाँ करते हैं? हम इसका उपयोग कैसे कर सकते हैं? क्या होगा यदि…? आइए, देखें कि क्या यह काम करता है आदि।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	कल्पनाशीलता, अन्वेषण, प्रेरणा, भिन्न सोच, संवेदी विकास, भाषा विकास आदि।
अवलोकन बिंदु	उन बच्चों का निरीक्षण करें, जो कई विचार लेकर आते हैं, जो प्रतिक्रिया देने के लिए पहल करते हैं, उन बच्चों का निरीक्षण करें, जो तुरंत प्रतिक्रिया देने नहीं आते हैं। ऐसे बच्चे जो कई अलग-अलग नवीन विचारों के बारे में सोच सकते हैं, उनकी अनूठी प्रतिक्रियाएँ देखें।

13.4: कक्षा के मानदंड— समझ के साथ मानदंडों को अपनाना और उनका पालन करना

गतिविधि 1

नियम बनाएँ एवं पालन करें

आवश्यक सामग्री	चार्ट पेपर।
आयु वर्ग	**गतिविधि का संचालन कैसे करें?**
3–4 वर्ष	लीडर का अनुसरण करें। कक्षा में सरल क्रियाएँ करें। बच्चों को क्रियाओं का पालन करने के लिए कहें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	क्रिया तेज़ गति से करें, धीमा करें और फिर रुक जाएँ। बच्चों को आनंद लेने दें; उदाहरणार्थ— अपना हाथ गोल-गोल घुमाएँ और अचानक रुक जाएँ।
4–5 वर्ष	प्रत्येक बच्चा कक्षा में चलने के साथ में एक मोड़ लेता है, बाकी बच्चे क्रियाकलाप करने वाले बच्चे का अनुसरण करें।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	• बच्चों को एक दिन पालन करने के लिए कुछ नियम तय करने को कहें, उदाहरण— यदि आपको शिक्षक से कोई प्रश्न पूछना है या यदि आप कक्षा में बात करना चाहते हैं तो बायाँ हाथ उठाएँ। • यदि आपको शौचालय जाने की आवश्यकता है तो अपना दायाँ हाथ उठाएँ। • बच्चों को देखने दें कि क्या वे सभी निर्धारित नियमों को याद रखने और उनका पालन करने में सक्षम हैं और जो बच्चे उचित कार्रवाई करना भूल जाते हैं, उनकी मदद करें।
5–6 वर्ष	• 'जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो' खेलें। बच्चों को ध्यान से सुनने और क्रिया करने को कहें। आप अलग-अलग क्रियाएँ कर सकते हैं, जैसे– *नाक पकड़ों कहना और 'अपने कानों को पकड़ना* आदि। • बच्चे अपने कान पकड़ने लगते हैं, लेकिन आपको देखकर वे अपनी नाक पकड़ सकते हैं। • बच्चों के साथ चर्चा करें और नियमों को चार्ट पेपर पर लिखें, दृश्य बनाएँ, उन्हें डिस्प्ले बोर्ड पर रखें और सुनिश्चित करें कि उनका पालन हो रहा है।
मिलती-जुलती गतिविधियाँ	उपयुक्त मानदंडों के लिए एक चार्ट बनाएँ और बच्चों को नियमों का पालन करने में मदद करें और यदि नियमों का पालन नियमानुसार किया जाता है तो एक स्टार दें। घर के लिए भी एक चार्ट दें, उदाहरणार्थ— जब उपयोग में न हो तो लाइट और पंखे बंद कर दें।
अन्य संवर्धित दक्षताएँ	भाषा विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाजीकरण आदि।
अवलोकन बिंदु	उन बच्चों का निरीक्षण करें, जो निर्देशों का पालन करने में नियमित हैं और जो बच्चे नियमों की संकल्पना को समझ चुके हैं। उन बच्चों की मदद करें, जो नियमों का पालन करने में सक्षम नहीं हैं।

अनुलग्नक

अनुलग्नक

अनुलग्नक I बालवाटिका हेतु प्रक्षेत्र, पाठ्यचर्या के लक्ष्य और दक्षताएँ

अनुलग्नक II कठपुतली बनाना (खिलौना-आधारित अधिगम)

अनुलग्नक III कविताओं एवं गीतों के साथ कुछ अनुकरणीय गतिविधियाँ

अनुलग्नक IV यातायात पर विषय-वस्तु-आधारित अधिगम योजना

अनुलग्नक V बालवाटिका में एक दिन का शैक्षणिक कार्यक्रम

अनुलग्नक VI बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल का विकास

अनुलग्नक VII क्षमता निर्माण कार्यक्रम

अनुलग्नक VIII बालवाटिका में एक दिन की गतिविधियों का अवलोकन

अनुलग्नक IX समग्र प्रगति कार्ड (बालवाटिका-I)

अनुलग्नक X समग्र प्रगति कार्ड (बालवाटिका-II)

अनुलग्नक XI समग्र प्रगति कार्ड (बालवाटिका-III)

अनुलग्नक

बालवाटिका हेतु प्रक्षेत्र, पाठ्यचर्या के लक्ष्य और दक्षताएँ

अन्नमय कोष (भौतिक और गत्यात्मक विकास)		
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	
पाठ्यचर्या लक्ष्य-1 बच्चों में ऐसी आदतों का विकास करना, जो कि उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित बनाए रखें	1.1	पौष्टिक भोजन के प्रति अपनी पसंद एवं समझ को दिखाना और भोजन को बर्बाद नहीं करना
	1.2	व्यक्तिगत देखभाल एवं स्वच्छता हेतु आवश्यक अभ्यास करना
	1.3	विद्यालय और कक्षा को स्वच्छ एवं व्यवस्थित रखना
	1.4	सरल उपकरणों एवं सामग्री के सुरक्षित उपयोग का अभ्यास करना
	1.5	कार्य (चलने, दौड़ने, साइकिल चलाने) करने में सुरक्षा के प्रति जागरूकता प्रदर्शित करना और उसके अनुरूप व्यवहार करना
	1.6	असुरक्षित स्थिति समझना और मदद माँगना
पाठ्यचर्या लक्ष्य-2 बच्चों में संवेदी कुशाग्रता का विकास करना	2.1	आकृतियों, रंगों और रंगों के विभिन्न प्रकारों को समझना
	2.2	संकेतों और प्रतिरूपों के प्रति दृष्टि स्मृति विकसित करना
	2.3	ध्वनि और ध्वनि पैटर्न में उनके स्वरमान और आवाज़ के स्तर पर भेद करना
	2.4	विभिन्न प्रकार की सुगंधों और स्वादों को जानना
	2.5	स्पर्श के आधार पर चीजों में अंतर करना
	2.6	अनुभवों की समग्र जागरूकता प्राप्त करने के लिए संवेदी धारणाओं को एकीकृत करना
पाठ्यचर्या लक्ष्य-3 बच्चों में स्वस्थ शरीर और लचीलेपन का विकास	3.1	विभिन्न गतिविधियों में इंद्रियों और शरीर की गतिविधियों में ताल-मेल दर्शाना
	3.2	विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में संतुलन, ताल-मेल और लचीलेपन का प्रदर्शन करना
	3.3	हाथों और अँगुलियों से काम करते समय समन्वय और नियंत्रण दर्शाना
	3.4	सामान ले जाने, चलने और दौड़ने में सशक्त होना और स्थिरता दर्शाना
मनोमय कोष (सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास)		
	4.1	'स्वयं' को एक व्यक्ति के रूप में पहचानना शुरू करना, जो एक परिवार तथा समुदाय का हिस्सा है।
	4.2	विभिन्न भावनाओं को पहचानना और उन्हें उचित रूप से विनियमित करने के लिए सुविचारित प्रयास करना
	4.3	अन्य बच्चों तथा वयस्कों के साथ सहजतापूर्वक बात-चीत करना

पाठ्यचर्या लक्ष्य-4 बच्चों में भावात्मक बुद्धिमत्ता, जैसे– भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक मानदंडों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देने में सामर्थ्य विकसित करना	4.4 अन्य बच्चों के साथ सहयोग प्रदर्शित करना 4.5 कक्षा-कक्ष और स्कूल में सामाजिक मानदंडों को समझना और उनके प्रति सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देना 4.6 दूसरों (जिसमें जीव-जंतु, पेड़-पौधे शामिल हैं।) के प्रति दयालुता और मदद करने की भावना प्रदर्शित करना 4.7 विभिन्न विचारों, प्राथमिकताओं तथा अन्य बच्चों की भावात्मक आवश्यकताओं को समझना और उन पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देना
पाठ्यचर्या लक्ष्य-5 बच्चों में उत्पादक कार्य तथा सेवाओं के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना	5.1 दूसरों की सहायता करने के लिए आयु-अनुरूप शारीरिक कार्य के प्रति इच्छा प्रदर्शित करना और उसमें सहभागिता करना
पाठ्यचर्या लक्ष्य-6 बच्चों में आस-पास के प्राकृतिक वातावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना	6.1 सभी जीवों से जुड़ना, देखभाल करना और आनंदित होना
विज्ञानमय कोष (संज्ञानात्मक विकास)	
पाठ्यचर्या लक्ष्य-7 अवलोकन तथा तार्किक सोच के साथ अपने आस-पास की दुनिया की समझ बनाना	7.1 विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के वर्गीकरण तथा उनके मध्य संबंधों का अवलोकन करके समझना 7.2 सरल कारण और प्रभाव के संबंधों का अवलोकन करके समझना तथा उनकी परिकल्पना बनाकर उसकी व्याख्या करना 7.3 दैनिक जीवन में सीखने योग्य उपकरणों और प्रौद्योगिकी का उपयोग करना
पाठ्यचर्या लक्ष्य-8 बच्चों में गणितीय समझ विकसित करना और उनमें मात्रा, आकार और मापन के माध्यम से दैनिक गतिविधियों की समझ बनाना	8.1 एक से अधिक गुणों के आधार पर वस्तुओं को समूहों तथा उप-समूहों में वर्गीकृत करना 8.2 अपने परिवेश में, आकार और संख्याओं के सरल पैटर्न को पहचानकर उसे आगे बढ़ाना 8.3 बच्चों द्वारा 99 तक आगे और पीछे तथा 10 और 20 के समूह में गिनना 8.4 बच्चों द्वारा 99 तक की संख्याओं को बढ़ते एवं घटते क्रम में व्यवस्थित करना 8.5 दशमलव मान प्रणाली को समझते हुए 99 तक की संख्याओं को बताने के लिए अंकों की पहचान और उपयोग करना 8.6 विभिन्न प्रकार से 2-अंकीय संख्याओं का समूहन एवं पुनर्समूहन कर जोड़ना और घटाना 8.7 गुणन को बार-बार जोड़ और भाग को समान विभाजन के रूप में पहचानना

	8.8 बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों और अवलोकन योग्य गुणों को पहचानना 8.9 आस-पास के परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं की लंबाई, भार एवं आयतन की सरल माप जानना 8.10 मिनटों, घंटों, दिन, सप्ताह और महीने में समय का सरल मापन करना 8.11 सरल लेन-देन में भारतीय मुद्रा (₹100) का उपयोग करना 8.12 मात्रा, आकार, स्थान और माप से संबंधित संकल्पनाओं और प्रक्रियाओं को समझकर व्यक्त करने हेतु पर्याप्त एवं उपयुक्त शब्दावली विकसित करना 8.13 मात्रा, आकार, स्थान एवं माप की सरल गणितीय समस्याएँ निर्मित करना
पाठ्यचर्या लक्ष्य-9 बच्चों में दैनिक अंत: क्रियाओं हेतु दो भाषाओं में प्रभावी संप्रेषण कौशल विकसित करना	9.1 सामान्य गीत और कविता सुनना एवं प्रशंसा करना 9.2 सरल गीत और कविताएँ लिखना 9.3 सार्थक और धाराप्रवाह बात-चीत करना 9.4 जटिल कार्य हेतु मौखिक निर्देश समझकर दूसरों को स्पष्ट मौखिक निर्देश देना 9.5 सुनी एवं पढ़ी गई कहानियों को समझकर पात्रों, कथानक एवं रचनाकार क्या कहना चाहते हैं, इसके प्रति समझ दर्शाना 9.6 स्पष्ट कथानक और पात्रों के साथ लघु कहानियाँ सुनाना 9.7 दिन-प्रतिदिन के प्रभावी संप्रेषण या बात-चीत के लिए पर्याप्त शब्द जानना एवं उपयोग करना एवं मौजूदा शब्दावली का उपयोग कर नए शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाना
पाठ्यचर्या लक्ष्य-10 बच्चों में भाषा 1 में पढ़ने एवं लिखने में प्रवाह का विकास करना।	10.1 ध्वनि संबंधी जागरूकता विकसित करना एवं स्वनिम (बोले गए शब्द की इकाई) शब्दांश को शब्दों में मिलाना तथा शब्दांश को शब्दों में बाँटना 10.2 किसी पुस्तक की मूल संरचना अथवा प्रारूप को समझना; छपे हुए शब्दों पर विचार करना और उनकी दिशा समझना तथा मूल विराम चिह्नों को पहचानना 10.3 भाषा की वर्णमाला के सभी अक्षरों को पहचानना तथा शब्दों को पढ़ने और लिखने में इस ज्ञान का उपयोग करना 10.4 कहानियों और अनुच्छेदों को सटीकता और प्रवाह के साथ उपयुक्त विरामों और ध्वनि के उतार-चढ़ावों के साथ पढ़ना 10.5 लघुकथाएँ पढ़ना और उसके पात्रों, कथानक और रचनाकार क्या कहना चाहते हैं, की पहचान कर उसका अर्थ समझना 10.6 लघु कविताएँ पढ़ना तथा कविता में चयनित शब्दों एवं कल्पनाशीलता की सराहना करना 10.7 लघु समाचारों, अनुदेशों एवं व्यंजन बनाने की विधि और प्रचार सामग्री को पढ़ना और अर्थ समझना 10.8 अपनी समझ और अनुभवों को अभिव्यक्त करने के लिए अनुच्छेद लिखना 10.9 विभिन्न प्रकार की बाल पुस्तकों के चयन में रुचि दिखाना और उनको पढ़ना

पाठ्यचर्या लक्ष्य-11 बच्चों का भाषा 2 में पढ़ने एवं लिखने की शुरुआत करना	11.1 ध्वनि संबंधी जागरूकता विकसित करना और स्वनिम या शब्दांश को शब्दों में मिलाना तथा स्वनिम या शब्दांश को शब्दों में अलग करना 11.2 वर्णमाला के सबसे ज़्यादा बार आने वाले अक्षरों को पहचानना और सरल शब्दों एवं वाक्यों को पढ़ने और लिखने में इस ज्ञान का उपयोग करना
आनंदमय कोष (सौंदर्यशास्त्र और सांस्कृतिक विकास)	
पाठ्यचर्या लक्ष्य-12 बच्चों में दृश्य और प्रदर्शन कलाओं में क्षमताओं तथा संवेदनाओं का विकास करना, अर्थपूर्ण और आनंदपूर्ण तरीकों से कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करना	12.1 अलग-अलग आकारों में द्वि-आयामी और त्रि-आयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियों और उपकरणों की पड़ताल कर उनके साथ खेलना 12.2 संगीत, भूमिका निभाना, नृत्य एवं भंगिमाएँ बनाने के लिए खुद की आवाज़, शरीर, स्थान और अन्य तरह की वस्तुओं के साथ पड़ताल करना और खेलना 12.3 कला के माध्यम से विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नवाचार और कल्पनाशील रूप से काम करना 12.4 कला के क्षेत्र में सहयोग करना 12.5 कला, स्थानीय संस्कृति और विरासत के भिन्न रूपों का निर्माण तथा अनुभव करते हुए विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं का संचार एवं सराहना करना
सीखने की सकारात्मक आदतें	
पाठ्यचर्या लक्ष्य-13 औपचारिक शिक्षण वातावरण, जैसे– विद्यालय की कक्षा में सहभागिता हेतु बच्चों में सीखने की अच्छी आदतों का विकास करना	13.1 अवधान व सुविचारित प्रक्रिया— विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु योजना बनाना, ध्यान केंद्रित करना और प्रत्यक्ष गतिविधियों हेतु कौशल प्राप्त करना 13.2 स्मृति और मानसिक लचीलापन— पर्याप्त कार्यशील स्मृति, मानसिक लचीलापन (उचित रूप से बनाए रखने या ध्यान केंद्रित करने के लिए) और आत्म-नियंत्रण (आवेगपूर्ण कार्यों या प्रतिक्रियाओं का विरोध करने के लिए) विकसित करना, जिससे उन्हें संरचित वातावरण में सीखने में सहायता मिलेगी। 13.3 अवलोकन, आश्चर्य, जिज्ञासा और अन्वेषण— वस्तुओं के सूक्ष्म विवरणों का अवलोकन करना, विस्मृत होना और विभिन्न इंद्रियों का उपयोग करके छानबीन करना, वस्तुओं के साथ प्रयोग करना और प्रश्न पूछना 13.4 कक्षा के मानदंड— समझ के साथ मानदंडों को अपनाना और उनका पालन करना

कठपुतली बनाना
(खिलौना आधारित अधिगम)

कठपुतली का खेल एक कला है, जिसका उपयोग पुराने समय में विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता था। यह मनोरंजन और कहानी कहने हेतु उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक और सांस्कृतिक कला रूपों में से एक है। पारंपरिक रूप से कठपुतली निर्माण मनोरंजन और शैक्षिक गतिविधियों के लिए प्रयुक्त होता था। कठपुतली नाट्यशाला का उपयोग कक्षा में किस्से सुनाने के लिए किया जाता है। सामान्यत: इसकी बनावट लकड़ी की होती है, जिसमें पीछे की ओर पर्दा लगा होता है। कपड़े के पर्दे पर कहानी के अनुसार कुछ दृश्य दर्शाए जाते हैं, जो कि कहानी की पृष्ठभूमि को चित्र के माध्यम से दर्शाते हैं। इस पर्दे से कहानी को एक परिदृश्य की सहायता से मंच का रूप दिया जाता है।.

कठपुतलियाँ बच्चों को कहानियाँ सुनाने के लिए बनाई जाती हैं। कई बार बच्चों को पशु, पक्षी, सरीसृप (रेंगने वाले जीवों), फलों, सब्ज़ियों आदि का रोमांचक शिक्षण अनुभव देने के लिए कठपुतलियों का उपयोग सूत्रधार यानी कथावाचक के रूप में भी किया जाता है। शिक्षकों के लिए यह एक सस्ता और अत्युत्तम साधन है।.

कठपुतली के खेल से लाभ

- इससे मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं।
- यह कल्पना शक्ति को बढ़ाता है।
- इससे बच्चों पर किसी रोक-टोक के बिना उनकी दबी हुई भावनाओं को बाहर निकालने में मदद मिलती है

कठपुतली बनाने एवं उपयोग करने से विकसित क्षमताएँ

बच्चों में संवेदी कुशाग्रता विकसित होती है; दृश्य स्मृति विकसित होती है; स्पर्श बोध विकसित होता है; हाथों और अँगुलियों से काम करने पर सुस्पष्टता और नियंत्रण की क्षमता विकसित होती है; विभिन्न भावों को पहचानना सीखते है; वयस्कों तथा अन्य बच्चों से सहजता से व्यवहार करना सीखते हैं; सामाजिक मानदंडों को सकारात्मक रूप से समझना सीखते हैं तथा प्रतिक्रिया देना सीखते हैं; अन्य बच्चों की इच्छाओं और भावात्मक आवश्यकताओं की समझ बनती है; जीवन के विभिन्न रूपों को आनंद और उत्साह के साथ देखने की दृष्टि विकसित होती है; बातों को सुनने और सराहने की क्षमता विकसित होती है; विभिन्न आकार की कलाकृतियों को बनाने के लिए विभिन्न तरह की सामग्रियों और उपकरणों को खोजने और काम करने हेतु प्रेरणा मिलती है; नई खोज और कल्पनात्मक कार्य करने को प्रेरित होते हैं; विभिन्न तरह की कलाओं के निर्माण तथा स्थानीय संस्कृति और विरासत के अनुभव को विभिन्न तरह की प्रतिक्रियाओं से संप्रेषित करने और उन्हें सराहने की क्षमता विकसित होती है।

कठपुतली के प्रकार

हस्त कठपुतली

(i) रोल या गोले से बनी हस्त कठपुतलियाँ

वे कठपुतलियाँ, जो कागज़ी गोले से बनी होती हैं, हस्त कठपुतली कहलाती हैं।

आवश्यक सामग्री

मोटा कागज़ (चार्ट पेपर), चमकीली आँखें, रंगीन कागज़, कैंची, गोंद, काला मार्कर आदि।

कठपुतली बनाने के चरण

- मोटे कागज़ का एक गोला बनाएँ।
- विभिन्न रंगीन कागज़ और मार्कर से कठपुतली के चरित्रों की मुखाकृति बनाएँ।
- कठपुतली पर चमकीली आँखें चिपकाएँ। मार्कर से मुँह तथा अन्य अंग बनाएँ।
- पंख, पैर, कान या एंटीना जो आप बनाना चाहें, काटकर चिपकाएँ।

(ii) कागज़ी शंकु से बनी हस्त कठपुतलियाँ

ये कठपुतलियाँ शंकु के आकार में मुड़े हुए कागज़ से बनी होती हैं।

आवश्यक सामग्री

कागज़ या कार्ड, चिपकाने के लिए टेप, फ़ीता, चमकीली आँखें, रंगीन कागज़, कैंची, ग्लू (गोंद) स्टिक, काला मार्कर आदि।

कठपुतली बनाने के चरण

- एक रंगीन मोटा कागज़ लें और दर्शाए गए चित्र के अनुसार शंकु बनाएँ।
- कागज़ के काटे गए टुकड़ों से अपनी पसंद के किसी पशु, पक्षी या किसी चरित्र का चेहरा बनाएँ।
- सजावट की सामग्री से पशु-पक्षी के चेहरे पर आँखें, नाक और मुँह बनाएँ।

- शंकु के शीर्ष पर चेहरे को चिपकाएँ।
- कागज़ी शंकु कठपुतली उपयोग के लिए तैयार है।

(iii) अँगुल प्रविष्ट कठपुतली

अँगुल प्रविष्ट कठपुतली में कठपुतली के पैर बनाने के लिए उसमें नीचे से दो अँगुलियाँ डाली जाती हैं।

आवश्यक सामग्री

रंगीन मोटा कागज़, चमकीली आँखें, कैंची, मार्कर, गोंद, सर्कल पंच आदि।

कठपुतली बनाने के चरण

- मोटे कागज़ पर किसी चरित्र अथवा पशु की बाहरी रूपरेखा बनाएँ।
- सजावट की सामग्रियों से मुखाकृति बनाएँ। सर्कल पंच से बाहरी रूपरेखा के निचले भाग में दो छेद बनाएँ।
- कठपुतली में अपनी अँगुलियाँ डालें और इससे खेलें।

(iv) ऊनी कपड़े से बनी अँगुल प्रविष्ट कठपुतलियाँ

ये कठपुतलियाँ आपकी अँगुलियों की माप के अनुसार ऊनी कपड़े की बनी होती हैं। इन कठपुतलियों को बनाना आसान होता है तथा इनमें आसानी से जोड़-तोड़ किया जा सकता है। ये लंबे समय तक चलती हैं तथा इनका रख-रखाव भी सरल होता है।

आवश्यक सामग्री

ऊनी कपड़ा, सुई, कढ़ाई वाला धागा, कैंची, चमकीली आँखें, बारीक कलम, गोंद आदि।

कठपुतली बनाने के चरण

- कपड़े (फैब्रिक शीट) को आयताकार काटें और इसे आधा मोड़ें। कैंची से किनारों को गोल काटकर दुरुस्त कर लें। कानों को सिलें तथा आँखें और नाक बनाएँ। आप इन्हें जोड़ने के लिए गोंद या फ़ैब्रिक गोंद का उपयोग भी कर सकते हैं।
- अपनी अँगुली कठपुतली के अंदर डालें और खेलें। सर्कल पंच से बाहरी रूपरेखा के निचले भाग में दो छेद बनाएँ।
- कठपुतली में अपनी अँगुलियाँ डालें और इससे खेलें।

कागज़ी कप कठपुतलियाँ

ये कठपुतलियाँ कागज़ के कप से बनी होती हैं। ये सस्ती होती हैं तथा इन्हें बनाना आसान होता है। आप अपनी अँगुलियों से इस कठपुतली में फेर-बदल कर सकते हैं।

आवश्यक सामग्री

कागज़ का छोटा कप, रंग, रंगने वाला ब्रश, रंगीन कार्ड, स्टॉक पेपर, मार्कर, चमकीली आँखें, कैंची, गोंद आदि।

कठपुतली बनाने के चरण

- कागज़ के कप के बाहरी हिस्से को रंग से रंगें। इसे पूरी तरह से सूखने के लिए एक ओर रख दें।
- जब तक रंग सूख रहा है तब तक रंगीन स्टॉक पेपर से विभिन्न मुखाकृतियाँ काट लें।
- कप पर चमकीली आँखें चिपकाएँ। मार्कर से नाक और मुँह बनाएँ।
- कठपुतली को सृजनात्मक ढँग से सजाएँ।

दस्ताने और मोजे वाली कठपुतलियाँ

दस्ताने और मोजे वाली कठपुतलियाँ बनाने में सबसे सरल और सब जगह सरलता से उपलब्ध होती हैं। ये बहुत ही सुवाह्य होती हैं तथा इन्हें कम लागत वाली सामग्री से तैयार किया जा सकता है।

आवश्यक सामग्री

एक मोटा मोजा, काला मार्कर, चमकीली आँखें, धागा, पोम-पोम, गोंद आदि।

कठपुतली बनाने के चरण

- लंबे मोजे (सादे, रंगीन या पैटर्न वाले मोजे) को अपने हाथ में पहनें।
- अपने हाथ से सी-आकार बनाएँ।
- अपने अँगूठे को मोजे की एड़ी वाले हिस्से पर ले जाएँ, फिर मोजे को अपने अँगूठे और अँगुलियों के मध्य हिलाएँ-डुलाएँ।
- इसे कठपुतली स्वरूप बनाने के लिए अपने हाथ को खोलें और बंद करें।
- आँखों के लिए मार्कर से दो बिंदु बनाएँ।
- एक अन्य बिंदु से नाक बनाएँ।
- अब मोजा उतारें और दो चिह्नित बिंदुओं पर चमकीली आँखें चिपकाएँ।
- नाक बनाने के लिए पोम-पोम का उपयोग भी कर सकते हैं।
- बाल बनाने के लिए धागे का उपयोग करें।
- दस्ताने और मोजे वाली कठपुतली उपयोग के लिए तैयार है।

डिब्बी कठपुतलियाँ

विभिन्न डिब्बियों (साबुन, अनाज, टेट्रा पैक) और कुछ अभिनव विचारों से अद्भुत खेल सामग्री बनाई जा सकती है। इसके उपयोग के लिए बच्चों को स्वर परिवर्तन के साथ अपनी अँगुलियों और हाथ का प्रयोग करने की आवश्यकता है।

आवश्यक सामग्री

साबुन की डिब्बी या छोटे टेट्रा पैक, सादा सफ़ेद कागज़, पेंसिल, स्केल, कटर, सजावट सामग्री आदि।

कठपुतली बनाने के चरण

- डिब्बी पर सफ़ेद या रंगीन कागज़ लगाएँ।
- किसी जानवर का चेहरा बनाने के लिए दर्शाए गए चित्र के अनुसार डिब्बी को तीन ओर से काटें।
- कठपुतली के कान, आँखें, नाक और मुँह बनाएँ और इसमें आवश्यकता के अनुसार फेर-बदल करें।

छड़ी कठपुतलियाँ

ये कठपुतलियाँ बनाने में सरल और सस्ती होती हैं तथा शीघ्रता से बनाई जा सकती हैं। ये काटे गए चित्रों से बनती हैं, जिन्हें छड़ी पर चिपकाया जाता है।

- एक चरित्र चुनें और इसे मोटे कागज़ पर चित्रित करें।
- इसे रंगें, सजाएँ और कागज़ से काट लें।
- इसे छड़ी पर लगा दें।

विविधता— छड़ी के दोनों ओर कठपुतलियाँ बनाने के लिए दो समान चित्र काटें और उन्हें छड़ी के आगे-पीछे चिपका दें।

कविताओं एवं गीतों के साथ कुछ अनुकरणीय गतिविधियाँ

(इस प्रकार की गतिविधियाँ कठपुतली जैसी वस्तुओं के साथ अथवा किसी वस्तु के बिना भी हाव-भाव एवं विभिन्न मुद्राओं द्वारा कराई जा सकती हैं।)

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से संबंधित कविता

बच्चों को वृत्त में खड़ा करें तथा कविता को हाव-भाव के साथ बोलने को कहें।

Brush, brush, brush your teeth
Brush them everyday....
Father, mother, brother, sister
Brush them everyday....
Wash, wash, wash your face
Wash it everyday....
Father, mother, brother, sister
wash it everyday....
Comb, comb, comb your hair
Comb them everyday....
Drink, drink, drink your milk
Drink it everyday....

- बच्चों में अच्छी आदतों का विकास।
- बच्चों में व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रति जागरूकता।

परिवार एवं स्वयं पर कविता

बच्चों को अर्धवृत्त में खड़ा करें अथवा बिठाएँ तथा हाव-भाव के साथ कविता पाठ करने को कहें।

This is the father good and kind.
This is the mother with gentle mind.
This is the brother grown so tall.
This is the sister playing with a ball.
This is the baby yet to grow.
This is my family standing in a row.

- माँसपेशीय समन्वय का विकास।
- शब्दावली का विकास
- पारिवारिक संबंधों की समझ।

संख्यापूर्व की अवधारणा पर कविता

बच्चों को अर्धगोलाकार में खड़ा करें तथा उनके साथ गीत गाएँ बच्चों को हाव-भाव सहित कविता गाने को कहें।

- यह कविता संख्यापूर्व अवधारणाओं, जैसे– 'ऊँचा' एवं 'नीचा' आदि का भेद करने में सहायता करती है।
- कविता गत्यामक विकास को प्रोत्साहित करती है।

This is the way we pump a tyre.
This is the way we pump a tyre.
and it goes higher and higher
Puncture makes the tyre low.
and it goes sh....sh.... ....

नोट– संख्यापूर्व अवधारणा गणितीय कौशल के विकास में सहायक होगी

बीज पर कविता

बच्चों को एक वृत्त में खड़ा करें और उनसे बीज से वृक्ष बनने की प्रक्रिया का अभिनय करने को कहें।

कविता 'बड़ा' एवं 'छोटा', 'ऊपर' एवं 'नीचें' आदि का भेद करने में सहायता करती है।

Now we are seeds.
So so small.
Then we are big trees.
see how tall.
Bend your body
touch your toes.
Stand up straight and
lift your nose.
Sideways bending, sideways bending, arms so wide.
Bending low from side to side.
Bending low from side to side.

स्थानिक संबंधों पर कविता

बच्चों को एक बड़े वृत्त में एक-दूसरे का हाथ-पकड़कर खड़ा होने को कहें, बच्चों के साथ गीत गाएँ, एवं शब्दों के अनुरूप क्रियाएँ करवाएँ।

- स्थानिक संबंधों, जैसे– भीतर-बाहर, ऊपर-नीचे आदि समझने में सहायता करती है।
- शब्दावली में वृद्धि करती है।

Let us go in, in, in
Let us go out, out, out
Then we turn around.
Let us go up, up, up
Let us come down, down, down
Then we turn around.
Let us go right, right, right
Let us go left, left, left
Then we turn around.

बच्चों के लिए कुछ खेल गतिविधियाँ
आओ खेलें खेल

हम भी खेलेंगे वैसे

सभी बच्चे गोल घेरे में खड़े होंगे और फिर खेल आरंभ हो जाएगा।

जंगल में जानवर खेलते हैं जैसे, हम भी खेलेंगे वैसे।
हाथी चलता है जैसे, हम भी चलेंगे वैसे।
(फिर सब बच्चे हाथी की चाल में चलेंगे)
मोर नाचता है जैसे, हम भी नाचेंगे वैसे।
(फिर सभी बच्चे नाचेंगे और इसी प्रकार अलग-अलग जानवरों का खेल खेलेंगे।)

सियार और बकरी का खेल

सभी बच्चों को गोल घेरे में हाथ पकड़कर खड़ा करवाएँ। एक बच्चा सियार बनेगा और दूसरा बकरी का बच्चा। बकरी का बच्चा गोल घेरे के अंदर खड़ा होगा और सियार घेरे के बाहर की ओर। सियार अंदर घुसने की कोशिश करेगा, लेकिन बच्चे उसे गोल घेरे में घुसने से रोकेंगे और निम्नलिखित गीत गाएँगे—

सियार– सिंगली-पिंगली दरवाज़ा खोलो!
बच्चे– नहीं-नहीं, हम नहीं खोलेंगे।
सियार– क्या तुमने बकरी का बच्चा देखा है।
बच्चे– हाँ-हाँ, हमने बकरी का बच्चा देखा है।
सियार– सिंगली-पिंगली दरवाज़ा खोलो।
बच्चे– हम नहीं खोलेंगे।

सियार गोल घेरे को तोड़ने की कोशिश करेगा और जब वह घेरा तोड़कर बकरी के बच्चे को पकड़ लेगा तो वह बच्चा गोले के बाहर जाएगा और सियार का अभिनय करेगा।

चंदा के गाँव में

चंदा के गाँव में, तारों की छाँव में
हम सैर करने जाएँगे,
रॉकेट पर चढ़कर जाएँगे।
चंदा के गाँव में, तारों की छाँव में
हम सैर करने जाएँगे।
दायाँ हाथ आगे करो,
धीरे-धीरे इसे घुमाओ
अब तुम सारे घूम जाओ
अब तुम सारे झूम जाओ
चंदा के गाँव में, तारों की छाँव में।
(इसी प्रकार बायाँ हाथ, बायाँ पैर, दायाँ पैर, दायाँ कंधा, बायाँ कंधा, जोड़ते चले जाएँ।)

नोट– सभी बच्चे गोल घेरे में खड़े होंगे और हाव-भाव के साथ अभिनय करेंगे।

चिड़ियों का खेल

दीदी– बच्चो, गोलाकार बनाओ।
बच्चे– दीदी, हमको खेल सिखाओ।
दीदी– चिड़िया बनकर उड़ते जाओ।
(बच्चे चिड़िया बनकर गोल घेरे में घूमेंगे।)
दीदी– बच्चो, गोलाकार बनाओ।
बच्चे– दीदी, हमको खेल सिखाओ।
दीदी– मोर बनकर नाच दिखाओ।
(बच्चे मोर बनकर गोल घेरे में नाचेंगे और इसी प्रकार दीदी अलग-अलग पक्षियों के नाम लेंगी।)

गीत एवं कविताएँ

हे भगवान, दो वरदान

हे भगवान, दो वरदान
दो वरदान, हे भगवान।
पढ़ना सीखें, लिखना सीखें
सबसे मिलकर रहना सीखें।
सच बोलें हम, निडर बनें हम
यह वरदान, दो भगवान
हे भगवान, दो वरदान
सदा बड़ों का मान करें हम
यह वरदान, दो भगवान
हे भगवान, दो वरदान।

बाल गीत

हम आगे-आगे आते हैं
हम आगे-आगे आते हैं
हम पीछे-पीछे जाते हैं
हम पीछे-पीछे जाते हैं

हम ऊपर-ऊपर जाते हैं
हम ऊपर-ऊपर जाते हैं
हम नीचे-नीचे आते हैं
हम नीचे-नीचे आते हैं

हम अंदर-अंदर आते हैं
हम अंदर-अंदर आते हैं
हम बाहर-बाहर जाते हैं
हम बाहर-बाहर जाते हैं
हम आगे-पीछे जाते हैं
फिर घूम जाते हैं।

सब्ज़ियाँ

पालक बोली, मुझको खाओ,
मैं तुमको ताकत दे दूँगी।
गाजर, मटर, टमाटर बोले,
गोभी, भिंडी, बैंगन, आलू बोले,
अगर हमें भी खाओगे
तो जल्दी बड़े हो जाओगे।

नाव

(सभी बच्चे दोनों हाथों को सीधा रखते हुए मुट्ठी बनाकर चप्पू पकड़कर नाव चलाने का अभिनय करते हुए गीत दोहराएँगे।)

हैय्या हो, हैय्या हो
पानी में चले मेरी छोटी-सी नैया,
नाव चली नाव चली नाव चली नाव
आगे को चली
पीछे को चली
नाव चली नाव चली नाव चली नाव
दाएँ को चली
बाएँ को चली
नाव चली नाव चली नाव चली नाव।

बच्चो, खूब निहारो

आसमान में लाली छाई,
सूरज भी उग आया।
दूर गगन से चिड़िया आई,
मंगल गान सुनाया।
रोज नियम से जल्दी जागो,
प्रभु का ध्यान लगाओ।
नदियाँ, पर्वत, हरियाली को,
बच्चो, खूब निहारो।

स्वच्छ रहो

हम स्वच्छ रहते हैं
तो हम अपने आप को अच्छे लगते हैं।
हम स्वच्छ रहते हैं
तो परिवार को अच्छे लगते हैं।
हम स्वच्छ रहते हैं
तो मेहमानों को अच्छे लगते हैं।
हम स्वच्छ रहते हैं
तो मित्रों को अच्छे लगते हैं।
हम स्वच्छ रहते हैं
तो भगवान को अच्छे लगते हैं।
हम स्वच्छ रहते हैं
तो सबको अच्छे लगते हैं।

तोता

तोता हूँ, मैं तोता हूँ
हरे रंग का होता हूँ।
लाल मेरी चोंच है
सुंदर मेरी चाल है।
बागों में मैं जाता हूँ
मीठे फल मैं खाता हूँ।

सब्ज़ियाँ

आया-आया सब्ज़ीवाला
सब्ज़ी का है ठेला आया,
देखो कितनी सब्ज़ी लाया।
प्यारी-प्यारी रंग-बिरंगी,
ठेले पर सजी हैं सब्ज़ी
लाल-लाल टमाटर, हरी मीठी मटर,
बैंगनी बैंगन, पीला नींबू और
लाल गाजर है लाया।
आया-आया सब्ज़ीवाला,
देखो कितनी सब्ज़ी लाया।
प्यारी-प्यारी रंग-बिरंगी,
सब्ज़ीवाला सब्ज़ी लाया।

धरती माँ

धरती माँ के बच्चे, सारे हैं प्यारे,
धरती सबकी माता है।
माँ की सेवा करना,
हमको बहुत ही भाता है।
धरती माँ की सेवा कर हम,
गुण सारे अपनाएँगे।
खूब पढ़ेंगे, स्वस्थ रहेंगे,
प्रभु को शीश नवाएँगे।
पर्यावरण को स्वच्छ रखेंगे,
घर को स्वर्ग बनाएँगे।।
भारत माँ की हरित ओढ़नी,
देखो कैसी प्यारी है।
रक्षा इसकी करनी हमको
माता की फुलवारी है।
जलवायु को स्वच्छ बनाकर
स्वर्ग धरा पर लाएँगे।
सुखी बनेंगे इससे सारे
माता का वरदान पाएँगे।

चिड़िया

इक चिड़िया के बच्चे चार,
घर से निकले पंख पसार।
पूर्व से पश्चिम को जाएँ,
उत्तर से दक्षिण को जाएँ।
घूम-घाम जब घर को आए,
मम्मी को इक बात सुनाई।
देख लिया हमने जग सारा,
अपना घर है सबसे प्यारा।

सड़क

सड़क बनी है लंबी-चौड़ी
इस पर दौड़े मोटरगाड़ी
बीच सड़क कभी न चलना
चोट लगेगी, नहीं तो वरना।
पैदल-पारपथ से जाना
सड़क के नियमों को निभाना।

भारत देश हमारा है

आओ बच्चो, कदम बढ़ाओ,
भारत देश हमारा है।
आओ बच्चो, मिलकर गाओ,
भारत देश हमारा है।
बादल बोलें, नदियाँ बोलें,
भारत देश हमारा है।
पंख फैलाकर मोर बोला,
भारत देश हमारा है।

तारे

दिन ढलते और रात होते ही,
आ जाते हैं कितने तारे।
रात अँधेरी जितनी होती,
ज्यादा चमक दिखाते तारे।
दिन में जाने कहाँ हैं रहते,
छिपते कहाँ न जाने तारे।
लेकिन रात को राह दिखाने,
टिम-टिम करते आते तारे।

कहानियाँ

सोनू और मोनू की गेंद

सोनू और मोनू दो दोस्त थे। दोनों हमेशा एक साथ खेलते थे। एक बार सोनू के मामा जी सोनू के लिए एक सुंदर-सी गेंद लेकर आएँ। सोनू गेंद लेकर मोनू के साथ खेलने के लिए बगीचे में निकल गया। दोनों गेंद को उछाल-उछाल कर खेलने लगे। एक गेंद को उछालता तो दूसरा उसे पकड़ता। एक बार मोनू ने बहुत जोर से गेंद उछाली, सोनू गेंद पकड़ नहीं पाया और गेंद उछलकर पास के एक तालाब में जा गिरी। सोनू और मोनू दोनों ही तैरना नहीं जानते थे। दुखी होकर वे तालाब के किनारे बैठ गए। गेंद दूर चली जा रही थी। वे दूर जाती गेंद को एकटक देखे जा रहे थे। इतने में उधर से एक मछुआरा निकला। उसके हाथ में एक जाल था। दोनों को तालाब के किनारे बैठा देखकर उसने पूछा, "तुम दोनों यहाँ अकेले क्यों बैठे हो?" दोनों ने एक साथ जवाब दिया, "हमारी गेंद इस तालाब में गिर गई है और हमें तैरना भी नहीं आता।" तब मछुआरे ने कहा, "अच्छा! मैं अभी तुम्हारी गेंद निकालता हूँ।" यह कहते हुए मछुआरे ने तालाब में अपना जाल फैलाया। फिर धीरे-धीरे उसने जाल को खींचना शुरू किया। जब पूरा जाल बाहर निकला तो सोनू, मोनू ने देखा कि जाल में बहुत-सी छोटी-छोटी मछलियाँ हैं और उन्हीं के साथ उनकी गेंद भी है। दोनों अपनी गेंद पाकर खुश हो गए।

बगीचे की सैर

दो दोस्त थे। एक का नाम कालू था, दूसरे का बीनू। एक दिन कालू और बीनू दोनों घूमने निकले। चलते-चलते वे दोनों एक बगीचे में पहुँचे। वहाँ तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल खिले थें। कालू ने कहा, "चलो बीनू, फूल तोड़ते हैं।" बीनू ने कहा, "नहीं-नहीं कालू, हमें फूल नहीं तोड़ने चाहिए। वो देखो, माली भैया के पास फूल रखे हैं। चलो उनसे ले लेते हैं।" दोनों माली के पास गए। उसके पास तरह-तरह के फूल रखे थें। बीनू ने पूछा, "माली भैया, आप मुझे कुछ फूल देंगे?" माली ने उन्हें गुलाब, चमेली, गेंदा, रजनीगंधा के कुछ फूल पकड़ा दिए। कालू ने कहा, "चल बीनू, इन फूलों से खेल खेलते हैं।" बीनू ने आश्चर्य से पूछा, "फूलों से खेल, यह कैसे होता है?" कालू ने समझाया, "अच्छा ऐसा करो, तुम आँख बंद करो। मैं तुम्हें एक फूल सुँघाता हूँ। तुम सूँघ कर बताओ कि ये कौन-सा फूल है?" खेल शुरू हुआ। कालू ने रजनीगंधा का फूल बीनू को सुँघाया। बीनू ने बता दिया। अब कालू को बताना था। बीनू ने गुलाब का फूल सुँघाया और कालू तुरंत पहचान गया। इसी प्रकार काफी समय तक यह खेल चलता रहा। कालू और बीनू दोनों आज बहुत खुश थें। एक नया खेल जो उन्हें मिल गया था। दोनों खुशी-खुशी अपने घर चले गए।

मुनिया की छतरी

एक लड़की थी। उसका नाम मुनिया था। उसके पास एक लाल रंग की छतरी थी। मुनिया उसे हर समय अपने पास रखती थी। एक दिन जब मुनिया सो रही थी, छतरी घर से निकल पड़ी। छतरी ने सोचा, "आज ज़रा अकेले ही घूमा जाएँ", अभी वह थोड़ी ही दूर गई थी कि खूब तेज़ बारिश शुरू हो गई। छतरी खुल गई और चलती रही। सामने एक तालाब था। उसने देखा, एक मेंढक पानी में भीग रहा है। "अरे! अरे! तुम बारिश में कैसे भीग रहे हो? आ जाओ, मेरे नीचे आ जाओ", कहते हुए छतरी मेंढक के पास पहुँची। मेंढक ने फुदक कर पानी में छलाँग लगाई। मेंढक ने जवाब दिया, "अरे भाई! मुझे बारिश में भीगना बहुत अच्छा लगता है। तभी तो बारिश शुरू होते ही मैं टर्र-टर्र गाने लगता हूँ", छतरी फिर आगे बढ़ी। थोड़ी दूर जाने के बाद देखा, एक मोर पानी में भीग रहा है। वह जल्दी से उसके पास पहुँची और बोली, "अरे! तुम बारिश में कैसे भीग रहे हो? आ जाओ, मेरे नीचे आ जाओ।" मोर ने कहा, "अरे भाई! मुझे बारिश में भीगना बहुत अच्छा लगता है। तभी तो काले बादलों को देखकर मैं नाचना शुरू कर देता हूँ।" छतरी फिर आगे बढ़ी। रास्ते में कुछ बच्चे पानी में भीगते हुए खेल रहे थे। वह उनके पास पहुँची। "अरे! अरे! बच्चो, तुम बारिश में कैसे भीग रहे हो? तुम्हें जुकाम हो जाएगा। तुम्हारी तबीयत खराब हो जाएगी। चलो आ जाओ, मेरे नीचे आ जाओ", छतरी ने उनके पास जाकर कहा। बच्चों ने एक साथ जवाब दिया, "अरे भाई! हमें बारिश में खेलना बहुत अच्छा लगता है। तभी तो हम बारिश में खेल रहे हैं।" छतरी फिर आगे बढ़ी। कुछ दूर जाने पर देखा, एक बूढ़ी माँ पेड़ के नीचे बैठी हैं और बारिश से बचने की कोशिश

कर रही हैं। छतरी उनके पास पहुँची और बोली, "बूढ़ी माँ, आप मेरे नीचे आ जाएँ।" बूढ़ी माँ छतरी को देखते ही खुश हो गईं और छतरी के नीचे आ गईं। छतरी भी खुश हो गई कि वह किसी की मदद कर पाई।

गाजर

एक बूढ़ी अम्मा थी। वह अकेले ही अपनी झोपड़ी में रहती थी। एक दिन वह बाजार गई और वहाँ से कुछ गाजर के पौधे ले आई। उसकी झोपड़ी के सामने थोड़ी-सी जमीन थी। उसने सोचा, चलो इस जमीन में गाजर बो देते हैं। लेकिन बोने से पहले मिट्टी की गुड़ाई करनी थी। वह गुड़ाई करने लगी, लेकिन बहुत जल्दी ही थक गई।

"अब क्या करूँ!" सोचते हुए बूढ़ी अम्मा वहीं उदास होकर बैठ गई। उधर से एक कुत्ता जा रहा था। उसने बूढ़ी अम्मा को उदास बैठे देखा तो उसके करीब आया। "क्या बात है बूढ़ी अम्मा? इतनी उदास क्यों हो?" कुत्ते ने पूछा। "क्या करूँ बेटा, कुछ गाजर के पौधे लगाने थे, लेकिन मुझसे मिट्टी की गुड़ाई ही नहीं हो रही है", बूढ़ी अम्मा ने उदास मन से कहा। "अरे! इतनी सी बात है। मैं अभी आपकी जमीन की गुड़ाई कर देता हूँ", कुत्ते ने कहा और जमीन को खोदने लगा।

जब पूरी जमीन की मिट्टी ठीक हो गई तो बूढ़ी अम्मा उसमें गाजर के पौधे लगाने लगी। लेकिन दो-चार पौधे लगाकर ही वह थक गई और फिर उदास होकर बैठ गई। उधर से एक बंदर जा रहा था। उसने बूढ़ी अम्मा से पूछा, "क्या बात है बूढ़ी अम्मा, इतनी उदास क्यों हो?"

बूढ़ी अम्मा ने कहा, "क्या करूँ बेटा, कुछ गाजर के पौधे लगाने थे लेकिन मैं लगा ही नहीं पा रही हूँ।" "अरे! बस इतनी-सी बात है। मैं अभी पौधे लगा देता हूँ", कहते हुए बंदर ने झट से सारे पौधे मिट्टी में लगा दिए। अब पानी देने की बारी आई। बूढ़ी अम्मा ने जैसे ही बाल्टी उठाई, वह वहीं बैठ गई। "अरे बाप रे, इतनी भारी बाल्टी तो मैं उठा ही नहीं सकती। अब क्या करूँ?" बूढ़ी अम्मा उदास हो गई। उधर से एक बिल्ली जा रही थी। उसने बूढ़ी अम्मा को उदास बैठे देखा तो उसके पास आई, "क्या बात है बूढ़ी अम्मा, इतनी उदास क्यों हो?" बिल्ली ने बूढ़ी अम्मा से पूछा।

"मैंने कुछ गाजर बोई हैं, लेकिन उनमें मैं पानी ही नहीं दे पा रही हूँ", बूढ़ी अम्मा ने उदास मन से कहा। "अरे! बस इतनी-सी बात है। मैं अभी पानी डाल देती हूँ", कहते हुए बिल्ली ने झट से सारे पौधों में पानी डाल दिया। कुछ दिनों बाद पौधों में गाजर निकल आईं और धीरे-धीरे वे बड़ी हो गईं।

एक दिन बूढ़ी अम्मा ने सोचा, "चलो गाजर से हलवा बनाया जाए" और वह गाजर उखाड़ने लगी। लेकिन यह क्या! वह तो मिट्टी से निकल ही नहीं रही थी। बूढ़ी अम्मा सोच रही थी कि, "अब क्या करें?" इतने में उधर से एक खरगोश निकला। बूढ़ी अम्मा को उदास देखकर उसने पूछा, "क्या बात है बूढ़ी अम्मा, इतनी उदास क्यों हो?"

"क्या करूँ बेटा, मैं गाजर का हलवा बनाना चाह रही थी। लेकिन यह गाजर मुझसे निकल ही नहीं रही है।" बूढ़ी अम्मा ने कहा। "बस इतनी-सी बात है। मैं अभी गाजर निकाल देता हूँ", कहते हुए खरगोश ने झट से सारी गाजरें उखाड़ दीं। बूढ़ी अम्मा खुश हो गई। उसने गाजरें धोईं, छीलीं, काटीं और आग पर चढ़ाकर गरमा गरम हलवा बनाया। बनाने के बाद बूढ़ी अम्मा ने पाँच कटोरियों में हलवा निकाला। खरगोश पाँच कटोरियों में हलवा देखकर हैरान हो गया। उसने बूढ़ी अम्मा से पूछा, "पाँच कटोरियों में हलवा क्यों निकाल रही हो, बूढ़ी अम्मा?"

"बेटा, इस गाजर को उगाने में मुझे कुछ और लोगों ने भी मदद की है। उन्हें खिलाए बिना मैं अकेले कैसे हलवा खा सकती हूँ। तुम यहीं बैठो, मैं अभी आती हूँ", कहती हुई बूढ़ी अम्मा चली गई। थोड़ी देर बाद जब वह लौटी तो उसके साथ कुत्ता, बंदर और बिल्ली थे। उन सबने मिलकर गाजर का हलवा खाया।

चिंपू बंदर

एक बार चिंपू बंदर अपने पिताजी के साथ अपने चाचा के घर जा रहा था। चाचा का घर बहुत दूर था। वह चलते-चलते बहुत थक गया।

"पिताजी, अब मुझसे नहीं चला जाता। मुझे गोदी ले लो", चिंपू बंदर ने अपने पिताजी से कहा। "अरे बेटा, तुम इतने बड़े हो गए हो। तुम्हें मैं गोदी में कैसे उठा सकता हूँ? चलो इस पेड़ के नीचे बैठ जाते हैं। अगर कोई सवारी आ जाएगी तो उसी पर बैठ जाएँगे।" कहते हुए बंदर पिताजी एक पेड़ के नीचे बैठ गए। थोड़ी

देर बाद पिताजी ने देखा कि एक बैलगाड़ी आ रही है। उसने चिंपू बंदर से कहा, "चलो बेटा, इस बैलगाड़ी पर बैठ जाओ।" चिंपू ने बैलगाड़ी को देखकर मुँह सिकोड़ा और बोला, "यह तो चरर-मरर करती है, यह तो धीरे-धीरे चलती है, मैं इस पर नहीं बैठूँगा।"

बैलगाड़ी आगे निकल गई। थोड़ी देर बाद उधर से एक घोड़ागाड़ी निकली। पिताजी ने चिंपू बंदर से कहा, "चलो बेटा, इस घोड़ागाड़ी पर बैठ जाओ।"

चिंपू ने मुँह सिकोड़ा और बोला, "यह तो टप-टप करता है, यह तो हिन-हिन करता है, मैं इस पर नहीं बैठूँगा।" बंदर पिताजी ने गुस्से में कहा, "तुम्हें कोई सवारी पसंद ही नहीं है तो जाओगे कैसे?" इतने में उसने देखा एक बस तेज़ी से चली आ रही है। "चलो चिंपू, इस बार इस बस पर फटाफट बैठ जाओ। बहुत देर हो गई है!" कहते हुए पिताजी ने चिंपू का हाथ पकड़ा।

चिंपू ने मुँह सिकोड़ा और बोला, "यह तो घर्र-घर्र करती है, यह तो पों-पों करती है, मैं इस पर नहीं बैठूँगा।" बंदर पिताजी परेशान हो गए। "अगर तुम्हें किसी भी सवारी पर नहीं बैठना है तो पैदल चलो।" चिंपू ने ज़िद की, "नहीं पिताजी, मेरे पैरों में दर्द है। मैं पैदल नहीं चल सकता।" थोड़ी देर बाद पिताजी ने देखा एक रेलगाड़ी आ रही है। उसने चिंपू से कहा, "अब तैयार हो जाओ, इस रेलगाड़ी पर बैठकर चलना है।" चिंपू ने रेलगाड़ी को देखा और मुँह सिकोड़ कर बोला, "यह तो सीटी बजाती है, यह तो छुक-छुक करती है, मैं इस पर नहीं बैठूँगा।"

"ठीक है तुम्हें किसी भी सवारी पर नहीं बैठना है तो चलो घर वापस चलो", पिताजी परेशान होकर उठ खड़े हुए। इतने में आसमान में घर्र की आवाज़ आई। चिंपू ने ऊपर देखा एक हेलीकॉप्टर आ रहा है। "पिताजी, पिताजी, मैं इस हेलीकॉप्टर में बैठूँगा", चिंपू उछल पड़ा। पिताजी ने गुस्से में कहा, "अब मैं किसी सवारी को नहीं रोकूँगा। तुम्हें बैठना है तो तुम्हीं रुकवाओ"। चिंपू बंदर उछलकर एक पेड़ पर चढ़ गया और हाथ हिलाकर हेलीकॉप्टर को रुकने का इशारा करने लगा। हेलीकॉप्टर नीचे आ गया। चिंपू बंदर अपने पिताजी के साथ खुश होकर हेलीकॉप्टर में बैठ गया और चाचा के गाँव चल दिया।

पहेलियाँ

पहेलियाँ बूझना बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। इससे बच्चों को सोचने का मौका मिलता है, एकाग्रता बढ़ाने में मदद मिलती है, समस्या को सुलझाने की क्षमता का विकास होता है।

1. कूहू-कूहू करती हूँ,
   पेड़ों पर मैं रहती हूँ।
   बोलो बच्चो, मैं हूँ कौन? (कोयल)

2. जब भी आते बादल काले,
   कागज़ से तुम मुझे बनाते,
   और पानी में मुझे चलाते।
   बताओ मैं हूँ कौन? (नाव)

3. गुटर गूँ, गुटर गूँ करता हूँ,
   शांति का संदेश देता हूँ।
   बोलो बच्चो, मैं हूँ कौन? (कबूतर)

4. छीलकर तुम मुझे खालो
   छिलका कूड़ेदान में डालो।
   बताओ, मैं हूँ कौन? (केला या संतरा)

5. जब भी मुझे पसीना आता,
   वह ठंडी-ठंडी हवा देता,
   सोचो-सोचो मैं हूँ कौन? (पंखा)

6. ऊपर से हरा हूँ और अंदर से मैं लाल
   गर्मी में मुझको खाकर बुझ जाती है प्यास।
   बोलो बच्चो, मैं हूँ कौन? (तरबूज)

7. सभी फलों का राजा हूँ,
   पीला, मीठा और रसीला हूँ।
   बताओ, मैं हूँ कौन? (आम)

8. रात को मैं आकाश में आता हूँ,
   सबको रोशनी देता हूँ। (चाँद)

यातायात पर विषय-वस्तु आधारित अधिगम योजना

आयु वर्ग–3–4 वर्ष

- **गत्यात्मक विकास**— बच्चों के स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल के विकास को निर्बाध खेल और यातायात से संबंधित संरचित गतिविधियों के माध्यम से प्रोत्साहन देना।
- **भाषा विकास**— श्रवण, बोध (समझ), मौखिक अभिव्यक्ति और यातायात से संबंधित शब्दावली के विकास को प्रोत्साहन देना।
- **संज्ञानात्मक विकास**— यातायात से संबंधित विषय, जैसे– पूर्व-संख्याओं की समझ, रंगों का ज्ञान और आकृतियों के ज्ञान के विकास को प्रोत्साहन देना।
- **रचनात्मकता**— बच्चों में रचनात्मक सोच और अभिव्यक्ति के विकास को बढ़ावा देना।

आयु वर्ग–4–5 वर्ष

- **गत्यात्मक विकास**— बच्चों के स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल के विकास को निर्बाध खेल और यातायात से संबंधित संरचित गतिविधियों के माध्यम से प्रोत्साहन देना।
- **भाषा विकास**— श्रवण, समझ, मौखिक अभिव्यक्ति और यातायात से संबंधित शब्दावली के विकास को प्रोत्साहन देना।
- **संज्ञानात्मक विकास**— यातायात से संबंधित विषय, जैसे– संख्या-पूर्व की समझ, रंगों के ज्ञान और आकृतियों के ज्ञान के विकास को प्रोत्साहन देना।
- **रचनात्मकता**— बच्चों में रचनात्मक सोच और अभिव्यक्ति के विकास को प्रोत्साहन देना।

टिप्पणी— तालिका रूप में विस्तृत साप्ताहिक अधिगम योजना अग्रलिखित पृष्ठों में दी गई है। साप्ताहिक या दैनिक योजना बनाने के लिए इस प्रशिक्षक संदर्शिका के भाग II में सुझाई गई गतिविधियों में से ही कुछ गतिविधियों का चयन किया गया है। आवश्यकता और संदर्भ के अनुसार गतिविधियों में परिवर्तन किया जा सकता है।

यातायात पर आधारित परियोजना का एक नमूना

(आयु वर्ग–3–4 वर्ष)

गतिविधि	पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	चौथा दिन	पाँचवा दिन
कविता अथवा अभिनय गीत	सड़क बनी है लंबी चौड़ी (अनुलग्नक III)	सड़क बनी है लंबी चौड़ी (अनुलग्नक III)	चंदा के गाँव में (अनुलग्नक III)	इस तरह हम टायर में हवा भरते हैं। (अनुलग्नक III)	'नाव चली, नाव चली' (अनुलग्नक III)
बात-चीत	यातायात के साधनों पर बात-चीत, शिक्षक बच्चों से यह पूछकर शुरुआत कर सकते हैं कि आज वे बाल वाटिका तक कैसे आएँ? उनके अभिभावक काम पर कैसे जाते हैं? वे अपने नाना-नानी, दादा-दादी के घर कैसे जाते हैं, आदि? फिर उसके बाद बच्चों को यातायात के सामान्य साधनों से परिचित कराया जा सकता है।	यातायात के साधनों के उपयोग को लेकर बात-चीत	यातायात पर बात-चीत (धीमे और तीव्र यातायात; वायु, जल, सड़क पर चलने वाले यातायात के साधन (पाठ्यचर्या लक्ष्य-7.1 गतिविधि 4)	यातायात के साधन के तौर पर पशुओं का उपयोग।	पिछले दिनों में हुई बात-चीत की समीक्षा अथवा पुनरावृति।
भाषा संबंधित गतिविधि	दृष्टि विवेचन हेतु गतिविधियाँ— यातायात के चित्रों का मिलान (कार के एक चित्र से कार के दूसरे चित्र का मिलान करना, ऑटो के एक चित्र से ऑटो के दूसरे चित्र का मिलान करना)।	यातायात के साधनों की पहचान उनकी ध्वनियों के द्वारा करना (पाठ्यचर्या लक्ष्य-2.3 गतिविधि 1)	दृष्टि विवेचन हेतु गतिविधियाँ— समान यातायात के साधनों में से असमान साधन ढूँढना, उदाहरण— कार, बस, ऑटो, साइकिल आदि में से कौन-सा असमान है?	यातायात पर आधारित पहेलियाँ	यातायात के साधनों से संबंधित चित्रों वाली किताब देना

टिप्पणी– गतिविधियों के लिए इस प्रशिक्षक संदर्शिका के भाग II को देखें

बाहरी खेल या मैदानी खेल	आयोजित खेल– 'मामा जी'(पाठ्यचर्या लक्ष्य-7.1 गतिविधि 4)	आयोजित खेल– प्रदर्शित किए गए। यातायात के साधनों की ओर दौड़ना।	आयोजित खेल– यातायात पर आधारित विवरण और बूझो तो जानें खेल।	आयोजित खेल– 'मामा जी' (पाठ्यचर्या लक्ष्य-7.1 गतिविधि 4)	बाहरी या मैदानी खेल बच्चों आओ, आओ, आओ आओ; अब हम सब बस बनेंगे (बच्चे बस चलने का अभिनय या रोलप्ले करेंगे।
कहानी	यातायात के साधनों पर आधारित कहानी (अनुलग्नक 4 से चिपूँ बंदर देखें)	बच्चों की कोई भी मनपसंद कहानी।	'यातायात' पर कहानी बनाने में बच्चों की सहायता करना।	बच्चों की कोई भी मनपसंद कहानी।	बच्चों में अच्छी आदतें जैसे 'यातायात के नियमों का पालन करना' को विकसित करने के लिए यातायात पर आधारित कठपुतली खेल I
संज्ञानात्मक गतिविधि	संख्या-पूर्व आधारित संकल्पना– बड़ा-छोटा, लंबा-छोटा आदि गतिविधियाँ यातायात के चित्रों के साथ।	रंग आधारित संकल्पना– यातायात के चित्रों में अलग–अलग रंगों का मिलान करना (पाठ्यचर्या लक्ष्य-2)	पूर्व-संख्या आधारित संकल्पना, जैसे– कम-ज्यादा, दूर-पास, गतिविधि खिलौनों, कार्ड अथवा यातायात के मॉडल के साथ (पाठ्यचर्या लक्ष्य-8)	स्मरण शक्ति 3 से 4 यातायात के साधनों के नामों को तुरंत याद करके बताना।	रंग आधारित संकल्पना– यातायात के चित्रों में अलग-अलग रंगों का मिलान करना (पाठ्यचर्या लक्ष्य-2)
रचनात्मक गतिविधि	एक शीट पर बने अलग-अलग यातायात के साधनों की परिधि के अंदर रंगीन कागज़ के टुकड़े काटकर चिपकाना (पाठ्यचर्या लक्ष्य-2)	यातायात से संबंधित वस्तुएँ बनाना और उनमें रंग भरना।	रचनात्मक अभिनय– बच्चे विभिन्न दृश्यों का अभिनय करेंगे, उदाहरण के लिए– बस में यात्रा करना, ऊँट की सवारी करना आदि।	चिकनी मिट्टी से कार्य (पाठ्यचर्या लक्ष्य-12 गतिविधि 4)	सब्ज़ियों से यातायात के साधनों की परिधि के अंदर उनके छापे बनाना।

(आयु वर्ग–4–6 वर्ष)

गतिविधि	पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	चौथा दिन	पाँचवा दिन
कविता या अभिनय गीत	सड़क बनी है लंबी चौड़ी (अनुलग्नक III देखें।)	इस तरह हम टायर में हवा भरते हैं (अनुलग्नक III देखें)	'लाल बत्ती, लाल बत्ती' तुम क्या कहती हो? मैं कहती हूँ रुको, रुको, रुको। सभी कविताओं अथवा गीतों को दोहराना।	सड़क बनी है लंबी चौड़ी (अनुलग्नक III देखें)	सड़क बनी है लंबी चौड़ी (अनुलग्नक III देखें)
बात-चीत	यातायात के साधनों पर बात-चीत, यातायात के साधन के तौर पर पशुओं का उपयोग, यातायात के साधनों के उपयोग।	यातायात के साधनों को सड़क पर चलने वाले,जलीय और वायु यातायात में वर्गीकृत करने को लेकर बात-चीत।	बच्चे यातायात के साधन और उनके विभिन्न भागों, जैसे– पहिये, स्टीयरिंग, सीटों आदि को लेकर बात करेंगे।	यातायात के नियमों, ट्रैफिक सिग्नल और सड़क सुरक्षा, आदि को लेकर बात-चीत (पाठ्यचर्या लक्ष्य-1.5; 13.2)	पिछले दिनों में हुई बात-चीत की समीक्षा अथवा पुनरावृति।
भाषा संबंधित गतिविधि	यातायात पर आधारित 3 से 4 पंक्तियों की पहेलियाँ।	वर्गीकृत करने से संबंधित गतिविधि– एक चार्ट पर यातायात के साधनों के चित्रों को सही स्थान पर लगाना (वायु, जल, थल)	यातायात से जुड़ी वस्तुएँ जो जोड़े में होती हैं, उनका एक-दूसरे से मिलान करना, बैल और गाड़ी, रेल गाड़ी और पटरी आदि)	वर्गीकृत करने की गतिविधि– 'चिड़िया उड़', 'बस उड़।'	प्रारंभिक ध्वनियों को यातायात के साधनों से जुड़े, शब्दों– से जोड़ना, जैसे– 'बस' 'ब'।

टिप्पणी– गतिविधियों के लिए इस प्रशिक्षक संदर्शिका के भाग II को देखें

बाहरी खेल अथवा मैदानी खेल	सड़क सुरक्षा पर आधारित गतिविधियाँ (पाठ्यचर्या लक्ष्य-13.2)	आयोजित खेल–'अलग-अलग वर्ग '(पाठ्यचर्या लक्ष्य-13.2)	आयोजित खेल-विवरण और बूझो तो जानें खेल (पाठ्यचर्या लक्ष्य-1.80)	आयोजित खेल– 'लाल बत्ती, हरी बत्ती' (पाठ्यचर्या लक्ष्य)	आयोजित खेल– 'अलग-अलग वर्ग '(पाठ्यचर्या लक्ष्य-13.2)
कहानी	यातायात पर आधारित कोई भी कहानी।	यातायात पर आधारित कोई भी कहानी।	अनुलग्नक III से कोई भी कहानी या बच्चों की कोई भी मनपसंद कहानी।	यातायात पर आधारित कोई भी कहानी।	चित्र कार्ड देकर 'यातायात' पर कहानी बनाने में बच्चों की सहायता करना।
संज्ञानात्मक गतिविधि	संख्या आधारित संकल्पना– मिलान करने वाली वस्तुओं की सहायता से 5 तक की संख्या के सापेक्ष मूल्यों की संकल्पना (पाठ्यचर्या लक्ष्य-8.12 संख्याओं पर आधारित कविता या गीत)	रंग आधारित संकल्पना– लाल, नीला, पीला, नारंगी आदि रंगों की पहचान करना और उनका नाम बताना (पाठ्यचर्या लक्ष्य-2.1 गतिविधि 1)	यातायात से संबंधित चित्र कार्ड के साथ समय और गति की संकल्पना (पाठ्यचर्या लक्ष्य-8.4)	संख्या संकल्पना– चित्र अथवा खिलौने अथवा यातायात के मॉडल की मदद से 5 तक की संख्या के सापेक्ष मूल्य की संकल्पना।	संख्या संकल्पना– चित्र, खिलौने अथवा यातायात के मॉडल की सहायता से 5 तक की संख्याओं के सापेक्ष मूल्य की संकल्पना (पाठ्यचर्या लक्ष्य-8.3; 8.5; 8)
रचनात्मक गतिविधि	यातायात के विभिन्न साधनों के चित्र बनाना और उसमें रंग भरना (सीजी-12 गतिविधि 1, 2)	चिकनी मिट्टी से कार्य (सीजी-12 गतिविधि 4)	रचनात्मक अभिनय– बच्चे विभिन्न दृश्यों का अभिनय करेंगे, उदाहरण के लिए— रेलवे स्टेशन का दृश्य।	कागज़ मोड़ना– हवाई जहाज़ और नाव बनाना (सीजी-12 गतिविधि)	अपूर्ण वाक्य प्रश्न पूछें जैसे– • यदि यातायात नहीं होगा तो क्या होगा? • वाहनों के पहिए खराब हों तो क्या होगा?

टिप्पणी– गतिविधियों के लिए इस प्रशिक्षक संदर्शिका के भाग II को देखें

बालवाटिका में एक दिन का शैक्षणिक कार्यक्रम

बालवाटिका में एक दिवसीय कार्यक्रम के एक उदाहरण (यातायात के साधन विषय पर) से यह समझने में सहायता मिलेगी कि बालवाटिका में कार्यक्रम कैसे आयोजित किए जाते हैं।

बच्चों की ध्यान देने की क्षमता एवं अवधि के अनुसार प्रत्येक खेल गतिविधि 15–20 मिनट के लिए आयोजित की जाती है। यहाँ बच्चों द्वारा शुरू की गई गतिविधि और शिक्षक निर्देशित गतिविधियों के बीच संतुलन बनाया जाता है, ताकि बच्चों को स्वतंत्रता, निर्णय लेने और उनकी पसंद की गतिविधि करने का मौका दिया जा सके। समूह और व्यक्तिगत गतिविधियों के बीच संतुलन भी बनाया जाता है, ताकि बच्चे सहयोग करने, समूह में कार्य करने और अपनी बारी की प्रतीक्षा करना सीखें। इस कार्यक्रम में स्वास्थ्य, स्वच्छता और छोटे बच्चों में पोषण के महत्व को भी विशेष रूप से बताया जाता है। जब बच्चे अलग-अलग कार्यों में संलग्न हों तब प्रारंभिक अधिगम के विभिन्न क्षेत्रों का अवलोकन करने की आवश्यकता होती है, ताकि सही समय पर उचित हस्तक्षेप किया जा सके, क्योंकि प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताएँ, रुचियाँ और सीखने के तरीके अलग-अलग होते हैं।

समयावधि	विवरण
30 मिनट	स्वागत, वार्मिंग अप गतिविधियाँ, साफ-सफाई की जाँच (शिक्षक द्वारा निर्देशित बड़े समूह की गतिविधि)
30 मिनट	गतिविधि क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से खेल (बच्चों द्वारा शुरू की गई छोटे समूह की गतिविधि)– बच्चे खेलने के लिए गतिविधि क्षेत्र चुन सकते हैं। इन गतिविधि क्षेत्रों में डॉल्स क्षेत्र (गुड़िया-गुड्डे वाला क्षेत्र), पढ़ने का क्षेत्र, बिल्डिंग ब्लॉक का क्षेत्र, भाषा और साक्षरता क्षेत्र आदि शामिल हो सकते हैं। यदि बालवाटिका में कम जगह हो, तो शिक्षक बारी-बारी से रुचि के आधार पर अन्य एक-दो गतिविधि क्षेत्रों में उन्हें भेज सकते हैं, ताकि बच्चे छोटे समूहों में खेल के अन्वेषण का आनंद ले सकें।
15 मिनट	सर्किल टाइम (शिक्षक द्वारा शुरू की गई बड़े समूह की गतिविधियुक्त बात-चीत)— जहाँ बच्चे अर्धवृत्ताकार में बैठेंगे और बात-चीत के द्वारा अपने अनुभव साझा करेंगे जैसे कि उन्होंने क्या किया, कहाँ गए, हाल ही में कौन-सा त्यौहार मनाया? आदि।
15 मिनट	निर्देशित बात-चीत (शिक्षक द्वारा शुरू की गई बड़े समूह में गतिविधि)— शिक्षक और बच्चे वाहनों पर एक कविता अथवा गीत गाएँ। फिर शिक्षक, बच्चों को उन वाहनों के बारे में बोलने के लिए प्रोत्साहित करें, जिन्हें विद्यालय आने के दौरान वे देखते हैं; वे स्कूल कैसे आते हैं, उनके माता-पिता कैसे काम पर

	जाते हैं। वे फिर कुछ खिलौने वाले वाहनों या वाहनों के चित्र दिखाएँ और उसके बारे में बात करें। वे बच्चों का ध्यान डिस्प्ले बोर्ड की ओर ले जाएँ और हर वाहन के नीचे लिखे गए नाम में शब्दों के नीचे अपनी अँगुली रखकर पढ़ाएँ।
30 मिनट	गणित गतिविधि (शिक्षक और बच्चों द्वारा शुरू की गई)— बच्चे अर्धगोलाकार में बैठे होते हैं और शिक्षक ने अलग-अलग वाहनों के चित्र एक लाइन में लगाए हुए होते हैं। बच्चे दिए गए मापदंडों के अनुसार चित्र छाँटते हैं, जैसे– भूमि पर चलने वाले वाहन, हवाई जहाज़ या जल पोत आदि। इसका मापदंड पहियों की संख्या के अनुसार या इंजन से चलने वाले या हाथ से चलाने वाले वाहनों के अनुसार छाँटना भी हो सकता है। इस गतिविधि में बच्चों को सहायता मिलती है कि श्रेणियों के अनुसार उन्हें कैसे छाँटा अथवा वर्गीकृत किया जाए।
30 मिनट	बच्चों द्वारा शुरू की गई लेखन कुशलता, प्रारंभिक साक्षरता अथवा कला गतिविधियाँ— बच्चों से उनके मनपसंद वाहन बनाने, उसमें रंग भरने और उसके बारे में बताने के लिए है, जो कुछ भी बच्चे बताते हैं, शिक्षक उसे लिखते हैं।
10 मिनट	हाथ धोना और नाश्ते का समय (स्नैक टाइम)।
10 मिनट	खाना खाने के बाद हाथ धोना।
30 मिनट	बाह्य खेल– शिक्षक, बच्चों को कक्षा से बाहर खेल के मैदान में ले जाएँ। वे उन्हें दौड़ने, कूदने, झूला झूलने, रेत आदि में खेलने का मौका दे। इससे उनके शरीर की मांसपेशियों के विकास में मदद मिलती है। वे बच्चों के साथ कुछ सरल नियमों वाला खेल भी खेल सकते हैं, जिससे बच्चों को अपनी बारी की प्रतीक्षा करना सीखने में सहायता मिले।
30 मिनट	कहानी बुनना बच्चे शुरुआत करते हैं, शिक्षक मार्गदर्शन करते हैं– शिक्षक विभिन्न वाहनों की आवाज़ें निकालें और बच्चों से उन वाहनों के नाम बताने के लिए कहें। इस प्रकार उन्हें श्रवण कौशल विकसित करने का मौका प्रदान करें। शिक्षक, बच्चों को एक कहानी सुनाना शुरू करें कि ''एक बार मैं ट्रेन से यात्रा कर रहा था, वहाँ ट्रेन में एक बच्चा रो रहा था।'' और बच्चों से पूछे हैं कि वे क्या सोचते हैं कि बच्चा क्यों रो रहा था और फिर उनके द्वारा कहे गए वाक्यों को दोहराते हुए कहानी को आगे बढ़ाएँ। वह टिप्पणियाँ जोड़ें और घटनाओं को बढ़ाएँ, ताकि बच्चों की रुचि बनी रहे। फिर पूरी कक्षा एक कविता अथवा गीत गाती है।
10 मिनट	गुडबाय सर्कल (बड़े समूह की गतिविधि, शिक्षक द्वारा निर्देशित)– बच्चे और शिक्षक दिन भर की गई गतिविधियों पर चर्चा करें; बच्चे अपनी मनपसंद गतिविधियों के बारे में विचार करते हुए बात-चीत करें। वे कहानी के अनुक्रम की समीक्षा करें, शिक्षक, बच्चों से अनुरोध करें कि वे जब घर जाएँ तो सामान्य परिवहन के साधनों को ध्यान से देखें और अगले दिन उनके बारे में साझा करें। (इससे बच्चों ने जो कुछ भी विद्यालय में सीखा होगा, उसके संबंध बनाने में सहायता करेगा और इस प्रकार अभिभावकों द्वारा घर पर भी संकल्पनाओं को सुदृढ़ किया जा सकता है।)

टिप्पणी

- गतिविधियों के लिए समय निर्धारित नहीं है। बच्चों की रुचि के अनुसार कोई भी गतिविधि कम या अधिक समय के लिए कराई जा सकती है।
- दो गतिविधियों के बीच का समय भी समय अवधि में शामिल है।

बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल का विकास

साक्षरता केवल पढ़ने और लिखने की क्षमता से कहीं अधिक है। इसमें जो पढ़ा या बोला जा रहा है, उसका अर्थ निकालने, गंभीरतापूर्वक सोचने और स्वयं को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने जैसे आवश्यक कौशल और क्षमताएँ शामिल है। आस-पास की भाषा के उपयोग को जानने से उन्हें दुनिया की समझ बनाने और प्रारंभिक भाषा के विकास में मदद मिलती है। शिक्षक का काम है कि वे कक्षा के वातावरण को ऐसा बनाएँ, जिसमें बच्चों को भाषा सीखने से संबंधित विभिन्न प्रमुख दक्षताओं के बारे में और अधिक जानकारी मिल सके और एक संरचित तथा नियोजित तरीके से उनके विकास को समर्थन मिले।

मौखिक भाषा विकास

बच्चे पढ़ना-लिखना सीखने से पहले सुनकर और बोलकर किसी भाषा को सीखते हैं। विद्यालय में प्रवेश करने से पहले ही, वे अपने तात्कालिक परिवेश से शब्दावली सीख लेते हैं। कक्षा में बच्चों को सुनने और बोलने के माध्यम से भाषा को प्रकट करना महत्वपूर्ण है। प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के मौखिक भाषा विकास पर ध्यान केंद्रित करने के कुछ तरीके हैं—

- बच्चों को बात करने के अवसर प्रदान करें।
- बच्चे अपनी घर की भाषा या मातृभाषा में सोचते हैं। कभी-कभी सोचते और व्यक्त करते समय वे अपनी भाषा के शब्दों का प्रयोग करते हैं। निर्देश की भाषा सिखाने के लिए बच्चे के घर की भाषा या मातृभाषा को सेतु के रूप में उपयोग करना महत्वपूर्ण है।
- बात-चीत, चर्चा, अनभुवों, भावनाओं और विचारों को साझा करने, प्रश्न पूछने और उत्तर देने, सरल निर्देशों का उपयोग करने आदि जैसी गतिविधियों का उपयोग करें।
- तुकबंदियाँ और गीत गाएँ, बच्चों के सामने ऊँचे स्वर में पढ़ें, खेल खेलें, बच्चों को नाटक या भूमिका निर्वहन और संवाद में शामिल करें।
- बच्चों को नए शब्द और अभिव्यक्ति के तरीके सिखाकर उनकी शब्दावली में वृद्धि करें।

उदीयमान पठन विकास

जैसे-जैसे बच्चे पढ़ने के लिए तैयार होते हैं, उन्हें इस बात से परिचित होना चाहिए कि छपी हुई सामग्री कैसी दिखती है? छपी हुई सामग्री ध्वनियों से कैसे जुड़ी है और छपी हुई सामग्री का क्या अर्थ है।

मुद्रण के प्रति जागरूकता और पुस्तकों के साथ संबंध

जैसे-जैसे बच्चे साक्षरता में औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार होते हैं, उन्हें अंततः पढ़ाई शुरू करने में मदद करने के लिए मुद्रण सामग्री से जुड़ी संकल्पनाओं की एक बुनियादी समझ विकसित करने की आवश्यकता होती है। बच्चों के लिए मज़बूत और सरलता से संभाली जाने वाली किताबें उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण होता है। कुछ संबंधित संकल्पनाएँ इस प्रकार हैं—

- मुद्रण की संकल्पना में पुस्तकों से परिचित होना शामिल है। यह तब विकसित होता है, जब बच्चों को किसी पुस्तक के पृष्ठ को आगे से पीछे पलटने, पुस्तक को सही तरीके से पकड़ने और पढ़ने का अभिनय करने का अवसर दिया जाता है। इस तरह बच्चों में यह समझ विकसित होती है कि छपी हुई सामग्री और चित्रों का अर्थ होता है, किताबें पढ़ने के लिए होती हैं। मौखिक भाषा लिखी जा सकती है और फिर पढ़ी जा सकती है।
- पुस्तकों और मुद्रण की संकल्पना का अर्थ है 'पुस्तकें और मुद्रित सामग्री कैसे काम करती है' के बारे में जागरूकता आना। यह तब विकसित होती है, जब बच्चों को इस बात से अवगत कराया जाता है कि अक्षर और शब्द अर्थ रखते हैं। अक्षर और शब्दों में अंतर होता है। प्रिंट वह है, जो हम पढ़ते हैं। रेखांकन और चित्र प्रिंट के अनुरूप होते हैं। हम ऊपर से नीचे तक पढ़ते हैं। शब्दों और वाक्यों के बीच खाली स्थान होता है। दैनिक उपयोग की वस्तुओं पर लगे सूचक से परिचित होते हैं। पुस्तक के शीर्षक, लेखक, चित्रकार, प्रथम पृष्ठ, अंतिम पृष्ठ जैसी संकल्पनाओं की पहचान करते हैं आदि। इन संकल्पनाओं को पुस्तकों के बारे में पूछकर किया जा सकता है, जैसे– 'इस पुस्तक का आवरण कहाँ है?'; 'मैं इस पृष्ठ को कहाँ से पढ़ना शुरू करूँ?'; 'यह वाक्य कहाँ से शुरू और खत्म होता है?'
- मुद्रण के प्रति जागरूकता तभी हो सकती है, जब बच्चे का वातावरण मुद्रण-समृद्ध हो यानी बच्चा मुद्रित सामग्री को आसानी से देख सके। यह इस प्रकार किया जा सकता है—
  - कमरे में विभिन्न वस्तुओं, जैसे– 'दरवाजे', 'खिड़की' और 'अलमारी' पर सूचक लगाना। भाषा क्षेत्र में मैग्नेट वाले अक्षर, फोम के बने अक्षर और अक्षरों के ब्लॉक उपलब्ध रखें।
  - बड़ी पुस्तकों (दोहराए गए वाक्यांशों और बड़े प्रिंट वाली कहानी की किताबें) का उपयोग करना।
  - नियमित रूप से जोड़े जाने वाले नए शब्दों के साथ शब्द दीवार बनाना।
  - बच्चों की आँखों के स्तर पर विषय-वस्तु से संबंधित सूचक लगे हुए चार्ट और पोस्टर प्रदर्शित करना।

ध्वन्यात्मक जागरूकता

ध्वन्यात्मक जागरूकता के प्रति मान्यता है कि भाषा शब्दों, शब्दांशों, तुकबंदियों और ध्वनियों (स्वनिम) से बनी है। ध्वन्यात्मक जागरूकता किसी बच्चे की प्रत्येक बोली जाने वाली ध्वनि में हेर-फेर करने, वर्गीकृत करने और सुनने की क्षमता को संदर्भित करती है। यह ज्ञान शुरू में मौखिक भाषा में होता है; बच्चों को यह जानने की आवश्यकता नहीं होती कि ध्वन्यात्मक जागरूकता प्रदर्शित करने के लिए अक्षरों या उनकी संगत ध्वनियों को कैसे नाम दिया जाए। (ध्वनि और ध्वन्यात्मक जागरूकता पर कक्षा की गतिविधियों के लिए बॉक्स देखें।).

ध्वनि-प्रतीक योग एवं शब्द पहचान ध्वनि-प्रतीक संबंध से बच्चों को स्पष्ट रूप से कूटवाचन में मदद करके प्रिंट को समझने की प्रक्रिया में सहयोग मिलता है। बच्चे अक्सर उपयोग किए जाने वाले शब्दों का कूटानुवाद किए बिना उन्हें दृश्य शब्द के रूप में सीखते हैं। इस प्रकार के पठन को तार्किक पठन के रूप में जाना जाता है। यहाँ वे 'दृष्टि शब्द' नामक शब्दों को पढ़ना सीखते है। आम बोल-चाल की भाषा में दृष्टि शब्दों का उपयोग किया जाता है और बच्चे उन्हें डिकोड करना सीखने से पहले ही उनके संपर्क में आ जाते हैं, जैसे बच्चे क-म-ल जैसे शब्द की व्याख्या करना सीखेंगे, लेकिन तीन, पाँच, मम्मी, बिस्कुट जैसे शब्दों की सरलता से पहचान कर पाने में समर्थ होंगे, क्योंकि वे बच्चों के तात्कालिक परिवेश में मौजूद हैं।

साहित्यिक जागरूकता

बच्चों को कम उम्र से ही अच्छे साहित्य से परिचित कराना आवश्यक है। किताबों, कहानियों और तुकबंदी के माध्यम से बच्चों को अपने आस-पास की दुनिया की झलक मिलती है। यहाँ तक कि सरल चित्र-पुस्तक से भी बच्चों को विभिन्न तरीकों से समझने में मदद मिलती है। अर्थग्रहण, बोली जाने वाली और लिखित भाषा को समझने और अर्थ निकालने की क्षमता है। किसी पाठ का अर्थ केवल उसके शब्दों में ही नहीं, बल्कि अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया में भी होता है।

उदीयमान लेखन

प्रारंभिक लेखन तब शुरू होता है, जब बच्चे अपने आस-पास की भौतिक और सामाजिक दुनिया का प्रतिनिधित्व करने के लिए वर्तनी लिखते हैं, आड़ा-तिरछा लिखते हैं और वर्तनी का आविष्कार करते हैं। लिखना, सीखने वाले बच्चों का यह विकासात्मक पहलू ही उदीयमान अथवा उभरता लेखन है। बच्चों को प्रभावी संप्रेषक बनने के लिए स्वयं को लिखित रूपों में व्यक्त करना एक महत्त्वपूर्ण चरण है। यह एक गलत आम धारणा है कि बच्चे तभी लिखना शुरू करते हैं, जब वे सही-सही लिखना और बोलना सीख जाते हैं।

उदीयमान लेखक संबंध बनाकर और दूसरों के साथ अपने अनुभवों को संप्रेषित करके अपने लेखन के बारे में बात करता है। शिक्षक, निम्नलिखित तरीकों से बच्चों के उदीयमान लेखन के प्रयासों में सहयोग कर सकते हैं—

- बच्चों से पूछें कि उन्होंने क्या उकेरा है, क्या बनाया है या क्या लिखा है?
- शिक्षक के सोचने के अनुरूप बच्चों के लिखने की प्रक्रिया की मॉडलिंग करें।
- बच्चों को क्रेयॉन, चॉक, पेंसिल, मोटे मार्कर आदि उपकरणों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बच्चों को लिखने, बोलने और आड़ी-तिरछी रेखाओं को एक साथ मिलाने दें।
- लिखने के लिए उनकी रुचि के विषयों के अनुसार सुझाव दें।
- समय के साथ, उकेरी हुई बनावट अक्षर के समान हो सकती है और यहाँ तक कि कुछ 'आविष्कृत' वर्तनी भी हो सकती हैं, उदाहरण के लिए— वे 'मैला' के लिए 'मेला' या CAT शब्द का प्रतिनिधित्व करने के लिए 'KT' लिख सकते हैं, या 'BOOK' के लिए 'BK', उनके लेखन को सभी रूपों में प्रोत्साहित करें।
- शिक्षकों को यह समझने की आवश्यकता है कि बच्चों को 'पारंपरिक तरीके से' लिखना शुरू करने में वर्षों लग सकते हैं।.

बुनियादी भाषा और साक्षरता कौशल के विकास में सहायता के लिए कार्यनीतियाँ

बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक साक्षरता विकसित करने की कुछ कार्यनीतियाँ इस प्रकार हैं—

आदर्श पठन

शिक्षक, बच्चों द्वारा देखने और सीखने के लिए उनके सामने सही तरह से पढ़ने का तरीका प्रदर्शित करते हैं। शिक्षक, पढ़ने और लिखने के विभिन्न तरीकों के बारे में खुलकर सोचते हैं, जैसे– ऊँचे स्वर में पढ़ते समय, शिक्षक पढ़ने का 'प्रतिमान' प्रदर्शित कर रहा है। शब्दों के ठीक नीचे अपनी अँगुली रखते हुए बाएँ से दाएँ पढ़ना और अल्पविराम, पूर्णविराम आदि पर रुकना और बच्चों का ध्यान प्रश्नवाचक चिह्न की ओर खींचना आदि। शिक्षक किसी पुस्तक को उपयोग करने का तरीका, किसी वाक्य को कैसे पढ़ना है और विभिन्न लेखन उपकरणों का उपयोग करके कैसे लिखना है आदि का मॉडल प्रस्तुत कर सकते हैं।

शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन (ऊँचे स्वर में पढ़ना)

शिक्षक द्वारा ऊँचे स्वर में पढ़ना एक शिक्षण कार्यनीति है; जहाँ शिक्षक, माता-पिता या देखभाल करने वाले व्यक्ति बच्चों के सामने ऊँचे स्वर में किताबें पढ़ते हैं। इससे बच्चों को यह समझने में सहायता मिलती है कि जब भाषा पढ़ी जाती है तो आवाज़ में बदलाव और अभिव्यक्ति के साथ-साथ स्वर कैसा होता है। ऊँचे स्वर में पढ़ने से बच्चों को गुणवत्तापूर्ण साहित्य, नए विचारों, शब्दावली, भाषा के उपयोग और अर्थ-निर्माण के बारे में पता लगता है। जब हम बच्चों के समक्ष ऊँची आवाज़ में पढ़ते हैं, तो हम उन्हें यह दिखाने के लिए भी रुकते हैं कि हम पढ़ते समय कैसा सोचते हैं। शिक्षकों या माता-पिता को आयु के अनुसार उपयुक्त बड़े आकार की पुस्तकों का उपयोग करना चाहिए, जो पात्रों, घटनाओं और भाषा के संदर्भ में रोचक एवं आकर्षक हों और जिनमें बहुत सारे चित्र हों।

साझा पठन

'साझा पठन' में शिक्षक और बच्चे दोनों एक साथ पाठ पढ़ते हैं। सामान्यत: साझा पठन के लिए एक बड़ी किताब का उपयोग किया जाता है। शिक्षक पाठ को तब पढ़ता है जब बच्चे दृष्टांत, दृश्य शब्दों या स्मृति से किसी शब्द को पहचानते हैं। बच्चे इस गतिविधि के माध्यम से प्रिंट की संकल्पना को विकसित करना शुरू करते हैं।

निर्देशित पठन

बच्चे निर्देशित पठन में स्वयं पढ़ते हैं और शिक्षक उनका सहयोग करते हैं। निर्देशित पठन उन कार्यनीतियों और तकनीकों के सुदृढ़ीकरण और अभ्यास की अनुमति देती है, जिन्हें शिक्षक ने ऊँचे स्वर में पढ़ने या साझा पठन के दौरान आदर्श मॉडल बनाया हो।

स्वतंत्र पठन

बच्चों को कहानी की किताबों से चित्र या दृष्टांत पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। बच्चों को ऐसी चित्र पुस्तकें उपलब्ध कराना उपयोगी होगा, जिनमें क्रियाओं या घटनाओं के क्रम दर्शाए गए हों। बहुत सारी दिलचस्प गतिविधियों के साथ एकल चित्र से भी बच्चों को कहानियाँ बनाने में मदद मिल सकती है। स्वतंत्र रूप से पढ़ने के अवसरों से बच्चों को स्वयं के लिए मौन पठन की आदत विकसित करने में मदद मिलती है। बच्चे आनंद के लिए पढ़ना शुरू करते हैं और धीरे-धीरे उस पर सोचना और अनभुव करना शुरू करते हैं।

चित्र पढ़ना

बच्चों को कहानी की पुस्तकों से चित्र पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। बच्चों को ऐसी चित्र पुस्तकें प्रदान करना उपयोगी होगा, जिनमें क्रियाओं या घटनाओं के क्रम को दर्शाया गया हो। ढेर सारी रोचक गतिविधियों वाले एकल चित्रों से भी बच्चों को कहानियाँ बनाने में मदद मिल सकती है।

आदर्श लेखन

आदर्श लेखन बच्चों के लिए लिखने की प्रक्रिया है। शिक्षक, बच्चों से पूछते हैं कि उन्होंने क्या लिखा या बनाया है और फिर उनके लेखन के नीचे या बगल में लिखतें हैं। यह इस बात को दिखाने में मदद करता है, कि कोई

व्यक्ति विभिन्न मुद्रण परंपराओं का उपयोग करके कैसे लिखता है जैसे कि बाएँ से दाएँ लिखना या वाक्य के अंत में पूर्णविराम का उपयोग करना।

साझा लेखन

बच्चे जैसे-जैसे अपने परिवेश में प्रिंट के संपर्क में रहकर लेखन से संबंधित गतिविधियों, जैसे– सूची बनाना, उपस्थिति चिह्नित करना आदि का प्रयोग करते हैं, वे लेखन की जानकारी और उसमें रुचि प्राप्त करते जाते हैं। 'साझा लेखन' में शिक्षक और बच्चे मिलकर दी गई प्रक्रियाओं का पालन करते हुए एक लिखित पाठ बनाते हैं। बच्चे तय कर सकते हैं कि वे क्या लिखना चाहते हैं और शिक्षक, इसे श्यामपट्ट या बड़े सूचना पत्रक पर लिख सकते हैं। साझा लेखन गतिविधि का उपयोग कहानी लिखने, सूची बनाने, किसी घटना या त्यौहार का वर्णन करने आदि के लिए किया जा सकता है। शिक्षक, एक सार्थक पाठ बनाने के लिए बच्चों के लेखक और प्रोत्साहक के रूप में कार्य कर सकते हैं और उनसे प्रश्न-उत्तर करते हुए उनके इनपुट्स (विचारों) को बाहर निकाल सकते हैं। शिक्षक, लिखते समय विराम चिह्नों, जैसे– पूर्णविराम, अल्पविराम, प्रश्नवाचक चिह्न आदि की ओर भी बच्चों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। इस तरह के लेखन का उद्देश्य बच्चों को लिखित शब्दों से जोड़ना और उनके वर्तमान स्तर से ऊपर के लेखन में उनका सहयोग करना है।

स्वतंत्र लेखन

बच्चे शुरू से अंत तक अपने पाठ का निर्माण करते हुए अन्य आकस्मिक साक्षरता अनभुवों में प्राप्त कौशल और ज्ञान का निर्माण करते हैं। शिक्षक, स्थान, सामग्री और लेखन प्रेरणा या प्रोत्साहन प्रदान करते हैं। शिक्षक, बच्चों से उनके चित्र या लेखन के बारे में पूछ सकते हैं और यदि आवश्यक हो तो अपनी टिप्पणी जोड़ सकते हैं। इन अनभुवों में शिक्षक प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न स्तरों पर आदर्श रूप में बच्चों का सहयोग कर सकते हैं।

बुनियादी संख्या ज्ञान, पर्यावरण जागरूकता और वैज्ञानिक सोच का विकास

संख्या ज्ञान में समस्याओं को हल करने के लिए गणितीय समझ और कौशल का उपयोग तथा जटिल सामाजिक व्यवस्थाओं में दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता शामिल है। इस क्षमता हेतु एक छोटे बच्चे को मात्रात्मक रूप से सोचने और संवाद करने, डेटा की समझ बनाने, स्थानिक जागरूकता रखने, पैटर्न और अनुक्रम को समझने और उन स्थितियों को पहचानने में सक्षम होने की आवश्यकता होती है, जहाँ समस्याओं को हल करने के लिए गणितीय तर्क लागू किए जा सकते हैं। बच्चों को भी महत्वपूर्ण सोच और तर्क कौशल का एक सेट विकसित करना चाहिए। इन कौशलों में समस्या-समाधान, तर्क, संप्रेषण, संबंध और प्रतिनिधित्व शामिल हैं। इससे पहले कि बच्चे वस्तुओं को गिनना शुरू करें या संख्याओं की समझ विकसित करें, उन्हें वर्गीकृत करने, क्रमबद्ध करने, एक के साथ एक की संगति स्थापित करने और संख्याओं के नाम जानने में सक्षम होने की आवश्यकता होगी। इसलिए यह आवश्यक है कि बच्चों को मिलान करने, छाँटने, वर्गीकरण, क्रमबद्ध करने, एक के साथ एक की संगति बनाने, मूर्त सामग्री के साथ पैटर्न बनाने, प्ले-कार्ड आदि से संबंधित बहुत सारी गतिविधियाँ प्रदान की जानी चाहिए। गिनने वाली गतिविधियों में शामिल करते हुए गिनती सिखाई जानी चाहिए, जैसे– बचे हुए नामपट्ट गिनना, उपस्थित बच्चों की संख्या गिनना, तुकबंदियों (एक, दो, तीन…) और कहानियों के माध्यम से गिनना आदि।

संख्या ज्ञान समृद्ध वातावरण

प्रारंभिक संख्या ज्ञान कार्यक्रम के लिए दैनिक दिनचर्या और संचालन योजना की योजना बनाना महत्वपूर्ण है ताकि इसे जीवंत, आकर्षक और खेल गतिविधियों से पूर्ण बनाया जा सके। इसके लिए एक उपयुक्त रूप से डिजाइन की गई कक्षा की व्यवस्था आवश्यक होगी, जिसमें विभिन्न उपकरणों के साथ एक सुसंसाधित गणित और संख्या ज्ञान क्षेत्र, बच्चों को छाँटने और मिलाने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ; विभिन्न आकृतियों, आकारों, रंगों की वस्तुएँ, मापने वाले टेप, कलम; कागज़; स्केल; कैलकुलेटर और चुंबकीय संख्या आदि होना चाहिए।.

पर्यावरण के प्रति जागरूकता और वैज्ञानिक सोच

बच्चे प्राकृतिक जिज्ञासा और दुनिया की व्याख्या करने और प्रतिक्रिया देने की जन्मजात क्षमता के साथ पैदा होते हैं। यह प्रत्यक्ष अनुभव और भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से सुदृढ़ होता है। जब वे वयस्कों के साथ संवाद करते हैं और तात्कालिक परिवेश के साथ अंतःक्रिया करते हैं तो उनका प्रारंभिक सीखना अधिक सुदृढ़ होता है। बच्चों को संकल्पनाएँ बनाने में सहायता हेतु भाषा भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तुलना करने पर आधारित संज्ञानात्मक कौशल, जैसे– मिलान करना, क्रमबद्ध करना या वर्गीकरण करने से संकल्पनाओं को परिष्कृत करने और बच्चों को उच्च-क्रम के संज्ञानात्मक कौशल के लिए एक ठोस आधार बनाने में मदद मिलती है। इससे आलोचनात्मक चितंन, तार्किक क्षमता, स्मृति और समस्या-समाधान को बढ़ावा मिलता है, जो वैज्ञानिक सोच विकसित करने का आधार है और आगे चलकर इसे एक विषय के रूप में पर्यावरण अध्ययन (ई.वी.एस.) सीखने में मदद मिलती है। कक्षा 1 और कक्षा 2 में पर्यावरणीय संकल्पनाओं को भाषा और गणित के साथ समेकित किया गया है।

क्षमता निर्माण कार्यक्रम

प्रशिक्षक संदर्शिका 'उन्मुख' में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और 'मूलभूत शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा' (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 में परिकल्पित बालवाटिका कार्यक्रम की समझ विकसित करने का प्रयास किया गया है। यह 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों को जीवन की तैयारी में कौशल और दक्षताओं के विकास हेतु विद्यालयी शिक्षा के स्तर पर नए पाठ्यक्रम और शैक्षणिक संरचना में एक महत्वपूर्ण चरण है। इस कार्यक्रम को वास्तविक धरातल पर कार्यान्वित करने के लिए उन लोगों की क्षमता का निर्माण करना आवश्यक है, जो कि 3 से 6 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के साथ प्रत्यक्ष स्तर पर कार्यरत हैं। इस संबंध में क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए योजना और समूह कार्य की आवश्यकता होती है। यद्यपि हम योग्यता-आधारित गतिविधियों से गुजर चुके हैं, जिन्हें विभिन्न सीखने के विषयों में अपनाया जा सकता है। प्रशिक्षकों से अब शिक्षकों या किसी भी क्षेत्र-स्तर के पदाधिकारियों के लिए 'क्षमता निर्माण कार्यक्रम' आयोजित करने की अपेक्षा की जाती है। इसके लिए नीचे छह दिनों के कार्यक्रम का एक उदाहरण दिया गया है। यह अनुकरणीय आदर्श रूप है और इसे आवश्यकता के अनुसार प्रासंगिक बनाया जा सकता है। दी गई अनुसूची में व्यावहारिक अनुभव, समूह चर्चा, भूमिका निर्वहन और सामग्री निर्माण विकास (कम लागत अथवा बिना लागत) पर बल दिया गया है।

प्रस्तावित कार्यक्रम अनुसूची

पहला दिन	गतिविधियाँ
10 बजे से 11 बजे पूर्वाह्न	• प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) की संकल्पना की समझ • बालवाटिका परिचय • बालवाटिका का महत्व (अध्याय 1 देखें)
11 बजे से 1 बजे अपराह्न	• बालवाटिका की दैनिक दिनचर्या पर चर्चा (चार घंटे का कार्यक्रम) • दैनिक कार्यक्रम में घटकों के विवरण पर चर्चा (अध्याय 4 देखें)
2 बजे से 3 बजे अपराह्न	• साथियों को समझाना। • बच्चे कैसे सीखते हैं? • सीखने की सकारात्मक आदतें विकसित करना (अध्याय 2 देखें)
3 बजे से 5.30 बजे अपराह्न	बालवाटिका कार्यक्रम की पद्धतियाँ और सामग्रियाँ (गतिविधियों के उपरांत चर्चा) (अध्याय 3 देखें)

दूसरा दिन	गतिविधियाँ
10 बजे से 11 बजे पूर्वाह्न	शारीरिक गत्यात्मक विकास (अन्नमय कोष)– शारीरिक गत्यात्मक विकास संबंधित दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए चर्चा के बाद व्यावहारिक गतिविधियाँ (पाठ्यचर्या लक्ष्य– 1, 2, 3 देखें)
11 बजे से 1 बजे अपराह्न	सामग्री निर्माण विकास (व्यावहारिक गतिविधियाँ)– कठपुतली बनाने और गीत युक्त गतिविधियों के कुछ उदाहरण अनुलग्नक 2 और 3 में संदर्भ के लिए दिए गए हैं।
2 बजे से 3 बजे अपराह्न	सामाजिक-भावात्मक एवं नैतिक विकास (मनोमय कोष)– कार्यक्षेत्र संबंधित दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए चर्चा के बाद व्यावहारिक गतिविधियाँ। (पाठ्यचर्या लक्ष्य– 4, 5, 6 देखें)
3 बजे से 5:30 बजे अपराह्न	प्रतिभागियों के 'भूमिका निभाने का खेल, समूह चर्चा और प्रस्तुति' इत्यादि में अभिभावकों, शिक्षकों और समुदाय की भूमिका और सहभागिता (अध्याय 5 देखें)
तीसरा दिन	**गतिविधियाँ**
10 बजे से 11 बजे पूर्वाह्न	संज्ञानात्मक विकास (विज्ञानमय कोष)– कार्यक्षेत्र संबंधित दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए चर्चा के बाद क्रियात्मक गतिविधियाँ। (पाठ्यचर्या लक्ष्य– 2, 7, 8 देखें)
11 बजे से 1 बजे अपराह्न	संज्ञानात्मक विकास हेतु सामग्री निर्माण विकास (व्यावहारिक गतिविधियाँ)
2 बजे से 4 बजे अपराह्न	भाषा और साक्षरता कौशल विकास– प्रतिभागियों से संबंधित गतिविधियाँ जैसे कि खेलना, तुकबंदी, गीत, कविता, पहेलियाँ, कहानियाँ आदि कराना (पाठ्यचर्या लक्ष्य– 9, 10, 11 और अनुबंध III देखें)
3 बजे से 5:30 बजे अपराह्न	गणितीय कौशल विकसित करने वाली गतिविधियों में भागीदारी करना (पाठ्यचर्या लक्ष्य– 8 देखें)
चौथा दिन	**गतिविधियाँ**
10 बजे से 11 बजे पूर्वाह्न	अनुभवात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करने के लिए परिवेशीय जागरूकता और वैज्ञानिक चिंतनशील-संबंधी गतिविधियाँ (पाठ्यचर्या लक्ष्य– 7 देखें)
11 बजे से 1 बजे अपराह्न	सृजनात्मक और सौंदर्य विकास (अन्नमय कोष) एवं सकारात्मक सीखने की आदतों का विकास और व्यावहारिक अनुभव (पाठ्यचर्या लक्ष्य– 12 और 13 देखें)
2 बजे से 3 बजे अपराह्न	मूल्यांकन हेतु उपकरण और तकनीक रिकॉर्डिंग और रिपोर्टिंग के संदर्भ में अवलोकन के व्यावहारिक अनुभव
3 बजे से 4.30 बजे अपराह्न	बालवाटिका साप्ताहिक कार्यक्रम की योजना बनाना– समूह कार्य (अध्याय 3 देखें)
पाँचवाँ दिन	**गतिविधियाँ**
9 बजे से 1 बजे अपराह्न	कक्षा-कक्ष में व्यावहारिक अनुभव

2 बजे से 3.30 बजे अपराह्न	बच्चे के अनुभवों पर चिंतन-मनन
3:30 बजे से 5:30 बजे अपराह्न	अगले दिन की योजना
छठवाँ दिन	**गतिविधियाँ**
9 बजे से 1 बजे अपराह्न	कक्षा-कक्ष में व्यावहारिक अनुभव
2 बजे से 3:30 बजे अपराह्न	बच्चे के अनुभवों पर चिंतन-मनन
3:30 बजे से 5:30 बजे अपराह्न	समापन सत्र

टिप्पणी— स्थानीय स्तर पर आवश्यकता, संदर्भ और स्थान की उपलब्धता के अनुसार संशोधन और परिवर्तन किया जा सकता है।

बालवाटिका में एक दिन की गतिविधियों का अवलोकन

प्रशिक्षण कार्यक्रम का अनुपालन यह जानने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है कि प्रतिभागी ने जो कुछ भी सीखा है, क्या उसे वह आत्मसात कर पाए हैं या नहीं। सुनियोजित प्रणाली के माध्यम से प्रशिक्षण के बारे में उपयोगी प्रत्युत्तर प्राप्त करना भी आवश्यक है, जो कि प्रशिक्षण कार्य प्रक्रिया के तौर-तरीकों को और बेहतर बनाने में मदद करेगा, जिसके लिए प्रशिक्षकों को शिक्षकों के कार्यस्थल पर जाने की आवश्यकता होगी। प्रशिक्षक अपनी टिप्पणियों को रिकार्ड करने के लिए नीचे दिए गए अवलोकन कार्यक्रम का उपयोग कर सकते हैं—

बालवाटिका का नाम– ....

बालवाटिका का पता– ....

दिनांक – ....

कक्षा का नाम बालवाटिका 1 ☐ बालवाटिका 2 ☐ बालवाटिका 3 ☐

अधिगम कार्यस्थल

आंतरिक स्थान– पर्याप्त ☐ अपर्याप्त ☐

बैठने की व्यवस्था– औपचारिक ☐ अनौपचारिक ☐

बाह्य खेल क्षेत्र– पर्याप्त ☐ अपर्याप्त ☐

झूला– उपलब्ध ☐ अनुपलब्ध ☐

प्रदर्शन– देखने के स्तर पर ☐ विषय से संबंधित ☐ बच्चों का कार्य प्रदर्शन ☐

क्र. सं.	गतिविधि का शीर्षक	बैठने की व्यवस्था (दीर्घ समूह, लघु समूह, व्यक्तिगत स्तर पर)	स्वतंत्र या निर्देशित गतिविधियाँ	स्वतंत्र या निर्देशित गतिविधियाँ	उपयोग की जाने वाली सामग्री (बिना लागत, कम लागत, विकसित/खरीदी/ स्वदेशी/स्थानीय)	विकसित की जाने वाली दक्षताएँ	टिप्पणियाँ
1.							
2.							
3.							

प्रशिक्षक द्वारा कार्यस्थल पर प्रदान की जाने वाली सहायता (यदि कोई हो)— ....

अनुलग्नक IX

समग्र प्रगति कार्ड (नमूनार्थ)

कक्षा– बाल वाटिका 1

बच्चे का व्यक्तिगत विवरण

नाम– ....

माता का नाम– ....

पिता का नाम– ....

पता– ....

जन्मतिथि– ....

ऊँचाई और वजन माप

वजन– .... ऊँचाई– ....

बच्चे की व्यक्तिगत स्वच्छता (ठीक, अच्छी, स्वच्छ या सुधार की आवश्यकता)

कपड़े–	....	कान–	....	आँखें–	....
नाखून–	....	नाक–	....	दाँत–	....
बाल–	....				

नियमितता– ....   समयबद्धता– ....

अन्नमय कोष से आनंदमय कोष तक

क्र. सं.	विकसित दक्षताएँ	निपुणता अवधि 1				निपुणता अवधि 2			
		प्रारंभिक	प्रगतिशील	प्रवीण	सक्षम	प्रारंभिक	प्रगतिशील	प्रवीण	सक्षम
1.	भोजन के प्रति रुचि दर्शाना								
2.	खाना बर्बाद नहीं करना								
3.	मूलभूत स्वच्छता का अभ्यास करना								
4.	चलने, दौड़ने, साइकिल चलाने आदि में सुरक्षा के प्रति जागरूकता दिखाना								
5.	आकार एवं रंगों में अंतर करना								
6.	समान पैटर्न के दृश्य प्रतीकों का मिलान करना								
7.	ध्वनियों में भेद करना								
8.	अच्छी और बुरी गंध की पहचान करना								
9.	स्पर्श द्वारा कठोर-नर्म, खुरदुरा-समतल में अंतर करना								
10.	शारीरिक नियंत्रण के साथ पकड़ना, फेंकना, ठोकर (किक) मारना								
11.	कुछ समय के लिए एक पैर पर खड़े होना और संतुलन बनाना								
12	सूक्ष्म मांसपेशीय समन्वय और आँख-हाथ में समन्वय दिखाना								
13.	पीछे की ओर अथवा उल्टी दिशा में चलना, पैरों के पंजों पर चलना, हल्के वजन को उठाकर चलना								
14.	इच्छाओं को व्यक्त करना और सामान्य भावनाओं को पहचानना								
15.	अन्य बच्चों और परिचित वयस्कों से अच्छी तरह बातचीत करना								
16.	दूसरे बच्चों के साथ खेलना आरंभ करना								
17.	सामान्य कक्षा निर्देशों का पालन करना								

टिप्पणी— यह समग्र प्रगति कार्ड एन.सी.एफ.–एफ.एस. 2022 में दी गई दक्षताओं पर आधारित है।

18.	गतिविधियों को उचित रूप देना								
19.	छूटे हुए भागों की पहचान करना								
20.	वस्तुओं को जोड़ना तथा उनका विकल्प ढूँढ़ना								
21.	बुनियादी कारण-प्रभाव संबंधों को समझना, धूप में बर्फ का पिघलना, नमक का पानी में घुलना								
22.	कला गतिविधियों के लिए उपयुक्त उपकरणों का प्रयोग करना								
23.	वस्तुओं को दो श्रेणियों के आधार पर छाँटना, आकार और आकृति, रंग तथा लंबाई								
24.	वस्तुओं और उनके उपयोगों को जोड़ना								
25.	परिवेश में सरल नमूनों (पैटर्न) को पहचानना								
26.	10 तक संख्याओं को सही क्रम में बताना								
27.	वस्तुओं को एक क्रम आकृति, आकार या कहानी कार्ड (3 तक) में व्यवस्थित करना–								
28.	दो वस्तुओं की तुलना करना								
29.	वस्तुओं को समूहीकृत और असमूहीकृत करना (3 तक)								
30.	वस्तुओं का आकृति, आकार और रंग के आधार पर मिलान (केवल एक विशेषता के आधार पर) करना								
31.	आकृतियों को नाम देना, आकृतियों की इनसेट पहेलियों को हल करना								
32.	तुकबंदी कविताएँ सुनना और दोहराना								
33.	सरल मौखिक आदेश सुनना और उनका पालन करना								
34.	कहानी सुनने के लिए 5–7 मिनट की ध्यान अवधि का होना								
35.	सरल परिचित वस्तुओं के लिए शब्दावली होना								
36.	पुस्तक पढ़ने का प्रयास करना, पुस्तक के लेख एवं चित्र में अंतर करना								
37.	अस्पष्ट लेखन के लिए लेखन सामग्री, जैसे– चॉक और क्रेयोन का प्रयोग करना								
38.	कविता अथवा गाने को प्रभावी तरीके से गाने के लिए विभिन्न शारीरिक गतिविधियाँ करना								

39.	कला कार्य पर मौखिक अथवा गैर मौखिक रूप से प्रतिक्रिया देना								
40.	स्वयं से शुरू की गई गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करना, दो या तीन कार्यों में रुचि बनाए रखना								
41.	याद करना, स्मरण करने का अभ्यास करना								
42.	एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में परिवर्तन करना								
43.	बाह्य गतिविधियों का आनंद लेना								
44.	कक्षा के मानदंडों के लिए वयस्क व्यवहार का अवलोकन और अनुकरण करना								
45.	अन्य कार्यों पर ध्यान स्थानांतरित करने की क्षमता होना								

- शिक्षक द्वारा अभिभावक को सूचना, सुझाव और सलाह

क्रम संख्या	**जिन क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है**	**शिक्षक द्वारा सुझाव**

शिक्षक के हस्ताक्षर– .... दिनांक– ....

अभिभावक के हस्ताक्षर– .... दिनांक– ....

अनुलग्नक X

समग्र प्रगति कार्ड (नमूनार्थ)

कक्षा– बालवाटिका 2

बच्चे का व्यक्तिगत विवरण

नाम–...

माता का नाम– ....

पिता का नाम– ....

पता– ....

जन्मतिथि– ....

ऊँचाई और वजन माप

वजन– .... ऊँचाई– ....

बच्चे की व्यक्तिगत स्वच्छता (ठीक अथवा अच्छी अथवा स्वच्छ या सुधार की आवश्यकता)

कपड़े– .... कान– .... आँखें– ....

नाखून– .... नाक– .... दाँत– ....

बाल– ....

नियमितता– .... समयबद्धता– ....

अन्नमय कोष से आनंदमय कोष तक

क्र. सं.	विकसित दक्षताएँ	निपुणता अवधि 1				निपुणता अवधि 2			
		प्रारंभिक	प्रगतिशील	प्रवीण	सक्षम	प्रारंभिक	प्रगतिशील	प्रवीण	सक्षम
1.	स्वास्थकर व अस्वास्थ्यकर भोजन की पहचान करना, विभिन्न प्रकार के पौष्टिक आहार खाना								
2.	स्वयं तैयार होना								
3.	विद्यालय तथा कक्षा को स्वच्छ रखना, कूड़ेदान का प्रयोग करना, व्यक्तिगत सामान को सुरक्षित रखना								
4.	जोखिम से जुड़ी सामग्री, जैसे– कैंची, चाकू, माचिस की तीली का सावधानी से प्रयोग करना								
5.	अपरिचितों से सावधान रहना, उनसे असुविधा होने पर अभिभावकों या शिक्षकों को बताना								
6.	रंगों के विभिन्न शेड्स में अंतर करना								
7.	आयाम यानी लँबाई, चौड़ाई, ऊँचाई के आधार पर वस्तुओं का समूह बनाना								
8.	ध्वनियों की उच्च व मंद ताल में अंतर करना								
9.	ध्वनियों की धीमी व तेज ताल में अंतर करना								
10.	फूलों, फलों की खुशबू में अंतर करना								
11.	नर्म-कठोर, गर्म-ठंडा, खुरदुरा-चिकना के आधार पर दो वस्तुओं की तुलना करना								
12.	बलपूर्वक गेंद को पकड़ना, फेंकना, किक मारना								
13.	विभिन्न ऊँची-नीची सतहों पर शरीर का संतुलन बनाना								
14.	सूक्ष्म गत्यात्मक और आँख-हाथ का समन्वय गतिविधियों के लिए बेहतर नियंत्रण दर्शाना								
15.	चलना, घुटनों पर रेंगना, सीढ़ियाँ चढ़ना-उतरना, दो पैरों पर कूदना, छोटे फर्नीचर को हिलाना								

16.	स्वयं को एक परिवार, कक्षा, पड़ोस के सदस्य के रूप में पहचानना								
17.	मौखिक अथवा गैर-मौखिक तरीकों से भावनाओं को व्यक्त करना								
18.	कक्षा की गतिविधियों में शिक्षक की सहायता करना								
19.	आम पशुओं, पक्षियों को पहचान कर उनका वर्णन करना								
20.	परिचित वस्तु के चित्र में 3–5 छूटे हुए भागों की पहचान करना								
21.	ज्ञात जानकारी को एक नए संदर्भ में प्रयोग करना								
22.	वस्तुओं को तीन समूहों (आकार, लँबाई, चौड़ाई आदि) में बाँटना								
23.	दोहराए गए नमूनों या पैटर्न को पहचानना								
24.	20 तक सही क्रम में संख्याओं को बोलना								
25.	5 तक मात्रा की पहचान करना								
26.	10 तक गिनना, 20 तक भी गिनना								
27.	3 स्तरों तक आकार के आधार पर क्रम में व्यवस्थित करना								
28.	दो समूहों को जोड़ना और गिनना								
29.	दो प्राप्तकर्ताओं में वस्तुओं को समान रूप से साझा करना								
30.	दो कारकों, रंगों और आकृतियों द्वारा वर्गीकरण करना								
31.	विभिन्न रंगों और आकारों की आकृतियों का मिलान करना								
32.	विभिन्न चरण वाले निर्देशों का पालन करना								
33.	दो वस्तुओं की लंबाई और वजन के आधार पर तुलना करना								
34.	भारतीय सिक्कों की पहचान करना								
35.	मूल आकृतियों को उचित नाम देना, जैसे– वृत्त, वर्ग और त्रिभुज								

36.	सरलतापूर्वक कला सामग्री का प्रयोग करना								
37.	स्वर और हाव-भाव के साथ तरह-तरह के गीतों को सुनना और साथ गाना								
38.	साथियों और शिक्षक के साथ बात-चीत शुरू करना								
39.	रोज के अनुभव सुनाना								
40.	कहानी के किरदार और चरण याद कर अपने शब्दों में सुनाना								
41.	2–3 अक्षरों को मिलाकर सरल शब्द बनाना								
42.	किताब पकड़ना, पृष्ठ पलटना, बाएँ से दाएँ पढ़ने के पैटर्न का अनुसरण करना, पढ़ने का प्रयास करना								
43.	दो अक्षर वाले सरल शब्द पढ़ना								
44.	शिक्षक के साथ साझा पठन में भाग लेना, चित्र वाली बड़ी किताबें पढ़ना								
45.	सरलता और प्रवाह के साथ लेखन व चित्रण के उपकरणों का प्रयोग करना								
46.	पहचाने गए अक्षरों को लिखना आरंभ करना								
47.	सरल शब्दों को बनाने के लिए अक्षरों का प्रयोग करना								
48.	अधिक सटीकता के साथ चित्रण और पेंट करना								
49.	चिकनी मिट्टी या क्ले से विभिन्न त्रि-आयामी आकृतियाँ बनाना								
50.	वस्तुओं, स्वरों आवाजों और उपकरणों से विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न करना								
51.	कला गतिविधियों में विचारों और विधियों को साझा करना, दोस्तों के साथ प्रतिक्रिया साझा करना								
52.	ध्यान केंद्रित करना, रुचिकर कार्यों में बने रहना								
53.	आवेगमय व्यवहार को रोकना								
54.	आस-पास के परिवेश के प्रति जिज्ञासा दिखाना								
55.	शिक्षक के संकेत के साथ कक्षा के मानदंडों का पालन करना								

- शिक्षक द्वारा अभिभावक को सूचना, सुझाव और सलाह

क्र. सं.	जिन क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है	शिक्षक द्वारा सुझाव

शिक्षक के हस्ताक्षर– .... दिनांक– ....

अभिभावक के हस्ताक्षर– .... दिनांक– ....

अनुलग्नक XI

समग्र प्रगति कार्ड (नमूनार्थ)

कक्षा– बालवाटिका 3

बच्चे का व्यक्तिगत विवरण

नाम–...

जन्मतिथि–..

माता का नाम–..

पिता का नाम–..

घर का पता–...

ऊँचाई और वजन माप

वजन (कि.ग्रा.)–........................ ऊँचाई (सें.मी.)–........................

बच्चे की व्यक्तिगत स्वच्छता (ठीक, अच्छी, स्वच्छ सुधार की आवश्यकता है।)

कपड़े–	....	कान–	....	आँखें–	....
नाखून–	....	नाक–	....	दाँत–	....
बाल–	....				

नियमितता– .... समयबद्धता–..............................

अन्नमय कोष से आनंदमय कोष तक

क्र. सं.	विकसित दक्षताएँ	निपुणता अवधि 1				निपुणता अवधि 2			
		प्रारंभिक	प्रगतिशील	प्रवीण	सक्षम	प्रारंभिक	प्रगतिशील	प्रवीण	सक्षम
1.	विभिन्न खाद्य समूह के खाद्य पदार्थों को पहचानना और समझना								
2.	हल्का तैयार करने में भाग लेना								
3.	बर्बाद किए बिना तरह -तरह के खाद्य पदार्थों को खाना								
4.	व्यक्तिगत सामान को अच्छी स्थिति में रखना, कूड़ेदान का उपयोग करना, साफ प्लेट का उपयोग करना								
5.	सड़क सुरक्षा नियमों का पूरी तरह से पालन करना								
6.	यातायात के संकेतों की पहचान करना								
7.	चोट लगने और असुरक्षित स्थितियों में मदद माँगना								
8.	दो रंगों के मिश्रण पर नया रंग बताने का प्रयास करना								
9.	विशेषताओं के आधार पर वस्तुओं का समूह बनाना								
10.	चित्र कार्डों का उपयोग करते हुए दृश्यों को याद करके उनका मिलान करना								
11.	उन गंधों को पहचानना, जो खतरे का संकेत देती है, जैसे– धुआँ आदि।								
12.	3 से 5 वस्तुओं की उनकी विशेषता, जैसे– नर्म से लेकर सबसे कठोर तक के आधार पर पाँच स्तर तक क्रमबद्ध करना								
13.	विभिन्न आकार की गेंदों को पकड़ना, किक मारना और फेंकना								
14.	10–5 कदम कूदना								
15.	शरीर का अच्छा संतुलन दिखाना, सिर पर और हाथ से वस्तुओं को संतुलित करना, अच्छी तरह से साइकिल चलाना								
16.	समन्वित सूक्ष्म माँसपेशीय गतिविधि, जैसे– कलाकार्य, काटना, पिरोना, चिपकाना इत्यादि।								

17.	तीन फीट से कूदना								
18.	व्यक्तिगत पहचान की जानकारी साझा करना, घर का पता, परिवार के सदस्यों का विवरण								
19.	भावनाओं का वर्णन करना, दूसरों के साथ भावनाओं को साझा करना								
20.	अपरिचित वयस्कों के साथ बात-चीत शुरू करना								
21.	वयस्कों के बिना साथियों के साथ खेलना								
22.	बच्चों के साथ दोस्ती करना तथा दोस्ती बरकरार रखना								
23.	बच्चों के साथ खेल गतिविधियों की पहल करना तथा योजना बनाना								
24.	कार्यों को पूरा करने में ज़िम्मेदारी तथा स्वतंत्रता दिखाना								
25.	विद्यालय के सरल नियमों का पालन करना								
26.	विद्यालय तथा घर के अनुरूप कार्य करना								
27.	एक चित्र में 4–6 छूटे भागों की पहचान करना								
28.	श्रेणियों में पदानुक्रमित संबंधों को पहचानना; पशु और उनके छोटे बच्चे								
29.	वस्तुओं और उनके उपयोगों को जोड़ना								
30.	कारण-प्रभाव संबंध की समझ दिखाना								
31.	कला कार्य के लिए उपयुक्त उपकरणों का उपयोग करना								
32.	डिजिटल तकनीक से जुड़ना, सेलफोन और टैबलेट के प्रति जिज्ञासा दिखाना								
33.	छाँटना तथा विभिन्न विशेषताओं (रंग, आकृति व आकार) के आधार पर नए पैटर्न बनाना								
34.	50 तक संख्याओं के नाम बताना, 20 तक सटीक गिनती करना								
35.	वस्तु को किसी भी क्रम में सही प्रकार से गिनना								
36.	0 की संकल्पना को एक संख्या के रूप में समझना								
37.	संख्या के अंकित व स्थानीय मान को समझना								
38.	बढ़ते और घटते क्रम में आकार, लंबाई, वजन के संदर्भ में अधिकतम पाँच वस्तुओं को व्यवस्थित करना								
39.	भारतीय संख्याओं को 9 तक पहचानना								

40.	दो समूह को 9 तक जोड़ना और गिनना								
41.	वस्तु को 4–5 बच्चों के बीच समान रूप से बाँटना								
42.	वस्तुओं का मिलान और वर्गीकरण (2 से 3, मापदंड के आधार पर) करना								
43.	स्थानिक शब्दों अंदर, ऊपर, नीचे का उपयोग करना								
44.	कुछ सटीकता के साथ दो आयामी आकृतियाँ बनाना								
45.	लंबाई, वजन और आयतन के आधार पर वस्तुओं की तुलना								
46.	दिन, महीनों व साल के नाम जानना								
47.	भारतीय मुद्रा नोटों की पहचान करना								
48.	4–5 वाक्यों की कविता बोलना तथा नए तुकबंदी वाले शब्द बनाना								
49.	अपने साथियों तथा बड़ों को छोटे-छोटे काम करने के स्पष्ट निर्देश देना								
50.	किसी कहानी के कथानक और चरित्रों की पहचान करना, उसे अपने शब्दों और क्रम में फिर से बताना और अपने अनुसार उसका अंत करने में सक्षम होना								
51.	तीन से चार अक्षर वाले शब्दों को सही-सही पढ़ लेना								
52.	किताबों के बारे में बातें करना, 3–4 शब्द पढ़ना								
53.	शिक्षक के साथ निर्देशित पठन में भाग लेना								
54.	किताबें और छोटी कविताओं को सस्वर से पढ़ना, किताबों के बारे में दूसरों से बात करना								
55.	अक्षर लिखना तथा सरल शब्द और वाक्य बनाना								
56.	बोले जाने पर छोटे-छोटे शब्द लिखना								
57.	साथियों के सहयोग से बड़े पैमाने पर काम करना								
58.	संगीत की दृष्टि से गति, ताल, वाद्य और गायन प्रस्तुतियों को अलग करना								
59.	किसी कार्य के क्रम में कई चरणों को याद रखना, दूसरे बच्चों का मार्गदर्शन करना								
60.	आवेगों को नियंत्रित रखना								

- शिक्षक द्वारा अभिभावक को सूचना, सुझाव और सलाह

क्र. सं.	जिन क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है	शिक्षक द्वारा सुझाव

शिक्षक के हस्ताक्षर– .... दिनांक– ....

अभिभावक के हस्ताक्षर– .... दिनांक– ....

संदर्भ

प्रकाशन

कौल, विनीता. 2008. *प्रारंभिक बचपन शिक्षा कार्यक्रम*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली

बर्क, लॉरा ई. 1999. *चाइल्ड डेवलपमेंट*. पियर्सन कॉलेज डिवीजन

मॉरिसन, जॉर्ज. 2019. *फंडामेंटल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन*. पियर्सन पब्लिकेशन

मा.सं.वि.मं. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय,भारत सरकार. नई दिल्ली

———. 1992. *प्रोग्राम ऑफ एक्शन*. शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली

———. 2010. *बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम, 2009*. भारत का राजपत्र, मानव संसाधन विकास मंत्रालय,भारत सरकार. नई दिल्ली

म.बा.वि.मं. 2013. *राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति*. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली

रा.शै.अ.प्र.प. 2019ए. *प्रारंभिक विद्यालयी पाठ्यचर्या*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली

———. 2019बी. *प्रारंभिक शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद.नई दिल्ली

———. 2019सी. *निष्ठा– विद्यालय नेतृत्व विकास पर प्रशिक्षण पैकेज*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली

———. 2005. *लिटिल स्टेप्स– रेडीनेस एक्टिविटीज फॉर रीडिंग, राइटिंग एंड नंबर रेडीनेस*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली

———. 2015. *राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा के कार्यान्वियन हेतु अनुकरणीय दिशा-निर्देश*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली

———. 2022. *खिलौना आधारित शिक्षण विधि हेतु हस्तपुस्तिका*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली

———. 2021. *विद्या प्रवेश*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली

———. 2010. *खेल-खेल में*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली

———. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली

———. 2006. *प्रांरभिक बाल शिक्षा पर राष्ट्रीय फोकस समूह रिपोर्ट का आधार पत्र (3.6)*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली

हरलॉक, एलिजाबेथ बी. 2017.*चाइल्ड डेवलपमेंट*. मैकग्रा हिल

वेबलिंक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. प्रारंभिक शिक्षा विभाग, वीडियो फिल्म— *खुला आकाश*. 2014. https://www.youtube. com/watch?v=1XjDHOrcJyw

फ्लेमिंग एन. वार्क.*गाइड टू लर्निंग स्टाइल*. http://www.vark-learn.com

https://www.naeyc.org/resources/position-statements/dap/principles

प्यारे बच्चो!

यदि कोई आपको अनुचित ढंग से स्पर्श करे और यह स्पर्श आपको अच्छा न लगे तो, आप चुप न रहें। आप

1. स्वयं को इसका दोष न दें;
2. इस बारे में किसी ऐसे व्यक्ति को बताएँ जिस पर आप भरोसा करते हो;
3. आप **पॉक्सो ई.बॉक्स** के माध्यम से राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग को भी इस बारे में सूचित कर सकते हैं।

जब आपको कोई अनुचित ढंग से स्पर्श करता है तो आपको बुरा लग सकता है, आप दुविधाग्रस्त और असहाय अनुभव कर सकते हैं

आपको ''बुरा'' अनुभव करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आपकी गलती नहीं है

इस बटन को दबाएँ

पॉक्सो ई.बॉक्स NCPCR@gov.in पर उपलब्ध है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

यदि आपकी आयु 18 वर्ष से कम है और आप मुसीबत में हैं अथवा दुविधाग्रस्त हैं अथवा आपके साथ दुर्व्यवहार किया गया है अथवा संकट में हैं अथवा किसी ऐसे बच्चे को जानते हैं...

1098 पर कॉल करें...क्योंकि कुछ अच्छे नंबर जीवन बदल देते हैं।

चाइल्ड लाइन 1098 - विपत्ति में बच्चों के लिए 24 घंटे निःशुल्क राष्ट्रीय आपातकालीन फ़ोन सेवा, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के सहयोग से चाइल्ड लाइन इंडिया फ़ाउंडेशन की पहल है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

13263

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-449-3